॥ श्रीः ॥

हरिदास संस्कृत ग्रन्थमाला २१२

जातकाभरणम्

सपरिशिष्ट 'विमला' टीकासहितम्

टीकाकारः

श्री पं० श्रीमदच्युतानन्द झा

चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन

पोस्ट बाक्स संख्या १३८

के० ३७/१३०, गोपाल मन्दिर लेन

वाराणसी—२२१००१ (भारत)

मूल्यं ३६-००

॥ श्रीः ॥
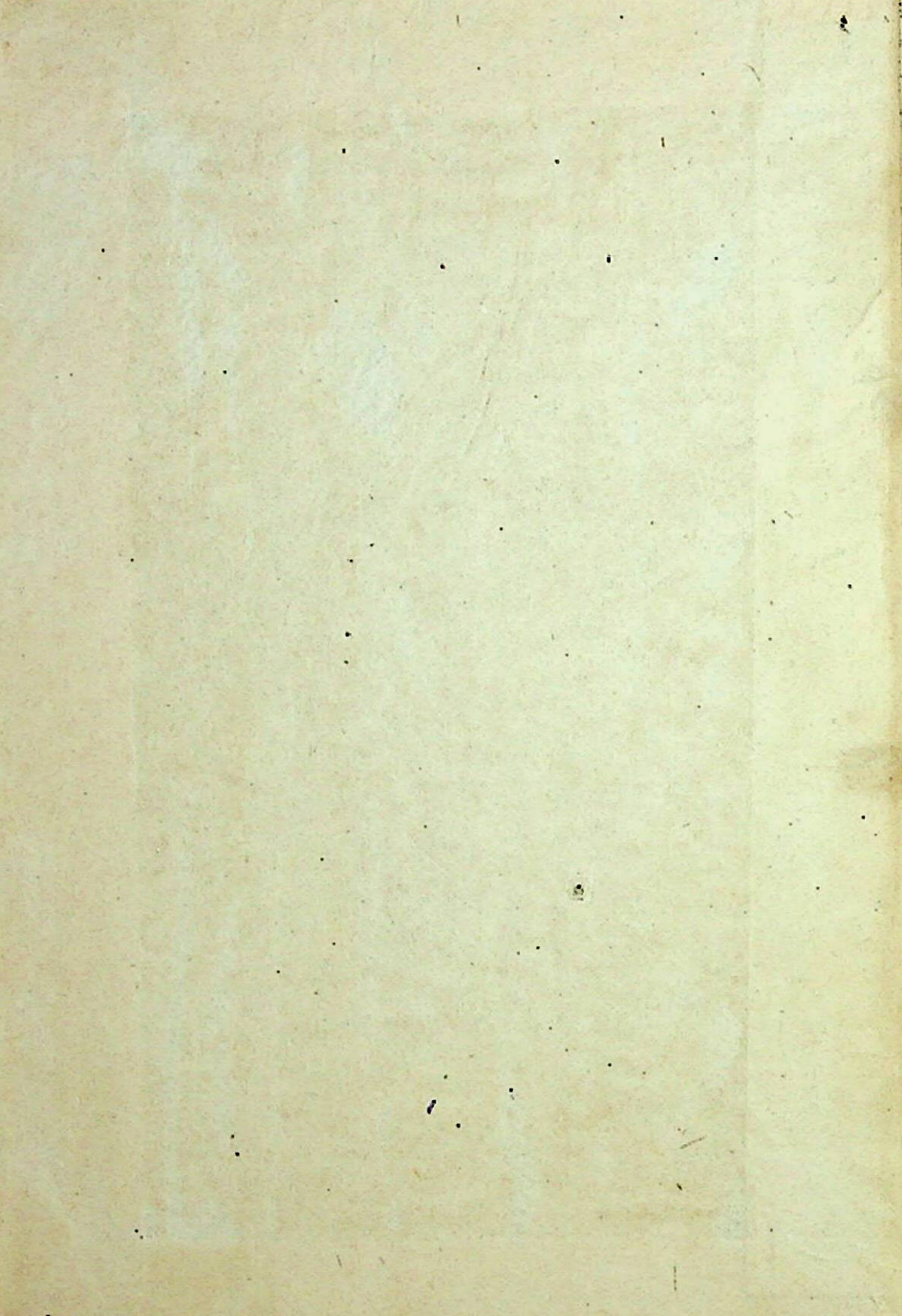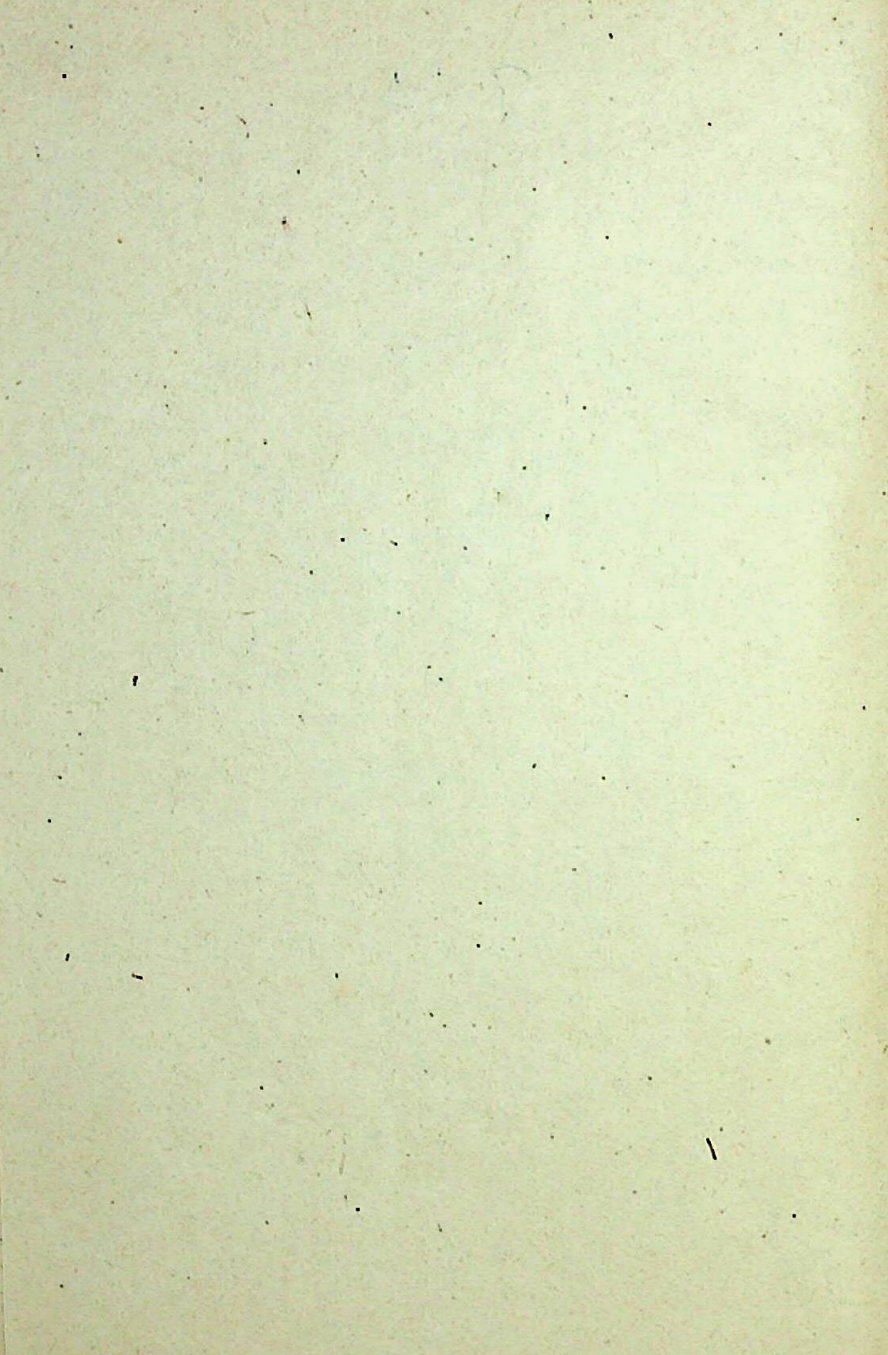
हरिदास संस्कृत ग्रन्थमाला

२१२

श्रीढुण्ढिराजदैवज्ञविरचितं

जातकाभरणम्

सोदाहरण 'विमला' हिन्दीव्याख्यया
परिशिष्टेन च विभूषितम्

व्याख्याकारः-

पण्डित श्री अच्युतानन्द झा

ज्यौतिषाचार्य-पोस्टाचार्य-साहित्याचार्यादि-

पदवीक-प्राप्त 'रीपन्' स्वर्णपदकः ।
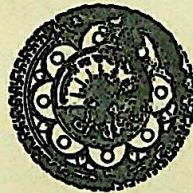
चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी-१

१९७८

भूमिका

तिष्ठन्तीं शवदक्षसि स्मितमुखीं हस्ताम्बुजैर्बिभ्रतीं
मुण्डं खड्गवराभयानि विजितारातिव्रजां भीषणाम् ।
मुण्डस्त्रक्प्रविकाशमानविपुलोत्तुङ्गस्तनोद्भासिनीं
नत्वा जातकभूमिकां वितनुते नन्दोऽच्युतादिः कृती ॥

प्राचीन और आधुनिक इतिहासों द्वारा यह सर्वथा सिद्ध हो चुका है कि उपलब्ध पुस्तकों में सब से प्राचीन वेद है । इसको अपौरुषेय कहते हैं अर्थात् किसी मनुष्य ने इसको नहीं बनाया किन्तु मनुष्यों के कल्याणार्थ सर्वशक्तिमान् परमेश्वर ने त्रिकालज्ञ ऋषियों द्वारा सृष्टि के आदि में प्रकाशित किया ।

इसके व्याकरण आदि छै अङ्ग हैं, जैसे—व्याकरण मुख, ज्यौतिष-शास्त्र नेत्र, निरुक्त कान, कल्प हाथ, शिक्षा नासिका और छन्द पैर हैं

कहा भी है—

शब्दशास्त्रं मुखं ज्यौतिषं चक्षुषी श्रोत्रमुक्तं निरुक्तं च कल्पः करौ ।
या तु शिक्षाऽस्य वेदस्य सा नासिका पादपद्मद्वयं छन्द आद्यैर्बुधैः ॥

वेद का नेत्र होने के कारण ज्यौतिष शास्त्र सब अङ्गों में श्रेष्ठ गिना जाता है । क्योंकि अन्य सब अङ्गों से युत भी मनुष्य नेत्र हीन होने पर कुछ भी नहीं कर सकता है । अतः श्रीमान् भास्कराचार्यने सिद्धान्तशिरोमणि में कहा है—

वेदचक्षुः किलेदं स्मृतं ज्यौतिषं मुख्यता चाङ्गमध्येऽस्य तेनोच्यते ।
संयुतोऽपीतरैः कर्णनासादिभि श्चक्षुषाङ्गेन हीनो न किञ्चित्करः ॥

इसके सिद्धान्त, फलित ये प्रधान दो भाग हैं ।

सिद्धान्त उसको कहते हैं जिसमें भूगोल, खगोल आदि का वर्णन है ।

फलित जन्म समय से लेकर मरण पर्य्यन्त हरेक मनुष्य की सारी जीवन घटनाओं, प्राकृतिक स्थितियां आदि का वर्णन करता है। इसके जातक, संहिता, प्रश्न, ताजिक, मुहूर्त ये पांच मुख्य भेद हैं।

इनमें जातक भाग से जन्मपत्री सम्बन्धी सभी विषयों का काम लिया जाता है। परन्तु यह काम एक पुस्तक साध्य नहीं होने के कारण ज्योतिषियों को अनेक पुस्तकों की जरूरत पड़ती है। किन्तु गोदावरी नदी के निकट पार्थनगर के निवासी ज्यौतिर्विदग्रगण्य श्रीढुण्ढिराज दैवज्ञ द्वारा रचित यह जातकाभरण नामक एक ही पुस्तक इसके लिये पर्य्याप्त होती है। इस बात को प्रायः सभी आधुनिक फलितज्ञ मानते हैं।

इस पुस्तक में जन्मपत्री बनाने के लिये सुगम रीति से संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, ग्रहयुति, नाभस योग, दृष्टिफल आदि सभी विषयों का फल वर्णन किया गया है। वस्तुतः जन्मपत्री सम्बन्धी सारी बाते बतलाने के लिये किसी बात को छोड़ा नहीं है। वर्तमान युग में प्रायः अधिक तर ज्यौतिषी इसी एक मात्र ग्रन्थ के आधार पर जन्मपत्री बनाते हैं।

इस तरह फलित के अत्यन्त मनोहर ग्रन्थ होने पर भी आज-तक इसका कोई ऐसा संस्करण नहीं निकला जिसमें शुद्ध मूल-पाठ, वास्तव अर्थ और उदाहरण हो, जिस से अल्पज्ञ से लेकर विद्वान् पर्य्यन्त सबों का उपकार हो।

इसलिये उन पूर्वोक्त अनेक त्रुटियों को हटाने के लिये मैंने इस की "विमला" नामक सरल हिन्दी टीका की है। इस अनुपम संस्करण में शुद्ध मूलपाठ, वास्तव सरल हिन्दी भाषा में अर्थ, उदाहरण आदि सभी विषय स्पष्ट रूप से दिये गये हैं। साथ ही साथ ग्रन्थ के अन्त में परिशिष्ट प्रकरण भी दिया गया है। क्योंकि कुछ ऐसी मुख्य बातें इस ग्रन्थ के अन्दर न होने के कारण अधिक लम्बी पत्री बनाने में फलितज्ञों को कुछ अन्य पुस्तक से सहायता

लेनी पड़ती थी। अतः इस कठिनता को दूर करने के लिये यह प्रकरण दिया है।

इसमें ग्रहों के परस्पर नैसर्गिक, तात्कालिक, संस्कृत अधिमित्रादि, राशियों के स्वामी, होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश, त्रिशांश, द्वादशांश, राहु केतु के गृह मित्र आदि का विचार, दशा, अन्तर्दशा की गणित, स्पष्ट आयु लाने का प्रकार, भावेशफल आदि विषय के ज्ञान प्रकार स्पष्ट रूप से दिये गये हैं।

अब मुझे दावे के साथ कहना पड़ता है कि केवल एक इसी ग्रन्थ से जन्मपत्री सम्बन्धी सारा काम करने में कोई दिक्कत नहीं पड़ सकती। अधिक प्रशंसा करना व्यर्थ है स्वयं पक्षपात रहित बुद्धि से देख कर फलितज्ञ इसका अनुभव करेंगे।

एतादृश इस अनुपम पुस्तक की टीका को लिखकर काशी के प्रसिद्ध "चौखम्बा संस्कृत सीरीज पुस्तकालयाध्यक्ष बाबू श्रीजयकृष्ण दास जी गुप्त महोदय" को साधिकार प्रकाशनार्थ दिया।

आशा है पण्डित लोग इसको देखकर मेरे असीम परिश्रम को सफल करेंगे।

अन्त में सविनय प्रार्थना यही है कि प्रमाद वश या मुद्रण दोष से कहीं त्रुटि रह गयी हो तो पण्डितगण उसे सुधार कर सूचित करें। पुनः अगले संस्करण में उसको ठीक कर उन सज्जनों के सामने उपस्थित करूंगा।

कहा भी है—

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः॥

विनीत—

रामनवमी
सं० २००८

पं. श्री अच्युतानन्द झा,
जरिसो

जातकाभरणस्य विषयसूची

श्रीगणेशाय नमः ।

जातकाभरणम्

सोदाहरण—'विमला' टीकया विभूषितम् ।

तत्र टीकाकर्त्तृमङ्गलाचरणम्—

कल्पान्तार्कप्रकाशां प्रतिभटभयदां सोमसूर्याग्निनेत्रां
कोपादालोलजिह्वां सुविवृतवदनां रक्तलिप्तवतंसाम् ।
रक्ताक्षीं भीषणाङ्गीं त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं
नत्वा टीकां मनोज्ञां रचयति विमलामच्युतानन्दनामा ॥ १ ॥

आनन्दसंचयनिभं गजतुण्डतुण्डं गण्डस्थलीस्रवदनन्तमदप्रवाहम् ।
प्रत्यूहव्यूहधरभेदनवज्रकुलीशं शम्भुसुतं निखिलविघ्नहरं नमामि ॥२॥

ग्रन्थकारकृतमङ्गलाचरणम्—

श्रीदं सदाहं हृदयारविन्दे पादारविन्दं वरदस्य वन्दे ।
मन्दोऽपि यस्य स्मरणेन सद्यो गीर्वाणवन्द्योपमतां समेति ॥ १ ॥

जिन के स्मरण से मन्दबुद्धि भी बहुत जल्दी देवताओं से पूज्य बृहस्पति के समान हो जाता है। ऐसे सब अभीष्ट को देने वाले श्रीगणेश जी के चरण कमल को हृदय से ध्यान करके वन्दना करता हूँ ॥ १ ॥

उदारधीमन्दरभूधरेण प्रमथ्य होरागमसिन्धुराजम् ।
श्रीढुण्ढिराजः कुरुते किलार्ष्यमार्यासपर्यामलकोक्तिरत्नैः ॥ २ ॥

श्री ढुण्ढिराज नाम के ज्योतिषी उदारबुद्धिरूप मन्दराचल से आर्ष्य ज्योतिषशास्त्र रूप समुद्र को मथकर निर्दुष्ट उक्तिरूप रत्न को बाहर करते हैं ॥ २ ॥

ज्ञानराजगुरुपादपङ्कजं मानसे खलु विचिन्त्य भक्तितः ।
जातकाभरणनाम जातकं जातकज्ञसुखदं विधीयते ॥ ३ ॥

भक्तिपूर्वक अपने हृदय में ज्ञानराज नामक गुरु के चरण कमल का ध्यान कर ज्यौतिषियों को सुख देने वाला "जातकाभरण" नामक जातक ग्रन्थ को बनाते हैं ॥ ३ ॥

शास्त्रप्रोक्तां जन्मपत्रीं करोति नानाग्रन्थालोकनात्तस्य चित्तम् ।
अत्युद्विग्नं स्यात्ततो जातकेऽस्मिन्कुर्वे व्यक्तां जातकोक्तिं च सर्वाम् ॥४॥

ज्योतिषी लोग अनेक ग्रन्थ के द्वारा शास्त्रोक्त जन्मपत्री बनाते हैं, इस तरह अनेक ग्रन्थों को देखने से उनका चित्त उद्विग्न हो जाता है। इस लिये समस्त जातकोक्ति को इस ग्रन्थ में हम स्पष्ट करते हैं ॥४॥

विचित्रपत्रीकरणादराणां श्रमं विनाऽनुक्रमलेखनार्थम् ।
समर्थमेवं प्रकटार्थमेवात्यर्थं ततो नाम यथार्थमस्य ॥ ५ ॥

विचित्र जन्मपत्री बनाने वालों को बिना श्रम के क्रमपूर्वक लिखने की शक्ति के लिये स्पष्ट यह ग्रन्थ पर्याप्त है। इसलिये इस का नाम जातकाभरण अन्वर्थक सिद्ध हुआ ॥ ५ ॥

सन्मङ्गलाशीर्वचनान्वितानि पद्यानि चाग्रे समुदीरयन्ते ।
तान्येव पत्रीकरणे प्रवीणाः श्रेयस्कराणि प्रथमं लिखन्तु ॥ ६ ॥

मङ्गलात्मक और आशीर्वादात्मक जो श्लोक आगे लिखते हैं, जन्मपत्री बनाने में चतुर ज्योतिषी उन्हीं श्लोकों को पहले लिखें ॥६॥

जन्मपत्री के आदि में लिखने योग्य मङ्गल श्लोक—

शुण्डामण्डलसंप्रसारकरणैर्मौलिस्थलान्दोलनै-
र्नेत्रोन्मीलनमीलनैरविरलश्रीकर्णतालक्रमैः ।
दानालिध्वनितैर्विलासचरितैरूर्ध्वाननोद्गर्जितै-
र्जातानन्दभरः करीन्द्रवदनो नः श्रेयसे कल्पताम् ॥ ७ ॥

सूंड़ को चलाने से, शिर को भुलाने से, आँखों को खोलने और मूंदने से, कान को फटफटाने से, मद जल में बैठे भ्रमरों के ध्वनि को सुनने से, मुख को ऊपर उठा कर गर्जने से उत्पन्न नाना प्रकार क्रीडा युक्त श्री गणेश जी हमारे कुशल करें ॥ ७ ॥

नानादानविधानयज्ञनिकरैरुग्रैस्तपोभिश्चिरा-
त्प्राप्ते कल्पतरौ प्रकल्पितफलावाप्तिः कथंचिद्भवेत् ।
तूर्णं यच्चरणाम्बुजस्मरणतः सम्पूर्णकामः पुमान् ।
सोयं वोऽभिमतं ददातु सततं हेरम्बकल्पद्रुमः ॥ ८ ॥

नाना प्रकार के यज्ञ और कठिन तपस्या से जल्दी यदि कल्पवृक्ष की प्राप्ति होती तो किसी प्रकार मनोरथ पूर्ण होता, किन्तु जिनके चरण कमल के स्मरण मात्र से ही सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध होता है, वही श्री गणेश रूप कल्प वृक्ष सदा हमारे मनोरथ को पूर्ण करें ॥ ८ ॥

सन्मानसावासविलासहंसी कर्णावतंसीकृतपद्मकोशा ।
तोषादशेषाभिमतं विशेषादेषापि भाषा भवतां ददातु ॥ ९ ॥

सज्जनों के मानस रूप मानस सरोवर में विलास करने वाली हंसी, कमल कोष को कर्णभूषण बनाने वाली सरस्वती जो भी विशेष आनन्द पूर्वक आपके अभीष्टार्थ को दें ॥ ९ ॥

कल्याणानि दिवामणिः सुललितां कान्ति कलानां निधि-
र्लक्ष्मीं क्ष्मातनयो बुधश्च बुधतां जीवश्चिरञ्जीविताम् ।
साम्राज्यं भृगुजोर्कजो विजयतां राहुर्बलोत्कर्षतां
केतुर्यच्छति तस्य वाञ्छितमियं पत्री यदीयोत्तमा ॥१०॥

सूर्य कल्याण परम्परा, चन्द्र सुन्दर कान्ति, मङ्गल लक्ष्मी, बुध पाण्डित्य, गुरु दीर्घायु, शुक्र साम्राज्य, शनि विजय, राहु बल को उत्कर्षता और केतु सुवाञ्छित फल को प्रदान करें ॥ १० ॥

जन्मकालतिथिवारतारकाश्चापि योगकरणाः क्षणाभिधाः ।
मङ्गलाय किल सन्तु पत्रिका यस्य शास्त्रविहिता विरच्यते ॥११॥

जन्मकालिक तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण, मुहूर्त ये सब जिस की जन्म पत्री बना रहे हैं उस का कल्याण करें ॥ ११ ॥

ये वक्ष्यमाणा इह राजयोगा रश्मिप्रभूता अपि नाभसाश्च ।

ये कारकाः पूर्णफलं हि पूर्णं यच्छन्तु पत्री क्रियते यदोया ॥१२॥

वक्ष्यमाण राजयोग, नाभसयोग, कारक ग्रह ये सब पत्री वाले के सम्पूर्ण फलों को पूर्ण करें ॥ १२ ॥

यस्यामलेयं किल जन्मपत्री कुतूहलेन क्रियते यथोक्ता ।
तस्यालये सत्कमला सलीलं सुनिश्चला तिष्ठतु दीर्घकालम् ॥१३॥

बड़ी कुतूहल से जिस का जन्मपत्र हम लिखते हैं, उस के घर में लक्ष्मी जी सदा के लिये स्थिरा हो ॥ १३ ॥

कृतं मया नोदकयन्त्रसाधनं कालेक्षणं चापि न शंकुसाधनम् ।
परोपदिष्टात्समयात्प्रयत्नतः शुभाशुभं जन्मफलं मयोच्यते ॥१४॥

जन्मकाल जानने के लिये मैंने न तो यन्त्र धारण किया, न शंकु की छाया नापी किन्तु दूसरे के कहे काल से इस जन्म पत्र को लिख रहा हूँ ॥ १४ ॥

आदित्यादिग्रहाः सर्वे सनक्षत्राः सराशयः ॥
दीर्घं तदायुः कुर्वन्तु यदीया जन्मपत्रिका ॥ १५ ॥

समस्त नक्षत्र और राशियों के साथ सूर्य आदि सब ग्रह जन्म-पत्र वाले को दीर्घायु प्रदान करें ॥ १५ ॥

शाक संख्यासे संवत्सर की संज्ञा जानने का प्रकार—

"शकाब्दा द्विकरैर्निघ्ना भूनन्दाशिवयुगैर्युता ।
शरागधृतिभिर्भक्ता लब्धियुक्ताः शकाब्दकाः ॥ १ ॥
षष्टितष्टा गता ज्ञेया वत्सरा प्रभवादयः ।
वार्हस्पत्येन मानेन वर्तमानस्तदग्रिमः ॥ २ ॥

शाक संख्या को २२ से गुना कर ४२९१ जोड़ने से जो हो उस में १८७५ का भाग देने से जो लब्धि मिले उस को शाक संख्या में जोड़ कर ६० का भाग देने से जो शेष बचे वह प्रभव आदि क्रम से गत संवत्सर और उस से अग्रिम वर्तमान संवत्सर होता है ॥ १-२ ॥

उदाहरण—जैसे शाके १८६८ में संवत्सर का नाम जानना है ।

शाके १८६८ को २२ से गुणा किया तो ४१०९६ हुआ, इस में ४२९१ जोड़ने से ४५३८७ हुआ, इस में १८७५ का भाग दिया तो लब्धि २४ मिली और शेष ३८७ रहे इनका प्रयोजन नहीं, केवल लब्धि को लेकर शाके १८६८ में जोड़ने से १८९२ इतना हुआ, इस में ६० का भाग देने से शेष ३२ बचे इसलिये प्रभव आदि क्रम से ३२ वाँ विलम्बी नाम गत संवत्सर और उस से अग्रिम विकारी नाम वर्तमान संवत्सर हुआ ॥

ग्रन्थान्तर से प्रभवादि संवत्सरों का नाम—

प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदोऽथ प्रजापतिः।
अङ्गिराः श्रीमुखो भावो युवा धाता तथैव च ॥
ईश्वरो बहुधान्यश्च प्रमाथी विक्रमो वृषः।
चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवोऽव्ययः ॥
सर्वजित्सर्वधारी च विरोधी विकृतिः खरः।
नन्दनो विजयश्चैव जयो मन्मथदुर्मुखौ ॥
हेमलम्बी विलम्बी च विकारी शार्वरी प्लवः।
शुभकृच्छोभनः क्रोधी विश्वावसुपराभवौ ॥
प्लवङ्गः कीलकः सौम्यः साधारणो विरोधकृत्।
परिधावी प्रमादी च आनन्दो राक्षसो नलः ॥
पिङ्गलः कालयुक्तश्च सिद्धार्थी रौद्रदुर्मती।
दुन्दुभी रुधिरोद्गारी रक्ताक्षः क्रोधनः क्षयः ॥
षष्टिसंख्या समाख्याता नामतुल्यफला इमे।

प्रभव १, विभव २, शुक्ल ३, प्रमोद ४, प्रजापति ५, अङ्गिरा ६, श्रीमुख ७, भाव ८, युवा ९, धाता १०, ईश्वर ११, बहुधान्य १२, प्रमाथी १३, विक्रम १४, वृष १५, चित्रभानु १६, सुभानु १७, तारण १८, पार्थिव १९, व्यय २०, सर्वजित् २१, सर्वधारी २२, विरोधी २३, विकृति २४, खर २५, नन्दन २६, विजय २७, जय २८, मन्मथ २९, दुर्मुख ३०, हेमलम्बी ३१, विलम्बी ३२, विकारी ३३, शर्वरी ३४, प्लव ३५, शुभकृत् ३६, शोभन ३७, क्रोधी ३८, विश्वावसु ३९, पराभव ४०, प्लवङ्ग ४१, कीलक ४२, सौम्य ४३, साधारण ४४, विरोधकृत् ४५, परिधावी ४६, प्रमाथी ४७, आनन्द ४८, राक्षस ४९, अनल ५०, पिङ्गल

५१, कालयुक्त ५२, सिद्धार्थी ५३, रौद्र ५४, दुर्मति ५५, दुन्दुभि ५६, रुधिरोद्गारी ५७, रक्ताक्ष ५८, क्रोधन ५९, क्षय ६०, ये साठों संवत्सर नाम तुल्य फल के हैं।

प्रभवसंवत्सरजन्मफलम्—

सर्ववस्तुपरिसंग्रहे रतः पुत्रसन्ततिरतीव संमतिः।
सर्वभोगयुतदीर्घजीवितो जायते प्रभवसम्भवः पुमान् ॥ १ ॥

जिस का प्रभव संवत्सर में जन्म हो वह सब वस्तुओं का संग्रह करने में तत्पर, बहुत सन्तान वाला, अच्छी बुद्धि वाला, सब सुखों का भोग करने वाला और दीर्घायु होता है ॥ १ ॥

विभवसंवत्सरजन्मफलम्—

उत्पन्नभोक्ता प्रियदर्शनश्च बलाधिशाली चतुरः कलाज्ञः।
राजा भवेदात्मकुले सुशीलो विद्वान्मनुष्यो विभवाब्दजन्मा ॥२॥

विभव संवत्सर में उत्पन्न जातक उत्पन्न विषय का भोग करने वाला, अतिशय सुन्दर, बलवान्, चतुर, सब कलाओं को जानने वाला, अपने कुल में राजा (सर्वश्रेष्ठ), सुशील और विद्वान् होता है ॥२॥

शुक्लसंवत्सरजन्मफलम्

सदा सहर्षोऽतितरामुदारः सत्पुत्रदारैर्विभवैः समेतः।
सद्भाग्यविद्याविनयप्रपन्नो नूनं पुमाञ्शुक्लसमुद्भवः स्यात् ॥ ३ ॥

शुक्ल संवत्सर में उत्पन्न जातक सर्वदा आनन्द से युक्त, अति उदार, स्त्री, पुत्र और विभव से युक्त तथा सुन्दर भाग्य, विद्या, विनय से युक्त होता है ॥ ३ ॥

प्रमोदसंवत्सरजन्मफलम्—

दाता सुतानन्दयुतोऽतिकान्तः सत्येन नित्यं सहितो गुणी स्यात्।
दक्षश्च धूर्तः परकार्यकर्त्ता प्रमोदजन्मा मनुजोभिमानी ॥ ४ ॥

प्रमोद संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य दानी, सन्तान सुख से युक्त, अत्यन्त सुन्दर, सदा सत्य बोलने वाला, गुणी, कुशल, धूर्त, परोपकारी और अभिमानी होता है ॥ ४ ॥

प्रजापतिसंवत्सरजन्मफलम्—

दूराभिमानः सुतरां दयालुः कुलानुवृत्तः किल चारुशीलः ।
देवद्विजार्चाभिरतो विनीतो मर्त्यः प्रजाधीशसमुद्भवः स्यात् ॥ ५ ॥

प्रजापति संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य अभिमान रहित, अतिशय दयालु, कुलरीति का पालन करने वाला, सुन्दर स्वभाव वाला, देवता ब्राह्मण की पूजा करने वाला और नम्र होता है ॥ ५ ॥

अङ्गिरस्संवत्सरजन्मफलम्—

कान्तः सुखी भोगयुतश्च मानी प्रियप्रवक्ता बहुपुत्रयुक्तः ।
सुगुप्तबुद्धिः खलु दीर्घजीवी नरोऽङ्गिरोवत्सरसंभवः स्यात् ॥ ६ ॥

अङ्गिरा संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, सुखी, भोगी, प्रियवक्ता, बहुत पुत्रों से युक्त, अपने विचार को गुप्त रखने वाला और दीर्घ जीवी होता है ॥ ६ ॥

श्रीमुखसंवत्सरजन्मफलम्—

श्रीमान्प्रतापी बहुशास्त्रवेत्ता सुहृत्प्रियश्चारुमतिर्बलीयान् ।
सत्कीर्तियुक्तो नितरामुदारो भवेन्नरः श्रीमुखसम्भवोऽसौ ॥ ७ ॥

श्रीमुख संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य धनी, प्रतापी, अनेक शास्त्र को जानने वाला, मित्रों का स्नेही, सुन्दर बुद्धि वाला, बलवान्, सुन्दर कीर्ति से युक्त और परम उदार होता है ॥ ७ ॥

भावसंवत्सरजन्मफलम्—

प्रशस्तचेताः सुतरां यशस्वी गुणान्वितो दानरतो विनीतः ।
सदा सहर्षोऽभिमतो बहूनां भावाभिधानोद्भवमानवः स्यात् ॥८॥

भाव संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य उदार चित्त वाला, अति यशस्वी, गुणवान्, दान में रत, नम्र, सदा आनन्द युक्त और बहुतों का स्नेही होता है ॥ ८ ॥

युवसंवत्सरजन्मफलम्—

प्रसन्नमूर्त्तिर्गुणवान्विनीतः शान्तश्च दानाभिरतो नितान्तम् ।
सुधीश्चिरायुर्दृढदेहशाली जातो युवाब्दे पुरुषः सतोषः ॥ ९ ॥

युवा संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य गुणवान्, विनीत, शान्त, अत्यन्त दानी, पण्डित, दीर्घायु, नीरोग और सन्तोषी होता है ॥ ९ ॥

धातृसंवत्सरजन्मफलम्—

सर्वलोकगुणगौरवयुक्तः सुन्दरोऽप्यतितरां गुरुभक्तः ।
शिल्पशास्त्रकुशलश्च सुशीलो धातृवत्सरभवो हि नरः स्यात् ॥१०॥

धाता संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य सब प्रकार के गुण, गौरव से युक्त, सुन्दर, अत्यन्त गुरुभक्त, शिल्प शास्त्र में कुशल और सुशील होता है ॥ १० ॥

ईश्वरसंवत्सरजन्मफलम्—

तत्कालसंजातमहाप्रकोपो हर्षाभियुक्तो गुणवान्प्रतापी ।
दक्षः कलाकौशलशीलशाली मर्त्यो भवेदीश्वरजातजन्मा ॥ ११ ॥

ईश्वर संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य बहुत शीघ्र कोप करने वाला, हर्ष से युक्त, गुणी, प्रतापी, चतुर, कलाओं का ज्ञाता और अच्छे स्वभाव वाला होता है ॥ ११ ॥

बहुधान्यसंवत्सरजन्मफलम्—

व्यापारदक्षः क्षितिपालमानी दानभिमानी ननु शास्त्रवेत्ता ।
बहुप्रकारैर्बहुधान्यवित्तः स्यान्मानवो वै बहुधान्यजन्मा ॥ १२ ॥

बहुधान्य संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य व्यापार करने में चतुर, राजमान्य, दानी, अभिमानी, शास्त्र को जानने वाला और अनेक उपाय के द्वारा बहुत धान्य से युक्त होता है ॥ १२ ॥

प्रमाथिसंवत्सरजन्मफलम्—

रथध्वजच्छत्रतुरङ्गमाद्यैर्युतश्च शास्त्राभिरतोऽरिहन्ता ।
मन्त्री नरेन्द्रस्य नरः श्रुतिज्ञः प्रमाथिसंवत्सरसंभवः स्यात्॥१३॥

प्रमाथी संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य रथ, ध्वज, छत्र, घोड़ा आदि से युक्त, शास्त्र में रत शत्रु को मारने वाला, राजमन्त्री और वेद को जानने वाला होता है ॥ १३ ॥

विक्रमसंवत्सरजन्मफलम्—

अत्युग्रकर्माभिरतो नितान्तमरातिचक्रक्रमणेऽतिदक्षः।
शूरश्च धीरोऽतितरामुदारः पराक्रमी विक्रमवर्षजातः॥ १४॥

विक्रम संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य अत्यन्त कठिन कार्य को करने वाला, शत्रुओं के ऊपर चढ़ाई करने में चतुर, शूर, धीर, उदार और पराक्रमी होता है॥ १४॥

वृषसंवत्सरजन्मफलम्—

कार्यप्रलापी किल निन्द्यशीलः खलानुयातः परकर्मकर्त्ता।
भर्ता बहूनां मलिनोऽलसश्च जातो वृषाब्दे मनुजोऽतिलुब्धः॥१५॥

वृष संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य अधम, निन्द्यस्वभाव वाला, खलों के साथ रहने वाला, दूसरे के कार्य करने वाला, बहुत स्त्री वाला, मलिन हृदय वाला, आलसी और लोभी होता है॥ १५॥

चित्रभानुसंवत्सरजन्मफलम्—

चित्रवस्त्रकुसुमैकमानसो मानसोद्भवचयान्वितः सदा।
चारुशीलविलसत्कलान्वितश्चित्रभानुजननो हि पूरुषः॥ १६॥

चित्रभानु संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य नाना प्रकार के वस्त्र और पुष्प में प्रेम रखने वाला, नाना प्रकार के मनोरथ से युक्त, सुन्दर स्वभाव से शोभित, कलाओं से युक होता है॥ १६॥

सुभानुसंवत्सरजन्मफलम्—

अरालकेशः सरलः सुकान्तिर्जितारिपक्षो मतिमान्विनीतः।
प्रसन्नमूर्तिर्विलसद्विभूतिः सुभानुसंवत्सरजातजन्मा॥ १७॥

सुभानु संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर केश वाला, सरल स्वभाव वाला, सुन्दर स्वरूप, बहुत शत्रु वाला, बुद्धिमान्, नम्र, प्रसन्न मूर्ति वाला और नाना प्रकार के ऐश्वर्य से युक्त होता है॥ १७॥

तारणसंवत्सरजन्मफलम्—

धूर्तश्च शूरश्चपलः कलाज्ञः सुनिष्ठुरो गर्हितकर्मकर्त्ता।
उत्पन्नभोक्ता द्रविणेन युक्तः स्यात्तारणाब्दोद्भवमानवो यः॥१८॥

तारण संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य धूर्त शूर, चञ्चल, कलाओं को जानने वाला, बड़े निठुर, निन्द्य कर्म करने वाला, भोगी और धन से युक्त होता है ॥ १८ ॥

पार्थिवसंवत्सरजन्मफलम्—

स्वधर्मकर्माभिरतो नितान्तं सच्छास्त्रपारङ्गमतामुपेतः ।
कलाकलापे कुशलो विलासी यः पार्थिवाब्दे कुलपार्थिवस्स्यात्१९

पार्थिव संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य अपने धर्म कर्म में रत, शास्त्रों में पारङ्गत, कलाओं में चतुर, विलास करने वाला और अपने कुल में मुख्य होता है ॥ १९ ॥

व्ययसंवत्सरजन्मफलम्—

सौख्येऽतिरक्तो व्यसनाभिभूतो भीतो न किञ्चिद्ग्रहणादृणी स्यात् ।
जातः पुमानस्थिरचित्तवृत्तिर्व्ययाभिधाने व्ययकर्मशीलः ॥२०॥

व्यय संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य सुख में रत, व्यसनो में रत, किसो से कुछ याचना करने में भय रहित, इस लिये ऋणी होता है। तथा चञ्चल स्वभाव वाला, व्यय करने वाला होता है ॥ २० ॥

सर्वजित्संवत्सरजन्मफलम्—

राजगौरवमहोत्सवः शुचिर्मानवः पृथुतनुर्महीपतिः ।
वैरिवर्गविजयोद्यतः सदा सर्वजिच्छरदि यस्य सम्भवः ॥ २१ ॥

सर्वजित्संवत्सरमें उत्पन्न मनुष्य राजाओं के आदर से युक्त, पवित्र, मोटे शरीर वाला, स्वयं भी राजा और शत्रुओं को पराजित करने वाला होता है ॥ २१ ॥

सर्वधारिसंवत्सरजन्मफलम्—

भूरिभृत्यबहुभोगसंयुतः सुन्दरश्च मधुरान्नभुक्सदा ।
धीरतागुणयुतोतिधारणः सर्वधारिणि च यस्य सम्भवः ॥२२॥

सर्वधारी संवत्सर में उत्पन्न मनुष्यव हुत नोकर और वहुत भोग सुख से युक्त, सुन्दर, सदा मिष्टान्न पाने वाला, धीरता रूप गुण से युक्त, तथा अत्यन्त धारणाशक्ति वाला होता है ॥ २२ ॥

विरोधिसंवत्सरजन्मफलम्—

वक्ता विदेशाटनतां प्रपन्नः कुटुम्बसौख्याय न चातिधूर्तः ।
जनेन साकं गतसख्यवृत्तिर्विरोधिवर्षप्रभवो नरः स्यात् ॥२३॥

विरोधी संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य वक्ता, विदेश में घूमने वाला, कुटुम्बों को सुख नहीं देने वाला, अत्यन्त धूर्त, और लोगों के साथ विरोध करने वाला होता है ॥ २३ ॥

विकृतिसंवत्सरजन्मफलम्—

निर्धनः किल करालतां गतो दीर्घपूर्वबहुगर्वसंयुतः ।
चारुबुद्धिरहितोऽप्यसौहृदो मानवो विकृतिवर्षसम्भवः ॥ २४ ॥

विकृति संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य निर्धन, क्रूर, अधिक अहंकारी, सुन्दर बुद्धि से रहित और किसी से मित्रता न रखने वाला होता है ॥ २४ ॥

खरसंवत्सरजन्मफलम्—

कामातुरो धूसरकायकान्तिः कठोरदीर्घस्वरफल्गुवाक्यः ।
क्लेशी च लज्जाविधिवर्जितः स्यान्नरः खराब्दप्रभवोऽतिदीर्घः॥२५॥

खर संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य कामातुर, मलिन शरीर वाला, विना प्रयोजन उच्च स्वर से कठोर शब्द बोलने वाला, क्लेश युक्त और निर्लज्ज होता है ॥ २५ ॥

नन्दनसंवत्सरजन्मफलम्—

तडागवापीगृहकूपकर्ता सदान्नदानाभिरुचिः शुचिः स्यात् ।
विलासिनीनन्दनजातहर्षो नरो भवेन्नन्दनवर्षजातः ॥ २६ ॥

नन्दन संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य तड़ाग, वापी, गृह और कूप निर्माण करने वाला, सदा अन्न दान करने में रत, पवित्र, स्त्री पुत्रों से आनन्द युक्त होता है ॥ २६ ॥

विजयसंवत्सरजन्मफलम्—

सङ्ग्रामधीरः सुतरां सुशीलो भूपालमान्यो वदतां वरेण्यः ।

दाता दयालुः किल वैरिहन्ता यस्य प्रसूतिर्विजयाभिधाने ॥२७॥

विजय संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य रण में विजय पाने वाला, सुन्दर स्वभाव वाला, राजमान्य, वक्ता, दाता, दयालु और शत्रुओं को जीतने वाला होता है ॥ २७ ॥

जयसंवत्सरजन्मफलम्—

शास्त्रप्रसङ्गे विदुषां विवादी मान्यो वदान्यो रिपुवर्गहन्ता ।
जयाभिलाषी विषयानुरक्तो जातो जयाब्दे मनुजो महौजाः ॥२८॥

जय संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य शास्त्र के प्रसङ्ग लेकर पण्डितों से विवाद करने वाला, लोक मान्य, दानी, शत्रुओं को नाश करने वाला, जय की अभिलाषा करने वाला, विषय सुख में लीन और तेजस्वी होता है ॥ २८ ॥

मन्मथसंवत्सरजन्मफलम्—

भूषाविशेषैः सहितश्च योषाविलासशीलोऽमृतवाक्कलाज्ञः ।
सङ्गीतनृत्याभिरतश्च भोक्ता यो मन्मथाब्दे जनन प्रपन्नः ॥२९॥

मन्मथ संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य विशेष विभूषण से युक्त, स्त्री सुख से युक्त प्रिय बोलने वाला नृत्य गीत आदि में रत, और भोगी होता है ॥ २९ ॥

दुर्मुखसंवत्सरजन्मफलम्—

क्रूरोद्धतो निन्द्यमतिश्च लुब्धो वक्रास्यबाह्वङ्घ्रिरघप्रियः स्यात् ।
विरुद्धभावो बहुदुष्टचेष्टो यो हायने दुर्मुखनाम्नि जातः ॥३०॥

दुर्मुख संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य क्रूर, उद्दण्ड, निन्द्य बुद्धि वाला, लोभी, टेढ़े मुख, भुज, और पैर वाला, पापों में प्रेम रखने वाला, विरुद्ध स्वभाव वाला और बहुत दुष्ट होता है ॥ ३० ॥

हेमलम्बसंवत्सरजन्मफलम्—

तुरङ्गहेमाम्बरधान्यरत्नैर्युतो नितान्तं सुतदारसौख्यः ।
समस्तवस्तुग्रहणैकबुद्धिर्यो हेमलम्बे पुरुषोऽभिजातः ॥ ३१ ॥

हेमलम्बी संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य घोड़ा, हाथी, सुवर्ण, धान्य,

रत्न इन सबों से युक्त, स्त्री, पुत्र आदि के सुख से युक्त और सब वस्तुओं का संग्रह करने वाला होता है ॥ ३१ ॥

विलम्बसंवत्सरजन्मफलम्—

धूर्तोऽतिलुब्धोऽलसतां प्रपन्नः श्लेष्माधिकः सत्त्वविवर्जितश्च ।
प्रारब्धकार्ये नितरां प्रलापी विलम्बसंवत्सरसम्भवः स्यात् ॥३२॥

विलम्बी संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य धूर्त, अत्यन्त लोभी, आलस्य युक्त, कफाधिक्य शरीर वाला, बलहीन, प्रारब्धवादी और विना प्रयोजन के बोलने वाला होता है ॥ ३२ ॥

विकारिसंवत्सरजन्मफलम्—

दुराग्रही सर्वकलाप्रवीणः सुसंग्रही चञ्चलधीश्च धूर्तः ।
अनल्पजल्पस्सुहृद्विकल्पो विकारिसंवत्सरजो नरः स्यात् ॥३३॥

विकारी संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य दुराग्रही सब कलाओं में निपुण, संग्रह करने वाला, चञ्चल बुद्धि वाला, धूर्त, अधिक बोलने वाला, और मित्रों में विश्वास न रखने वाला होता है ॥ ३३ ॥

शर्वरीसंवत्सरजन्मफलम्—

वणिक्क्रियायां कुशलो विलासी नैवानुकूलश्च सुहृज्जनानाम् ।
अनेकविद्याभ्यसनानुरक्तः संवत्सरे शार्वरिनाम्नि जातः ॥३४॥

शर्वरी संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य वाणिज्य में कुशल, विलास में लीन, मित्रों के विरुद्ध कार्य करने वाला, और अनेक प्रकार की विद्या को जानने वाला होता है ॥ ३४ ॥

प्लवसंवत्सरजन्मफलम्—

कामी प्रकामं धनवांश्च शश्वत्सेवादरो दारजितोऽथ तृप्तः ।
सुगुप्तबुद्धिश्चपलस्वभावः प्लवाभिधानोद्भवो नरः स्यात् ॥३५॥

प्लव संवत्सर में उत्पन्न जातक अत्यन्त कामी, धनवान्, सदा सेवा से आदर पाने वाला, स्त्री से पराजित, तृप्त, गुप्तबुद्धि वाला, और चञ्चल स्वभाव वाला होता है ॥ ३५ ॥

शुभकृत्संवत्सरजन्मफलम्—

सौभाग्य विद्याविनयैः समेतः पुण्यैरगण्यैरपि दीर्घजीवी ।
स्यान्मानवः सूनुधनोरुसंपद्यस्य प्रसूतिः शुभकृत्समासु ॥ ३६ ॥

शुभकृत संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य सौभाग्य, विद्या, विनय, उत्कृष्ट पुण्यों से युक्त, दीर्घजीवी अधिक पुत्र और धनों से युक्त होता है॥३६॥

शोभनसंवत्सरजन्मफलम्—

सर्वोन्नतश्चारुगुणो दयालुः सत्कर्मकर्ता विजयी विशेषात् ।
कान्तो विनीतः शुभदृक्प्रवीणो यः शोभने वत्सरके हि जातः॥३७॥

शोभन संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य सब प्रकार से उन्नत, सुन्दर गुण वाला, दयालु, शुभ कर्म करने वाला विशेष कर विजयी, सुन्दर, नम्र, सुन्दर दृष्टि वाला और प्रवीण होता है ॥ ३७ ॥

क्रोधिसंवत्सरजन्मफलम्—

क्रूरेक्षणः क्रूरतरस्वभावः स्त्रीवल्लभः पर्वततुल्यगर्वः ।
स्यादन्तरायः परकार्यकाले क्रोधी भवेत्क्रोधिशरत्प्रसूतः ॥ ३८ ॥

क्रोधी संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य पापदृष्टि, पापबुद्धि, स्त्री का स्नेही, वडे अहंकारी, दूसरों के कार्य में विघ्न डालने वाला और बड़े क्रोधी होता है ॥ ३८ ॥

विश्वावसुसंवत्सरजन्मफलम्—

सपुत्रदारः सुतरामुदारो नरः सदाचाररतोऽतिधीरः ।
मिष्टान्नभुक्सर्वगुणाभिरामो विश्वावसौ यस्य भवेत्प्रसूतिः ॥३९॥

जिस मनुष्य का जन्म विश्वावसु संवत्सर में हो वह स्त्री, पुत्रों से युक्त, बड़े उदार, सदाचार में रत धीर, मिष्टान्नभोक्ता और सब गुणों से युक्त होता है ॥ ३९ ॥

पराभवसंवत्सरजन्मफलम्—

धनस्य धान्यस्य च नैव किञ्चित्सुसंग्रहोऽत्यन्तकठोरवाक्यः ।
आचारहीनत्वशठत्वयुक्तोः पराभवे यस्य भवेत्प्रसूतिः ॥ ४० ॥

पराभव संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य धन, धान्य का नहीं संग्रह

करने वाला, कठोर बोलने वाला, आचार रहित, और धूर्तता से युक्त होता है ॥ ४० ॥

प्लवङ्गसंवत्सरजन्मफलम्—

भवेदलं चञ्चलचित्तवृत्तिर्न स्यात्प्रवृत्तः खलु साधुकार्ये ।

धूर्तः सदाचारविचारहीनः प्लवङ्गजो वै मनुजः कृशाङ्गः ॥४१॥

प्लवङ्ग संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य चञ्चल बुद्धि वाला, अच्छे काम को नहीं करने वाला, धूर्त, आचार विचार से हीन और दुर्बल होता है ॥ ४१ ॥

कीलकसंवत्सरजन्मफलम्

रूपेण मध्यः प्रियवाग्दयालुर्जलाभिलापी त्वनुवेलमेव ।

स्थूलाङ्घ्रिसन्मौलिरलं बलीयान्किलारिकीलः किलके प्रसूतः॥४२॥

कीलक संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य मध्यम स्वरूप वाला प्रिय बोलने वाला, दयावान्, विशेष पानी पीने की अभिलाषा रखने वाला, स्थूल पैर वाला, सुन्दर शिर वाला, बलवान् और शत्रुओं को नाश करने वाला होता है ॥ ४२ ॥

सौम्यसंवत्सरजन्मफलम्—

पण्डितो हि धनवान् बहुभोगी देवतातिथिरुचिः शुचिरुच्चैः ।

सात्त्विकः कृशकलेवरयष्टिः सौम्यवत्सरभवो हि नरः स्यात्॥४३॥

सौम्य संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य पण्डित, धनी, भोगी, देवता और अतिथि में प्रेम रखने वाला, पवित्र, सत्त्वगुणी, तथा दुर्बल शरीर वाला होता है ॥ ४३ ॥

साधारणसंवत्सरजन्मफलम्—

इतस्ततः सञ्चलनानुरक्तो लिपिक्रियायां कुशलो विवेकी ।

क्रोधी शुचिर्भोगनिवृत्तचेताः प्राप्नोति साधारणजः प्रणीतः॥४४॥

साधारण संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य भ्रमण शील, लेख करने, में कुशल विचारी, क्रोधी, पवित्र और भोग विलास से निवृत्त होता है४४

विरोधकृत्संवत्सरजन्मफलम्—

महेश्वराराधनतत्परः स्यात्क्रोधी विरोधी सततं बहूनाम् ।

पराङ्मुखस्तातवचस्यतीव विरोधकृन्नाम्नि च यस्य जन्म ॥४५॥

विरोधी संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य शिव जी के आराधन में तत्पर, क्रोधी, बहुतों से विरोध करने वाला और पिता की आज्ञा नहीं मानने वाला होता है ॥ ४५ ॥

परिधाविसंवत्सरजन्मफलम्—

विद्वान्सुशीलश्च कलाप्रवीणः सुधीश्च मान्यो वसुधाधिपानाम् ।
व्यापारसम्प्राप्तमहाप्रतिष्ठः पुमान्भवेद्वै परिधाविजन्मा ॥ ४६ ॥

परिधावी संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य विद्वान्, सुशील, कलाओं का ज्ञाता, सुन्दर बुद्धि वाला, राजाओं के यहां माननीय और व्यापार से प्रतिष्ठा पाने वाला होता है ॥ ४६ ॥

प्रमादिसंवत्सरजन्मफलम्—

दुष्टोऽभिमानी कलहानुरक्तो लुब्धः कुटुम्बाभिरतश्च दीनः ।
स्यादल्पधीर्गर्हितकर्मकर्ता प्रमादिजन्मा मनुजः प्रमादी ॥ ४७ ॥

प्रमादी संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य दुष्ट अभिमानी, झगड़ालु, लोभी, कुटुम्बों में स्नेह रखने वाला, दुखी, थोड़ी बुद्धि वाला और निन्द्य कर्म करने वाला होता है ॥ ४७ ॥

आनन्दसंवत्सरजन्मफलम्—

स्याद्भूरिदारश्चतुरोऽतिदक्षः शश्वत्सुतानन्दभरप्रपूरः ।
प्राज्ञः कृतज्ञः सुतरां विनीतोऽप्यानन्दजातो मनुजो वदान्यः॥४८॥

आनन्द संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य बहुत स्त्री वाला, चतुर, अत्यन्त कुशल, सदा पुत्र सुख से युक्त, पण्डित, कृतज्ञ, नम्र और दाता होता है ॥ ४८ ॥

राक्षससंवत्सरजन्मफलम्—

क्रूरस्त्वकर्मा कलहानुरक्तः सन्त्यक्तसद्धर्मविचारसारः ।
दयाविहीनश्च ससाहसोऽपि भवेन्नरो राक्षसजातजन्मा ॥ ४९ ॥

राक्षस संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य क्रूर, कुत्सित कर्म करने वाला, झगड़ालु, धर्म विचार से हीन, निर्दयी और साहसी होता है ॥४९॥

नलसंवत्सरजन्मफलम्—

सद्बुद्धिशाली जलसस्यसम्पद्वैश्यानुवृत्तौ कुशलः सुशीलः।
स्यादल्पवित्तो बहुपालकश्च जातो नलाब्दे चपलो मनुष्यः ॥५०॥

नल संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर बुद्धि वाला जल से उत्पन्न वस्तु के व्यापार में चतुर, सुन्दर स्वभाव वाला, अल्प धन वाला, चञ्चल और बहुतों का पालक होता है ॥ ५० ॥

पिङ्गलसंवत्सरजातफलम्—

पिङ्गेक्षणो गर्हितकर्मकर्त्ता स्यादुद्धतश्चञ्चलवैभवाढ्यः।
त्यागी शठोऽत्यन्तकठोरवाक्यो जातो नरः पिङ्गलनामधेये ॥५१॥

पिङ्गल संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य पीले नेत्र वाला, निन्द्य कर्म करने वाला, उद्धत, चञ्चल, सम्पत्ति से युक्त, दाता, शठ और अप्रिय बोलने वाला होता है ॥ ५१ ॥

कालयुक्तसंवत्सरजातफलम्—

अनल्पजल्पप्रियताम्रुपेतस्त्वसाधुबुद्धिर्विधिना वियुक्तः।
कलिप्रसङ्गे किल कालरूपो यः कालयुक्तप्रभवः कृशाङ्गः ॥५२॥

कालयुक्त संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य अधिक निष्प्रयोजन बोलने से आनन्दित होने वाला, कुत्सित बुद्धि वाला, भाग्य हीन, झगड़ा करने के समय कालरूप और दुर्बल शरीर वाला होता है ॥ ५२ ॥

सिद्धार्थिसंवत्सरजातफलम्—

उदारचेता विलसत्प्रसादो रणाङ्गणप्राप्तयशाः सुवेषः।
नरेन्द्रमन्त्री बहुपूजितार्थी सिद्धार्थिजातो मनुजः समर्थः ॥५३॥

सिद्धार्थी संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य उदार हृदय वाला, प्रसन्नता से युक्त, रण में कीर्ति को पाने वाला, सुन्दर स्वरूप वाला, राजा का मन्त्री, बहुतों से पूजित और समर्थ होता है ॥ ५३ ॥

रौद्रसंवत्सरजातफलम्—

भयङ्करः पालयिता पशूनां शश्वत्परीवादपरोऽतिधूर्तः।
जातापकीर्तिः खलचित्तवृत्तिर्नरोऽतिरौद्रः खलु रौद्रजन्मा ॥५४॥

रौद्र संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य भयङ्कर, पशुओं का पालन करने वाला, सदा दूसरे को निन्दा करने में तत्पर, धूर्त, दुष्कीर्ति से युक्त दुष्ट चित्त वाला और क्रूर होता है ॥ ५४ ॥

दुर्मतिसंवत्सरजातफलम्—

स्ववाक्यनिर्वाहमहाभिमानः प्रसन्नताहीनतरो नरः स्यात् ।
कामी प्रकामं दुरितप्रवृत्तिर्यो दुर्मतिर्दुर्मतिवर्षजातः ॥ ५५ ॥

दुर्मति संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य अपनी बात को पूरा करने में अभिमानी, प्रसन्नता से रहित, अत्यन्त कामी, कुकर्म करने वाला और दुर्बुद्धि होता है ॥ ५५ ॥

दुन्दुभिसंवत्सरजातफलम्—

नित्यं नरेन्द्रार्पितगौरवः स्याद्गजाश्वभूहेमसमन्वितश्च ।
तौर्यत्रिकप्रीतिरतीव जातश्चेन्मानवो दुन्दुभिनामधेये ॥ ५६ ॥

दुन्दुभी संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य सदा राजाओं से गौरव पाने वाला, हाथी, घोड़ा, पृथिवी, सुवर्ण आदि सम्पत्ति से युक्त और नृत्य गीत आदि में प्रेम करने वाला होता है ॥ ५६ ॥

रुधिरोद्गारिसंवत्सरजातफलम्—

आरक्ताक्षः क्वचिदपि महाकामलाद्यामयानां
प्रादुर्भावादतिकृशतनुर्जायतेऽत्यन्तरोषः ।
पादद्वन्द्वे भवति कुनखो हस्तयुग्मेऽथवा स्या-
च्छस्त्राद्दुःखं व्रजति रुधिरोद्गारिजन्मा मनुष्यः ॥५७॥

रुधिरोद्गारी संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य लाल नेत्र वाला, कभी २ कामला आदि रोगों से अत्यन्त दुर्बल शरीर वाला, अतिक्रोधी, खराब नख वाला और शस्त्र के प्रहार से कष्ट पाने वाला होता है ॥ ५७ ॥

रक्ताक्षीसंवत्सरजातफलम्—

आचारधर्माभिरतो नितान्तं मनोभवोत्कर्षतरो नरः स्यात् ।
अन्याधिकत्वं सहते न किञ्चिद्रक्ताक्षिजातोऽक्षिरुजान्वितश्च ॥५८॥

रक्ताक्षी संवत्सर में उत्पन्न मनुष्य आचार-धर्म से युक्त, अत्यन्त कामी, दूसरों की उन्नति नहीं सहन करने वाला और नेत्ररोगी होता है ॥ ५८ ॥

क्रोधनसंवत्सरजातफलम्—

स्यादन्तरायो हि परस्य कार्ये तमोगुणाधिक्यभयङ्करश्च ।
परस्य बुद्धिं प्रहरेत्प्रकामं यो हायने क्रोधननाम्नि जातः ॥५९॥

क्रोधन संवत्सर में उत्पन्न जातक दूसरे के कामों में विघ्न डालने वाला, तमोगुण से अत्यन्त भयङ्कर और दूसरों को ठगने वाला होता है ॥ ५९ ॥

क्षयसंवत्सरजातफलम्—

उपार्जितार्थव्ययकृन्नितान्तं सेवारतो निष्ठुरचित्तवृत्तिः ।
सत्कर्ममार्गेऽल्पमनःप्रवृत्तिः क्षयाभिधाने जननं हि यस्य ॥६०॥

क्षय संवत्सर में जिस का जन्म हो वह उपार्जन कर व्यय करने वाला, नौकरी करने वाला, कठोर और अच्छे कामों में थोड़ा मन देने वाला होता है ॥ ६० ॥

इति प्रभवादिसंवत्सरोत्पन्नफलम् ॥

अथाऽयनफलम्, तत्रोत्तरायणजन्मफलम्—

शश्वत्प्रसन्नो ननु सूनुकान्तासंतोषयुक्तोऽतितरां चिरायुः ।
नरः सदाचारपरोऽप्युदारो धीरश्च सौम्यायनजातजन्मा ॥ १ ॥

सौम्यायन में उत्पन्न मनुष्य सर्वदा प्रसन्न, स्त्री पुत्र के द्वारा हर्ष युक्त, दीर्घायु, सदाचारी, उदार और धीर होता है ॥ १ ॥

दक्षिणायनजन्मफलम्—

अखर्वगर्वः कृषिकर्मकर्ता चतुष्पदाढ्योऽतिकठोरचित्तः ।
शठोऽप्यसह्यो ननु मानवानां याम्यायने ना जननं प्रपन्नः ॥ २ ॥

दक्षिणायन में उत्पन्न मनुष्य बड़े अहंकारी, खेती करने वाला,

पशुओं से युक्त, कठोर हृदय वाला, धूर्त और किसी का नहीं सहने वाला होता है ॥ २ ॥

अथ प्रसङ्गादयनविचारः—

मकराद्राशिषट्केऽर्के प्रोक्तं चैवोत्तरायनम् ।
षट्सु कर्कादितो ज्ञेयं दक्षिणं ह्ययनं रवेः ॥

मकर आदि ६ राशियों में सूर्य हो तो सौम्यायन और कर्क आदि ६ राशियों में हो तो दक्षिणायन होता है ।

अथर्तुफलम्, तत्र वसन्तर्तुजन्मफलम्—

कन्दर्परूपो मतिमान्प्रतापी सङ्गीतशास्त्रे गणिते प्रवीणः ।
शास्त्रप्रसूतामलचैलचेता वसन्तजन्मा मनुजः प्रसन्नः ॥ १ ॥

वसन्त ऋतु में उत्पन्न मनुष्य काम के सदृश सुन्दर, बुद्धिमान्, प्रतापी, सङ्गीत और गणित शास्त्र में प्रवीण, शास्त्र के अभ्यास से निर्मल हृदय वाला और प्रसन्न होता है ॥ १ ॥

ग्रीष्मऋतुजन्मफलम्—

ऐश्वर्यविद्याधनधान्ययुक्तो वक्ता प्रलम्बामलकेशपाशः ।
भोगी भवेन्नीरविहारशीलो यो ग्रीष्मकालोद्भवतां प्रपन्नः ॥ २ ॥

जिस का जन्म ग्रीष्म ऋतु में हो वह ऐश्वर्य, विद्या, धन, धान्यों से युक्त, उपदेश करने वाला, लम्बा तथा स्वच्छ केश वाला, भोगी और जल में क्रीड़ा करने वाला होता है ॥ २ ॥

वर्षर्तुजन्मफलम्—

संग्रामधीरो मतिमान्प्रतापी तुरङ्गमप्रेमकरः सुरूपः ।
कफानिलात्मा ललनाविलासी वर्षोद्भवो वै पुरुषः सहर्षः ॥३॥

वर्षा ऋतु में उत्पन्न मनुष्य बुद्धिमान्, प्रतापी, घोड़े से प्रेम करने वाला, सुन्दर, कफ वायु प्रकृति वाला, स्त्री के साथ विलास करने वाला और विचित्र विचार करने वाला होता है ॥ ३ ॥

शरदृतुजन्मफलम्—

अपूर्णरोषः पुरुषोनिलात्मा मानी धनी कर्मरुचिः शुचिः स्यात् ।

रणप्रियो वाहनसंयुतश्च ऋतौ शरन्नाम्नि च यस्य जन्म ॥४॥

शरद् ऋतु में उत्पन्न मनुष्य थोड़े क्रोध वाला, वायु प्रकृति, मानी, धनी, सत्कर्म में रुचि रखने वाला, पवित्र, रणप्रिय और वाहनों से युक्त होता है । ४ ॥

हेमन्तर्तुजन्मफलम्—

नरेन्द्रमन्त्री चतुरोऽप्युदारो नरो भवेच्चारुगुणोपपन्नः ।
सत्कर्मधर्मानुरतो मनस्वी हेमन्तजातः सततं विनीतः ॥ ५ ॥

हेमन्त ऋतु में उत्पन्न मनुष्य राजमन्त्री, चतुर, अति उदार, सुन्दर गुणों से युक्त, शुभ कर्म धर्म में निरत और मनस्वी होता है ॥ ५ ॥

शिशिरर्तुजन्मफलम्—

मिष्टान्नपानानुरतो नितान्तं क्षुधान्वितः पुत्रकलत्रसौख्यः ।
सत्कर्मवेषः पुरुषः सरोषो बलाधिशाली शिशिरर्तुजन्मा । ६ ॥

शिशिर ऋतु में उत्पन्न मनुष्य मिष्टान्न खाने में निरत, अत्यन्त क्षुधातुर, पुत्र, स्त्री के सुख से युक्त, सुन्दर कर्म करने वाला, सुन्दर स्वरूप वाला, क्रोधी और महाबली होता है । ६ ॥

अथ प्रसङ्गादृतुज्ञानमाह—

मीनमेषगते सूर्ये वसन्तः परिकीर्तितः ।
वृषभे मिथुने ग्रीष्मो वर्षा कर्कटसिंहयोः ॥
कन्यायां च तुलायां च शरदृतुरुदाहृतः ।
हेमन्तो वृश्चिकद्वन्द्वे शिशिरो मृगकुम्भयोः ॥

मीन, मेष का सूर्य हो तो वसन्त, वृष, मिथुन का ग्रीष्म, कर्क, सिंह का वर्षा, कन्या, तुला का शरत्, वृश्चिक, धनु का हेमन्त और मकर, कुम्भ का सूर्य हो तो शिशिर ऋतु होता है ॥

अथ मासफलम, तत्रादौ चैत्रमासफलम्—

सत्कर्मविद्याविनयोपपन्नो भोगी नरः स्यान्मधुरान्नभोजी ।
सत्पात्रमित्रानुरतश्च मन्त्री चैत्रोद्भवश्चापि विचित्रमन्त्रः ॥ १ ॥

चैत्र मास में उत्पन्न मनुष्य उत्तम कर्म, विद्या, नम्रता इन सबों से युक्त, भोगी, मिष्टान्न भोजन करने वाला, सज्जन, मित्र में प्रेम रखने वाला, राजमन्त्री और विचित्र विचार करने वाला होता है ॥ १ ॥

वैशाखमासजन्मफलम्—

सुलक्षणः पुण्यगुणानुशीलः पुमान्बलीयान्द्विजदेवभक्तः ।
कामी चिरायुर्जलपानशीलः स्यान्माधवे बान्धवसौख्ययुक्तः ॥२॥

वैशाख मास में उत्पन्न मनुष्य उत्तम लक्षणों से युक्त, पुण्य और गुण का अन्वेषण करने वाला, बली, देव ब्राह्मण में भक्ति रखने वाला, कामी, दीर्घायु, तृषार्त और बन्धुओं के सुख से युक्त होता है ॥ २ ॥

ज्येष्ठमासजन्मफलम्—

क्षमान्वितश्चञ्चलचित्तवृत्तिर्विदेशवासाभिरुचिश्च तीव्रः ।
विचित्रबुद्धिः खलु दीर्घसूत्रो ज्येष्ठोद्भवः श्रेष्ठतरो नरः स्यात् ॥३॥

ज्येष्ठ मास में उत्पन्न मनुष्य क्षमाशील, चञ्चल, विदेश वास में रुचि रखने वाला, तीव्र, विचित्र बुद्धिवाला, कर्म को देर से करने वाला और लोगों में माननीय होता है ॥ ३ ॥

आषाढमासजन्मफलम्—

बहुव्ययोऽनल्पवचोविलासः प्रमादशीलो गुरुवत्सलश्च ।
सदाग्निमान्द्यः शुभकर्मकृत्स्यादाषाढजो गाढतराभिमानः ॥४॥

आषाढ मास में उत्पन्न मनुष्य अधिक व्यय करने वाला, बहुत बोलने वाला, स्त्री के समान स्वभाव वाला, गुरु का प्रिय, मन्दाग्नि वाला, उत्तम कर्म करने वाला और अत्यन्त अभिमानी होता है ॥ ४ ॥

श्रावणमासजन्मफलम्—

पुत्रैश्च पौत्रैश्च कलत्रमित्रैः सुखी च तातस्य निदेशकर्ता ।
लोकप्रसिद्धः कफवान्वदान्यो गुणान्वितः श्रावणमासजन्मा ॥५॥

श्रावण मास में उत्पन्न मनुष्य पुत्र, पौत्र, स्त्री, मित्र इन सबों से सुखी, पिता की आज्ञा मानने वाला, लोक में विख्यात, कफी, दाता और गुणी होता है ॥ ५ ॥

भाद्रमासजन्मफलम्—

श्रीमान् भवेत्क्षीणकलेवरश्च दाता च कान्तासुतजातसौख्यः ।
सुखे च दुःखे त्रिकृतो हि मर्त्यो भवेन्नरो भाद्रपदात्तजन्मा ॥ ६ ॥

भाद्र मास में उत्पन्न मनुष्य धनवान्, दुर्बल, दाता, स्त्री, पुत्र के सुख से युक्त और सुख-दुःख दोनों में समान रूप होता है ॥ ६ ॥

आश्विनमासजन्मफलम्—

विद्वान् धनी राजकुलप्रियश्च सत्कार्यकर्त्ता बहुभृत्ययुक्तः ।
दाता गुणज्ञो बहुपुत्रसम्पत्स्यादाश्विनेऽश्वादिसमृद्धियुक्तः ॥ ७ ॥

आश्विन मास में उत्पन्न मनुष्य विद्वान्, धनी, राजकुल के प्रिय, अच्छे काम को करने वाला, बहुत नौकरों से युक्त, दाता, गुणज्ञाता, बहुत पुत्र वाला और घोड़ा आदि सम्पत्ति से युक्त होता है ॥ ७ ॥

कार्तिकमासजन्मफलम्—

सत्कर्मकर्ता बहुवाग्विलासो धनी लसत्कुञ्चितकेशपाशः ।
कामं सकामः क्रयविक्रयार्थी सत्कृत्यकृत्कार्तिकजातजन्मा ॥८॥

कार्तिक मास में उत्पन्न मनुष्य अच्छे काम को करने वाला, अधिक बोलने वाला, धनी, सुन्दर केश वाला, कामी और क्रय विक्रय में चतुर होता है ॥ ८ ॥

अग्रहणमासजन्मफलम्—

सत्तीर्थयात्रानिरतः सुशीलः कलाकलापे कुशलो विलासी ।
परोपकर्ता धृतसाधुमार्गो मार्गोद्भवो वै विभवैः समेतः ॥ ९ ॥

मार्गशीर्ष में उत्पन्न मनुष्य तीर्थ यात्रा करने में निरत, सुशील, कलाओं में कुशल, विलास करने वाला, परोपकारी, सज्जनमार्गानुगामी और धन धान्य युक्त होता है ॥ ९ ॥

पौषमासजन्मफलम्—

परोपकारी पितृवित्तहीनः कष्टार्जितार्थव्ययकृद्विधिज्ञः ।
सुगुप्तमन्त्रः कृशगात्रयत्नः पौषे विशेषात्पुरुषः कृतज्ञः ॥ १० ॥

पौष मास में उत्पन्न मनुष्य परोपकारी, पिता के धन से रहित, कष्ट से धन को उपार्जन कर व्यय करने वाला, कार्य में चतुर, गुप्त विचार रखने वाला, शास्त्राभ्यासी और दुर्बल शरीर वाला होता है॥१०॥

माघमासजन्मफलम्—

सन्मन्त्रविद्वैदिकसाधुयोगो योगोक्तविद्याभ्यसनानुरक्तः।
बुद्धेर्विशेषान्निहतारिसंघो मघोद्भवः स्यादनघो मनुष्यः॥११॥

माघ मास में उत्पन्न मनुष्य मन्त्र शास्त्र को जानने वाला, वेदज्ञाता, साधुओं का सङ्ग करने वाला, योगक्रिया में रत, बुद्धि की विशेषता से शत्रुओं को जीतने वाला और पुण्यवान् होता है॥ ११॥

फाल्गुनमासजन्मफलम्—

परोपकारी कुशलो दयालुर्बलान्वितः कोमलकायशाली।
विलासनीकेलिविधानशीलो यः फाल्गुने फल्गुवचो विलासः॥१२॥

फाल्गुन मास में उत्पन्न मनुष्य परोपकारी, चतुर, दयालु, बली, कोमल शरीर वाला, स्त्री के साथ विलास करने में चतुर और बिना प्रयोजन के बात करने वाला होता है॥ १२॥

मलमासजन्मफलम्—

विषयहीनमतिः सुचरित्रदृग् त्रिविधतीर्थकरश्च निरामयः।
सकलवल्लभ आत्महितंकरः खलु मलिम्लुचमासभवो नरः॥१३॥

अधिकमास (मलमास=पुरुषोत्तममास) में उत्पन्न मनुष्य विषय के ज्ञान से रहित, सच्चरित्र, अनेक तीर्थ में घूमने वाला, नीरोग, सबों का प्रिय और अपना हितैषी होता है॥ १३॥

शुक्लपक्षजन्मफलम्—

चञ्चच्चिरायुः सुतरां सुशीलः श्रीपुत्रवान् कोमलकायकान्तिः।
सदा सदानन्दविनीतकालश्चेज्जन्मकालस्तु वलक्षपक्षे॥ १॥

शुक्ल पक्ष में उत्पन्न मनुष्य दीर्घायु, सुशील, धनवान्, कोमल शरीर वाला और सदा सुख से समय बिताने वाला होता है॥१॥

कृष्णपक्षजन्मफलम्—

प्रतापशीलो विबलश्च लोलः कलिप्रियः स्वीयकुलोद्धतश्च ।
मनोभवाधिक्ययुतो नितान्तं सितेतरे यस्य नरस्य जन्म ॥ २ ॥

कृष्ण पक्ष में उत्पन्न मनुष्य प्रतापी, दुर्बल, चञ्चल, झगड़ालु, अपने कुल में उद्धत और अत्यन्त कामी होता है ॥ २ ॥

दिवाजन्मफलम्—

तेजस्वी पितृसादृश्यश्चारुदृष्टिर्नृपप्रियः ।
बन्धुपूज्यो धनाढ्यश्च दिवाजातो नरो भवेत् ॥ १ ॥

जिसका जन्म दिन में हो वह तेजस्वी, पिता के समान गुण वाला, सुन्दर दृष्टि वाला, राजा का प्रिय, बन्धुओं से पूजित और धनवान् होता है ॥ १ ॥

रात्रिजन्मफलम्—

मन्ददृक् बहुकामार्तः सदा रोगी मलीमसः ।
क्रूरात्मा छन्नपापश्च निशि जातो नरो भवेत् ॥ २ ॥

जिसका जन्म रात्रि में हो वह मन्द दृष्टि, काम से अधिक पीड़ित, सर्वदा रोगी, मलिन, क्रूर और गुप्त पाप करने वाला होता है ॥२॥

अथतिथिफलम्, तत्रादौ प्रतिपज्जन्मफलम्—

बहुजनपरिवारश्चारुविद्यो विवेकी
कनकमणिविभूषावेषशाली सुशीलः ।
अतिसुललितकान्तिर्भूमिपालात्तवित्तः
प्रतिपदि यदीसूतिर्जायते यस्य जन्तोः ॥ १ ॥

जिसका जन्म प्रतिपदा में हो वह मनुष्य बहुत परिवार वाला, सुन्दर विद्या वाला, विचारी, सुवर्णमणि के विभूषण से सुन्दर शरीर वाला, सुशील, मनोहर कान्ति वाला और राजा से धन प्राप्ति करने वाला होता है ॥ १ ॥

द्वितीयाजन्मफलम्—

दाता दयालुर्गुणवान् विवेकी चञ्चत्सदाचारविचारधन्यः ।

प्रसन्नमूर्तिर्बहुगीतकीर्तिर्मर्त्यो द्वितीयातिथिसम्भवः स्यात् ॥२॥

द्वितीया में उत्पन्न मनुष्य दाता, दयालु, गुणी, विचारी, सदाचार के विचार से धन्य, सुन्दर मूर्तिवाला और विख्यात यशवाला होता है ॥ २ ॥

तृतीयाजन्मफलम्—

कामाधिकश्चाप्यनवद्यविद्यो बलान्वितो राजकुलाप्तवित्तः ।
प्रवासशीलश्चतुरो विलासी मर्त्यस्तृतीयाप्रभवोऽभिमानी ॥ ३ ॥

तृतीया में उत्पन्न मनुष्य अत्यन्त कामी, निर्दुष्ट विद्या से युक्त, बली, राजकुल से प्राप्त धन वाला, विदेश में रहने वाला, चतुर, विलासी और अभिमानी होता है ॥ ३ ॥

चतुर्थीजन्मफलम्—

ऋणप्रवृत्तिर्बहुसाहसः स्याद्रणप्रवीणः कृपणस्वभावः ।
द्यूते रतिर्लोलमना मनुष्यो वादी यदि स्याज्जनने चतुर्थी ॥४॥

जिसका जन्म चतुर्थी में हो वह ऋण करने वाला, बहुत साहसी, योद्धा, कृपण, जुआरी, चञ्चल और विवादी होता है ॥ ४ ॥

पञ्चमीजन्मफलम्—

सम्पूर्णगात्रश्च कलत्रपुत्रमित्रान्वितो भूतदयान्वितश्च ।
नरेन्द्रमान्यस्तु नरो वदान्यः प्रसूतिकाले किल पञ्चमी चेत् ॥५॥

जिसका जन्म पञ्चमी में हो वह सुन्दर शरीर वाला, स्त्री, पुत्र, मित्रों से युक्त प्राणियों के ऊपर दयालु, राजमान्य और दाता होता है ॥ ५ ॥

षष्ठीजन्मफलम्—

सत्यप्रतिज्ञो धनसूनुसम्पद्दीर्घोरुजानुर्मनुजो महौजाः ।
प्रकृष्टकीर्तिश्चतुरो वरिष्ठः षष्ठ्यां प्रजातो व्रणकीर्णगात्रः ॥६॥

जिसका जन्म षष्ठी में हो वह अपने वचन को पूरा करने वाला, धनवान्, पुत्रवान्, लम्बा जंघा और लम्बा जानु वाला, महाबली,

सुन्दर कीर्ति वाला, चतुर, श्रेष्ठ तथा घाव से चिन्हित शरीर वाला होता है ॥ ६ ॥

सप्तमीजन्मफलम्—

ज्ञानी गुणज्ञो हि विशालनेत्रः सत्पात्रदेवार्चनचित्तवृत्तिः ।
कन्याजनेता परवित्तहर्ता स्यात्सप्तमीजो मनुजोऽरिहन्ता ॥ ७ ॥

जिसका जन्म सप्तमी में हो वह ज्ञानी, गुण को जानने वाला, विशाल नेत्र वाला, सज्जन और देवताओं में भक्ति रखने वाला, कन्या सन्तान वाला, दूसरे का धन हरने वाला तथा शत्रुओं को जीतने वाला होता है ॥ ७ ॥

अष्टमीजन्मफलम्—

नानासम्पत्सूनुसौख्यः कृपालुः पृथ्वीपालप्राप्तविद्याधिकारः ।
कान्ताप्रीतिश्चञ्चलाचित्तवृत्तिर्यस्याष्टम्यां सम्भवो मानवस्य ॥८॥

जिसका जन्म अष्टमी में हो वह नाना तरह के सम्पत्ति और पुत्र के सुख से युक्त, दयालु, राजा के यहाँ विद्या सम्बन्धी अधिकार वाला, स्त्री में प्रेम रखने वाला और चञ्चल प्रकृति वाला होता है ॥ ८ ॥

नवमीजन्मफलम्—

पराङ्मुखो बन्धुजनस्य कार्ये कठोरवाक्यश्च सुधीर्विरोधी ।
नरः गताचारसमादरः स्यात् यस्य प्रसूतौ नवमी तिथिश्चेत् ॥९॥

नवमी में उत्पन्न मनुष्य बन्धुओं के कार्य में विमुख, कठोर बोलने वाला, बुद्धिमान्, विरोधी, आचार और आदर से हीन होता है ॥९॥

दशमीजन्मफलम्—

धर्मैकबुद्धिर्भववैभवाढ्यः प्रलम्बकण्ठो बहुशास्त्रपाठी ।
उदारचित्तोतितरां विनीतो रम्यश्च कामी दशमीभवः स्यात् ॥१०॥

दशमी में उत्पन्न मनुष्य धर्म में बुद्धि रखने वाला, धन से युक्त, लम्बा गर्दन वाला, अनेक शास्त्र को जानने वाला, उदार, अत्यन्त नम्र, सुन्दर और कामी होता है ॥ १० ॥

एकादशीजन्मफलम्—

देवद्विजार्चार्चनदानशीलः सुनिर्मलान्तःकरणः प्रवीणः ।
पुण्यैकचित्तोत्तमकर्मकृत्स्यादेकादशीजो मनुजः प्रसन्नः ॥ ११ ॥

एकादशी में उत्पन्न मनुष्य देवता और ब्राह्मणों का पूजन करने वाला, दान करने वाला, पवित्र हृदय वाला, कुशल, पुण्यवान्, उत्तमकर्म करने वाला और सदा प्रसन्न चित्त होता है ॥ ११ ॥

द्वादशीजन्मफलम्—

जलप्रियो वै व्यवहारशीलो निजालयावासविलासशीलः ।
सदान्नदाता क्षितिपालवित्तः स्याद्द्वादशीजो मनुजः प्रजावान् ॥१२॥

द्वादशी में उत्पन्न मनुष्य जल में प्रेम करने वाला, व्यवहार को जानने वाला, अपने घर में आनन्द विलास करने वाला, सर्वदा अन्न दान करने वाला और राजा से धन पाने वाला होता है ॥ १२ ॥

त्रयोदशीजन्मफलम्—

रूपान्वितः सात्विकताप्रयुक्तः प्रलम्बकण्ठश्च नरप्रसूतिः ।
नरोतिशूरश्चतुरः प्रकामं त्रयोदशीनामतिथौ प्रसूतः ॥ १३ ॥

त्रयोदशी में जन्म लेने वाला सुन्दर, सत्त्वगुणी, लम्बा गर्दनवाला, पुत्र सन्तान वाला, शूर और चतुर होता है ॥ १३ ॥

चतुर्दशीजन्मफलम्—

क्रूरोतिशूरश्चतुरः सहासः कन्दर्पलीलाकुलचित्तवृत्तिः ।
स्यादुःसहोत्यन्तविरुद्धभाषी चतुर्दशीजः पुरुषः सरोषः ॥ १४ ॥

चतुर्दशी में उत्पन्न मनुष्य क्रूर, अत्यन्त शूर, हसने वाला, कामातुर, किसी का नहीं सहने वाला, अतिशय विरुद्ध बोलने वाला और क्रोधी होता है ॥ १४ ॥

पूर्णिमाजन्मफलम्—

अतिसुललितकायो न्यायसम्प्राप्तवित्तो
बहुयुवतिसमेतो नित्यसञ्जातहर्षः ।

प्रबलतरविलासोत्यन्तकारुण्यपुण्यो
गुणगणपरिपूर्णः पूर्णिमाजातजन्मा ॥ १५ ॥

पूर्णिमा में उत्पन्न मनुष्य अत्यन्त सुन्दर शरीर वाला, न्याय से धनोपार्जन करने वाला, बहुत स्त्रियों से युक्त, सदा आनन्द युक्त, अधिक विलासी, अतिशय दयावान् और गुणों से युक्त होता है ॥१५॥

अमावस्याजन्मफलम्—

शान्तो मनस्वी पितृमातृभक्तः क्लेशाप्तवित्तश्च गमागमेच्छुः ।
मान्यो जनानां हृतकान्तिहर्षो दर्शोद्भवः स्यात्पुरुषः कृशाङ्गः ॥१५॥

जिसका जन्म अमावास्या में हो वह शान्त, मनस्वी, माता पिता का भक्त, कष्ट से धनोपार्जन करने वाला, धनप्राप्ति की इच्छारखने वाला, लोगों में माननीय, कान्ति हर्ष से रहित और दुर्बल शरीर वाला होता है ॥ १६ ॥

अथ वारफलम्, तत्रादौरविवारजन्मफलम्—

शूरोल्पकेशो विजयी रणाग्रे श्यामारुणः पित्तचयप्रकोपः ।
दाता महोत्साहयुतो महौजा दिने दिनेशस्य भवेन्मनुष्यः ॥१॥

रविवार में उत्पन्न मनुष्य शूर, थोड़े केश वाला, युद्ध में विजयी, रक्त लेकर श्याम वर्ण, पित्त प्रकृति, उत्साही और महाबली होता है ॥१॥

सोमवारजन्मफलम्—

प्राज्ञः प्रशान्तः प्रियवाग्विधिज्ञः शश्वन्नरेन्द्राश्रयवृत्तिवर्ती ।
सुखे च दुःखे च समस्वभावो वारे नरः शीतकरस्य जातः ॥२॥

सोमवार में उत्पन्न मनुष्य पण्डित, शान्त स्वभाव वाला, प्रिय बोलने वाला, कार्य को जानने वाला, राजा के आश्रय में जीवन यात्रा चलाने वाला, और सुख, दुःख दोनों में समबुद्धि वाला होता है ॥२॥

भौमवारजन्मफलम्—

वक्रोक्तिरत्यन्तरणप्रियः स्यान्नरेन्द्रमन्त्री च धरोपजीवी ।
सत्त्वान्वितस्तीव्रतरस्वभावो दिने भवेन्नावनिनन्दनस्य ॥ ३ ॥

मङ्गलवार में उत्पन्न मनुष्य कटाक्ष करके बोलने वाला, युद्धप्रिय, राजमन्त्री, कृषि कर्म से जीवन चलाने वाला, बली और तीक्ष्णस्वभाव वाला होता है ॥ ३ ॥

बुधवारजन्मफलम्—

मद्रूपशाली मृदुवाग्विलासः श्रीमान्कलाकौशलतासमेतः ।
वणिक्क्रियायां हि भवेदभिज्ञः प्राज्ञो गुणज्ञो ज्ञदिनोद्भवो यः ॥४॥

बुधवार में उत्पन्न पुरुष सुन्दर रूपवाला, कोमल वक्ता, धनवान्, कलाओं में कुशल, वाणिज्य करने में कुशल, पण्डित और गुणज्ञ होता है ॥ ४ ॥

गुरुवारजन्मफलम्—

विद्वान् धनी सर्वगुणोपपन्नो मनोरमः क्ष्मापतिलब्धकामः ।
आचार्यवर्यश्च जनप्रियः स्याद्वारे गुरोर्यस्य नरस्य जन्म ॥५॥

गुरुवार में जिसका जन्म हो वह विद्वान् , धनी, सब गुणों से सम्पन्न, सुन्दर, राजा से लब्ध मनोरथ, आचार्य और जनप्रिय होता है ॥ ५ ॥

शुक्रवारजन्मफलम—

सुनीलसत्कुञ्चितकेशपाशः प्रसन्नवेषो मतिमान् विशेषात् ।
शुक्लाम्बरः प्रीतिधरो नरः स्यात्सन्मार्गगो भार्गववारजन्मा ॥६॥

शुक्रवार में उत्पन्न मनुष्य काले घुँघुराल केश वाला, प्रसन्न वदन, विशेष बुद्धिमान् , श्वेत वस्त्र का स्नेही और सज्जनों के दर्शित मार्ग से चलने वाला होता है ॥ ६ ॥

शनिवारजन्मफलम्—

अकालसम्प्राप्तजराप्रवृत्तिर्बलोज्झितो दुर्बलदेहयष्टिः ।
तमोगुणी क्रौर्यचयाभिभूतः शनेर्दिने जातजनुर्मनुष्यः ॥ ७ ॥

शनिवार में उत्पन्न मनुष्य अकाल में ही बुढ़ापा से युक्त, निर्बल, दुर्बल शरीर वाला, तामसी और क्रूरता से समन्वित होता है ॥ ७ ॥

अथ नक्षत्रजन्मफलम् , तत्रादावश्विनीनक्षत्रजन्मफलम्—

सदैव सेवाभ्युदितो विनीतः सत्यान्वितः प्राप्तसमस्तसम्पत् ।

योषाविभूषात्मजभूरितोषः स्यादश्विनी जन्मनि मानवस्य ॥१॥

अश्विनी नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य सेवा से प्रकाशित नम्रता वाला, सत्यवक्ता, सब सम्पत्ति को पाने वाला, स्त्री, भूषण और पुत्रसुख से युक्त होता है ॥ १ ॥

भरणीनक्षत्रजन्मफलम्—

सदापकीर्त्तिर्हि महापवादैर्नाना विनोदैश्च विनीतकालः ।
जलातिभीरुश्चपलः खलश्च प्राणी प्रणीतो भरणीभजातः ॥ २ ॥

जिसका जन्म भरणी नक्षत्र में हो वह लोकापवाद से अयश पाने वाला, नाना तरह के खेल से काल बिताने वाला, जल से अत्यन्त भीरु, चञ्चल और दुष्ट होता है ॥ २ ॥

कृत्तिकानक्षत्रजन्मफलम्—

क्षुधाधिकः सत्यधनैर्विहीनो वृथाटनोत्पन्नमतिः कृतघ्नः ।
कठोरवाग्गर्हितकर्मकृत्स्याच्चेत्कृत्तिका जन्मनि यस्य जन्तोः ॥३॥

कृत्तिका नक्षत्र में जिसका जन्म हो वह क्षुधातुर, सत्य धन से रहित, व्यर्थ भ्रमण करने वाला, कृतघ्न, कटुभाषी, और निन्द्य कर्म करने वाला होता है ॥ ३ ॥

रोहिणीनक्षत्रजन्मफलम्—

धर्मकर्मकुशलः कृषीवलश्चारुशीलविलसत्कलेवरः ।
वाग्विलासकलिताखिलाशयो रोहिणी भवति यस्य जन्मभम् ॥४॥

रोहिणी नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य धर्म कर्म करने में चतुर, खेती करने वाला, सुन्दर स्वभाव वाला, सुन्दर और अपनी वाणी से सब आशय को स्पष्ट करने वाला होता है ॥ ४ ॥

मृगशिरोनक्षत्रजन्मफलम्—

शरासनाभ्यासरतो विनीतः सदानुरक्तो गुणिनां गणेषु ।
भोक्ता नृपस्नेहभरेण पूर्णः सन्मार्गवृत्तो मृगजातजन्मा ॥ ५ ॥

जिसका जन्म मृगशिरा नक्षत्र में हो वह धनुर्विद्या में निपुण

नम्र, गुणियों कि गुणों में अनुरक्त, भोगी, राजा के सन्मान पात्र और सन्मार्गगामी होता है ॥ ५ ॥

आर्द्रानक्षत्रजन्मफलम्—

क्षुधाधिको रूक्षशरीरकान्तिर्बन्धुप्रियः कोपयुतः कृतघ्नः ।
प्रसूतिकाले च भवेत्किलार्द्रा दयार्द्रचेता न भवेन्मनुष्यः ॥ ६ ॥

आर्द्रा नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य क्षुधार्त, रूक्ष शरीर के कान्ति वाला, बन्धु प्रिय, क्रोधी, कृतघ्न और दया रहित होता है ॥ ६ ॥

पुनर्वसुनक्षत्रजन्मफलम्—

प्रभूतमित्रः कृतशास्त्रयत्नः सद्रत्नचामीकरभूषणाढ्यः ।
दाता धरित्रीवसुभिः समेतः पुनर्वसुर्यस्य भवेत्प्रसूतौ ॥ ७ ॥

पुनर्वसु नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य अधिक मित्र वाला, शास्त्राभ्यासी, रत्न सुवर्ण के आभूषणों से युक्त, दाता, भूमि और द्रव्य से पूर्ण होता है ७

पुष्यनक्षत्रजन्मफलम्—

प्रसन्नगात्रः पितृमातृभक्तः स्वधर्मसक्तो विनयाभियुक्तः ।
भवेन्मनुष्यः खलु पुष्यजन्मा सन्माननानाधनवाहनाढ्यः ॥ ८ ॥

पुष्य नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर शरीर वाला, माता-पिता का भक्त, अपने धर्म में संलग्न, नम्रता से युक्त, लोगों में माननीय और धन-वाहन से युक्त होता है ॥ ८ ॥

श्लेषानक्षत्रजन्मफलम्—

वृथाटनः स्यादतिदुष्टचेष्टः कष्टप्रदश्चापि वृथा जनानाम् ।
सार्पे सदर्थो हि वृथार्पितार्थः कन्दर्पसन्तप्तमना मनुष्यः ॥ ९ ॥

आश्लेषा नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य व्यर्थ घूमने वाला, दुष्ट व्यवहार वाला, व्यर्थ लोगों को कष्ट देने वाला, अच्छे धन को भी कुमार्ग में व्यय करने वाला और कामातुर होता है ॥ ९ ॥

मघानक्षत्रजन्मफलम्—

कठोरचित्तः पितृभक्तियुक्तस्तीव्रस्वभावस्त्वनवद्यविद्यः ।

चेज्जन्मभं यस्य मघानघः सन्मतिः सदारातिविघातदक्षः ॥१०॥

मघा नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य कठोर, पितृभक्त, तीव्र स्वभाव वाला, उत्तम विद्या वाला, पापरहित, बुद्धिमान् और शत्रुओं को नाश करने में चतुर होता है ॥ १० ॥

पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रजन्मफलम्—

शूरस्त्यागी साहसी भूरिभर्त्ता कामार्तोऽपि स्याच्छिरालोऽतिदक्षः ।
धूर्तः क्रूरोऽत्यन्तसञ्जातगर्वः पूर्वाफाल्गुन्यस्ति चेज्जन्मकाले ॥११॥

पूर्वफाल्गुनी नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य शूर, दाता, साहसी, बहुतों का पालक, कामातुर, शिरालु, अत्यन्त चतुर, धूर्त, अति गौरवी और क्रूर होता है ॥ ११ ॥

उत्तराफाल्गुनीनक्षत्रजन्मफलम्—

दाता दयालुः सुतरां सुशीलो विशालकीर्तिर्नृपतेः प्रधानः ।
धीरो नरोत्यन्तमृदुर्नरः स्याच्चेदुत्तराफाल्गुनिका प्रसूतौ ॥१२॥

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य दाता, दयालु, अत्यन्त सुशील, बड़े यश वाला, राजमन्त्री, धीर और अति कोमल स्वभाव वाला होता है ॥ १२ ॥

हस्तनक्षत्रजन्मफलम्—

दाता मनस्वी सुतरां यशस्वी भूदेवदेवार्चनकृत्प्रयत्नः ।
प्रसूतिकाले यदि यस्य हस्तो हस्तोद्गता तस्य समस्तसम्पत् ॥१३॥

जिसका जन्म हस्त नक्षत्र में हो वह दाता, मनस्वी, अति यशस्वी, देवता--ब्राह्मण का पूजक और सब सम्पत्ति से युक्त होता है ॥ १३ ॥

चित्रानक्षत्रजन्मफलम्—

प्रतापसन्तापितशत्रुपक्षो नयेतिदक्षश्च विचित्रवासाः ।
प्रसूतिकाले यदि यस्य चित्रा बुद्धिर्विचित्रा खलु तस्य शास्त्रे ॥१४॥

चित्रा नक्षत्र में जिसका जन्म हो वह अपने प्रताप से शत्रुओं को दबाने वाला, नीतिशास्त्र में चतुर, अनेक प्रकार के वस्त्र वाला और शास्त्र में विचित्रबुद्धि वाला होता है ॥ १४ ॥

स्वातीनक्षत्रजन्मफलम्—

कन्दर्परूपः प्रभयासमेतः कान्ताप्रप्रीतिरतिप्रसन्नः ।
स्वाती प्रसूतौ मनुजस्य यस्य महीपतिप्राप्तविभूतियुक्तः ॥ १५ ॥

स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य कामके समान सुन्दर, स्त्रियों का प्रिय, अति प्रसन्न और राजा से लब्ध धन वाला होता है ॥ १५ ॥

विशाखानक्षत्रजन्मफलम्—

सदानुरक्तोऽग्निसुरक्रियायां धातुक्रियायामपि चोग्रसौम्यः ।
यस्य प्रसूतौ च भवेद्विशाखा सखा न कस्यापि भवेन्मनुष्यः ॥१६॥

विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य सदा हवन और देवता के पूजन में निरत, धातु की क्रियां में कभी उग्र कभी सौम्य तथा किसी का भी मित्र नहीं होता है ॥ १६ ॥

अनुराधानक्षत्रजन्मफलम्—

सत्कान्तिकीर्तिश्च सदोत्सवः स्याज्जेता रिपूणां च कलाप्रवीणः ।
स्यात्सम्भवे यस्य किलानुराधा सम्पद्विशाला विविधा च तस्य ॥१७॥

अनुराधा नक्षत्र में जिस का जन्म हो वह कान्तिमान् , यशस्वी, सदा उत्सव करने वाला, शत्रुओं को जीतने वाला, कलाओं में कुशल और बहुत सम्पत्ति से युक्त होता है ॥ १७ ॥

ज्येष्ठानक्षत्रजन्मफलम्—

सत्कीर्तिकान्तिर्विभुतासमेतो वित्तान्वितोऽत्यन्तलसत्प्रतापः ।
श्रेष्ठः प्रतिष्ठो वदतां वरिष्ठो ज्येष्ठोद्भवः स्यात्पुरुषो विशेषात् ॥१८

ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य उत्तम कान्ति, उत्तम यश और प्रभुता से युक्त, धनी, अत्यन्त प्रतापी, श्रेष्ठ प्रतिष्ठा वाला तथा वक्ताओं में श्रेष्ठ होता है ॥ १८ ॥

अथ मूलनक्षत्रे जन्मविचारः—

मूलं विरुद्धावयवं समूलं कुलं हरत्येव वदन्ति सन्तः ।
चेदन्यथा सत्कुरुते विशेषात्सौभाग्यमायुश्च कुलाभिवृद्धिम् ॥१९॥

मूल नक्षत्र के विरुद्ध अवयव में जन्म होने से कुल का नाश होता

है। (अन्यथा (मूल के शुभावयव में) जन्म होने से कुल की वृद्धि और सम्पत्ति शाली होता है ॥ १६ ॥

अभुक्तमूलविचारः—

ज्येष्ठान्त्यघटिकैका च मूलस्याद्यघटीद्वयम् ।
अभुक्तमूलमित्युक्तं तत्रोत्पन्नशिशोर्मुखम् ॥ २० ॥
अष्टवर्षाणि नालोक्यं तातेन शुभमिच्छता ।
तद्दोषपरिहारार्थं शान्तिकं प्रोच्यतेऽधुना ॥ २१ ॥

ज्येष्ठा नक्षत्र के अन्त्य की १ घटी और मूल के आदि की २ घटी अभुक्त मूल कहलाता है।

इस में जिस लड़के का जन्म हो उसका पिता ८ वर्ष पर्यन्त उसका मुख न देखे। उसके दोषशान्ति के लिये शान्ति प्रकार को अभी कहते हैं।

मूलशान्तिप्रकारः—

रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूरयेत् ।
शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निःसृतेन जलेन हि ॥ २२ ॥
बालकाम्बापितृस्नाने विप्रैः सम्पादिते सति ।
जपहोमप्रदाने च कृते स्यान्मङ्गलं ध्रुवम् ॥ २३ ॥
विरुद्धावयवे मूले विधिरेवं स्मृतो बुधैः ।
मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेममीप्सुभिः ॥ २४ ॥

जलपूर्ण सौ छिद्र वाले घड़े में नवरत्न, शतौषधी के मूल और सप्तमृत्तिका देकर ब्राह्मणों के द्वारा उन छिद्रों से निकलते हुए जल से जातक की माता पिता दोनों स्नान करके जप, होम, दान करें। कल्याण की अभिलाषा करने वालों को इस तरह मुनि का वचन अवश्य मानना चाहिए। ऐसा करने से कुशल अवश्य होता है २२-२४

मूलपादजन्मफलम्—

मूलस्य पादत्रितये क्रमेण पितुर्जनन्याश्च धनस्य रिष्टम् ।
चतुर्थपादः शुभदो नितान्तं सार्पे विलोमं परिकल्पनीयम् ॥२५॥

जिसका जन्म मूल के पहले तीन चरण में हो उस के क्रम से पिता, माता और धन का नाश होता है, अर्थात् पहले चरण में जन्म हो तो पिता का, दूसरे चरण में माता का और तीसरे चरण में धन का नाश होता है। [चतुर्थ चरण में जन्म हो तो शुभ होता है।]

अश्लेषा नक्षत्र में इससे उलटा फल जानना चाहिये, अर्थात् प्रथम चरण में शुभ, द्वितीय चरण में धन का, तृतीय चरण में माता का और चतुर्थ चरण में पिता का नाश होता है ॥ २५ ॥

मूलनक्षत्रवेलाजन्मफलम्—

कृष्णे तृतीया दशमी वलक्षे भूतो महीजार्किबुधैः समेतः ।
चेज्जन्मकाले किल यस्य मूलमुन्मूलनं तत्कुरुते कुलस्य ॥ २६ ॥

जन्म समय में मूल नक्षत्र अगर कृष्णपक्ष की तृतीया, दशमी, शुक्लपक्ष की चतुर्दशी इन तिथियों और मङ्गल, शनि, बुध इन वारों से युक्त हो तो कुलनाश कारक होता है ॥ २६ ॥

दिवा सायं निशि प्रातस्तातस्य मातुलस्य च ।
पशूनां मित्रवर्गस्य क्रमान्मूलभनिष्टदम् ॥ २७ ॥

मूल नक्षत्र होते हुए यदि दिन मे जन्म हो तो पिता के कुल का सायंकाल में माता के कुल का, रात्रि में पशुओं का, प्रातःकाल में मित्र वर्गों का नाश होता है ॥ २७ ॥

पुरुषाकृतौ मूलाश्लेषयोर्घटी स्थापनम्—

मूर्ध्नि पञ्च मुखे पञ्च स्कन्धयोर्घटिकाष्टकम् ।
गजाश्च भुजयोर्युग्मं हस्तयोर्हृदयेऽष्टकम् ॥ २८ ॥
युग्मं नाभौ दिशो गुह्ये षट् जान्वोः षट् च पादयोः ।
विन्यस्य पुरुषाकारे मूलस्य फलमादिशेत् ॥ २९ ॥

मूल नक्षत्र के आदि की घटी से पुरुषाकार मूल के शिर में ५ घटी, मुख में ५ घटी, कन्धे में ८ घटी, भुज में ८ घटी, हाथ में २ घटी हृदय में ८ घटी, नाभि में २ घटी, गुह्येंद्रिय में १० घटी, जंघा में ६ घटी और पैरों में ६ घटी क्रम से न्यास कर फलादेश करे ॥२८-२९॥

पुरुषाकृतिमूलघटीफलम्—

छत्रलाभः शिरोदेशे वदने पितृघातकम् ।
स्कन्धयोर्भूर्दहत्वं च बाहुयुग्मे त्वकर्मकृत् ॥ ३० ॥
हत्याकारः करद्वन्द्वे राज्याप्तिर्हृदये भवेत् ।
अल्पायुर्नाभिदेशे च गुह्ये च सुखमद्भुतम् ॥ ३१ ॥
जङ्घायां भ्रमणप्रीतिः पादयोर्जीवितालपता ।
घटीफलं किल प्रोक्तं मूलस्य मुनिपुङ्गवैः ॥ ३२ ॥

पुरुषाकृति मूल के मस्तक की घटी में जन्म हो तो छत्र लाभ, मुख की घटी में पिता का नाश, कन्धे की घटी में भार ढोने वाला, भुजा की घटी में कुकर्मी, हाथ,की घटी में हिंसक, हृदय की घटी में राज्य लाभ, नाभि की घटी में अल्पायु, गुह्येन्द्रिय की घटी में विचित्र सुख वाला, जंघा की घटी में घूमने वाला और पैर की घटी में अल्पायु होता है इस तरह मुनिवर्यों ने मूल की घटियों में जन्मका फ : कहा है ३०-३२

आश्लेषाघटीफलम्—

विज्ञेयं विबुधैः सर्वं सार्पे तच्च विपर्ययात् ॥ ३३ ॥

अर्थ स्पष्ट है ॥ ३३ ॥

मूलाश्लेषयोर्मुहूर्तपतिमाह—

राक्षसो यातुधानश्च सोमः शुक्रः फणीश्वराः ।
पिता माता यमः कालो विश्वेदेवा महेश्वरः ॥ ३४ ॥
शर्वाख्यश्च कुबेरश्च शुक्रो मेघो दिवाकरः ।
गन्धर्वो यमदेवश्च ब्रह्मा विष्णुर्यमस्तथा ॥ ३५ ॥
ईश्वरो विष्णुरुद्रौ च पवनो मुनयस्तथा ।
षण्मुखो भृङ्गिरीटी च गौरी नाम्नी सरस्वती ॥ ३६ ॥
प्रजापतिश्च मूलस्य त्रिंशद्वै क्षणनायकाः ।
आश्लेषायां विपर्यस्तां नामतुल्यफलप्रदाः ॥ ३७ ॥

अर्थ स्पष्ट है ॥ ३४-३७ ॥

स्फुटार्थं मूलमुहूर्तेशचक्रम्—

मुहूर्त	मुहूर्त स्वामी	मुहूर्त	मुहूर्त स्वामी
१	राक्षस	१६	दिवाकर
२	यातुधान	१७	गन्धर्व
३	सोम	१८	यम
४	शुक्र	१९	ब्रह्मा
५	फणीश्वर	२०	विष्णु
६	पिता	२१	यम
७	माता	२२	ईश्वर
८	यम	२३	विष्णु
९	काल	२४	रुद्र
१०	विश्वेदेव	२५	पवन
११	महेश्वर	२६	मुनि
१२	शर्व	२७	कार्तिकेय
१३	कुबेर	२८	भृङ्गरीटि
१४	शुक्र	२९	गौरी, सरस्वती
१५	मेघ	३०	प्रजापति

आश्लेषानक्षत्रस्य मुहूर्तेशचक्रम्—

मुहूर्त	मुहूर्त स्वामी	मुहूर्त	मुहूर्त स्वामी
१	प्रजापति	१६	मेघ
२	गौरी, सरस्वती	१७	शुक्र
३	भृङ्गरीटि	१८	कुबेर
४	कार्तिकेय	१९	शर्व
५	मुनि	२०	महेश्वर
६	पवन	२१	विश्वेदेव
७	रुद्र	२२	काल
८	विष्णु	२३	यम
९	ईश्वर	२४	माता
१०	यम	२५	पिता
११	विष्णु	२६	फणीश्वर
१२	ब्रह्मा	२७	शुक्र
१३	यम	२८	सोम
१४	गन्धर्व	२९	यातुधान
१५	दिवाकर	३०	राक्षस

अशुभमुहूर्त्तफलम्—

राक्षसो यातुधानश्च पितृसंज्ञो यमस्तथा ।
कालश्चेति मुहूर्त्तेशा जन्मकालेऽशुभाः स्मृताः ॥ ३८ ॥

पूर्वोक्त मुहूर्तेशों में राक्षस, यातुधान, पिता, यम, काल, ये पांचों मुहूर्तेश जन्म काल में अशुभ हैं ॥ ३८ ॥

मूलवृक्षः—

वेदाः सप्त गजाः काष्ठाः खेटा वाणाश्च षट् शिवाः ।
मूलस्तम्भत्वचा शाखा पत्रं पुष्पं फलं शिखा ॥ ३९ ॥

मूल नक्षत्र के आदि से ४ घटी जड़, ७ घटी स्तम्भ, ८ घटी त्वचा, १० घटी शाखा, ९ घटी पत्र, ५ घटी फूल, ६ घटी फल और ११ घटी शिखा में स्थापन कर मूलवृक्ष बनावे ॥ ३९ ॥

मूलवृक्षफलम्—

मूलवृक्षविभागेषु मङ्गलं हि फले दले ।
अमङ्गलं तथा विद्याच्छेषभागेषु निश्चितम् ॥ ४० ॥

मूलवृक्ष के विभाग में यदि फल या पत्र की घड़ियों में जन्म हो तो शुभ फल और शेष भाग में अशुभ फल जानना चाहिए ॥ ४० ॥

मूलजातस्य शुभाशुभम्—

पादे मुहूर्ते वेलायां वृक्षे च पुरुषाकृतौ ।
अनिष्टमशुभाधिक्ये शुभाधिक्ये शुभं फलम् ॥ ४१ ॥

पूर्वोक्त चरण फल, मुहूर्तफल, वृक्षफल, पुरुषाकृति चक्रफल इन चारों फलों में शुभ फल अधिक हो तो शुभ, अशुभ फल अधिक हो तो अशुभ समझना चाहिए ॥ ४१ ॥

पितुर्नक्षत्रजन्मफलम्—

पितुर्भ्रातुश्च नक्षत्रे प्रसूतिर्जायते यदि ।
तातं वा भ्रातरं ज्येष्ठं रिष्टं स कुरुते ध्रुवम् ॥ ४२ ॥

पिता या ज्येष्ठ भाई के जन्म नक्षत्र में जन्म हो तो पिता या ज्येष्ठ भाई का अरिष्ट कारक होता है ॥ ४२ ॥

तथा शान्तिः—

मूलवच्छान्तिकं तत्र विधेयं हि विचक्षणैः।
भूमिरत्नानि हेमान्नं देयं विप्रेषु भक्तितः॥ ४३॥

पण्डितों के द्वारा मूल की तरह शान्ति करानी चाहिये। तथा ब्राह्मणों को भूमि, रत्न, सुवर्ण, अन्न दान देना चाहिये॥ ४३॥

मूलनक्षत्रजन्मफलम्—

सुखेन युक्तो धनवाहनाढ्यो हिंस्रो बलाढ्यः स्थिरकर्मकर्ता।
प्रतापितारातिजनो मनुष्यो मूले कृती स्याज्जननं प्रपन्नः॥४४॥

मूलनक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य सुखी, धन वाहन से युक्त, दुष्ट, बली, स्थिर कार्य करने वाला, शत्रुओं को नाश करने वाला और बुद्धिमान् होता है॥ ४४॥

पूर्वाषाढनक्षत्रजन्मफलम्—

भूयो भूयस्तोयपानानुरक्तो भोक्ता चञ्चद्वाग्विलासः सुशीलः।
नूनं संपज्जायते तस्य गाढा पूर्वाषाढा जन्मभं यस्य पुंसः॥४५॥

पूर्वाषाढ नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य बार बार पानी पीने के लिये आतुर, भोगी, बोलने में चतुर, सुशील और गहरी सम्पत्ति वाला होता है॥ ४५॥

उत्तराषाढनक्षत्रजन्मफलम्—

दाता दयावान् विजयी विनीतः सत्कर्मकर्ता विभुतासमेतः।
कान्तासुतावाप्तसुखो नितान्तं वैश्वे सुवेषः पुरुषोऽभिमानी॥४६॥

जिस का जन्म उत्तराषाढ नक्षत्र में हो वह दाता, दयावान्, विजयी, नम्र, उत्तम कार्य करने वाला, सामर्थ्य से युक्त, स्त्री-पुत्र के द्वारा सुखी, सुन्दर और अभिमानी होता है॥ ४६॥

अभिजिज्जन्मफलम्—

अतिसुललितकान्तिः संमतः सज्जनानां
ननु भवति विनीतश्चारुकीर्तिः सुरूपः।

द्विजवरसुरभक्तिर्व्यक्तवाङ्मानवःस्या
दभिजिति यदि सूतिर्भूपतिः स स्ववंशे ॥ ४७ ॥

अभिजित् नक्षत्र में उत्पन्न पुरुष अति सुन्दर, सज्जनों का स्नेही, नम्र, यशस्वी, देवता-ब्राह्मणों का भक्त, स्पष्ट बोलने वाला और अपने कुल में प्रधान होता है ॥ ४७ ॥

श्रवणनक्षत्रजन्मफलम्—

शास्त्रानुरक्तो बहुपुत्रमित्रः सत्पात्रभक्तिर्विजितारिपक्षः ।
प्राणी पुराणश्रवणप्रवीणश्चेज्जन्मकाले श्रवणं हि यस्य ॥४८

श्रवणा नक्षत्र में उत्पन्न पुरुष शास्त्र में निरत, बहुत पुत्र-मित्र वाला, सज्जनों का भक्त, शत्रुओं को जीतने वाला और पुराण श्रवण करने में प्रवीण होता है ॥ ४८ ॥

धनिष्ठानक्षत्रजन्मफलम्—

आचारदातादरचारुशीलो धनाधिशाली बलवान् कृपालुः ।
यस्य प्रसूतौ च भवेद्धनिष्ठा महाप्रतिष्ठासहितो नरः स्यात् ॥४९॥

जिसका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र में हो वह सदाचारी, लोगों के आदर करने में सुन्दर स्वभाव वाला, धनी, बली, दयालु और अत्यन्त प्रतिष्ठा से युक्त होता है ॥ ४६ ॥

शतभिषानक्षत्रजन्मफलम्—

शीतभीरुरतिसाहसी सदा निष्ठुरो हि चतुरो नरो भवेत् ।
वैरिणामतिशयेन दारुणो वारुणोडुनि च यस्य संभवः ॥ ५० ॥

शतभिषा नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य शीत से डरने वाला, अति साहसी, दानी, निष्ठुर, चतुर और शत्रुओं को नाश करने वाला होता है ॥ ५० ॥

पूर्वाभाद्रपदानक्षत्रजन्मफलम्—

जितेन्द्रियः सर्वकलासु दक्षो जितारिपक्षः खलु यस्य नित्यम् ।
भवेन्मनीषा सुतरामपूर्वा पूर्वादिका भाद्रपदा प्रसूतौ ॥ ५१ ॥

पूर्वाभाद्र नक्षत्र में जिस का जन्म हो वह जितेन्द्रिय, सब कलाओं में कुशल, शत्रुओं को जीतने वाला और अपूर्व बुद्धि वाला होता है ५१

उत्तराभाद्रपदानक्षत्रजन्मफलम्—

कुलस्य मध्येऽधिकभूषणं च नात्युच्चदेहः शुभकर्मकर्त्ता ।

यस्योत्तराभाद्रपदा च जन्यां धन्यो भवेन्मानधनो वदान्यः ॥५२॥

उत्तराभाद्र नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य कुल के बीच में अलङ्करण स्वरूप, मध्यम कद का, सुन्दर कर्म करने वाला, मानी, धनी, दानी और यशस्वी होता है ॥ ५२ ॥

रेवतीनक्षत्रजन्मफलम—

चारुशीलविभवो जितेन्द्रियः सद्धनानुभवनैकमानसः ।

मानवो ननु भवेन्महामती रेवती भवति यस्य जन्मभम् ॥ ५३ ॥

रेवती नक्षत्र में उत्पन्न पुरुष सुन्दर स्वभाव वाला, सुन्दर धन वाला, जितेन्द्रिय, नीति मार्ग से कमाने वाला और बड़ा बुद्धिमान होता है ॥ ५३ ॥

अथ बृहज्जातकोक्तनवांशफलम्, तत्रादौ प्रथमनवांशजन्मफलम्—

विनीतो धर्मशीलश्च सत्यवादी दृढव्रतः ।

विद्याभ्यसनशीलश्च जायते प्रथमांशके ॥ १ ॥

जिस का जन्म राशि के प्रथम नवांश में हो वह नम्र, धर्मशील, सत्यवक्ता, दृढप्रतिज्ञ और विद्याभ्यास करने वाला होता है ॥ १ ॥

द्वितीयनवांशजन्मफलम्—

उत्पन्नविभवो भोक्ता संग्रामेषु पराजितः ।

गन्धर्वप्रमदासक्तो जायते द्वितीयांशके ॥ २ ॥

जिस का जन्म द्वितीय नवांश में हो वह प्राप्त धन का भोग करने वाला, युद्ध में पराजित होने वाला और वेश्यागामी होता है ॥ २ ॥

तृतीयनवमांशजन्मफलम्—

स्त्रीजितश्चानपत्यश्च मायायुक्तोल्पवीर्यवान् ।

वीरविद्याविचारज्ञो जायते तृतीयांशके ॥ ३ ॥

तृतीय नवांश में उत्पन्न मनुष्य स्त्री के वश में रहने वाला, सन्तति रहित, माया से युक्त, निर्बल और युद्ध विद्या को जानने वाला होता है ॥ ३ ॥

चतुर्थनवमांशजन्मफलम्—

बहुस्त्रीसुभगः पूज्यो जलसेवी धनान्वितः ।
नृपसेव्यथवाऽमात्यश्चतुर्थांशे प्रजायते ॥ ४ ॥

चतुर्थ नवांश में उत्पन्न हो तो बहुत स्त्री वाला, सुन्दर, भावनीय, जल में विशेष प्रिय, धन से युक्त और राजा का सेवक या राजमन्त्री होता है ॥ ४ ॥

पञ्चमनवमांशजन्मफलम्—

बहुमित्रजनामात्यो बन्धुमित्रसुखान्वितः ।
महत्प्रतिष्ठामाप्नोति संजातः पञ्चमांशके ॥ ५ ॥

पञ्चम नवांश में उत्पन्न मनुष्य बहुत मित्र वाला, राजमन्त्री, बन्धु-मित्रों के सुख से युक्त, और बड़ा प्रतिष्ठित होता है ॥ ५ ॥

षष्ठनवमांशजन्मफलम्—

जितवैरिगणो वीरो दृढसौहृदकारकः ।
जायते मण्डलाधीशो नरः षष्ठांशकोद्भवः ॥ ६ ॥

षष्ठ नवांश में उत्पन्न पुरुष शत्रुओं को जीतने वाला, दृढ मित्र करने वाला, और मण्डलेश होता है ॥ ६ ॥

सप्तमनवमांशजन्मफलम्—

अव्याहताज्ञः सर्वत्र पृथ्वीनाथः कलायुतः ।
सेनापतित्वमाप्नोति संजातः सप्तमांशके ॥ ७ ॥

सप्तम नवांश में जिस का जन्म हो वह सब जगह अपनी आज्ञा को चलाने वाला, राजकला युक्त और सेनापति होता है ॥ ७ ॥

अष्टमनवमांशजन्मफलम्—

उदारधीः क्षितिख्यातो धनधान्यव्ययोदितः ।
कोपी दुर्जनतप्ताङ्गो नरो जातोऽष्टमांशके ॥ ८ ॥

अष्टम नवांश में उत्पन्न पुरुष उदार बुद्धि वाला, भूमि में सर्वत्र विख्यात, धन धान्य को व्यय करने वाला, क्रोधी और दुर्जनों से कष्ट पाने वाला होता है ॥ ८ ॥

नवम नवमांशजन्मफलम्—

दीर्घजीवी प्रसन्नात्मा विद्याभ्यासी सदा सुखी ।
ज्ञाता धर्मी जनी मान्यो जायते नवमांशके ॥ ९ ॥

नवम नवांश में जिस का जन्म हो, वह बहुत दिन जीने वाला, प्रसन्न मन वाला, विद्याभ्यास करने वाला, सदा सुखी, ज्ञानी, धर्मात्मा, धनी और माननीय होता है ॥ ९ ॥

अथ योगजन्मफलानि, तत्रादौविष्कम्भयोगजन्मफलम्—

शश्वत्कान्तापुत्रमित्रादिसौख्यं स्वातन्त्र्यं स्यात्सर्वकार्यप्रसंगे ।
चञ्चद्देहोत्पादने मानसं चेद्विष्कंभे वै संभवो यस्य जन्तोः ॥ १ ॥

विष्कम्भ योग में उत्पन्न पुरुष सदा स्त्री पुत्र मित्रों से सुख पाने वाला, सब कार्य को करने में स्वतन्त्र और अपने शरीर को सुन्दर बनाने में तत्पर होता है ॥ १ ॥

प्रीतियोगजन्मफलम्—

वक्ता चञ्चद्रूपसंपत्तियुक्तो दातात्यन्तं स्यात्प्रसन्नाननश्च ।
जातानन्दः सद्विनोदप्रसंगाद्धर्मप्रीतिः प्रीतिजन्मा मनुष्यः ॥ २ ॥

प्रीति योग में जिस का जन्म हो वह बोलने वाला, सुन्दर स्वरूप वाला, सम्पत्ति युक्त, अत्यन्त दाता, प्रसन्न मुख, सज्जनों के आनन्द से स्वयं आनन्दित होने वाला और धर्म में प्रीति रखने वाला होता है ॥२॥

आयुष्मान् योगजन्मफलम्—

अर्थाप्त्यर्थं साहसैरन्वितश्च नानास्थानोद्यानयानप्रवृत्तिः ।
यस्यायुष्मान् संभवे संभवेद्वै स्यादायुष्मान्मानवो मानयुक्तः ॥३॥

आयुष्मान् योग में उत्पन्न पुरुष धनोपार्जन के लिये साहस करने वाला, अनेक स्थान के बगीचे में जाने वाला, दीर्घायु और मानी होता है ॥ ३ ॥

सौभाग्ययोगजन्मफलम्—

ज्ञानी धनी सत्यपरायणः स्यादाचारशीलो बलवान् विवेकी ।
सुश्लाघ्यसौभाग्यविराजमानः सौभाग्यजन्मा हि महाभिमानी ॥४॥

सौभाग्य योग में उत्पन्न मनुष्य ज्ञानी, धनी, सत्यवक्ता, सदाचारी, बलवान्, विवेकी, सुन्दर सौभाग्य से युक्त और बड़ा अभिमानी होता है ॥ ४ ॥

शोभनयोगजन्मफलम्—

सत्वरोतिचतुरः सदुत्तरश्चारुगौरवयुतश्च सन्मतिः ।
नित्यशोभनविधानतत्परः शोभनो भवति शोभनोद्भवः ॥ ५ ॥

शोभन योग में उत्पन्न मनुष्य जल्दी उत्तर देने में चतुर, सुन्दर, गौरवी, सुन्दर बुद्धि वाला, और प्रतिदिन अच्छा काम करने वाला होता है ॥ ५ ॥

अतिगण्डयोगजन्मफलम्—

सदा मदो यो गलरुक् सरोषो विशालवक्त्राङ्घ्रिरतीव धूर्तः ।
कलिप्रियो दीर्घहनुर्मनुष्यः पाखण्डिकः स्यादतिगण्डजातः ॥ ६ ॥

अतिगण्ड योग में उत्पन्न मनुष्य सर्वदा अहङ्कार युक्त, कण्ठ रोगी, क्रोधी, बहुत बड़े हाथ पैर वाला, अतिधूर्त, झगड़ालू, बड़ी ठोड़ी वाला और पाखण्डी होता है ॥ ६ ॥

सुकर्मयोगजन्मफलम्—

हृष्टः सदा सर्वकलाप्रवीणः ससाहसोत्साहसमन्वितश्च ।
परोपकारी सुतरां सुकर्मा भवेत्सुकर्मा परिसूतिकाले ॥ ७ ॥

सुकर्मा योग में उत्पन्न मनुष्य सदा आनन्द युक्त, सब कलाओं में कुशल, साहसी, उत्साही, परोपकारी और सुन्दर कर्म करने वाला होता है ॥ ७ ॥

धृतियोगजन्मफलम्—

प्राज्ञो वदान्यः सततं प्रहृष्टः श्रेष्ठः सभायां चपलः सुशीलः ।

नयेनयुक्तो नियमेन धृतया धृत्याह्वये यस्य नरस्य जन्म ॥ ८ ॥

धृति योग में उत्पन्न मनुष्य पण्डित, दाता, सदा आनन्द युक्त, सभा में श्रेष्ठ, चञ्चल, सुन्दर स्वभाव वाला, नीति नियम और धैर्य से युक्त होता है ॥ ८ ॥

शूलयोगजन्मफलम्—

नरो हरिद्रामयसंयुतश्च सत्कर्मविद्याविनयैर्विरक्तः ।
यस्य प्रसूतिर्यदि शूलयोगे शूलव्यथा तस्य भवेत्कदाचित् ॥ ९ ॥

शूल योग में उत्पन्न पुरुष दरिद्र, रोग युक्त, सुन्दर कर्म, विद्या, विनय इन सबों से रहित और कदाचित् शूल रोग से पोड़ित होता है ॥ ९ ॥

गण्डयोगजन्मफलम्—

धूर्तः सुहृत्कार्यपराङ्मुखश्च क्लेशी विशेषात्परुषस्वभावः ।
चेत्संभवे यस्य भवेच्च गण्डः प्रचण्डकोपः पुरुषः प्रदिष्टः ॥१०॥

गण्ड योग में जिस का जन्म हो वह धूर्त, मित्र कार्य को नहीं करने वाला, क्लेश युक्त, कठोर स्वभाव वाला और बड़ा क्रोधी होता है ॥ १० ॥

वृद्धियोगजन्मफलम्—

सुसंग्रहप्रीतिरतीव दक्षो धनान्वितः स्यात्क्रयविक्रयाभ्याम् ।
प्रसूतिकाले यदि यस्य वृद्धिर्भाग्याभिवृद्धिर्नियमेन तस्य ॥११॥

वृद्धि योग में उत्पन्न मनुष्य संग्रह करने में अधिक प्रेम रखने वाला, अति चतुर, क्रय विक्रय के द्वारा धनी और बड़ा क्रोधी होता है ॥११॥

ध्रुवयोगजन्मफलम्—

निश्चला हि कमला सदालये संभवेच्च वदने सरस्वती ।
चारुकीर्तिरपि चेद्ध्रुवं तदा चेद्ध्रुवो भवति यस्य संभवे ॥१२॥

ध्रुव योग में जिस का जन्म हो उस के गृह में सदा लक्ष्मी स्थिर रहती है, मुख में सरस्वती रहती है, और निश्चल कीर्ति होती है ॥१२॥

व्याघातयोगजन्मफलम्—

क्रूरोऽल्पदृष्टिः कृपया विहीनो महाहनुः स्यादपवादवादी ।

असत्यताप्रीतिरतीव्र मर्त्यो व्याघातजातः खलु घातकर्त्ता ॥१३॥

व्याघात योग में जिस का जन्म हो वह क्रूर, थोड़ी दृष्टि वाला, निर्दयी, बड़ी ठोढ़ी वाला, दूसरे का अपवाद बोलने वाला (निन्दक), असत्य वक्ता और हिंसक होता है ॥ १३ ॥

हर्षणयोगजन्मफलम्—

सुस्निग्धगात्रः कृतशास्त्रयत्नः सुरक्तभूषावसनानुरक्तः ।

प्रसूतिकाले यदि हर्षणश्चेत्स मानवो वै रिपुकर्षणः स्यात् ॥१४॥

हर्षण योग में उत्पन्न मनुष्य कोमल शरीर वाला, शास्त्र का अभ्यास करने वाला, लाल वस्त्र और अलङ्करण में प्रेम रखने वाला तथा शत्रुओं का नाश करने वाला होता है ॥ १४ ॥

वज्रयोगजन्मफलम्—

सुधीः सुबन्धुर्गुणवान्महौजाः सत्यान्वितो रत्नपरीक्षकः स्यात् ।

चेत्संभवे यस्य च वज्रयोगः सवज्रयुक्तोत्तमभूषणाढ्यः ॥ १५ ॥

वज्र योग में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर बुद्धि वाला, सुन्दर बन्धु वाला, गुणवान्, महाबली, सत्यवक्ता, रत्नों को परीक्षा करने वाला, और हीरायुक्त भूषण धारण करने वाला होता है ॥ १५ ॥

सिद्धियोगजन्मफलम्—

उदारचेताश्चतुरः सुशीलः शास्त्रादरः सारविराजमानः ।

प्रसूतिकाले यदि यस्य सिद्धिर्भाग्याभिवृद्धिः सततं हि तस्य ॥१६॥

सिद्धि योग में पैदा होने वाला उदार, चतुर, सुशील, शास्त्र में आदर रखने वाला, तत्त्व को जानने वाला, और सदा अतिभाग्यशाली होता है ॥ १६ ॥

व्यतीपातयोगजन्मफलम्—

उदारबुद्धिः पितृमातृवाक्ये गदार्तमूर्तिश्च कठोरचित्तः ।

परस्य कार्ये व्यतिपाततुल्यो नरः खलु स्याद्व्यतिपातजन्मा ॥१७॥

व्यतीपात योग में उत्पन्न पुरुष माता पिता के वचनों में हर्ष

पूर्वक रहने वाला, रोगी, कठोर और दूसरे के कार्य में बाधा डालने वाला होता है ॥ १७ ॥

वरीयान् योगजन्मफलम्—

उत्पन्नभोक्ता विनयोपपन्नो द्रव्याल्पता—सद्व्ययतासमेतः ।
सुकर्मसौजन्यतया वरीयान् भवेद्वरीयान् प्रभवे हि यस्य ॥१८॥

वरीयान् योग में उत्पन्न प्राप्त को भोगने वाला, नम्रता युक्त, थोड़ा धन रहने पर भी समीचीन व्यय करने वाला, सुन्दर कर्म और सुजनता से श्रेष्ठ होता है ॥ १८ ॥

परिघयोगजन्मफलम्—

असत्यसाक्षीप्रतिभूर्बहूनां व्यक्तात्मकर्मा क्षमया विहीनः ।
दक्षोऽल्पभक्षो विजितारिपक्षस्त्वधर्षितो वै परिघोद्भवः स्यात् ॥१९॥

परिघ योग में उत्पन्न पुरुष असत्य गवाही देने वाला, बहुतों का जमानतदार, अपने कर्म को स्पष्ट करने वाला, क्षमा से रहित, चतुर, अल्पभोक्ता, शत्रुओं को जीतने वाला और दुर्धर्ष होता है ॥ १९ ॥

शिवयोगजन्मफलम्—

सन्मन्त्रशास्त्राभिरतो नितान्तं जितेन्द्रियश्चारुशरीरयष्टिः ।
योगः शिवो जन्मनि यस्य जन्तोः सदा शिवं तस्य शिवप्रसादात् ॥२०॥

शिव योग में उत्पन्न मनुष्य मन्त्रशास्त्र का ज्ञाता, जितेन्द्रिय, सुन्दर शरीर वाला और शिव जी की प्रसन्नता से सदा कुशल से युक्त होता है ॥ २० ॥

सिद्धयोगजन्मफलम्—

जितेन्द्रियः सत्यपरोऽतिगौरः सर्वेषु कार्येष्वतिकोविदश्च ।
भवेत्प्रसूतौ यदि सिद्धियोगः सिद्ध्यन्ति कार्याणि कृतानि तस्य ॥२१॥

सिद्ध योग में उत्पन्न मनुष्य सत्यवक्ता, अत्यन्त गौर, सब कार्य को जानने वाला और अनेक कार्य को सिद्ध करने वाला होता है॥२१॥

साध्ययोगजन्मफलम्—

नूनं विनीतश्चतुरः सुहासः स्वकार्यदक्षो जितशत्रुपक्षः ।

सन्मन्त्रविद्याविधिनैव सर्वं संसाधयेत्साध्यभवो हि दक्षः ॥ २२ ॥

साध्य योग में उत्पन्न पुरुष नम्र, चतुर, हास्य युक्त, अपने कार्य में कुशल, शत्रुओं को जीतने वाला, और मन्त्रविद्या के विधि से सब कार्यसाधन करने वाला होता है ॥ २२ ॥

शुभयोगजन्मफलम्—

शुभप्रचारः शुभवाग्विलासः शुभस्य कर्ता शुभलक्षणश्च ।
शुभोपदेशं कुरुते नराणां यस्य प्रसूतौ शुभनामयोगः ॥ २३ ॥

शुभ योग में उत्पन्न पुरुष शुभ कार्य करने वाला, सुन्दर वचन बोलने वाला, शुभ लक्षण से युक्त और मनुष्यों के बीच में सुन्दर उपदेशक होता है ॥ २३ ॥

शुक्लयोगजन्मफलम्—

जितेन्द्रियः सत्यवचा महौजा वाग्वादसंग्रामजयाभ्युपेतः ।
सन्मानशुक्लाम्बरधारणेच्छुः शुक्लोद्भवो वै भयसंयुतः स्यात् ॥२४॥

शुक्ल योग में उत्पन्न बालक जितेन्द्रिय, सत्यवक्ता, महाबली, वाद-विवाद और संग्राम में विजयी, सन्मान और स्वच्छ वस्त्र धारण की इच्छा रखने वाला, तथा धनी होता है ॥ २४ ॥

ब्रह्मयोगजन्मफलम्—

विद्याभ्यासे प्रीतिरत्यन्तचेता नित्यं सत्याचारजातादरश्च ।
शान्तो दान्तो जायते चारुकर्मा ब्रह्मायोगः संभवे यस्य पुंसः ॥२५॥

ब्रह्म योग में उत्पन्न पुरुष विद्याभ्यास में अत्यन्त प्रेम रखने वाला, सहृदय, सत्य और सदाचार से आदर पाने वाला, शान्त, दाता और सुकार्य करने वाला होता है ॥ २५ ॥

ऐन्द्रयोगजन्मफलम्—

प्राज्ञो वलीयान् वपुलामलश्रीयुक्तः कफात्मा हि भवेन्महौजाः ।
निजान्वये वै मनुजो नरेन्द्रस्त्वैन्द्रोद्भवश्चारुतरप्रभावः ॥ २६ ॥

ऐन्द्र योग में उत्पन्न मनुष्य पण्डित, बली, अधिक निर्दुष्ट लक्ष्मी

वाला, कफी, तेजस्वी और अपने कुल में राजा के समान प्रभाव वाला होता है ॥ २६ ॥

वैधृतियोगजन्मफलम्—

चंचलश्च कुटिलः खलमैत्रः शास्त्रभक्तिरहितो हतचित्तः ।
साध्वसे मनसि तस्य नो धृतिर्वैधृतिर्भवति यस्य जन्मनि ॥२७॥

वैधृति योग में उत्पन्न होने वाला चञ्चल, चुगलखोर, दुष्टलोगों के साथ मित्रता करने वाला, शास्त्र के ऊपर अविश्वास रखने वाला, हृदयशून्य और भय की बात में धीरतारहित होता है ॥ २७ ॥

अथ करणजन्मफलम्—

तत्रादौ ववकरणजन्मफलम्—

कामी दयालुर्बलवान् सुशीलो विचक्षणः शीघ्रगतिः सभाग्यः ।
ववाभिधाने जननं हि यस्य नानाविधा तस्य भवेत्सुसंपत् ॥ १ ॥

वव करण में उत्पन्न मनुष्य कामी, दयालु, बलवान्, सुशील, पण्डित, जल्दी चलने वाला, भाग्यवान् और सब सम्पत्तियों से युक्त होता है ॥ १ ॥

बालवकरणजन्मफलम्—

शूरतातिविलसद्बलवत्तासंयुतो भवति चारुविलासः ।
काव्यकृद्वितरणप्रणयश्चेद्बालवेऽमलमतिश्च कलाज्ञः ॥ २ ॥

बालव करण में जिसका जन्म हो वह शूर, बली, सुन्दर, विलास करने वाला, काव्य कर्ता, दाता में श्रेष्ठ, बुद्धिमान् और कलाओं को जानने वाला होता है ॥ २ ॥

कौलवकरणजन्मफलम्—

कामी प्रगल्भोऽभिमतो बहूनां नूनं स्वतन्त्रो बहुमित्रसौख्यः ।
बलान्वितः कोमलवाग्विलासः श्रेष्ठः कुले कौलवजातजन्मा ॥३॥

कौलव करण में उत्पन्न पुरुष कामी, ढीठ, सबों का प्रिय, स्वतन्त्र, बहुत मित्रों से युक्त, बलवान्, कोमल बोलने वाला और श्रेष्ठ कुल में पैदा हुआ होता है ॥ ३ ॥

अथ तैतिलकरणजन्मफलम्—

चारुकोमलकलेवरशाली केकिलालसमनाश्च कलाज्ञः ।

वाग्विलासकुशलोऽतिसुशीलस्तैतिले विमलधीश्चलदृक् स्यात् ॥४॥

तैतिल करण में जन्म हो तो सुन्दर और कोमल शरीर वाला, क्रीड़ा विलास करने में चतुर, कलाओं को जानने वाला, बोलने में कुशल, सुशील, निर्दोष बुद्धि वाला और चञ्चल दृष्टि वाला होता है ॥४॥

गरकरणजन्मफलम्—

परोपकारे विहितादरश्च विचारसारश्चतुरो जितारिः ।

शूरोऽतिधीरः सुतरामुदारो गरे नरश्चारुकलेवरश्च ॥ ५ ॥

गर करण में उत्पन्न मनुष्य परोपकारी, विवेकी, चतुर, शत्रुओं को जीतने वाला, शूर, अत्यन्त धीर, बड़ा उदार और सुन्दर शरीर वाला होता है ॥ ५ ॥

वणिजकरणजन्मफलम्—

कलाप्रवीणः सुतरां सहासः प्राज्ञो हि सन्मानसमन्वितश्च ।

प्रसूतिकाले वणिजं हि यस्य वाणिज्यतोऽर्थागमनं हितस्य ॥६॥

वणिज करण में उत्पन्न मनुष्य कलाओं में निपुण, अत्यन्त हँसमुख, पण्डित, सम्मान युक्त, और वाणिज्य से धनोपार्जन करने वाला होता है ॥ ६ ॥

विष्टिकरणजन्मफलम्—

चारुवक्त्रचपलो बलशाली हेलयासिदरितारिकुलश्च ।

जायते खलमतिर्बहुनिद्रा यस्य जन्मसमये खलु भद्रा ॥ ७ ॥

विष्टि करण में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर मुख वाला, चञ्चल, बली, अनायास शत्रुओं को जीतने वाला, दुष्ट बुद्धि और अधिक सोने वाला होता है ॥ ७ ॥

शकुनिकरणजन्मफलम्—

अतिसुललितबुद्धिर्मन्त्रविद्याविधाने गुणगणसमवेतः सर्वदा सावधानः।

मनुजनकृतसख्यःसर्वसौभाग्ययुक्तो भवति शकुनिजन्मा शाकुनज्ञानशीलः

शकुनि करण में उत्पन्न पुरुष मन्त्रशास्त्र को जानने वाला, गुणों से युक्त, सदा सावधान रहने वाला, बहुत मित्र करने वाला, सब सौभाग्य से युक्त और शकुनशास्त्र को जानने वाला होता है ॥ ८ ॥

चतुष्पदकरणजन्मफलम्—

नरः सदाचारपराङ्मुखः स्यादसंग्रहः क्षीणशरीरयष्टिः ।
चतुष्पदे यस्य भवेत्प्रसूतिश्चतुष्पदात्सत्वयुतो मनुष्यः ॥ ९ ॥

चतुष्पद करण में उत्पन्न मनुष्य सदाचार से रहित, संग्रह से रहित, दुर्बल और पशुओं से सब प्रकार सुखी होता है ॥ ९ ॥

नागकरणजन्मफलम्—

दुःशीलवक्रचलनो बलवान्खलात्मा कोपानलाहतमतिः कलिकृत्कुलोत्थैः।
द्रोहात्कुलक्षयभवादतिदीर्घकाले जातो हि नागकरणे रणरङ्गधीरः ॥१०॥

नाग करण में उत्पन्न पुरुष दुर्जन, क्रूर, चञ्चल, बली, दुष्ट हृदय, क्रोध से नष्ट बुद्धि वाला, कुकर्म करने वाला, झगड़ालू, द्रोह से कुल का नाश करने वाला और युद्धप्रिय होता है ॥ १० ॥

किंस्तुघ्नकरणजन्मफलम्—

धर्मेऽप्यधर्मे समतामतेः स्यादंगेप्यनंगे विबलत्वमुच्चैः ।
मैत्र्याममैत्र्यां स्थिरता न किंचित्किंस्तुघ्नजातस्य हि मानवस्य ॥११॥

किंस्तुघ्न करण में उत्पन्न मनुष्य धर्म, अधर्म दोनों में समान बुद्धि वाला, कामी, निर्बल, मित्र और शत्रु दोनों में अस्थिर बुद्धि वाला होता है ॥ ११ ॥

गण्डान्तजन्मफलम्—

पौष्णादिगण्डान्तभवो हि मर्त्यः क्रमेण पित्रोरशुभोऽग्रजस्यः ।
जातस्य सत्यं त्रिविधे प्रजातः सर्वाभिघातं कुरुते वदन्ति ॥ १ ॥

रेवती आदि नक्षत्रों के तीन प्रकार के गण्डान्त (नक्षत्र गण्डान्त, तिथि गण्डान्त और लग्न गण्डान्त) में जिस का जन्म हो, वह क्रम से पिता, माता और ज्येष्ठ भ्राता का नाश करता है—अर्थात् नक्षत्र

गण्डान्त में पिता, तिथि गण्डान्त में माता और लग्न गण्डान्त में भ्राता का नाश करता है।

यदि तीनों गण्डान्त में जन्म हो तो कुल का नाश करता है ॥१२॥

अथ गणजन्मफलम्–तत्रादौ देवगणजन्मफलम्—

सुस्वरश्च सरलोक्तिमतिः स्यादल्पभोजनकरो हि नरश्च ।
जायते सुरगणेन्यगुणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः ॥ १ ॥

देव गण में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर स्वर वाला, कोमल वक्ता, स्वच्छ बुद्धि, थोड़ा भोजन करने वाला, अति गुणग्राही, गुणी और धनी होता है ॥ १ ॥

मनुष्यगणजन्मफलम्—

देवाद्विजर्चाभिरतोभिमानी धनी दयालुर्बलवान्कलाज्ञः ।
प्राज्ञः सुकान्तिः सुखदो बहूनां मर्त्यो भवेन्मर्त्यगणे प्रसूतः ॥२॥

मनुष्य गण में उत्पन्न देवता और ब्राह्मण का भक्त, अभिमानी, धनी, दयालु, बली, कलाओं को जानने वाला, पण्डित, सुन्दर तथा बहुतों को सुख देने वाला होता है ॥ २ ॥

राक्षसगणजन्मफलम्—

अनलतजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च ।
दुःशीलवृत्तः कलिकृद्बलीयान् रक्षोगणोत्पन्ननरो विरोधी ॥ ३ ॥

राक्षस गण में उत्पन्न मनुष्य बहुत बोलने वाला, कठोर चित्त वाला, साहसी, क्रोधी, उद्धत, बुरे स्वभाव वाला झगड़ालू, बली और लोगों का विरोधी होता है ॥ ३ ॥

अथ लग्नफलम्, तत्रादौ मेषलग्नजन्मफलम्—

चण्डाभिमानी गुणवान् सकोपः सुहृद्विरोधी च सखा परेषाम् ।
पराक्रमप्राप्तयशोविशेषो मेषोदये यः पुरुषोऽतिरोषः ॥ १ ॥

मेष लग्न में उत्पन्न मनुष्य बड़ा अभिमानी, गुणी, क्रोधी, अपने मित्रों का विरोधी, दूसरे का स्वयं मित्र और अपने पराक्रम से यश पाने वाला होता है ॥ १ ॥

अथ वृषलग्नजन्मफलम्—

गुणाग्रणी स्याद् द्रविणेन पूर्णो भक्तो गुरूणां हि रणप्रियश्च ।
धीरश्च शूरः प्रियवाक् प्रशान्तः स्यात्पूरुषो यस्य वृषे विलग्ने ॥२॥

वृष लग्न में उत्पन्न पुरुष गुणीजनों में श्रेष्ठ, धन से युक्त, गुरुजनों का भक्त, युद्ध में प्रेम रखने वाला, धीर, शूर, प्रिय बोलने वाला और शान्त होता है ॥ २ ॥

मिथुनलग्नजन्मफलम्—

भोगी वदान्यो बहुपुत्रमित्रः सुगूढमन्त्रः सधनः सुशीलः ।
तस्य स्थितिः स्यान्नृपसन्निधाने लग्ने भवेद्वै मिथुनाभिधाने ॥३॥

मिथुन लग्न में जिस का जन्म हो वह भोगी, दाता, बहुत पुत्र मित्र वाला, मनस्वी, धनी, सुन्दर स्वभाव वाला, और राजा के समीप रहने वाला होता है ॥ ३ ॥

कर्कलग्नजन्मफलम्—

मिष्टान्नभुक् साधुरतो विनीतो विलोमबुद्धिर्जलकेलिशीलः ।
प्रकृष्टसारोऽतितरामुदारो लग्ने कुलीरे हि नरो भवेन्नः ॥ ४ ॥

कर्क लग्न में जिस का जन्म हो वह मिष्टान्न भोजन करने वाला, साधुओं में निरत, नम्र, चञ्चल बुद्धि वाला, जल में खेल करने वाला, तत्त्व को ग्रहण करने वाला और अति उदार होता है ॥ ४ ॥

सिंहलग्नजातफलम्—

कृशोदरश्चारुपराक्रमश्च भोगी भवेदल्पसुतोल्पभक्षः ।
सञ्जातबुद्धिर्मनुजोभिमाने पञ्चानने सञ्जनने विलग्ने ॥ ५ ॥

जिस का जन्म सिंह लग्न में हो वह दुर्बल कमर वाला, सुन्दर पराक्रमी, भोगी, थोड़े पुत्र वाला, थोड़ा भोजन करने वाला और अभिमान युक्त बुद्धि वाला होता है ॥ ५ ॥

कन्यालग्नजातफलम्—

कामक्रीडासद्गुणज्ञानसत्त्वकौशल्याद्यैः संयुतः सुप्रसन्नः ।

लग्नं कन्या यस्य जन्यां जघन्यां कन्यां क्षीराब्धेरवाप्नोति नित्यम् ॥६॥

जिस का कन्या लग्न में जन्म हो वह कामी, गुणी, ज्ञानी, कार्यों में कुशल, प्रसन्न और नित्य लक्ष्मी युत होता है ॥ ६ ॥

तुलालग्नजातफलम्—

गुणाधिकत्वाद्द्रविणोपलब्धिर्वाणिज्यकर्मण्यतिनैपुणत्वम् ।
पद्मालया तन्निलये न लोला लग्नं तुला चेत्स कुलावतंसः ॥७॥

तुला लग्न में उत्पन्न मनुष्य गुणों के बाहुल्य से द्रव्य लाभ करने वाला, वाणिज्य में अति कुशल, स्थिर लक्ष्मी वाला और कुल में भूषण होता है ॥ ७ ॥

वृश्चिकलग्नजातफलम्—

शूरो नरोऽत्यन्तविचारसारोऽनवद्यविद्याधिकृतासमेतः ।
प्रसूतिकाले किल लग्नशाली भवेदलिस्तस्य कलिः सदैव ॥८॥

वृश्चिक लग्न में उत्पन्न मनुष्य शूर, अत्यन्त विचारी, निर्दुष्ट विद्या से युक्त और झगड़ा में सदा फँसा रहता है ॥ ८ ॥

धनुर्लग्नजातफलम्—

प्राज्ञश्च राज्ञः परिसेवनज्ञः सत्यप्रतिज्ञः सुतरां मनोज्ञः ।
सुज्ञः कलाज्ञश्च धनुर्विधिज्ञश्चेन्नुर्धनुर्यस्य जनुस्तनुः स्यात् ॥९॥

धनु लग्न में उत्पन्न पुरुष पण्डित, राजसेवा को जानने वाला, दृढ संकल्प वाला, अति सुन्दर, ज्ञानी. कलाओं को जानने वाला और धनुर्विद्या को जानने वाला होता है ॥ ९ ॥

मकरलग्नज तफलम्—

कठिनमूर्तिरतीव शठः पुमान्निजमनोगतकृद्बहुसन्ततिः ।
सुचतुरोऽपि च लुब्धतरो वरो यदि नरो मकरोदयसम्भवः ॥१०॥

मकर लग्न में पैदा हुआ मनुष्य कुरूप, धूर्त, मनमानी कार्य करने वाला, बहुत सन्तति वाला, बड़ा चतुर और अत्यन्त लोभी होता है १०

कुम्भलग्नजातफलम्—

लोलस्वान्तोऽत्यन्तसञ्जातकामश्चंचद्देहः स्नेहकृन्मित्रवर्गे ।

सस्यारम्भः सम्भवैर्युक् सदम्भश्चेत्स्यात्कुम्भे सम्भवो यस्य लग्ने ॥११॥

कुम्भ लग्न में उत्पन्न मनुष्य चञ्चल चित्त वाला, अति कामी, सुन्दर देह वाला, मित्रों से स्नेह करने वाला, धान्यों का उपार्जन करने वाला और आडम्बरी होता है ॥ ११ ॥

मीनलग्नजातफलम्—

दक्षोऽल्पभक्षोऽल्पमनोभवश्च सद्रत्नहेमा चपलोऽतिधूर्तः ।
स्यान्ना च नानारचनाविधाने मीनाभिधाने जनने विलग्ने ॥१२॥

मीन लग्न में उत्पन्न मनुष्य चतुर, थोड़ा भोजन करने वाला, अल्प कामी, रत्न-सुवर्ण से युक्त, चञ्चल, धूर्त और अनेक चीजों को बनाने वाला होता है ॥ १२ ॥

अथ पूर्वोक्तफलतारतम्यमाह—

भवेदलं लग्नबलं यथोक्तं विलग्नकाले प्रबले प्रसूतौ ।
तस्मिन्बलोने यदि वा विलग्ने युक्तेक्षिते क्रूरखगस्तथाल्पम्॥१३॥

अगर लग्न बली हो तो पूर्वोक्त फल पूर्ण और निर्बल हो तो पूर्वोक्त फल अल्प देता है ॥ १३ ॥

पूर्वोक्तसंवत्सरादिफलप्राप्तिसमयमाह—

उक्तानि संवत्सरपूर्वकाणां फलानि तत्प्राप्तिरिति प्रकल्प्या ।
सांवत्सरं सावनवर्षपस्य पाकेऽयनर्तुप्रभवं खरांशोः ॥ १४ ॥
मासोद्भवं मासपतेस्तथेन्दोर्गणोडुपक्षप्रभवं च यत्स्यात् ।
तिथिप्रभूतं करणोद्भवं च चन्द्रान्तरेऽर्कस्य दशाविभागे ॥१५॥
वारोद्भवं वारविभोर्विचिन्त्यं योगोत्थमिन्द्वर्कबलान्वितस्य ।
लग्नोद्भवं लग्नपतेर्दशायां दृग्भावपुम्राशिजमेव सूक्ष्मम् ॥ १६ ॥

पूर्वोक्त संवत्सर आदि फलप्राप्ति का समय इस तरह कल्पना करना चाहिए। जैसे सावन वर्षपति की दशामें संवत्सर फल की और सूर्यदशा में अयनफल, ऋतुफल की प्राप्ति होती है ॥ १४ ॥

मासपति की दशा में मासफल की प्राप्ति, चन्द्रमा की दशा में

गणफल, नक्षत्रफल. पक्षफल, सूर्य की महादशा के मध्य चन्द्रान्तर्दशा में तिथि फल, करण फल, वारेश को दशा में वारफल, रवि, चन्द्र दोनों में जो बलवान् हो उस की दशा में योगफल, लग्नस्वामी की दशा में लग्न फल, भाव स्वामी की दशा में भाव फल और राशीश की दशा में राशि फल की प्राप्ति होती है ॥ १५-१६ ॥

डिंभाख्यचक्रम्—

डिम्भाख्यचक्रे रविभाच्च भानां त्रयं न्यसेन्मूर्ध्नि मुखे त्रयं च ।
द्वे स्कन्धयोर्द्वे भुजयोर्द्वयं च पाणिद्वये वक्षसि पञ्च भानि ॥ १ ॥
नाभौ च लिङ्गे च तथैकमेकं द्वे जानुनोः पादयुगे भषट्कम् ।
पुंसां सदा वै परिकल्पनीयं मुनिप्रवर्यैः फलमुक्तमत्र ॥ २ ॥

रवि जिस नक्षत्र में वर्तमान हो उस से ३ नक्षत्र शिर में, ३ नक्षत्र मुख में, २ नक्षत्र दोनों कन्धों में, २ नक्षत्र दोनों भुजाओं में, २ नक्षत्र दोनों हाथों में ५ नक्षत्र वक्षःस्थल में, १ नक्षत्र नाभि में, १ नक्षत्र लिङ्ग में, २ नक्षत्र दोनों जङ्घा में और ६ नक्षत्र दोनों पैरों में स्थापन कर नराकार डिम्भ चक्र बनाने से जिस अङ्ग में जन्म नक्षत्र पड़े उस का फल वक्ष्यमाण रीति से समझे ॥ १-२ ॥

डिंभाख्यचक्रे मस्तकनक्षत्रफलमाह—

सद्रत्नचामीकरचारुवस्त्रविचित्रवालव्यजनातपत्रैः ।
विराजमानो मनुजो नितान्तं मौलिस्थले भं नलिनिप्रभोश्चेत् ॥

डिम्भचक्र के मस्तक में जन्म नक्षत्र पड़े तो रत्न, सुवर्ण, सुन्दर वस्त्र, विचित्र चामर छत्र आदि राजचिह्नों से विराजमान होता है ॥३॥

मुखनक्षत्रफलम्—

मिष्टाशनानां शयनासनानां भोक्ता च वक्ता सततं प्रसन्नः ।
स्मिताननो ना वदनानुयातं भानोर्भवेद्भं जनने हि यस्य ॥ ४ ॥

यदि मुख में जन्म नक्षत्र पड़े तो मिष्टान्न भोजन करने वाला, सुन्दर शय्या पर सोने वाला और हँसमुख होता है ॥ ४ ॥

स्कन्धनक्षत्रफलम्—

वृषांशको वंशविभूषणश्च महोत्सवार्थं प्रथितः प्रतापी।
नरोऽतिशूरोऽतितरामुदारो दिवाकरोडुस्थितमंसके चेत् ॥ ५ ॥

यदि स्कन्ध में जन्म नक्षत्र पड़े तो ऊँचा कन्धा वाला, कुल में प्रधान, उत्सव करने से विख्यात, प्रतापी, शूर और उदार होता है ॥५॥

भुजनक्षत्रफलम्—

त्यक्तस्वदेशः पुरुषो विशेषाद्गर्वोद्धतः शौर्ययुतो नितान्तम्।
विदेशवासाप्तमहत्प्रतिष्ठो मार्तण्डभं वाहुगतं प्रसूतौ ॥ ६ ॥

यदि भुज में जन्म नक्षत्र पड़े तो विदेश में रहने वाला, बहुत गौरवी, पराक्रमी और विदेशवास से विशेष प्रतिष्ठा पाने वाला होता है ॥ ६ ॥

पाणिनक्षत्रफलम्—

वदान्यतासद्गुणवर्जितश्च पण्यादिरत्नादिपरीक्षकश्च।
सत्यानृताभ्यां सहितो हि मर्त्यो दिवामणेर्भं यदि पाणिसंस्थम् ॥७॥

यदि हाथ में जन्म नक्षत्र पड़े तो दान और गुण से हीन, बाजार में रत्न की परीक्षा करने वाला तथा सत्य मिथ्या दोनों से युक्त होता है ॥ ७ ॥

वक्षःस्थलनक्षत्रफलम्—

भूपालतुल्यः स्वकुले सुशीलो बालो विशालोत्तमकीर्तिशाली।
शास्त्रे प्रवीणः परिसूतिकाले वक्षस्थले चेन्नलिनीशभं स्यात् ॥ ८ ॥

यदि वक्षःस्थल में जन्म नक्षत्र पड़े तो अपने कुल में राजा के समान, सुशील, बड़े उत्तम यश वाला और शास्त्रमें प्रवीण होता है ॥८॥

नाभिनक्षत्रफलम्—

क्षमासमेतो रणकर्मभीरुः कलाकलापाकलनैकशीलः।
धर्मप्रवृत्तिः सुतरामुदारो नाभीसरोजेम्बुजबन्धुताराः ॥ ९ ॥

यदि नाभि में जन्म नक्षत्र पड़े तो क्षमा शील, रण में डरपोक, कलाओं में कुशल, धर्मबुद्धि और अत्यन्त उदार होता है ॥ ९ ॥

लिङ्गनक्षत्रफलम्—

कन्दर्पधुर्योज्झितसाधुकर्मा सङ्गीतनृत्याभिरुचिः कलाज्ञः ।
चेज्जन्मकाले नलिनीशभं स्याद्गुह्यस्थले सोऽतुलकीर्तियुक्तः ॥१०॥

यदि लिङ्ग में जन्म नक्षत्र पड़े तो कामी, सत्कर्म से हीन, नृत्य गीत आदि का स्नेही, कलाओं में कुशल और विशेष यशस्वी होता है ॥१०॥

जानुस्थनक्षत्रफलम्—

नानादेशानेकधा सम्प्रचारः कार्योत्साहश्चञ्चलः क्षामगात्रः ।
धूर्तोमर्त्यः सत्यहीनश्च नूनं जानुस्थाने भानुभं जन्मनि स्यात् ॥११॥

यदि जङ्घा में जन्म नक्षत्र पड़े तो अनेक देश में घूमने वाला, कामों को करने में उत्साह युक्त, चञ्चल, दुर्बल शरीर वाला, धूर्त और मिथ्या बोलने वाला होता है ॥ ११ ॥

पादस्थनक्षत्रफलम्—

कृषिक्रियायां निरतोल्पधर्मः शत्रूज्झितः सेवनकर्मकर्ता ।
तारा यदि स्यादरविन्दबन्धोः पादारविन्दे च नरस्य सूतौ ॥१२॥

यदि पैर में जन्म नक्षत्र पड़े तो खेती करने में निरत, थोड़ा धर्म कार्य करने वाला, शत्रु रहित और नौकरी करने वाला होता है ॥१२॥

जन्मलग्नाद् ह्रस्वदीर्घाङ्गज्ञानमाह—

ह्रस्वा मीनवृषाजघटा मिथुनधनुः कर्किमृगाश्च समाः ।
वृश्चिककन्यामृगपतिवणिजा दीर्घाः समाख्याताः ॥ १ ॥
एभिर्लग्नाद्गण्यैः शीर्षप्रभृतीनि शरीराणि ।
सदृशानि विजायन्ते स्थितगगनचरैश्चैव तुल्यानि ॥ २ ॥

मीन, वृष, मेष, कुम्भ, ये चार राशियाँ ह्रस्व, मिथुन, धनु, कर्क, मकर ये चार राशियाँ सम (मध्यम) और वृश्चिक, कन्या, सिंह, तुला ये चार राशियाँ दीर्घ संज्ञक हैं। लग्न राशि को शिर इत्यादि में स्थापन क्रम से एक नराकार चक्र बनावे, उस में ह्रस्वादि राशियाँ जहाँ पर पड़ें उस अङ्ग को ह्रस्व, मध्य या दीर्घ कहना चाहिये ॥१-२॥

द्वादशभावानां न्यासक्रममाह—

भिन्नद्वादशधा विधाय विलसच्चक्रं च तत्र न्यसेत्
लग्नाद्‌द्वादश राशयोऽतिविशदा वामाङ्गमार्गक्रमात् ।
अङ्क्यास्तत्र नभश्चरा स्फुटतरा राशौ च यत्र स्थिता-
स्तेभ्यः साधुफलं त्वसाधु सुधिया वाच्यं हि होरागमात् ॥ १ ॥

पहले द्वादशविभागात्मक एक कुण्डली बना कर उस के प्रथम भाग में लग्न राशि लिख कर बायें क्रम से बारह राशियों का स्थापन करे। अब जो ग्रह जिस राशि में बैठा हो उस में उस को लिख कर आगे कथित रीति से शुभ या अशुभ फल कहना चाहिए ॥ १ ॥

तनुभावे किं विचारणीयम्—

रूपं तथा वर्णविनिर्णयश्च चिह्नानि जातिर्वयसः प्रमाणम् ।
सुखानि दुःखान्यपि साहसं च लग्ने विलोक्यं खलु सर्वमेतत् ॥२॥

रूप, वर्ण, चिह्न, जाति, वय का प्रमाण, सुख, दुःख, साहस इन सबों का लग्न से विचार करना चाहिए ॥ २ ॥

तनुभावफलनिर्णयः—

विलोकिते सर्वखगैर्विलग्ने लीलाविलासैः सहितो बलीयान् ।
कुले नृपालो विपुलायुरेव भयेन युक्तोऽरिकुलस्य हन्ता ॥ ३ ॥

यदि लग्न स्थान सब ग्रहों की दृष्टि से युक्त हो तो मनुष्य हास्य विनोद से युक्त, बलवान् कुल में श्रेष्ठ, दीर्घायु, भययुक्त और शत्रुओं का नाश करने वाला होता है ॥ ३ ॥

धनिक-दरिद्रयोगाः—

सौम्यास्त्रयो लग्नगता यदि स्युः कुर्वन्ति जातं नृपतिं विनीतम् ।
पापास्त्रयो दुःखदरिद्रशोकैर्युतं नितान्तं बहुभक्षकं च ॥ ४ ॥

यदि लग्न स्थान में तीन शुभग्रह बैठे हों तो जातक राजा और नम्र होता है। यदि लग्न स्थान में तीन पापग्रह बैठे हों तो दुःखी, दरिद्र, शोक युक्त और अधिक भोजन करने वाला होता है ॥ ४ ॥

श्रेष्ठयोगः—

लग्नद्यूनषडष्टकेऽपि च शुभाः पापैर्न युक्तेक्षिता-
मन्त्री दण्डपतिः क्षितेरधिपतिः स्त्रीणां बहूनां पतिः ।
दीर्घायुर्गदवर्जितो गतभयः सौन्दर्यसौख्यान्वितः
सच्छीलो यवनेश्वरैर्निगदितो मर्त्यः प्रसन्नः सदा ॥ ५ ॥

यदि शुभग्रह लग्न स्थान से ६,७ ८ इन तीनों स्थानो में हों और पापग्रह से युत दृष्ट नहीं हों तो राजा, न्यायाधीश या मन्त्री होकर बहुत स्त्री वाला, दीर्घायु, रोगरहित, सुन्दर, सुखो, सुन्दर स्वभाव वाला और प्रसन्न होता है ॥ ५ ॥

अथार्कादिग्रहाणान्तु गुणवर्णविनिर्णयः ।
आकारोऽपि शरीरस्य प्रोच्यते मुनिसम्मतः ॥ ६ ॥

आगे सूर्य आदि ग्रहों के गुण, वर्ण और शरीर का आकार मुनिमतानुसार कहते हैं ॥ ६ ॥

सूर्यस्वरूपम्—

शूरो गभीरश्चतुरः सुरूपः श्यामारुणश्चाल्पककुन्तलश्च ।
सुवृत्तगात्रो मधुपिंगनेत्रो मित्रो हि पित्तास्थ्यधिको न तुङ्गः ॥७॥

सूर्य—शूर, गंभीर, चतुर, सुन्दर, श्याम लेकर रक्त वर्ण, थोड़े केश वाला, चतुरस्राकृति का शरीर, मधु के तुल्य पिली दृष्टि, पित्त-प्रकृति, अस्थि में बल वाला और छोटा कद वाला है ॥ ७ ॥

चन्द्रस्वरूपम्—

सद्वाग्विलासोऽमलधीः सुकायो रक्ताधिकः कुञ्चितकृष्णकेशः ।
कफानिलात्माम्बुजपत्रनेत्रो नक्षत्रनाथः सुभगोतिगौरः ॥ ८ ॥

चन्द्रमा—समीचीन बोलने वाला, निर्मल बुद्धि, सुन्दर शरीर वाला, रक्ताधिक, टेढ़े काले केश वाला, कफ वायु प्रकृति, कमलपत्र के समान नेत्र वाला, सुभग और अतिगौर है ॥ ८ ॥

भौमस्वरूपम्—

मज्जासारो रक्तगौरोत्युदारो हिंस्रः शूरः पैत्तिकस्तामसश्च ।

चण्डः पिङ्गाक्षो युवाऽखर्वगर्वः खर्वश्चोर्वी सूनुरग्निप्रभः स्यात्॥९॥

मङ्गल—मज्जा में बल वाला, रक्त लेकर गौर वर्ण, उदार, हिंसक, शूर, पित्त प्रकृति, तमोगुण युक्त, भयङ्कर, पीले नेत्र वाला, युवा, बड़ा गौरवी, छोटा कद वाला और अग्नि के समान कान्ति वाला है ॥ ९ ॥

बुधस्वरूपम्—

श्यामः शिरालश्च कलाविधिज्ञः कुतूहली कोमलवाक्त्रिदोषी।
रजोधिको मध्यमरूपधृक्स्यादाताम्रनेत्रो द्विजराजपुत्रः॥ १०॥

बुध—श्याम, नस में बल वाला, कलाओं का ज्ञाता, उत्कण्ठित, प्रिय बोलने वाला, कफ वात पित्त प्रकृति वाला, रजोगुण युक्त, मध्यम रूप वाला और ताम्र वर्ण के नेत्र वाला है ॥ १० ॥

गुरुस्वरूपम्—

दीर्घाकारश्चारुचामीकराभो मज्जासारः सुस्वरो दारबुद्धिः।
दक्षःपिङ्गाक्षःकफी चातिमांसः प्राज्ञः सुज्ञैः कीर्तितो जीवसंज्ञः॥११॥

बृहस्पति—लम्बा शरीर वाला, सोने के समान गौर वर्ण, मज्जा में बल वाला, सुन्दर स्वर वाला, उदार बुद्धि, चतुर, पिली आँख वाला, कफी, अधिक मांस वाला और विद्वान् है ॥ ११ ॥

भृगुस्वरूपम्—

सजलजलदनीलः श्लेष्मलश्चानिलात्मा
कुवलयदलनेत्रोवक्रनीलालकश्च।
सुसरलभुजशाली राजसश्चातिकामी
मदयुतगजगामी भार्गवः शुक्रसारः॥ १२॥

शुक्र—जल युक्त मेघ के समान वर्ण वाला, कफ वात प्रकृति, कमलपत्र के समान नेत्र वाला, काले कुटिल केश वाला, सुन्दर भुजा वाला, रजोगुण युक्त, काम पीडित और मद युक्त हस्ती के समान गति वाला है ॥ १२ ॥

शनिस्वरूपम्—

श्यामलोतिमलिश्च शिरालः सालसश्च जटिलः कृशदीर्घः।

स्थूलदन्तनखपिङ्गलनेत्रयुक्छनिश्च खलतानिलकोपः ॥ १३ ॥

शनि—काला, मलिन हृदय वाला, नस युक्त शरीर, आलसी, जटा युक्त, दुर्बल तथा २ लम्बे शरीर वाला, मोटे दाँत और नख वाला, दुष्टता युक्त, क्रोधी और वायु प्रकृति वाला है ॥ १३ ॥

ग्रहाणां स्वरूपप्रयोजनमाह—

लग्नस्य नन्दांशपतेर्हि मूर्त्या मूर्तिः समाना बलशालिनो वा ।

स्यादिन्दुनन्दांशपतेस्तु वर्णः परं विधार्याः कुलजातिदेशाः ॥१४॥

लग्न में जो नवांश हो उस के स्वामी के सदृश आकार और चन्द्रमा जिस राशि के नवांश में हो उस के पति तुल्य जातक का वर्ण कहना चाहिए। किन्तु असमञ्जस होने पर कुल, जाति देश के अनुसार आकृति और वर्ण कहना चाहिए अर्थात् जिस कुल, जाति या देश में काले ही सब होते है वहाँ पर की कुण्डली में यदि लग्न-नवांश पति गुरु हो तथापि काले ही कहना चाहिए ॥ १४ ॥

सत्त्वादिगुणज्ञानमाह—

सत्त्वं भवेयुः शशिसूर्यजीवास्तमो यमारौ च रजो ज्ञशुक्रौ ।

त्रिंशल्लवे यस्य गतो दिनेशो वाच्यो गुणस्तस्य खगस्य नूनम् ॥१५॥

चन्द्रमा, सूर्य, गुरु सत्त्वगुणी, मङ्गल, शनि तमोगुणी और बुध, शुक्र रजोगुणी हैं। सूर्य जिसके त्रिंशांश में बैठा हो तदनुसार जातक का गुण कहना चाहिए ॥ १५ ॥

अङ्गेषु द्रेष्काणवशेन राशिविन्यासमाह—

शिरोक्षिणी कर्णनसा कपालौ हनुर्मुखं च प्रथमे दृकाणे ।

कण्ठांसदोर्दण्डककुक्षिवक्षः क्रोडं च नाभिस्त्रिलवे द्वितीये ॥ १६ ॥

बस्तिस्ततो लिङ्गगुदे तथाण्डावूरू च जानू चरणौ तृतीये ।

क्रमेण लग्नात्परपूर्वषट्के वामं तथा दक्षिणमङ्गमत्र ॥ १७ ॥

लग्न में प्रथम द्रेष्काण का उदय हो तो लग्न को शिर में, द्वितीय, द्वादश भाव को नेत्र में, तृतीय, एकादश भाव को कान में, चतुर्थ,

दशम भाव को नाक में, पञ्चम, नवम भाव को गाल में, षष्ठ, अष्टम, भाव को हनु में और सप्तम भाव को मुख में स्थापन करे ॥

यदि लग्न में द्वितीय द्रेष्काण का उदय हो तो लग्न को कण्ठ में, द्वितीय, द्वादश भाव को कन्धे में, तृतीय, एकादश भाव को भुजाओं में, चतुर्थ, दशम भाव को पार्श्व में, पञ्चम, नवम भाव को छाती में, षष्ठ, अष्टम भाव को पेट में और सप्तम भाव को नाभि में स्थापन करे।

यदि लग्न में तृतीय द्रेष्काण का उदय हो तो लग्न को पेडू में, द्वितीय, द्वादश को लिङ्ग में, तृतीय, एकादश भाव को अण्डकोश में, चतुर्थ, दशम भाव को ऊरू में, पञ्चम, नवम भाव को ठेहुनों में, षष्ठ, अष्टम भाव को जङ्घा में और सप्तम भाव को वाम पैर में स्थापन करे। इस तरह लग्न से पीछे के छै राशियों का वाम और आगे के छै राशियों का दक्षिण अङ्ग में स्थापन करना चाहिए ॥ १६-१७ ॥

प्रथमद्रेष्काणचक्रम् ।
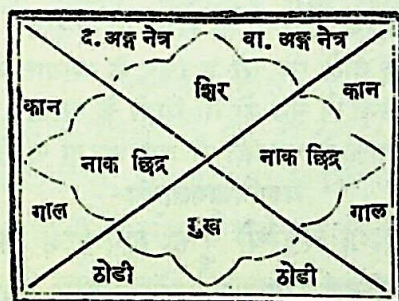
द्वितीयद्रेष्काणचक्रम् ।

तृतीयद्रेष्काणचक्रम् ।
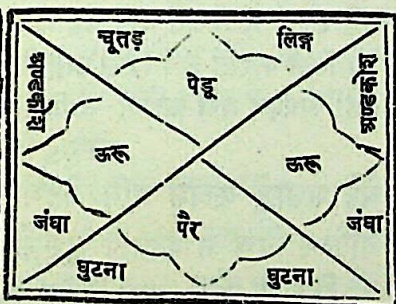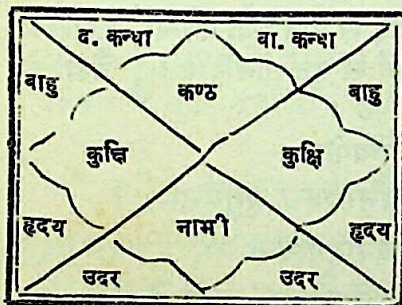
अङ्गेषु व्रणमशकादिज्ञानम्—

मत्स्यं तिलं लक्ष्म बलानुसारं कुर्वन्ति सौम्या व्रणमत्र पापाः ।
स्वांशस्वभागस्थिरगाश्च लक्ष्मयुक्तेक्षिताः सौम्यनभश्चरेन्द्रैः ॥१८॥

जिस द्रेष्काण में जन्म हो उस के अनुसार चक्र बना कर देखे, जिस अङ्ग में शुभ ग्रह पड़े उस अङ्ग में मस्सा, तिल या लहसन होता है। इसी तरह जिस अङ्ग में पापग्रह पड़े उस अङ्ग में व्रण होता है।

यदि पापग्रह अपने नवांश या द्रेष्काण में होकर स्थिर राशि में हो और शुभग्रह से युत दृष्ट हो तो पूर्वोक्त व्रण के स्थान में चिह्न मात्र कहना चाहिए ॥ १८ ॥

व्रणकारणमाह—

रवेर्व्रणः काष्ठचतुष्पदोत्थः शृङ्ग्यम्बुवारिप्रभवः शशाङ्कात् ।
कुजाद्विषाग्न्यस्त्रकृतश्च चान्द्रेर्भौमः शनेश्चापि मरुद्दृषद्भ्याम् ॥१९॥

पूर्वोक्त व्रण कारक रवि हो तो काष्ठ या चतुष्पद के आघात से, चन्द्रमा हो तो शृङ्ग वाले पशु या जलचर के आघात से, मङ्गल हो तो विष, अग्नि या शास्त्र से बुध हो तो मिट्टी के आघात से और शनि हो तो वायु या पत्थल के आघात से व्रण कहना चाहिए ॥ १९ ॥

व्रणनिश्चयज्ञानम्—

कुर्य्याद्व्रणं क्रूरखगो रिपुस्थो युक्तः शुभैर्लक्ष्म तिलं च दृष्टः ।
ग्रहत्रयं यत्र बुधान्वितं स्यात्तत्र व्रणोऽङ्गे खलु राशितुल्ये ॥ २० ॥

लग्न से षष्ठ स्थान में पाप ग्रह बैठा हो तो व्रण करता है। यदि षष्ठ स्थान में स्थित पाप ग्रह शुभ ग्रह से युत या दृष्ट हो तो लहसन या तिल करता है। जिस अङ्ग में बुध से युत तीन पाप ग्रह बैठा हो वहां अवश्य व्रण कहना चाहिए ॥ २० ॥

स्वबाहुबलभाग्ययोग—

मेषे शशाङ्के कलशे शनिश्चेद्भानुर्धनुस्थश्च भृगुर्मृगस्थः ।
तातस्य वित्तं न कदापि भुङ्क्ते स्वबाहुवीर्येण नरो वरेण्यः ॥२१॥

जिस के जन्म समय में मेष राशि में चन्द्रमा, कुम्भ में शनि, धनु

में रवि और मकर में शुक्र हो तो वह पिता की सम्पत्ति को कभी नहीं भोगता है, किन्तु अपने बहु बल से श्रेष्ठ होता है ॥ २१ ॥

दरिद्रयोगः—

चतुर्षु केन्द्रेषु भवन्ति पापा वित्तस्थिताश्चापि च पापखेटाः।
नरो दरिद्रोऽतितरां निरुक्तो भयङ्करश्चात्मकुलोद्भवानाम् ॥२२॥

जिस के चारों केन्द्र और द्वितीय स्थान में पाप ग्रह हों तो वह अत्यन्त दरिद्र तथा अपने कुल के लोगों को कष्ट देने वाला होता है ॥२२॥

राजसबुद्धियोगः—

सुतस्थितो वा यदि मूर्तिवर्ती बृहस्पती राज्यगतः शशाङ्कः।
नरस्तपस्वी विजितेन्द्रियश्च स्याद्राजसीबुद्धिविराजमानः ॥ २३ ॥

जिस के पञ्चम भाव या लग्न में बृहस्पति बैठा हो और दशम में चन्द्रमा हो तो वह तपस्वी, जितेन्द्रिय तथा राजसी बुद्धि से युक्त होता है ॥ २३ ॥

धनिकत्वयोगः—

कन्यायां च तुलाधरे सुरगुरुर्मेषे वृषे वा भृगुः
सौम्यो वृश्चिकराशिगः शुभखगैर्दृष्टः कुलश्रेष्ठताम्।
नूनं याति नरो विचारचतुरोऽप्यौदार्यजातादरो
नित्यानन्दभरो गुणैर्वरतरो निष्ठापरो वित्तवान् ॥ २४ ॥

जिस मनुष्य के जन्म समय में कन्या या तुला में बृहस्पति, मेष या वृष में शुक्र, वृश्चिक में बुध हो कर शुभ ग्रह से युत दृष्ट हो तो वह कुल में श्रेष्ठ, विवेकी उदारता से लोक में आदर पाने वाला, नित्य आनन्द से युक्त, गुणों से श्रेष्ठ, नैष्ठिक और धनी होता है ॥ २४ ॥

चौर्ययोगः—

षष्ठे ससौरौ भवतो बुधारौ नरो भवेच्चौर्यपरो नितान्तम्।
स्वकर्मसामर्थ्यविधेर्विशेषात्पराङ्घ्रिपाणीन्कुगुणी छिनत्ति ॥ २५ ॥

जिस के षष्ठ भाव में स्थित होकर बुध, मङ्गल, शनि के साथ हो तो

वह चोरी करने वाला, अपने सामर्थ्य से दूसरों के हाथ-पैर काटने वाला होता है ॥ २५ ॥

प्रसूतिकाले किल यस्य जन्तोः कर्केऽर्कजश्चेन्मकरे महीजः ।
चौर्यप्रसङ्गोद्भवचण्डदण्डाच्छाखादिखण्डानि भवन्ति नूनम् ॥२६॥

जिस के जन्म काल में शनि कर्क में और मङ्गल मकर में हो तो वह चोरी के अपराध में बड़े भारी दण्ड पाकर हाथ पैर से खण्डित होता है ॥ २६ ॥

वज्रेण मृत्युयोगः—

कुम्भे च मीने मिथुनाभिधाने शरासने स्युर्यदि पापखेटाः ।
कुचेष्टितः स्यात्पुरुषो नितान्तं वज्रेण नूनं निधनं हि तस्य ॥२७॥

यदि पापग्रह कुम्भ, मीन, मिथुन, धनु इन स्थानों में हों तो वह कुकर्मी और बिजुली के आघात से मरता है ॥ २७ ॥

अनेकतीर्थकृद्योगः—

यस्य प्रसूतौ खलु नैधनस्थः सौम्यग्रहः सौम्यनिरीक्षितश्च ।
तीर्थान्यनेकानि भवन्ति तस्य नरस्य सम्यङ्मतिसंयुतश्च ॥२८॥

जिस के जन्म काल में शुभ ग्रह से युत दृष्ट अष्टम भाव हो तो अनेक तीर्थ करने वाला और उत्तम बुद्धिसे युक्त होता है ॥ २८ ॥

नीचकर्मकृद्योगः—

बुधत्रिभागेन युतं विलग्नं केन्द्रस्थचन्द्रेण निरीक्षितञ्च ।
शिष्टान्वये यद्यपि जातजन्मा स्यान्नीचकर्मा मनुजः प्रकामम् ॥२९॥

बुध के द्रेष्काण से युक्त लग्न हो कर चन्द्रमा से देखा जाता हो तो श्रेष्ठ वंश में पैदा हो कर भी नीच कर्म करने वाला होता है ॥ २९ ॥

हीनदेहयोगः—

भानुर्द्वितीये भवने शनिश्चेन्निशीथिनीशो गगनाश्रितश्च ।
भूनन्दने वै मदने तदानीं स्यान्मानवो हीनकलेवरः सः ॥ ३० ॥

जिस के रवि, शनि द्वितीय भाव में, चन्द्रमा दशम भाव में

और मङ्गल सप्तम में हो तो वह क्षीण शरीर का होता है ॥ ३० ॥

श्वासक्षयप्लीहगुल्मरोगयोगः—

पापान्तराले च भवेत्कलावांस्तथार्कसूनुर्मदनालयस्थः ।
कलेवरं स्याद्विकलं च तस्य श्वासक्षयप्लीहकगुल्मरोगैः ॥ ३१ ॥

जिस के चन्द्रमा दो पापग्रहों के बीच में और शनि सप्तम भाव में हो तो वह मनुष्य श्वास, क्षय, प्लीही, गुल्म रोगों से पिड़ित शरीर वाला होता है ॥ ३१ ॥

लक्ष्मीविहीनयोगः—

शशी दिनेशस्य यदा नवांशे भवेद्दिनेशः शशिनो नवांशे ।
एकत्र संस्थौ यदि तौ भवेतां लक्ष्मीविहीनो मनुजः स नूनम् ॥३२॥

यदि सूर्य के नवांश में चन्द्रमा और चन्द्रमा के नवांश में सूर्य होकर साथ हो बैठा हो तो वह लक्ष्मी विहीन होता है ॥ ३२ ॥

तेजोहीननेत्रयोगः—

व्ययेऽरिभावे निधने धने च निशाकरारार्कशनैश्चराः स्युः ।
बलान्वितास्तेत्वनिलाधिकत्वात्तेजोविहीने नयने प्रकुर्युः ॥ ३३ ॥

यदि द्वादश, षष्ठ, अष्टम स्थानों में चन्द्रमा सूर्य, मङ्गल और शनि बलवान् होकर बैठा हो तो जातक का नेत्र तेज से हीन होता है ॥३३॥

कर्णनाशयोगः—

पापास्त्रिपुत्रायगता भवन्ति विलोकिता नैव शुभैर्नभोगैः ।
कुर्वन्ति ते कर्णविनाशनं च जामित्रयाताः खलु कर्णघातम् ॥३४॥

यदि तृतीय, पञ्चम, एकादश, सप्तम इन भावों में शुभ ग्रह की दृष्टि से रहित पापग्रह बैठे हों तो बधिर होता है ॥ ३४ ॥

नेत्रदोषयोगः—

धनव्ययस्थानगतश्च शुक्रो वक्रोऽथवा कर्णरुजं करोति ।
नक्षत्रनाथो यदि तत्र संस्थो दृग्दोषकारी कथितो मुनीन्द्रैः ॥३५॥

शुक्र, मङ्गल ये दोनों ग्रह द्वितीय और द्वादश भाव बैठा हो तो कर्ण रोग तथा चन्द्रमा हो तो नेत्ररोग होता है ॥ ३५ ॥

एते हि योगाः कथिता मुनीन्द्रैः सान्द्रं बलं यस्य नभश्चरस्य ।
कल्प्यं फलं तस्य च पाककाले सुनिर्मला यस्य मतिस्तु तेन ॥३६॥

मुनियों के द्वारा उक्त पूर्वोक्त योगों का फल योग कारक ग्रहों में जो बली ग्रह हो उस की दशा में प्राप्त होता है। ऐसा बुद्धिमानों को कल्पना करनी चाहिए ॥ ३६ ॥

धनभावविचारस्तत्र किं किं चिन्तनीयमित्याह—

स्वर्णादिधातुक्रयविक्रयश्च रत्नादिकोशोऽपि च संग्रहश्च ।
एतत्समस्तं परिचिन्तनीयं धनाभिधाने भवने सुधीभिः ॥ १ ॥

सुवर्ण आदि धातु, क्रय, विक्रय, रत्नादि का कोश, धनों का संग्रह ये सब धन भाव से विचारना चाहिए ॥ १ ॥

धनहीनयोगः—

भानुभूतनयभानुतनूजैश्चेद्धनस्य भवनं युतदृष्टम् ।
जायते च मनुजो धनहीनः किं पुनः कृशशशीक्षितयुक्तम् ॥२॥

जिस के जन्म काल में सूर्य, मङ्गल और शनि धन भाव में बैठे हों या धन स्थान को देखते हों तो वह धन हीन होता है। यदि धन स्थान क्षीण चन्द्र से भी युत, दृष्ट हो तो परम धनहीन होता है ॥ २ ॥

धनवान्योगः—

धने दिनेशोऽतिधनानि नूनं करोति मन्देन न चेक्षितश्च ।
शुभाभिधाना धनभावसंस्था नानाधनाभ्यागमनानि कुर्युः ॥ ३ ॥
गीर्वाणवन्द्यो द्रविणोपयातः सौम्येक्षितश्चेद्द्रविणं करोति ।
सोमेन दृष्टो धनभावसंस्थः सोमस्य सूनुर्धनहानिदः स्यात् ॥ ४ ॥

यदि शनि की दृष्टि से हीन सूर्य धन भाव में बैठा हो तो धनी होता है। यदि धन भाव में शुभग्रह हो तो नाना तरह के धनोपार्जन करने वाला होता है ॥ ३ ॥

धन भाव में स्थित हो कर बृहस्पति यदि शुभग्रह से देखा जाता हो तो धनवान् होता है। तथा धन भाव में स्थित हो कर बुध यदि चन्द्रमा से देखा जाता हो तो धन को हानि होती है ॥ ४ ॥

धनप्रतिबन्धकयोगः—

धनस्थितो ज्ञेन विलोकितश्च कृशः शशाङ्कोऽपि धनादिकानाम् ।
पूर्वार्जितानां कुरुते विनाशं नवीनवित्तप्रतिबन्धनं च ॥ ५ ॥

क्षीण चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित हो कर बुध से देखा जाता हो तो पूर्वार्जित धन का नाश और आगे धनप्राप्ति में बाधा होती है ॥५॥

धनप्राप्तियोगः—

वित्तस्थितो दैत्यगुरुः करोति वित्तागमं सोमसुतेन दृष्टः ।
स एव सौम्यग्रहयुक्तदृष्टः प्रकृष्टवित्ताप्तिकरो नराणाम् ॥ ६ ॥

द्वितीय भाव में स्थित हो कर शुक्र यदि बुध से देखा जाता हो तो धन का लाभ होता है। अगर अन्य शुभग्रह से भी देखा जाता हो तो विशिष्ट धन की प्राप्ति होती है ॥ ६ ॥

सहजभावविचारस्तत्र किं किं चिन्तनीयमित्याह—

सहोदराणामथ किङ्कराणां पराक्रमाणामुपजीविनां च ।
विचारणा जातकशास्त्रविद्भिस्तृतीयभावे नियमेन कार्या ॥ १ ॥

सहोदर, नौकर, पराक्रम, आजीविका इन सबों का तृतीय भाव से विचार करना चाहिए ॥ १ ॥

पापालयं चेत्सहजं समस्तैः पापैः समेतं प्रविलोकितं च ।
भवेदभावः सहजोपलब्धेस्तद्वैपरीत्ये च तदाप्तिरेव ॥ २ ॥

तृतीय भाव यदि पाप ग्रह की राशि में स्थित हो कर पाप ग्रह से युत दृष्ट हो तो सहोदर का अभाव तथा शुभ ग्रह की राशि में हो कर शुभ ग्रह से युत दृष्ट हो तो सहोदर का सुख होता है ॥ २ ॥

अग्रे जातं रविर्हन्ति पृष्ठे जातं शनैश्चरः ।
अग्रजं पृष्ठजं हन्ति सहजस्थो धरासुतः ॥ ३ ॥

यदि तृतीय भाव में सूर्य हो तो बड़े भाई का शनि हो तो छोटे भाई का और मङ्गल हो तो दोनों का नाश होता है ॥ ३ ॥

नवांशका ये सहजालयस्थाः कलानिधिक्षोणिसुतेन दृष्टाः ।
तावन्मिताः स्युः सहजाभगिन्यस्त्वन्येक्षिता वै परिकल्पनीयाः॥४॥

तृतीय भाव में जितने संख्यक नवांश हो उस पर चन्द्र, मङ्गल को दृष्टि हो उतने भाई बहन कहना चाहिये। अन्य ग्रहों की दृष्टि से भी तारतम्य कर कहना चाहिये। अर्थात् स्त्री ग्रह की दृष्टि से बहिन और पुरुष ग्रह को दृष्टि से भाई की संख्या कहनी चाहिये॥४॥

कुजेन दृष्टे रविजेऽनुजस्थे नश्यन्ति जाताः सहजाश्च तस्य ।
दृष्टे च तस्मिन्गुरुभार्गवाभ्यां शश्वच्छुभंस्यादनुजेषु नूनम् ॥ ५ ॥

तृतीय भाव यदि शनि से युत हो कर मङ्गल से देखा जाता हो तो सहोदर का नाश होता है। बृहस्पति, शुक्र से देखा जाता हो तो भाई का सुख होता है ॥ ५ ॥

सौम्येन भूमीतनयेन दृष्टः करोति नाशं रविजोऽनुजानाम् ।
शशाङ्कवर्गे सहजे कुजेन दृष्टे सरोगाः सहजा भवेयुः ॥ ६ ॥

तृतीय भाव में स्थित हो कर शनि यदि बुध और मङ्गल से देखा जाता हो तो सहोदर का नाश होता है। यदि तृतीय भाव में चन्द्रमा का वर्ग हो और उस पर मङ्गल की दृष्टि हो तो सहोदर रोगी होता है ॥ ६ ॥

दिवामणौ पुण्यगृहे स्वगेहे संदेह एवानुजजीवितस्य ।
एकः कदाचिच्चिरजीवितश्च भ्राता भवेद्भूपतिना समानः ॥ ७ ॥

सिंह राशि का रवि हो कर नवम भाव में स्थित हो तो सहोदर का सन्देह कहना चाहिये। कदाचित् एक सहोदर चिरजीवी हो कर राजा के सदृश होता है ॥ ७ ॥

चन्द्रमा यदि पापानां त्रितयेन प्रदृश्यते ।
भ्रातनाशो भवेत्तस्य यदि नो वीक्षितः शुभैः ॥ ८ ॥

यदि तृतीय भाव में स्थित हो कर चन्द्रमा तीन पाप ग्रह से देखा जाता हो तो भाई का नाश होता है। यदि शुभ ग्रह से देखा जाता हो तो भाई का सुख कहना चाहिये ॥ ८ ॥

सुहृद्भावविचारस्तत्र किं किं विचारणीयमित्याह—

सुहृद्गृहग्रामचतुष्पदानां क्षेत्रोघमालोकनकं चतुर्थे।
दृष्टे शुभानां शुभयोगतो वा भवेत्प्रसूतिर्नियमेन तेषाम् ॥ १ ॥

चतुर्थ भाव से मित्र, घर, ग्राम, पशु, खेती इन का विचार करना चाहिये। चतुर्थ भाव पर यदि शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो मित्रादि का सुख कहना चाहिये ॥ १ ॥

परिवारनाशकारकयोगः—

लग्ने चैव यदा जीवो धने सौरिश्च संस्थितः।
सप्तमे भवने पापाः परिवारक्षयङ्कराः ॥ २ ॥

यदि लग्न में बृहस्पति, द्वितीय भाव में शनि और सप्तम भाव में शेष ग्रह स्थित हो तो परिवार को नाश करने वाला योग होता है ॥ २ ॥

पापैस्त्रिभिश्चन्द्रमसि प्रदृष्टे स्यान्माननाशः शुभदृष्टिहीने।
व्ययास्तलग्नेष्वशुभाः स्थिताश्चेत्कुर्वन्ति ते वै परिवारनाशम् ॥३॥

यदि चन्द्रमा तीन पाप ग्रह से देखा जाता हो शुभ ग्रह से नहीं देखा जाता हो तो मान नाश होता है। तथा द्वादश, सप्तम, लग्न इन तीनों स्थानों में पाप ग्रह स्थित हो तो परिवार का नाश होता है ॥३॥

मातृहायोगः—

शनिर्धने सञ्जननें यदि स्यात्तथा विलग्ने सुरराजमन्त्री।
सिंहीसुतः सप्तमभावयातो जातस्य जन्तोर्जननी न जीवेत् ॥ ४ ॥

यदि द्वितीय भाव में शनि, लग्न में बृहस्पति और सप्तम में राहु हो तो जातक की माता नहीं जीती है ॥ ४ ॥

सुतभावविचारस्तत्र किं किं चिन्तनीयमित्याह—

बुद्धिप्रबन्धात्मजमन्त्रविद्या विनेयगर्भस्थितिनीतिसंस्थाः।

सुताभिधाने भवने नराणां होरागमज्ञैः परिचिन्तनीयाः ॥ १ ॥

पञ्चम भाव से बुद्धि, प्रबन्ध, पुत्र, मन्त्र, विद्या, विनय, गर्भ, नीति इन का विचार करना चाहिये ॥ १ ॥

लग्ने द्वितीये यदि वा तृतीये विलग्ननाथः प्रथमः सुतः स्यात् ।
तुर्यस्थितेऽस्मिंश्च सुतो द्वितीयः पुत्री सुतो वेति पुरः प्रकल्प्यम् ॥२॥

लग्नेश यदि लग्न, द्वितीय या तृतीय भाव में हो तो प्रथम पुत्र होता है, यदि लग्नेश चतुर्थ भाव में हो तो प्रथम कन्या पश्चात् पुत्र होता है। इस तरह पहले विचार करना चाहिये ॥ २ ॥

सुताभिधानं भवनं शुभानां योगेन दृष्ट्या सहितं विलोक्य ।
सन्तानयोगं प्रवदेन्मनीषी विपर्ययत्वे हि विपर्ययः स्यात् ॥ ३ ॥

यदि पञ्चम स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि योग हो तो सन्तान योग कहना और पाप ग्रह की दृष्टि योग हो तो सन्तानाभाव योग कहना चाहिये ॥ ३ ॥

सन्तानभावो निजनाथदृष्टः सन्तानलब्धिं शुभदृष्टियुक्तः ।
करोति पुंसामशुभैः प्रदृष्टः स्वस्वाम्यदृष्टो विपरीतमेव ॥ ४ ॥

यदि अपने स्वामी और शुभ ग्रह से दृष्ट युक्त पञ्चम भाव हो तो सन्तान होती है। पञ्चम भाव यदि स्वामी से अदृष्ट हो कर पाप ग्रह से देखा जाता हो तो सन्तान नहीं होती है ॥ ४ ॥

द्विदेहसंस्था भृगुभौमचन्द्राः सन्तानमादौ जनयन्ति नूनम् ।
एते पुनर्धन्विगता न कुर्युः पश्चात्तथादौ गदितं महद्भिः ॥ ५ ॥

यदि शुक्र, मङ्गल, चन्द्रमा ये तीनों द्विस्वभाव राशि में स्थित हों तो सन्तान होती है। पूर्वोक्त तीनों ग्रह यदि धनु के उत्तरार्ध में हों तो सन्तान नहीं होती है। तथा धनु के पूर्वार्ध में हों तो सन्तान होती है ॥ ५ ॥

सन्तानभावे गगनेचराणां यावन्मितानामिह दृष्टिरस्ति ।
स्यात्सन्ततिस्तत्प्रमिता नृसंज्ञै नराश्च कन्याः प्रमदाभिधानैः ॥६॥

पञ्चम भाव के ऊपर जितने ग्रहों की दृष्टि हो उतनी ही सन्तान कहनी चाहिये। उन में पुरुष ग्रहों की दृष्टि से पुरुष और स्त्री ग्रहों की दृष्टि से स्त्री सन्तान कहनी चाहिये ॥ ६ ॥

सन्तानभावाङ्कसमानसंख्या स्यात्सन्ततिर्वेति वदन्ति केचित्।
नीचोच्चमित्रादिगृहस्थितानां दृष्ट्या शुभं वा शुभमर्भकानाम् ७

किसी आचार्य का मत है कि सन्तान भाव में जितनी राशि संख्या हो उतनी सन्तान कहनी चाहिये। यदि पञ्चम भाव के ऊपर उच्चस्थ, मित्रराशिस्थ शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो सन्तान के लिये शुभ और नीचस्थ शत्रुराशिस्थ ग्रह की दृष्टि हो तो अशुभ कहना चाहिये ॥ ७ ॥

नवांशतुल्या प्रभवात्र संख्या दृष्ट्या शुभानां द्विगुणावगम्या।
क्लिष्टा च पापग्रहदृष्टियोगान् मिश्रा च मिश्रग्रहदृष्टितोऽत्र ॥ ८ ॥

अथवा पञ्चम भाव में जितनी राशि संख्या तुल्य नवांश हो उतनी सन्तान कहनी चाहिये। शुभ ग्रह की दृष्टि योग से द्विगुणित और पाप ग्रह की दृष्टि योग से सन्तान का अभाव कहना चाहिये ॥ ८ ॥

सुताभिधाने भवने यदि स्यात्खलस्य राशिः खलखेटयुक्तः।
सौम्यग्रहालोकनवर्जितश्च सन्तानहीनो मनुजस्तदानीम् ॥ ९ ॥

यदि पञ्चम भाव में पाप ग्रह की राशि और योग हो तथा शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं हो तो सन्तान की हानि कहनी चाहिये ॥ ९ ॥

कविः कलत्रे दशमे मृगांकः पातालयाताश्च खला भवन्ति।
प्रसूतिकाले यदि मानवं ते संतानहीनं जनयन्ति नूनम् ॥ १० ॥

यदि सप्तम में शुक्र दशम में चन्द्रमा और चतुर्थ भाव में पाप ग्रह हो तो सन्तान हीन होता है ॥ १० ॥

सुते सितांशे च सितेन दृष्टे बहून्यपत्यानि विधोरपीदम्।
दासीभवान्यात्मजभावनाथे यावन्मितेंशे शिशुसंमितिः स्यात् ॥ ११ ॥

यदि पञ्चम भाव में शुक्र का नवांश हो और उस पर शुक्र की दृष्टि

हो तो बहुत सन्तान होती है। यदि चन्द्रमा का नवांश हो और चन्द्रमा से देखा जाता हो तो भी बहुत सन्तान होती है। तथा पञ्चमेश की नवांश संख्या तुल्य दासी पुत्र कहना चाहिये ॥ ११ ॥

शुक्रेन्दुवर्गेण युते सुताख्ये युक्तेक्षिते वा भृगुचन्द्रमोभ्याम्।
भवन्ति कन्याः समराशिवर्गे पुत्राश्च तस्मिन्विषमाभिधाने ॥१२॥

यदि पञ्चम भाव में शुक्र या चन्द्रमा का वर्ग हो और शुक्र या चन्द्रमा से देखा जाता हो तो समराशि वर्ग से कन्या और विषम राशि वर्ग से पुत्र कहना चाहिये ॥ १२ ॥

मंदस्य राशिः सुतभावसंस्थो मंदेन युक्तः शशिनेक्षितश्च।
दत्तात्मजाप्तिः शशिवद्बुधेऽपि क्रीतः सुतस्तस्य नरस्य वाच्यः ॥१३॥

पञ्चम भाव शनि की राशि में हो कर शनि से देखा जाता हो तो जातक दत्तक पुत्र ग्रहण करने वाला होता है। पञ्चम भाव बुध की राशि में हो कर बुध से युत दृष्ट हो तो खरीदा हुआ पुत्र वाला होता है ॥ १३ ॥

संतानाधिपतेः पञ्चषष्ठरिःफस्थिते खले।
पुत्राभावो भवेत्तस्य यदि जातो न जीवति ॥ १४ ॥

पञ्चम भाव का स्वामी जिस स्थान में बैठा हो उस से षष्ठ और द्वादश में पाप ग्रह बैठा हो तो सन्तान का अभाव होता है। यदि हो भी तो नहीं जीता है ॥ १४ ॥

मंदस्य वर्गे सुतभावसंस्थे निशाकरस्थेऽपि च वीक्षितेस्मिन्।
दिवाकरेणोशनसा नरस्य पुनर्भवासंभवसूनुलब्धिः ॥ १५ ॥

यदि पञ्चम भाव में शनि का वर्ग हो और उसमें चन्द्रमा बैठा हो तथा रवि शुक्र से देखा जाता हो तो पुनर्भू (विधवा) स्त्री से पुत्र पैदा करने वाला होता है ॥ १५ ॥

क्षेत्रजपुत्रलाभयोगः—

शनेर्गणः सद्मनि पुत्रभावे बुधेक्षिते यो रविभूमिजाभ्याम्।

पुत्रो भवेत्क्षेत्रभवोऽथ बौधो गणोपि गेहे रविजेन दृष्टः ॥ १६ ॥

पञ्चम भाव में शनि का वर्ग हो और बुध, रवि, मङ्गल से देखा जाता हो या पञ्चम भाव में बुध का वर्ग हो और शनि से देखा जाता हो तो क्षेत्रज पुत्र (अपनी स्त्री में अन्य पुरुष से उत्पन्न पुत्र) वाला होता है॥

नवांशकाः पंचमभावसंस्था यावन्मितैः पापखगैः प्रदृष्टाः।
नश्यंति गर्भाः खलु तत्प्रमाणाश्चेद्वीक्षितं नो शुभखेचराणाम् ॥

पञ्चम भाव में जो नवांश हो उस पर जितने पाप ग्रह की दृष्टि हो और शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं हो उतनी सन्तान नष्ट होती है ॥ १७ ॥

भूनंदनो नंदनभावयातो जातं च जातं तनयं निहंति।
दृष्टे यदा चित्रशिखण्डिजेन भृगोः सुतेन प्रथमोपपन्नम् ॥ १८ ॥

यदि मङ्गल पञ्चम भाव में बैठा हो तो सन्तान हो कर नष्ट हो जाती है। अगर उस पर केतु और शुक्र की दृष्टि भी हो तो प्रथम सन्तान नष्ट होती है ॥ १८ ॥

रिपुभावविचारस्तत्र किं किं चिन्तनीयमित्याह—

वैरिव्रातः क्रूरकर्मामयानां चिंता शङ्का मातुलानां विचारः।
होरापारावारपारं प्रयातैरेतत्सर्वं शत्रुभावे विचिंत्यम् ॥ १ ॥

शत्रु, कठोर कर्म, रोग, चिन्ता, आशङ्का, मातुल (मामा) का शुभाशुभ फल इन का षष्ठ भाव से विचार करना चाहिये ॥ १ ॥

दृष्टिर्युतिर्वा खलखेचराणामरातिभावेरिविनाशनं स्यात्।
शुभग्रहाणां प्रतिदृष्टितोऽत्र शत्रूद्गमोप्यामयसंभवः स्यात् ॥ २ ॥

यदि षष्ठ भाव पाप ग्रह से युत दृष्ट हो तो रोग और शत्रु का नाश होता है। यदि शुभ ग्रह से युत दृष्ट हो तो शत्रु, रोग दोनों से भय कहना चाहिये ॥ २ ॥

जायाभावविचारस्तत्र किं किं चिन्तनीयमित्याह—

रणाङ्गने चापि वणिक्क्रियाश्च जायाविचारागमनप्रमाणम्।
शास्त्रप्रवीणैर्हि विचारणीयं कलत्रभावे किल सर्वमेतत् ॥ १ ॥

युद्ध, स्त्री, वाणिज्य, विवाह, यात्रा इन सबों का सप्तम भाव से विचार करना चाहिये ॥ १ ॥

स्त्रीलाभयोगः—

मूर्तौ कलत्रस्य नवांशको वा द्विषट्कभावस्त्रिलवः शुभानाम् ।
अनेन योगेन हि मानवानां स्यादङ्गनानामचिराद्वाप्तिः ॥ २ ॥

यदि सप्तम भाव में शुभ ग्रह के नवांश, द्वादशांश, द्रेष्काण हो तो बहुत जल्दी स्त्री लाभ कहना चाहिये ॥ २ ॥

सौम्यैर्युतं सौम्यभे सौम्यदृष्टं जायागेहं देहिनामङ्गनाप्तिम् ।
कुर्यान्नूनं वैपरीत्यादभावो मिश्रत्वेन प्राप्तिकाले प्रलापः ॥ ३ ॥

शुभ ग्रह से युक्त हो कर सप्तम भाव यदि शुभ राशि में हो और पाप ग्रह से भी देखा जाता हो तो स्त्री लाभ होता है। पाप ग्रह से युक्त हो कर पाप राशि में हो और शुभ ग्रह से भी देखा जाता हो तो स्त्री लाभ में बाधा कहनी चाहिये ॥ ३ ॥

लग्नाद्व्यये वा रिपुमंदिरे वा दिवाकरेन्दू भवतस्तदानीम् ।
स्यान्मानवस्यात्मज एक एव भार्यापि चैकेति वदंति संतः ॥ ४ ॥

रवि और चन्द्रमा यदि लग्न से द्वादश या षष्ठ भाव में हो तो एक पुत्र और एक स्त्री वाला होता है ॥ ४ ॥

गडांतकालेऽपि कलत्रभावे भृगोः सुते लग्नगतेऽर्कजाते ।
वंध्यापतिः स्यान्मनुजस्तदानीं शुभेक्षितं नो भवनं खलेन ॥ ५ ॥

जिस के जन्म समय में गण्डान्त हो, सप्तम भाव में शुक्र, लग्न में शनि हो और शुभ ग्रह से अदृष्ट हो कर सप्तम भाव यदि पाप ग्रह से देखा जाता हो तो उस की स्त्री वन्ध्या होती है ॥ ५ ॥

व्ययालये वा मदनालये वा खलेषु बुद्ध्यालयगे हिमांशौ ।
कलत्रहीनो मनुजस्तनूजैर्विवर्जितः स्यादिति वेदितव्यम् ॥ ६ ॥

यदि द्वादश या सप्तम भाव में पाप ग्रह और पञ्चम भाव में चन्द्रमा हो तो स्त्री पुत्र से हीन होता ॥ ६ ॥

प्रसूतिकाले च कलत्रभावे यमस्य भूमीतनयस्य वर्गे ।
ताभ्यां प्रदृष्टे व्यभिचारिणी स्याद्भर्तापि तस्या व्यभिचारकर्ता ॥७॥

यदि सप्तम भाव में शनि या मङ्गल का वर्ग हो और उक्त दोनों ग्रहों से युत दृष्ट हो तो उस की स्त्री व्यभिचारिणी और स्वयं भी व्यभिचारी होता है ॥ ७ ॥

शुक्रेन्दुपुत्रौ च कलत्रसंस्थौ कलत्रहीनं कुरुतो नरं तौ ।
शुभेक्षितौ तौ वयसो विरामे कामं च रामां लभते मनुष्यः ॥ ८ ॥

शुक्र और बुध यदि सप्तम भाव में हो तो स्त्री रहित होता है। यदि शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो वृद्धावस्था में स्त्री लाभ होता है ॥ ८ ॥

शुक्रेन्दुजीवशशिजैः सकलैस्त्रिभिश्च
द्वाभ्यां कलत्रभवने च तथैककेन ।
एषां गृहे विषमभैरवलोकिते वा
संति स्त्रियो भवनवर्गखगस्य भावाः ॥ ९ ॥

शुक्र, चन्द्र, गुरु, बुध ये चारों या तीन या दो या एक ग्रह भी सप्तम भाव में हों या इन्हीं ग्रहों की विषम राशि सप्तम भाव में हो और इन्हीं ग्रहों से दृष्ट हो तो वर्गेश के स्वभाव सदृश उतनी स्त्रियां होती हैं ॥ ९ ॥

कलत्रभावे च नवांशतुल्या नरस्य नार्यो ग्रहवीक्षणाद्वा ।
एकैकभौमार्कनवांशके च जामित्रभावस्थबुधार्कयोर्वा ॥ १० ॥

सप्तम भाव में जो नवांश हो उस पर जितने ग्रहों की दृष्टि हो उतनी स्त्री होती है। यदि सूर्य या मङ्गल का नवांश हो या सूर्य, बुध सप्तम भाव में हो तो एक स्त्री कहनी चाहिये ॥ १० ॥

शुक्रस्य वर्गेण युते कलत्रे बह्वंगनाभिर्भृगुवीक्षणेन ।
शुक्रेक्षिते सौम्यगणेऽङ्गनानां बाहुल्यमेवाशुभवीक्षणान्न ॥ ११ ॥

यदि शुक्र का वर्ग सप्तम भाव में हो कर शुभ ग्रह से देखा जाता हो अथवा शुभ ग्रह का वर्ग शुक्र से देखा जाता हो तो बहुत स्त्री

होती है। यदि पाप ग्रह से देखा जाता हो तो बहुत स्त्री नहीं कहनी चाहिये ॥ ११ ॥

महीसुते सप्तमभावयाते कान्तावियुक्तः पुरुषस्तदा स्यात् ।
मन्देन दृष्टे म्रियतेऽपि लब्ध्वा शुभग्रहालोकनवर्जितेऽस्मिन् ॥ १२ ॥

यदि सप्तम भाव में मङ्गल बैठा हो तो स्त्री हीन होता है। शनि से देखा जाता हो तो स्त्री हो कर मर जाती है। इस योग में शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो पूर्वोक्त फल होता है ॥ १२ ॥

पत्नीस्थाने यदा राहुः पापयुग्मेन वीक्षितः ।
पत्नीयोगस्तदा न स्याद्भूतापि म्रियतेऽचिरात् ॥ १३ ॥

सप्तम भाव में स्थित हो कर राहु दो पाप ग्रह से देखा जाता हो तो स्त्री लाभ नहीं होता है या हो कर भी मर जाती है ॥ १३ ॥

षष्ठे च भवने भौमः सप्तमे राहुसम्भवः ।
अष्टमे च यदा सौरिस्तस्य भार्या न जीवति ॥ १४ ॥

यदि षष्ठ भाव में मङ्गल, सप्तम में राहु और अष्टम में शनि हो तो उस की स्त्री नहीं जीती है ॥ १४ ॥

संक्षेपतोऽष्टमभावविचारस्तत्र किं किं विचारणीयमित्याह—

नद्युत्तारात्यंतवैषम्यदुर्गं शस्त्रं चायुः संकटं चेति सर्वम् ।
रंध्रस्थाने सर्वदा कल्पनीयं प्राचीनानामाज्ञया जातकज्ञैः ॥ १ ॥

नदी का पार होना, विषम स्थान, दुर्ग, शस्त्र, आयु, संकट इन का अष्टम भाव से विचार करना चाहिये ॥ १ ॥

मरणयोगः—

आयुःस्थाने यदा भानुः शशिना च विलोकितः ।
यदि नो वीक्षितः सौम्यैर्मरणं तत्र निर्दिशेत् ॥ २ ॥

अष्टम भाव में स्थित हो कर मङ्गल यदि शनि से देखा जाता हो और शुभ ग्रह से युत दृष्ट नहीं हो तो मरण होता है ॥ २ ॥

होराविद्भिश्चाष्टमस्थानजातं नानाभेदैर्यत्फलं तत्प्रदिष्टम्।
रिष्टाध्यायश्चापि निर्याणके वा यत्नान्नूनं प्रोच्यते तच्च सर्वम् ॥३॥

फलित शास्त्र को जानने वालों ने अष्टम स्थान से जितने फल कहे हैं वे सब हम अरिष्ट विचार और निर्याण विचार में आगे कहेंगे ॥ ३ ॥

भाग्यभावविचारस्तत्र किं किं चिन्तनीयमित्याह—

धर्मक्रियाया हि भवेत्प्रवृत्तिर्भाग्योपपत्तिर्विमलं च शीलम्।
तीर्थप्रयाणं प्रणयः पुराणैः पुण्यालये सर्वमिदं प्रदिष्टम् ॥ १ ॥

धर्म कार्य, भाग्योदय, सुन्दर स्वभाव, तीर्थाटन इन का नवम भाव से विचार करना चाहिये ॥ १ ॥

विहाय सर्वं गणकैर्विचिन्त्यं भाग्यालयं केवलमत्र यत्नात्।
आयुश्च माता च पिता च वंशो भाग्यान्वितेनैव भवन्ति धन्याः ॥२॥

ज्योतिष शास्त्र को जानने वालों को चाहिये कि सब भावों को छोड़ कर केवल नवम भाव का ही विचार करे। क्यों कि आयु, माता, पिता, वंश ये सब भाग्य से ही बनते हैं ॥ २ ॥

मूर्त्तेश्चापि निशापतेश्च नवमं भाग्यालयं कीर्तितं
तत्तत्स्वामियुतेक्षितं प्रकुरुते भाग्यस्य देशोद्भवम्।
चेदन्यैर्विषयान्तरेऽत्र शुभदाः स्वोच्चाधिपाः सर्वदा
कुर्युर्भाग्यमलाघवेति विबला दुःखोपलब्धिं पराम् ॥३॥

जन्म लग्न और चन्द्रमा से नवम स्थान भाग्यभाव कहलाता है। यदि नवम भाव अपने स्वामी से युक्त दृष्ट हो तो स्वदेश में भाग्योदय होता है। यदि शुभ ग्रह से युत दृष्ट हो तो परदेश में भाग्योदय होता है। यदि भाग्यस्थान का स्वामी उच्चस्थान में हो तो सब जगह भाग्योदय होता है। यदि भाग्येश और शुभ ग्रह निर्बल हों तो भाग्योदय न हो कर केवल दुख का लाभ होता है ॥ ३ ॥

भाग्येश्वरो भाग्यगतोऽस्ति किं वा सुस्थानगः सारविराजमानः।

भाग्याश्रितः कोस्ति विचार्य सर्वमत्यल्पमल्पं परिकल्पनीयम् ॥४॥

बली हो कर नवमेश यदि नवम भाव या केन्द्र या त्रिकोण में बैठा हो तो जातक भाग्यवान् होता है। नवमेश का बलाबल देख कर तदनुसार भाग्योदय कहना चाहिये ॥ ४ ॥

भाग्यवद्योगः—

तनुत्रिसूनूपगतो ग्रहश्चेद्यो वाधिवीर्यो नवमं प्रपश्येत् ।
यस्य प्रसूतौ स तु भाग्यशाली विलासशीलो बहुलार्थयुक्तः ॥५॥

पूर्ण बली हो कर ग्रह यदि लग्न, तृतीय या पञ्चम में स्थित हो और भाग्य स्थान को देखता हो तो वह भाग्यवान्, विलासी तथा सब सम्पत्ति से युक्त होता है ॥ ५ ॥

चेद्भाग्यगामी खचरः स्वगेहे सौम्येक्षितो यस्य नरस्य सूतौ ।
भाग्याधिशाली स्वकुलावतंसो हंसो यथा मानसराजमानः ॥६॥

भाग्य स्थान में स्थित हो कर भाग्येश यदि शुभ ग्रह से युत दृष्ट हो तो अति भाग्यवान् और अपने कुल में भूषण सदृश होता है ॥६॥

पूर्णेन्दुयुक्तौ रविभूमिपुत्रौ भाग्यस्थितौ सत्त्वसमन्वितौ च ।
वंशानुमानात्सचिवं नृपं वा कुर्वन्ति ते सौम्यदृशं विशेषात् ॥७॥

पूर्ण बली चन्द्रमा से युक्त सूर्य, मङ्गल बली हो कर नवम स्थान में स्थित हों तो अपने कुल के अनुसार राजा या मन्त्री होता है। उक्त योग पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो विशेष फल कहना चाहिये ॥ ७ ॥

स्वोच्चोपगो भाग्यगृहे नभोगो नरस्य योगं कुरुते सुलक्ष्म्याः ।
सौम्येक्षितोसौ यदि सौम्यपाल दन्तावलोत्कृष्टविलासशीलः ॥८॥

यदि उच्च स्थान का ग्रह भाग्य स्थान में बैठा हो तो उत्तम लक्ष्मी से युक्त होता है। यदि शुभ ग्रह से देखा जाता हो तो हाथी आदि अनेक वाहनों से युक्त हो कर सुखी होता है ॥ ८ ॥

दशमभावविचारस्तत्र किं किं चिन्तनीयमित्याह—

व्यापारमुद्रानृपमानराज्यं प्रयोजनं चापि पितुस्तथैव ।

महत्पदाप्तिः खलु सर्वमेतद्राज्याभिधाने भवने विचार्यम् ॥ १ ॥

व्यापार, मुद्रा, राजा से आदर, राज्य, पिता, श्रेष्ठ पद की प्राप्ति इन का दशम भाव से विचार करना चाहिये ॥ १ ॥

समुदितमृषिवर्यैर्मानवानां प्रयत्ना-
दिह हि दशमभावे सर्वकर्म प्रकामम्।
गगनगपरिदृष्ट्या राशिखेटस्य भावैः
सकलमपि विचिन्त्यं सत्त्वयोगात्सुधीभिः ॥ २ ॥

मुनियों का कहना है कि दशम भाव पर जिस तरह ग्रहों की दृष्टि योग हो या जिस प्रकार की राशि में हो तदनुसार सब फल कहना चाहिये ॥ २ ॥

तनोः सकाशाद्दशमे शशांके वृत्तिर्भवेत्तस्य नरस्य नित्यम्।
नानाकलाकौशलवाग्विलासैः सर्वोद्यमैः साहसकर्मभिश्च ॥ ३ ॥

पूर्ण बली चन्द्रमा यदि दशम भाव में बैठा हो तो अनेक कलाओं में कुशलता, वाक्चातुर्य्य, साहस, उद्योग इन सबों से सदा परिपूर्ण वृत्ति रहती है ॥ ३ ॥

तनोः शशांकाद्दशमे बलीयान्स्याजीवनं तस्य खगस्य वृत्त्या।
बलान्वितादुर्गपतेस्तु यद्वा वृत्तिर्भवेत्तस्य खगस्य पाके ॥ ४ ॥

जन्म लग्न या चन्द्रमा से दशम में जो ग्रह बली हो उस ग्रह की वृत्ति के अनुसार मनुष्य की आजीविका कहनी चाहिये। यदि दशम स्थान ग्रह रहित हो तो दशम भाव के षड्वर्ग पति में जो बली ग्रह हो उस की वृत्ति के अनुसार मनुष्य की आजीविका कहनी चाहिये। विशेष कर आजीविका कारी ग्रह की दशा में यह फल कहना चाहिये ॥ ४ ॥

तद्वृत्तिमाह—

दिवामणिः कर्मणि चन्द्रतन्वोर्द्रव्याण्यनेकोद्यमवृत्तियोगात्।
सत्त्वाधिकत्वं नरनायकत्वं पुष्टत्वमङ्गे मनसः प्रसादः ॥ ५ ॥

चन्द्रमा या लग्न से दशम भाव में सूर्य हो तो अनेक उद्योग से द्रव्य लाभ होता है तथा महाबली, राजा, पुष्ट शरीर वाला और प्रसन्न चित्त वाला होता है ॥ ५ ॥

लग्नेन्दुतः कर्मणि चेन्महीजः स्यात्साहसः क्रौर्यनिषादवृत्तिः ।
नूनं नराणां विषयाभिसक्तिर्दूरे निवासः सहसा कदाचित् ॥६॥

लग्न या चन्द्रमा से दशम भाव में मङ्गल हो तो क्रूर, साहसी, हिंसक, नौकरी से धन लाभ करने वाला, विषयी और हठात् दूर में निवास करने वाला होता है ॥ ६ ॥

लग्नेन्दुभ्यां कर्मगो रौहिणेयः कुर्याद्द्रव्यं नायकत्वं बहूनाम् ।
शिल्पेभ्यासः साहसं सर्वकार्ये विद्वद्वृत्त्या जीवितं मानवानाम् ॥७॥

लग्न या चन्द्रमा से दशम भाव में बुध हो तो द्रव्य लाभ करने वाला, बहुतों का नायक, शिल्प को जानने वाला, सब कामों में साहस करने वाला और पाण्डित्य से जीवन चलाने वाला होता है ॥७॥

विलग्नतः शीतमयूखतो वा माने मघोनः सचिवो यदा स्यात् ।
नानाधनाभ्यागमनानि पुंसां विचित्रवृत्त्या नृपगौरवं च ॥ ८ ॥

लग्न या चन्द्रमा से दशम भाव में गुरु हो तो अनेक प्रकार से धन लाभ करने वाला और अनेक व्यापार द्वारा राजा से गौरव पाने वाला होता है ॥ ८ ॥

होरायाश्च निशाकराद्भृगुसुतो मेषूरणे संस्थितो
नानाशास्त्रकलाकलापविलसद्वृत्त्याऽऽदिशेजीवनम् ।
दानं साधुमतिं तथा विनयतां कामं धनाभ्यागमं
मानं मानवनायकादविरलं शीलं विशालं यदा । ९ ॥

लग्न या चन्द्रमा से दशम भाव में शुक्र हो तो अनेक शास्त्रों में कुशलता से और श्रेष्ठ वृत्ति से जीवन चलाने वाला होता है। तथा दानी, सुन्दर बुद्धि वाला, विनयी, अति धनी, राजाओं से मान्य पाने वाला, सुन्दर स्वभाव वाला और विशाल हृदय वाला होता है ॥ ९ ॥

होरायाश्च सुधाकराद्रविसुतः सूतौ खमध्यस्थितो
वृत्तिं हीननरांतरस्य कुरुते कार्श्यं शरीरे सदा ।
खेदं वादभयं च धान्यधनयोर्हीनत्वमुच्चैर्मन-
श्चित्तोद्वेगसमुद्भवेन चपलं शीलं च नो निर्मलम् ॥ १० ॥

लग्न या चन्द्रमा से दशम भाव में शनि हो तो दूसरों के स्थान में नीच वृत्ति से जीविका करने वाला, दुर्बल शरीर वाला, वाद विवाद के भय से चित्त में अशान्ति वाला, धन हीन, मन के उद्वेग से चञ्चल और दुष्ट स्वभाव वाला होता है ॥ १० ॥

सूर्यादिभिर्व्योमचरैर्विलग्नादिन्दोः स्वपाके क्रमशो विकल्प्या ।
अर्थोपलब्धिर्जनकाज्जनन्याः शत्रोर्हिताद्भ्रातृकलत्रभृत्यात् ॥११॥

लग्न या चन्द्रमा से दशम भाव में सूर्य आदि ग्रह बैठे हों तो क्रम से पिता, माता, शत्रु, मित्र, भाई, स्त्री और नौकर के द्वारा उन २ ग्रह की दशा में धन लाभ होता है ॥ ११ ॥

दशमभावनवांशपवशाद् वृत्तिमाह—

रवीन्दुलग्नास्पदसंस्थितांशे पतेस्तु वृत्त्या परिकल्पयेत्ताम् ।
सदौषधोर्णादितृणैः सुवर्णैर्दिवामणिर्वृत्तिविधिं विदध्यात् ॥१२॥

रवि, चन्द्रमा, लग्न इन तीनों में जो बली हो उस से दशम भाव में जो नवांश हो उस के स्वामी की वृत्ति से जीविका कहनी चाहिये। जैसे रवि का नवांश हो तो औषधी, ऊन, तृण और सुवर्ण के व्यापार से धन लाभ होता है ॥ १२ ॥

नक्षत्रनाथोऽत्र कलत्रतश्च जलाशयोत्पन्नकृषिक्रियादेः ।
कुजोऽग्निसत्साहसधातुशस्त्रैः सोमात्मजः काव्यकलाकलापैः ॥१३॥

यदि दशम भाव में चन्द्रमा का नवांश हो तो स्त्री, जलोत्पन्न वस्तु या खेती से आजीविका कहनी चाहिये। मङ्गल का नवांश हो तो अग्नि, साहस, धातु या शस्त्र से आजीविका कहनी चाहिये। बुध का नवांश हो तो काव्य-कलाओं से आजीविका कहनी चाहिये ॥१३॥

जीवो द्विजन्मोचितदेवधर्मैः शुक्रो महिष्यादिकरौप्यरत्नैः ।
शनैश्चरो नीचतरप्रकारैः कुर्यान्नराणां खलु कर्मवृत्तिम् ॥ १४ ॥

यदि दशम भाव में गुरु का नवांश हो तो ब्राह्मणोचित कर्म और देवपूजन आदि धर्म से, शुक्र का नवांश हो तो भैंस, गाय और सोना चान्दी आदि से, शनैश्चर का नवांश हो तो नोकरी आदि से आजीविका होती है ॥ १४ ॥

कर्मस्वामी ग्रहो यस्य नवांशो परिवर्तते ।
तत्तुल्यकर्मणो वृत्तिं निर्दिशन्ति मनीषिणः ॥ १५ ॥

दशमेश जिस ग्रह के नवांश में हो उस ग्रह की वृत्ति से आजीविका कहनी चाहिये ॥ १५ ॥

मित्रारिगेहोपगतैर्नभोगैस्ततस्ततोऽर्थः परिकल्पनीयः ।
तुङ्गे पतङ्गे स्वगृहे त्रिकोणे स्यादर्थसिद्धिर्निजबाहुवीर्यात् ॥१६॥

यदि दशम भाव का स्वामी मित्र राशि में बैठा हो तो मित्र से, शत्रु राशि में बैठा हो तो शत्रु से धन का लाभ कहना चाहिये। इस से यह सिद्ध होता है कि यदि दशमेश जाया भाव में हो तो स्त्री से, सुत भाव में हो तो पुत्र से धन लाभ कहना चाहिये इत्यादि। यदि रवि अपने घर, उच्च या त्रिकोण में हो तो अपने बाहु बल से धन लाभ कहना चाहिये ॥ १६ ॥

लग्नार्थलाभोपगतैः सवीर्यैः शुभैर्भवेद्भूधनसौख्यमुच्चैः ।
इतीरितं पूर्वमुनिप्रवर्यैर्बलानुमानात्परिचिन्तनीयम् ॥ १७ ॥

बली शुभ ग्रह यदि लग्न, द्वितीय, एकादश इन भावों में हो तो भूमि धन और सुख मिलता है। मुनियों का कथन है कि पूर्व कथित सब फल ग्रह के बलानुसार समझना चाहिये ॥ १७ ॥

लाभभावविचारस्तत्र किं किं चिन्तनीयमित्याह—

गजाश्वहेमांबररत्नजातमान्दोलिकामङ्गलमण्डनानि ।
लाभः किलैपामखिलं विचार्यमेतत्तु लाभस्य गृहे ग्रहज्ञैः ॥१॥

हाथी, घोड़ा, सोना, वस्त्र, रत्न, पालकी, सुन्दर भूषण, सब वस्तु का लाभ इन का एकादश भाव से विचार करना चाहिये ॥ १ ॥

सूर्येण युक्ते च विलोकिते वा लाभालये तस्य गणोऽत्र चेत्स्यात् ॥
भूपालतश्चौरकुलात्कलेर्वा चतुष्पदादेर्बहुधा धनाप्तिः ॥ २ ॥

यदि एकादश भाव सूर्य से युत दृष्ट हो या एकादश भाव में सूर्य का षड्वर्ग हो तो राजा, चोर, झगड़ा या पशु आदि से धन लाभ कहना चाहिये ॥ २ ॥

चंद्रेण युक्तं च विलोकितं वा लाभालयं चंद्रगणाश्रितं चेत् ।
जलाशयस्त्रीगजवाजिवृद्धिः पूर्णे भवेत्क्षीणतरे विलोमम् ॥३॥

यदि एकादश भाव पूर्ण चन्द्र से युत दृष्ट हो या उस में चन्द्र का षड्वर्ग हो तो जलाशय, स्त्री, हाथी, घोड़ा इन की वृद्धि होती है। यदि चन्द्रमा क्षीणवली हो तो विपरीत फल समझना चाहिये ॥ ३ ॥

लाभालयं मङ्गलयुक्तदृष्टं प्रकृष्टभूषामणिहेमलब्धिः ।
विचित्रयात्रा बहुसाहसं स्यान्नानाकलाकौशलबुद्धियोगैः ॥ ४ ॥

यदि एकादश भाव मङ्गल से युत दृष्ट हो तो उत्तम आभूषण, मणि, सुवर्ण इन का लाभ, अनेक स्थलो में यात्रा, बहुत साहस, अनेक कलाओं में कुशलता और सुन्दर बुद्धि होती है ॥ ४ ॥

लाभे सौम्यगणाश्रिते सति युते सौम्येन संवीक्षिते
नानाकाव्यकलाकलापविधिना शिल्पेन लिप्या सुखम् ।
युक्तिर्द्रव्यमयी भवेद्धनचयः सत्साहसैरुद्यमैः
सख्यं चापि वणिग्जनैर्बहुतरं क्लीवैर्नृणां कीर्तितम् ॥५॥

यदि एकादश भाव में बुध का वर्ग हो और बुध से युत दृष्ट हो तो नाना प्रकार के काव्य, शिल्प और लेख से सुख मिलता है। तथा द्रव्य कमाने की युक्ति, उत्तम साहस और उद्योग से धन की वृद्धि, व्यापारियों से मैत्री, नपुंसक के द्वारा सन्मान होती है ॥ ५ ॥

यज्ञक्रियासाधुजनानुयातो राजाश्रितोत्कृष्टरूपो नरः स्यात् ।

द्रव्येण हेमप्रचुरेण युक्तो लाभे गुरोर्वर्गयुगीक्षणं चेत् ॥६॥

यदि एकादश भाव में गुरु का वर्ग हो और गुरु से युत दृष्ट हो तो यज्ञ क्रिया, साधुओं की सेवा, राजाओं की कृपा और सुवर्ण आदि द्रव्यों से युक्त होता है ॥ ६ ॥

लाभालये भार्गववर्गयातं युतेक्षितं वा यदि भार्गवेण ।
वेश्याजनैर्वापि गमागमैर्वा सद्रौप्यमुक्ताप्रचुरस्वलब्धिः ॥७॥

यदि एकादश भाव में शुक्र का वर्ग हो और शुक्र से युत दृष्ट हो तो वेश्या या विदेश यात्रा से चान्दी सोना मोती आदि प्रचुर द्रव्य का लाभ होता है ॥ ७ ॥

लाभवेश्मनि शनीक्षितयुक्ते तद्गणेन सहिते सति पुंसाम् ।
नीललोहमहिषीगजलाभो ग्रामवृंदपुरगौरवमिश्रः ॥८॥

यदि एकादश भाव में शनि का वर्ग हो और शनि से युत दृष्ट हो तो नील, लोहा, भैंस, हाथी इन का लाभ और ग्रामों में आदर पाने वाला होता है ॥ ८ ॥

युक्तेक्षिते लाभगृहे सुखाख्ये वर्गे शुभानां समवस्थितेऽपि ॥
लाभो नराणां बहुधाऽथवास्मिन्सर्वग्रहैर्युक्तनिरीक्ष्यमाणे ॥९॥

यदि एकादश और चतुर्थ भाव में शुभ ग्रह का वर्ग हो तो किसी भी ग्रह से युत दृष्ट होने पर भी अनेक प्रकार का लाभ होता है ॥९॥

व्ययभावविचारस्तत्र किं किं चिन्तनीयमित्याह—

हानिर्दानं व्ययश्चापि दण्डो निबंध एव च ।
सर्वमेतद्व्ययस्थाने चिंतनीयं प्रयत्नतः ॥१॥

हानि, दान, खर्च, दण्ड, बन्धन इन सबों का विचार यत्न पूर्वक व्यय भाव से करना चाहिए ॥ १ ॥

व्ययालये क्षीणकरः कलावान्सूर्योऽथवा द्वावपि तत्र संस्थौ ।
द्रव्यं हरेत्क्ष्मिपतिस्तु तस्य व्ययालये वा कुजदृष्टियुक्ते ॥२॥

व्यय भाव में क्षीण चन्द्रमा, रवि या दोनों बैठे हों, उस पर मङ्गल की दृष्टि हो तो उस मनुष्य का धन राजा हर लेता है ॥ २ ॥

पूर्णेन्दुसौम्येज्यसिता व्ययस्थाः कुर्वंति संस्थां धनसञ्चयस्य ।
प्रान्त्यस्थिते सूर्यसुते कुजेन युक्तेक्षिते वित्तविनाशनं स्यात् ॥३॥

यदि व्यय भाव में पूर्ण चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र हों तो कोष धन से पूर्ण होता है। अगर शनि व्यय स्थान में बैठ कर मङ्गल से युत दृष्ट हो तो धननाश होता है ॥ ३ ॥

भावफलोपयुक्तत्वेनारिष्टाध्यायो निरूप्यते—

लग्नेन्द्वोश्च कलत्रपुत्रभवने स्वस्वामिसौम्यैर्ग्रहै-
र्युक्ते वाथ विलोकिते खलु तदा तत्प्राप्तिरावश्यकी ।
लग्ने चेत्सविता स्थितो रविसुतो जायाश्रितो मृत्युकृ-
ज्जायायाश्च महीसुतः सुतगतः कुर्यात्सुतानां क्षतिम् ॥१॥

यदि लग्न या चन्द्रमा से सप्तम और पञ्चम भाव अपने स्वामी और शुभ ग्रह से युत दृष्ट हो तो स्त्री, पुत्र की प्राप्ति होती है। यदि लग्न में रवि और सप्तम में शनि हो तो स्त्री की मृत्यु होती है। अगर पञ्चम स्थान में मङ्गल हो तो पुत्र की हानि होती है ॥ १ ॥

असौम्यमध्यस्थितभार्गवश्चेत्पातालरन्ध्रे खलखेटयुक्ते ।
सौम्यैरदृष्टे भृगुजे च पत्नीनाशो भवेत्पाशहुताशनाद्यैः ॥२॥

चतुर्थ या अष्टम में स्थित हो कर शुक्र दो पाप ग्रह के मध्य में हो और उस पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं हो तो उस की स्त्री फाँसी या अग्नि से जल कर मर जाती है ॥ २ ॥

दिवाकरेन्दू व्ययवैरियातौ जायापती चैकविलोचनौ स्तः ।
कलत्रधर्मात्मजगौ सिताकौं पुमान्भवेत्क्षीणकलत्र एव ॥३॥

यदि षष्ठ, द्वादश भाव में रवि, चन्द्र हो तो स्त्री, पुरुष दोनों एकाक्ष होते हैं, यदि सप्तम, नवम और पञ्चम में शुक्र, रवि हो तो पुरुष स्त्री से हीन होता है ॥ ३ ॥

भसन्धियाते च सिते स्मरस्थे तनौ प्रयत्नेन तु भानुसूनौ ।
वन्ध्यापतिः स्यान्मनुजस्तदानीं सुतालयं नो शुभदृष्टयुक्तम् ॥४॥

यदि राशि सन्धि (कर्क, वृश्चिक, मीन के अन्त) में स्थित हो कर शुक्र सप्तम भाव में, शनि लग्न में और किसी शुभ ग्रह की दृष्टि पञ्चम भाव पर नहीं हो तो बन्ध्या स्त्री का पति होता है ॥ ४ ॥

क्रूराश्च होरास्मररि:फयाताः सुतालये हीनबलः कलावान् ।
एवं प्रसूतौ किल यस्य योगो भवेत्स भार्यातनयैर्विहीनः ॥ ५ ॥

यदि पापग्रह लग्न, सप्तम और द्वादश भाव में चीण चन्द्रमा पञ्चम में हो तो स्त्री, पुत्र से हीन होता है ॥ ५ ॥

द्यूनेऽर्कजारौ सभृगू शशाङ्कादपुत्रभार्यं कुरुतो नरं तौ ।
स्यातां नृनार्योश्च खगौ स्मरस्थौ सौम्येक्षितौ तौ शुभदौ नृनार्योः ॥

चन्द्रमा से सप्तम स्थान में शुक्र सहित शनि मङ्गल हो तो स्त्री, पुत्र से हीन होता है। यदि पुरुष को कुण्डली में सप्तम भाव में पुरुष ग्रह (रवि, भौम, गुरु) और स्त्री की कुण्डली में सप्तम भाव में स्त्री ग्रह (चन्द्र, शुक्र) हो कर शुभ ग्रह से देखे जाते हों तो स्त्री, पुरुष दोनों को परस्पर सुख होता है ॥ ६ ॥

व्यभिचारियोगः—

सितेऽस्तयाते शनिभौमवर्गे भौमार्कदृष्टे परदारगामी ।
मन्दारचन्द्रा यदि संयुताः स्युः पौंश्चल्यसक्तौ रमणीनरौ स्तः ॥

यदि सप्तम भाव में स्थित हो कर शुक्र शनि, मङ्गल के षड्वर्ग में बैठा हो और रवि, मङ्गल से देखा जाता हो तो परस्त्री में गमन करने वाला होता है। यदि सप्तम में शनि, मङ्गल, चन्द्र ये तीनों हों तो पत्नी सहित व्यभिचार करने वाला होता है ॥ ७ ॥

परस्परांशोपगतौ रवीन्दू रोषामयं तौ कुरुतो नराणाम् ।
एकैकगेहोपगतौ तु तौ वा तमेव रोगं कुरुतो नितान्तम् ॥८॥

यदि चन्द्रमा के नवांश में रवि और रवि के नवांश में चन्द्रमा हो तो स्त्री, पुरुष दोनों क्रोधी और रोगी होते हैं। यदि चन्द्रमा के नवांश

में रवि हो तो पुरुष, रवि के नवांश में चन्द्रमा हो तो स्त्री क्रोधी और रोगी होती हैं ॥ ८ ॥

मन्दावनीसूनुरवीन्दवश्चेद्रन्ध्रारिवित्तव्ययभावसंस्थाः।
आन्ध्यं भवेत्सारसमन्वितस्य खेटस्य दोषात्पुरुषस्य नूनम् ॥९॥

यदि शनि, मङ्गल, रवि, चन्द्र ये ग्रह अष्टम, षष्ठ, द्वितीय, द्वादश इन स्थानों में हों तो उन में जो ग्रह बली हो उस के दोष से जातक अन्धा होता है ॥ ९ ॥

मृगालिगोकर्कटकास्त्रिकोणे प्रसूतिकाले खलखेटयुक्ताः।
निरीक्षिता वा जनयन्ति जातं कुष्ठेन युक्तं प्रवदन्ति सन्तः ॥१०॥

नवम, पञ्चम भाव मकर, वृश्चिक, वृष या कर्क में स्थित हो कर पाप ग्रह से युत या दृष्ट हो तो जातक कुष्ठी होता है ॥ १० ॥

मन्दार्कचन्द्रास्त्रिसुतायधर्मे सौम्येन युक्ता न च वीक्षिताश्चेत्।
कर्णप्रणाशं जनयन्ति नूनं स्मरस्थितास्ते दशनाभिघातम् ॥११॥

तृतीय, पञ्चम, एकादश, नवम इन स्थानों में शनि, रवि, चन्द्र बैठे हों और किसी शुभ ग्रह से युत, दृष्ट न हो तो कान का नाश होता है। पूर्वोक्त तीनों ग्रह अगर सप्तम में हों तो दाँतों का नाश होता है ॥ ११ ॥

ग्रस्ते विधौ लग्नगताश्च पापास्त्रिकोणगा जन्म पिशाचिकस्य।
ग्रस्ते विधौ लग्नगते तथैव नेत्रोपघातः खलु कल्पनीयः ॥१२॥

यदि जन्म काल में चन्द्र का ग्रहण हो लग्न, नवम पञ्चम इन स्थानों में पाप ग्रह बैठे हों तो जातक पिशाच के उपद्रव से युक्त होता है। यदि ग्रहण कालिक चन्द्रमा लग्न का हो तो जातक अन्धा होता है ॥ १२ ॥

लग्नस्थिते देवपुरोहितेऽस्ते शनौ च वाताधिकता नितांतम्।
जीवे विलग्नेऽवनिनन्दनेऽस्ते मदोद्धतः स्यात्पुरुषो विशेषात् ॥१३॥

गुरु लग्न में, शनि सप्तम में हो तो जातक वातरोगी होता है। गुरु लग्न में, मङ्गल सप्तम में हो तो जातक मदोन्मत्त होता है ॥१३॥

स्मरे त्रिकोणे धरणीतनूजे शनौ तनौ वा पवनप्रकोपः ।
क्षीणेन्दुमंदौ व्ययभावयातौ तदापि वाताधिकता नराणाम् ॥१४॥

यदि सप्तम, पञ्चम, नवम भाव में मङ्गल, लग्न में शनि अथवा क्षीण चन्द्रमा, शनि दोनों द्वादश भाव में हो तो वातरोग होता है ॥१४॥

वंशच्छेदकरः शशांकभृगुजः क्रूरैः स्वकामाम्बुगैः
शिल्पी केंद्रगतार्किणा बुधयुतत्र्यंशे समालोकिते ।
अंते देवगुरौ दिनेश्वरयुतस्यांशे च दासीसुतो
नीचः कामगयोः खरांशुशशिनोः सौरेण संदृष्टयोः ॥१५॥

पाप ग्रह से युक्त हो कर चन्द्रमा, शुक्र दोनों द्वितीय सप्तम या चतुर्थ भाव में हो तो वंश नाश करने वाले होते हैं ।

बुध जिस द्रेष्काण में बैठा हो उस द्रेष्काण राशि को यदि केन्द्र में स्थित हो कर शनैश्चर देखता हो तो चित्रकार होता है ।

सूर्य जिस राशि में बैठा हो उस के द्रेष्काण या नवांश में स्थित हो कर गुरु अगर द्वादश भाव में हो तो दासीपुत्र होता है ।

सप्तम भाव में स्थित हो कर रवि चन्द्रमा यदि शनैश्चर से दृष्ट हो तो नीचकर्म करने वाला होता है ॥ १५ ॥

वयो राशिं स्वनक्षत्रमेकीकृत्य पृथक्पृथक् ।
द्विचतुस्त्रिगुणं कृत्वा सप्ताष्टरसभाजितम् ॥ १६ ॥
आद्यन्तयोर्भवेद्दुःखी मध्ये शून्यं धनक्षयः ।
स्थानत्रयेऽप्यशेषं तु मृत्युः साङ्केषु वै जयी ॥ १७ ॥

जन्म काल से वर्तमान काल तक वर्ष संख्या, जन्म राशि संख्या, जन्म नक्षत्र संख्या तीनों के योग को तीन स्थान में रख कर क्रम से २, ४, ३ से गुणा करे, गुणन फल में ७, ८, ६ का भाग देने से प्रथम, तृतीय स्थान में शून्य शेष रहने से क्लेश, द्वितीय स्थान में शून्य शेष बचे तो धन का नाश, तीनों स्थान में शून्य शेष बचे तो मरण और तीनों स्थान में शेष बचे तो उस वर्ष में विजय होता है ॥ १६–१७ ॥

उदाहरण—किसी का सम्वत् १९८८, चित्रा नक्षत्र और धनु राशि में जन्म है,

इस का सम्वत् २००३ का फल देखना है।

अतः वर्ष संख्या = १५,

जन्म नक्षत्र संख्या = १४,

जन्म राशि संख्या = ९,

सबों के योग = ३८ को तीन जगह रख कर २, ४, ३ से गुणा कर ७ ८, ९ का भाग देने से—

$$\frac{३८ \times २}{७} = \frac{७६}{७} = १० + \frac{६}{७}$$

$$\frac{३८ \times ४}{८} = \frac{१५२}{८} = १९ + \frac{०}{८}$$

$$\frac{३८ \times ३}{९} = \frac{११४}{९} = १२ + \frac{०}{९}$$

यहाँ द्वितीय, तृतीय स्थान में शून्य शेष बचा है इस लिये इस वर्ष में धनक्षय होगा ऐसा कहना चाहिए। इस प्रकार में "मध्यान्तयो श्च शून्यं चेद्वसुक्षयमुदीरयेत्" इतनी त्रुटि है। अतः पाठक गण इस को भी देख कर फल विचार करें ॥ १६–१७ ॥

अथ रव्यादिग्रहभावफलाध्यायः।

तत्रादौ लग्नस्थितसूर्यफलम्—

लग्नेऽर्केऽल्पकचः क्रियालसतनुः क्रोधी प्रचण्डोन्नतः
कामी लोचनरुक्सुकर्कशतनुः शूरः क्षमी निर्घृणः।
फुल्लाक्षः शशिभे क्रिये स्थितिहरः सिंहे निशांधः पुमान्
दारिद्र्योपहतो विनष्टतनयः संस्थस्तुलासंज्ञके ॥ १ ॥

जिस के जन्म काल में लग्न में रवि हो वह थोड़े केश वाला, आलसी, क्रोधी, बड़े उग्र स्वभाव वाला, कामी, नेत्र रोग से युक्त, रूक्ष शरीर वाला, शूर, क्षमाशील और निर्दयी होता है।

यदि लग्न में स्थित हो कर रवि कर्क का हो तो आँख में फूली वाला, मेष में हो तो चञ्चल स्वभाव वाला, सिंह में हो तो रतौंधी वाला, तुला में हो तो दरिद्र और सन्तान हीन होता है ॥ १ ॥

धनभावस्थितसूर्यफलम्—

धनसुतोत्तमवाहनवर्जितो हृतमतिः सुजनोज्झितसौहृदः ।
परगृहोपगतो हि नरो भवेद्दिनमणौर्द्रविणे यदि संस्थितिः ॥२॥

जिस के धन भाव में सूर्य हो वह धन, पुत्र, सवारी से हीन, निर्बुद्धि, सज्जनों से द्वेष रखने वाला, और दूसरे के घर में निवास करने वाला होता है ॥ २ ॥

तृतीयभावस्थितसूर्यफलम्—

प्रियंवदः स्याद्धनवाहनाढ्यः सुकर्मचित्तोऽनुचरान्वितश्च ।
मितानुजः स्यान्मनुजो बलीयान्दिनाधिनाथे सहजेऽधिसंस्थे ॥३॥

जिस के तृतीय भाव में सूर्य हो वह प्रिय बोलने वाला, धन, वाहन से युक्त, सत्कर्म में मन रखने वाला, नौकरों से युक्त, थोड़े छोटा भाई वाला और बली होता है ॥ ३ ॥

चतुर्थभावस्थितसूर्यफलम्—

सौख्येन यानेन धनेन हीनं तातस्य वित्तोपहतप्रवृत्तम् ।
चलन्निवासं कुरुते धुमांसं पातालशाली नलिनीविलासी ॥४॥

जिस के चतुर्थ भाव में सूर्य हो वह सुख, वाहन और धन से हीन, पिता के धन को नाश करने वाला, तथा अनेक स्थान में निवास करने वाला होता है ॥ ४ ॥

पंचमभावस्थितसूर्यफलम्—

स्वल्पापत्यं शैलदुर्गेशभक्तं सौख्यैर्युक्तं सत्क्रियार्थैर्विमुक्तम् ।
भ्रान्तत्वांतं मानवं हि प्रकुर्यात्सूनुस्थाने भानुमान्वर्तमानः ॥ ५ ॥

जिस के पञ्चम भाव में सूर्य बैठा हो वह पार्वती, शङ्कर का भक्त, सुखी, सत्कार्य, धन से हीन और भ्रान्ति युक्त होता है ॥ ५ ॥

षष्ठभावस्थितसूर्यफलम्—

शश्वत्सौख्येनान्वितः शत्रुहंता सत्त्वोपेतश्चारुयानो महौजाः।
पृथ्वीभर्तुः स्यादमात्यो हि मर्त्यः शत्रुक्षेत्रे मित्रसंस्था यदि स्यात्।६।

जिस के षष्ठ भाव में रवि हो वह सदा सुखी, शत्रुओं को नाश करने वाला, बलवान्, सुन्दर सवारी वाला, अत्यन्त तेजस्वी और राजा का मन्त्री होता है॥ ६॥

सप्तमभावस्थितसूर्यफलम्—

श्रिया विमुक्तो हतकायकांतिर्भयामयाभ्यां सहितः कुशीलः।
नृपप्रकोपार्तिकृशो मनुष्यः सीमंतिनीसद्मनि पद्मिनीशे॥ ७॥

जिस के सप्तम भाव में सूर्य हो वह लक्ष्मी से हीन, रूक्ष कान्ति वाला, भय रोग से युक्त, निन्दनीय स्वभाव वाला, तथा राजक्रोध से दुःखी और दुर्बल रहता है॥ ७॥

अष्टमभावस्थितसूर्यफलम्—

नेत्राल्पत्वं शत्रुवर्गाभिवृद्धिर्बुद्धिभ्रंशः पुरुषस्यातिरोपः।
अर्थाल्पत्वं कार्श्यमंगे विशेषादायुःस्थाने पद्मिनीप्राणनाथे॥८॥

जिस के अष्टम भाव में सूर्य हो वह छोटी आँख वाला, अधिक शत्रु वाला, बुद्धि हीन, क्रोधी, थोड़े धन वाला और दुर्बल शरीर वाला होता है॥ ८॥

नवमभावस्थितसूर्यफलम्—

धर्मकर्मविरतश्च सन्मतिः पुत्रमित्रजसुखान्वितः सदा।
मातृवर्गविषमो भवेन्नरस्त्रित्रिकोणभवने दिवामणौ॥ ९॥

जिस के नवम भाव में सूर्य हो वह धर्म कर्म से हीन, सुन्दर बुद्धि वाला, पुत्र मित्र के सुख से युक्त और माता के कुल का द्वेषी होता है॥ ९॥

दशमभावस्थितसूर्यफलम्—

सद्बुद्धिवाहनधनागमनानि नूनं
भूपप्रसादसुतसौख्यसमन्वितानि।

साधूपकारकरणं मणिभूषणानि
मेषूरणे दिनमणिः कुरुते नराणाम् ॥ १० ॥

जिस के दशम भाव में सूर्य हो वह सुन्दर बुद्धि वाला, वाहन धन से युक्त, राजा की प्रसन्नता से युक्त, पुत्र सुख से युक्त, साधुओं का उपकार करने वाला और भुषण से युक्त होता है ॥ १० ॥

एकादशभावस्थितसूर्यफलम्—

गीतिप्रीतिं चारुकर्मप्रवृत्तिं चञ्चत्कीर्तिं वित्तपूर्तिं नितान्तम् ।
भूपात्प्राप्तिं नित्यमेव प्रकुर्यात्प्राप्तिस्थाने भानुमान्मानवानाम् ॥११॥

जिस के एकदश भाव में सूर्य हो वह गीत में प्रेम रखने वाला, सुन्दर कर्म करने वाला, यशस्वी, अत्यन्त धनी और राजा से धन पाने वाला होता है ॥ ११ ॥

व्ययभावस्थितसूर्यफलम्—

तेजोविहीने नयने भवेतां तातेन साकं गतचित्तवृत्तिः ।
,विरुद्धबुद्धिर्व्ययभावयाते कान्ते नलिन्याः फलमुक्तमार्यैः ॥१२॥

जिस के व्यय भाव में सूर्य हो वह तेजोहीन नेत्र वाला, पिता से प्रेम नहीं करने वाला और विरुद्ध बुद्धि वाला होता है ॥ १२ ॥

अथ लग्नस्थितचन्द्रफलम्—

दाक्षिण्यरूपधनभोगगुणैर्वरेण्य-
श्चन्द्रे कुलीरवृषभाजगते विलग्ने ।
उन्मत्तनीचबधिरो विकलोऽथ मूकः
शेषेषु ना भवति हीनतनुर्विशेषात् ॥ १ ॥

जिस के जन्म काल में कर्क, वृष या मेष का चन्द्र हो कर लग्न में बैठा हो ते। वह सरल हृदय वाला, सुन्दर, धनी, भोगी और गुणियों में श्रेष्ठ होता है ।

यदि अन्य राशी में स्थित हो कर लग्न में हो तो उन्मत्त नीच कर्म करने वाला, बहिरा, विकल, गूँगा और क्षीण शरीर वाला होता है ॥ १ ॥

धनभावस्थितचन्द्रफलम्—

सुखात्मजद्रव्ययुतो विनीतो भवेन्नरः पूर्णविधुर्द्वितीये ।
क्षीणेऽस्खलद्वाग्विधनोल्पबुद्धिः न्यूनाधिकत्वे फलतारतम्यम् ॥२॥

जिस के धन भाव में पूर्ण चन्द्रमा हो वह सुख सन्तान द्रव्य से युक्त और नम्र होता है ।

यदि क्षीण चन्द्रमा धन भाव में बैठा हो तो असत्य बोलने वाला, धन हीन और थोड़ी बुद्धि वाला होता है । चन्द्रबल के अनुसार फल में भी तारतम्य करना चाहिये ॥ २ ॥

सहजभावस्थितचन्द्रफलम्—

हिंस्रः सगर्वः कृपणोल्पबुद्धिर्भवेज्जनो बन्धुजनाश्रयश्च ।
दयाभयाभ्यां परिवर्जितश्च द्विजाधिराजे सहजे प्रसूतौ ॥ ३ ॥

जिस के तृतीय भाव में चन्द्रमा बैठा हो तो हिंसा करने वाला, गौरव युक्त, कृपण, अल्पबुद्धि, बन्धुओं के आश्रय में रहने वाला और दया भय से हीन होता है ॥ ३ ॥

चतुर्थभावस्थितचन्द्रफलम्—

जलाश्रयोत्पन्नधनोपलब्धिं कृष्यङ्गनावाहनसूनुसौख्यम् ।
प्रसूतिकाले कुरुते कलावान्पातालसंस्थो द्विजदेवभक्तिम् ॥ ४ ॥

जिस के चतुर्थ भाव में चन्द्रमा बैठा हो वह जलाश्रय से उत्पन्न धन, कृषि, स्त्री, वाहन, पुत्र इन के सुख से युक्त होता है ॥ ४ ॥

पञ्चमभावस्थचन्द्रफलम्—

जितेन्द्रियः सत्यवचाः प्रसन्नो धनात्मजावाप्तसमस्तसौख्यः ।
सुसंग्रही स्यान्मनुजः सुशीलः प्रसूतिकाले तनयालयेऽब्जे ॥ ५ ॥

जिस के पञ्चम भाव में चन्द्रमा हो वह जितेन्द्रिय, सत्य बोलने वाला, प्रसन्न, धन सन्तान के द्वारा सुखी, संग्रह करने वाला और सुशील होता है ॥ ५ ॥

रिपुभावस्थितचन्द्रफलम्—

मन्दाग्निः स्यान्निर्दयः क्रौर्ययुक्तोऽनल्पालस्यो निष्ठुरो दुष्टचित्तः ।

रोपावेशोऽत्यन्तसञ्जातशत्रुः शत्रुक्षेत्रे रात्रिनाथे नरः स्यात् ॥६॥

जिस के षष्ठ भाव में चन्द्रमा हो वह मन्दाग्नि, निर्दयी, पापी, बड़े आलसी, निष्ठुर, दुष्ट स्वभाव वाला, क्रोधी और बहुत शत्रु वाला होता है ॥ ६ ॥

सप्तमभावस्थितचन्द्रफलम्—

महाभिमानी मदनातुरश्च नरो भवेत्क्षीणकलेवरश्च ।
धनेन हीनो विनयेन चैवं चन्द्रेऽङ्गनास्थानविराजमाने ॥ ७ ॥

जिस के सप्तम भाव में चन्द्रमा हो वह बड़े अभिमानी, कामातुर, दुर्बल शरीर वाला, धन और विनय से रहित होता है ॥ ७ ॥

अष्टमभावस्थितचन्द्रफलम्—

नानारोगैः क्षीणदेहोऽतिनिःस्वश्चौरारातिक्षोणिपालाभितप्तः ।
चित्तोद्वेगैर्व्याकुलो मानवः स्यादायुःस्थाने वर्तमाने हिमांशौ ॥८॥

जिस के अष्टम भाव में चन्द्रमा हो वह अनेक रोग से क्षीण शरीर वाला, निर्धन, चोर शत्रु राजा इन से पीड़ित और चित्त के उद्वेग से व्याकुल होता है ॥ ८ ॥

नवमभावस्थितचन्द्रफलम्—

कलत्रपुत्रद्रविणोपपन्नः पुराणवार्ताश्रवणानुरक्तः ।
सुकर्मसत्तीर्थपरो नरः स्याद्यदाकलावान्नवमालयस्थः ॥ ९ ॥

जिस के नवम भाव में चन्द्रमा हो वह स्त्री, पुत्र धन इन से युक्त, पुराण कथा के प्रेमी, सुकर्म और तीर्थ करने वाला होता है ॥ ९ ॥

दशमभावस्थितचन्द्रफलम्—

क्षोणीपालादर्थलब्धिर्विशाला
कीर्तिर्मूर्तिस्सत्त्वसन्तोषयुक्ता ।
चञ्चल्लक्ष्मीः शीलसंशालिनी स्या-
न्मानस्थाने यामिनीनायकश्चेत् ॥ १० ॥

जिस के दशम भाव में चन्द्रमा हो वह राजा से धन पाने वाला,

अधिक यशस्वी, सत्त्व गुण सन्तोष से युक्त, सुन्दर लक्ष्मी वाला और सुशील होता है ॥ १० ॥

एकादशभावस्थितचन्द्रफलम्—

सन्माननानाधनवाहनाप्तिः कीर्तिश्च सद्भोगगुणोपलब्धिः ।
प्रसन्नता लाभविराजमाने ताराधिराजे मनुजस्य नूनम् ॥ ११ ॥

जिस के एकादश भाव में चन्द्रमा हो वह माननीय, अनेक प्रकार के धन वाहन से युक्त, यशस्वी, भोगी, गुणी और प्रसन्नता युक्त होता है ॥ ११ ॥

व्ययभावस्थितचन्द्रफलम्—

हीनत्वं वै चारुशीलेन मित्रैर्वैकल्यं स्यान्नेत्रयोः शत्रुवृद्धिः ।
रोषावेशः पूरुषाणां विशेषात्पीयूषांशौ द्वादशे वेश्मनीह ॥ १२ ॥

जिस के द्वादश भाव में चन्द्रमा बैठा हो वह सुन्दर स्वभाव से हीन, मित्रों से रहित, नेत्र रोगी, अनेक शत्रु वाला और विशेष क्रोधी होता है ॥ १२ ॥

अथ लग्नस्थितभौमफलम्—

अतिमतिभ्रमतां च कलेवरं क्षतयुतं बहुसाहसमुग्रताम् ।
तनुभृतां कुरुते तनुसंस्थितोऽवनिसुतो गमनागमनानि च ॥ १ ॥

जिस के लग्न में मङ्गल बैठा हो वह अत्यन्त मतिभ्रम वाला, चिह्न युक्त शरीर वाला, हठी और भ्रमणशील होता है ॥ १ ॥

धनभावस्थितभौमफलम्—

अधनतां कुजनाश्रयतां तथा विमतितां कृपयातिविहीनताम् ।
तनुभृतो विदधाति विरोधतां धननिकेतनगोऽवनिनन्दनः ॥ २ ॥

जिस के धन भाव में मङ्गल पड़े वह धन हीन असज्जन के आश्रित, कुत्सित बुद्धि वाला, दया हीन और विरोध करने वाला होता है ॥२॥

सहजभावस्थितभौमफलम्—

भूपप्रसादोत्तमसौख्यमुच्चैरुदारता चारुपराक्रमश्च ।

धनानि च भ्रातृसुखोज्झितत्वं भवेन्नराणां सहजे महीजे ॥ ३ ॥

जिस के तृतीय भाव में मङ्गल पड़े वह राजा की प्रसन्नता से उत्तम सुखी, अत्यन्त उदार, सुन्दर पराक्रम वाला, धनी और भाई के सुख से हीन होता है ॥ ३ ॥

चतुर्थभावस्थितभौमफलम्—

दुःखं सुहृद्वाहनतः प्रवासः कलेवरे रुग्बलताऽबलत्वम् ।
प्रसूतिकाले किल मङ्गलाख्ये रसातलस्थे फलमुक्तमार्यैः ॥ ४ ॥

जिस के चतुर्थ भाव में मङ्गल बैठा हो वह मित्र और वाहन के द्वारा दुखी, परदेश में रहने वाला, रुग्न शरीर वाला तथा निर्बल होता है ॥ ४ ॥

पंचमभावस्थभौमफलम्—

कफानिलाद्व्याकुलता कलत्रान्मित्राच्च पुत्रादपि सौख्यहानिः ।
मतिर्विलोमा विपुलात्मजेस्मिन्प्रसूतिकाले तनयालयस्थे ॥ ५ ॥

जिस के पञ्चम भाव में मङ्गल बैठा हो वह कफ और वात से व्याकुल, स्त्री, मित्र, पुत्र के सुख से रहित तथा विपरीत बुद्धि वाला होता है ॥ ५ ॥

शत्रुभावस्थितभौमफलम्—

प्राबल्यं स्याज्जाठराग्नेर्विशेषाद्रोषावेशः शत्रुवर्गोपशांतिः ।
सद्भिः संगोऽनंगबुद्धिर्नराणां गोत्रापुत्रे शत्रुसंस्थे प्रसूतौ ॥ ६ ॥

जिस के जन्म काल में षष्ठ भाव में मङ्गल बैठा हो वह प्रबल जठराग्नि वाला, क्रोधी, शत्रुओं को नाश करने वाला और सज्जनों के साथ रहने वाला होता है ॥ ६ ॥

सप्तमभावस्थितभौमफलम्—

नानानर्थैर्व्यर्थचिंतोपसर्गैर्वैरिव्रातैर्मानवं हीनदेहम् ।
दारारागात्यंतदुःखप्रतप्तं दारागारेऽगारकोयं करोति ॥ ७ ॥

जिस के सप्तम भाव में मङ्गल हो वह अनेक तरह के अनर्थ, व्यर्थ

चिन्ता और शत्रुओं से पीड़ित हो कर दुर्बल शरीर वाला तथा स्त्री के क्रोध से दुखी रहता है ॥ ७ ॥

अष्टमभावस्थितभौमफलम्—

वैकल्यं स्यान्नेत्रयोर्दुर्भगत्वं रक्तात्पीडा नीचकर्मप्रवृत्तिः ।
बुद्धेरान्ध्यं सज्जनानां च निंदा रन्ध्रस्थाने मेदिनीनंदनेऽस्मिन् ॥८॥

जिस के अष्टम भाव में मङ्गल बैठा हो वह नेत्र रोगी, दुर्भग, रक्त रोगी, नीच कर्म करने वाला, बुद्धि से विकल और सज्जनों का निन्दक होता है ॥ ८ ॥

नवमभावस्थितभौमफलम्—

हिंसाविधाने मनसः प्रवृत्तिं भूमीपतेर्गौरवतोऽल्पलब्धिम् ।
क्षीणं च पुण्यं द्रविणं नराणां पुण्यस्थितः क्षोणिसुतः करोति ॥९॥

जिस के नवम भाव में मङ्गल पड़े वह हिंसा में चित्त देने वाला, राजा के आदर से थोड़ा लाभ वाला, थोड़ा पुण्य और थोड़ा धन वाला होता है ॥ ९ ॥

दशमभावस्थितभौमफलम्—

विश्वंभरापतिसमत्वमतीव तोषं सत्साहसं परजनोपकृतौ प्रयत्नम् ।
चंचद्विभूषणमणिद्रविणागमांश्च मेषूरणे धरणिजः कुरुते नराणाम् ॥

यदि दशम भाव में मङ्गल बैठा हो तो राजा के समान, अत्यन्त सन्तोषी, साहसी, परोपकार में यत्न रखने वाला और सुन्दर भूषण, रत्नादि को प्राप्त करने वाला होता है ॥ १० ॥

एकादशभावस्थितभौमफलम्—

ताम्रप्रवालविलसत्कलधौतरक्तवस्त्रागमं सुललितानि च वाहनानि ।
भूपप्रसादसुकुतूहलमंगलानि दद्याद्वाप्ति भवने हि सदावनेयः ॥११॥

जिस के एकादश भाव में मङ्गल पड़े उस को तामा, मूङ्गा, सुवर्ण, वस्त्र, उत्तम वाहन, राजा की प्रसन्नता और अनेक मङ्गल कार्य प्राप्त होता है ॥ ११ ॥

द्वादशभावस्थितभौमफलम्—

स्वमित्रवैरं नयनार्तिबाधां क्रोधाभिभूतं विकलत्वमंगे ।
धनव्ययं बंधनमल्पतेजो व्यये धराजो विदधाति नूनम् ॥ १२ ॥

यदि द्वादश भाव में मङ्गल हो तो मित्रों से विरोध रखने वाला, नेत्र रोगी, क्रोधी, अङ्ग में वैकल्य, धन का अधिक खर्च, बन्धन और तेज की हानि होती है ॥ १२ ॥

अथ लग्नस्थितबुधफलम्—

शान्तो विनीतः सुतरामुदारो नरः सदाचारपरोऽतिधीरः ।
विद्वान्कलाज्ञो विपुलात्मजश्च शीतांशुसूनौ जनने तनुस्थे ॥ १ ॥

जिस के लग्न में बुध बैठा हो वह शान्त, नम्र, अत्यन्त उदार, सदाचारी, अत्यन्त धीर, विद्वान्, कलाओं को जानने वाला और बहुत पुत्र वाला होता है ॥ १ ॥

धनभावस्थितबुधफलम्—

विमलशीलयुतो गुरुवत्सलः कुशलताकलितार्थमहत्सुखः ।
विपुलकान्तिसमुन्नतिसंयुतो धननिकेतनगे शशिनन्दने ॥ २ ॥

जिस के द्वितीय भाव में बुध बैठा हो वह सुशील, गुरु का भक्त, चतुरता से धन कमा कर सुखी, अत्यन्त सुन्दर और उन्नति युक्त होता है ॥ २ ॥

तृतीयभावस्थितबुधफलम्—

साहसान्निजजनैः परिमुक्तः चित्तशुद्धिरहितो हतसौख्यः ।
मानवः कुशलितेप्सितकर्त्ता शीतभानुतनयेऽनुजसंस्थे ॥ ३ ॥

जिस के तृतीय भाव में बुध पड़े वह सहसा अपने जनों से त्यक्त, मलिन हृदय वाला, दुखी और अपने मन माना काम करने वाला होता है ॥ ३ ॥

चतुर्थभावस्थितबुधफलम्—

सद्वाहनैर्धान्यधनैः समेतः सङ्गीतनृत्याभिरुचिर्मनुष्यः ।

विद्याविभूषागमनाधिशाली पातालगे शीतलभानुसूनौ ॥ ४ ॥

जिस के बुध चतुर्थ भाव में पड़े वह सुन्दर वाहन, धन, धान्यों से युक्त, गीत नृत्य के स्नेही, विद्वान् और भूषण से युक्त होता है ॥ ४ ॥

पञ्चमभावस्थितबुधफलम्—

पुत्रसौख्यसहितं बहुमित्रं मन्त्रवादकुशलं च सुशीलम्।
मानवं किल करोति सलीलं शीतदीधितिसुतः सुतसंस्थः ॥ ५ ॥

यदि पञ्चम भाव में बुध हो तो पुत्र से सुखी, अधिक मित्र से युक्त, विचार में कुशल, सुन्दर स्वभाव वाला और क्रीडा युक्त होता है ॥ ५ ॥

शत्रुभावस्थितबुधफलम्—

वादप्रीतिः सामयो निष्ठुरात्मा नानारातिव्रातसन्तप्तचित्तः।
नित्यालस्यव्याकुलः स्यान्मनुष्यः शत्रुक्षेत्रे रात्रिनाथात्मजेऽस्मिन् ॥६॥

यदि षष्ठ भाव में बुध हो तो झगड़ालू, रोगी, निष्ठुर, शत्रुओं से पीड़ित और सदा आलस्य करने से चिन्तित होता है ॥ ६ ॥

सप्तमभावस्थितबुधफलम्—

चारुशीलविभवैरलंकृतः सत्यवाक्यनिरतो नरो भवेत्।
कामिनीकनकसूनुसंयुतः कामिनीभवनगामिनीन्दुजे ॥ ७ ॥

जिस के जन्म काल में सप्तम भाव में बुध बैठा हो वह उत्तम स्वभाव वाला, ऐश्वर्य से युक्त, सत्य वक्ता और स्त्री, धन, पुत्र से युक्त होता है ॥ ७ ॥

अष्टमभावस्थितबुधफलम्—

भूपप्रसादाप्तसमस्तसम्पन्नरो विरोधी सुतरां सुगर्वः।
सर्वप्रयत्नान्यकृतापहर्ता रन्ध्रे भवेच्चन्द्रसुतः प्रसूतौ ॥ ८ ॥

यदि अष्टम भाव में बुध बैठा हो तो राजा की प्रसन्नता से सर्व सम्पत्ति को पाने वाला, विरोध करने वाला, अत्यन्त गर्वी और दूसरे का किया हुआ काम को नष्ट करने वाला होता है ॥ ८ ॥

नवमभावस्थितबुधफलम्—

उपकृतिकृतिविद्याचारुजातादरः स्या-
दनुचरधनसूनुप्राप्तहर्षो विशेषात् ।
वितरणकरणोद्यन्मानसो मानवश्चे-
दमृतकिरणजन्मा पुण्यधामागतोऽयम् ॥ ९ ॥

जिस के नवम भाव में बुध बैठा हो वह उपकार और विद्या से आदर पाने वाला, नौकर, धन, पुत्र के द्वारा विशेष आनन्द और दान करने वाला होता है ॥ ९ ॥

दशमभावस्थितबुधफलम्—

ज्ञानप्रज्ञः श्रेष्ठकर्मा मनुष्यो नानासम्पत्संयुतो राजमान्यः ।
चञ्चल्लीलावाग्विलासादिशाली मानस्थाने बोधने वर्तमाने ॥१०॥

जिस के दशम भाव में बुध बैठा हो वह ज्ञानी, श्रेष्ठ कर्म करने वाला, अनेक प्रकार के सम्पत्ति से युक्त, राजा से मान्य, सुन्दर बोलने वाला और विलासी होता है ॥ १० ॥

एकादशभावस्थितबुधफलम्—

भोगासक्तोऽत्यन्तवित्तो विनीतो नित्यानन्दश्चारुशीलो बलिष्ठः ।
नानाविद्याभ्यासकृन्मानवः स्याल्लाभस्थाने नन्दने शीतभानोः ॥११॥

जिस के एकादश भाव में बुध बैठा हो वह मनुष्य भोगी, अति धनी, नम्र, नित्य आनन्द युक्त, सुन्दर स्वभाव वाला, बली और अनेक विद्या को जानने वाला होता है ॥ ११ ॥

व्ययभावस्थितबुधफलम्—

दयाविहीनः स्वजनोज्झितश्च स्वकार्यदक्षो विजितात्मपक्षः ।
धूर्तो नितान्तं मलिनो नरः स्याद्व्ययोपपन्ने द्विजराजसूनौ ॥१२॥

जिस के द्वादश भाव में बुध बैठा हो वह दयाहीन, अपने जनों से त्यक्त, अपने कार्य में दक्ष, अपने पक्ष को जीतने वाला, धूर्त और मलिन होता है ॥ १२ ॥

अथ तनुस्थितगुरुफलम्—

विद्यासमेतोऽभिमतो हि राज्ञां प्राज्ञः कृतज्ञो नितरामुदारः ।
नरो भवेच्चारुकलेवरश्च तनुस्थिते चित्रशिखण्डिसूनौ ॥ १ ॥

यदि लग्न में गुरु बैठा हो तो विद्याभ्यासी, राजा से पूज्य, सुन्दर बुद्धि वाला, कृतज्ञ, अति उदार और सुन्दर होता है ॥ १ ॥

धनभावस्थितगुरुफलम्—

सद्रूपविद्यागुणकीर्तियुक्तः संत्यक्तवैरोऽपि नरो गरीयान् ।
त्यागी सुशीलो द्रविणेन पूर्णो गीर्वाणवंद्ये द्रविणोपयाते ॥ २ ॥

जिस मनुष्य के द्वितीय भाव में गुरु बैठा हो वह सुन्दर, विद्या गुण और यश से युक्त, शत्रु रहित, श्रेष्ठ, दानी, सुन्दर स्वभाव वाला तथा धन से युक्त होता है ॥ २ ॥

सहजभावस्थितगुरुफलम्—

सौजन्यहीनः कृपणः कृतघ्नः कांतासुतप्रीतिविवर्जितश्च ।
नरोऽग्निमांद्याबलतासमेतः पराक्रमे शक्रपुरोहितेऽस्मिन् ॥ ३ ॥

जिस जातक के तृतीय भाव में गुरु बैठा हो वह सौजन्य हीन, कृपण, कृतघ्न, स्त्री, पुत्र के स्नेह से रहित, मंदाग्नि और दुर्बल होता है ॥ ३ ॥

चतुर्थभावस्थितगुरुफलम्—

सन्माननानाधनवाहनाद्यैः संजातहर्षः पुरुषः सदैव ।
नृपानुकंपासमुपात्तसंपद्दंभोलिभृन्मंत्रिणि भूतलस्थे ॥ ४ ॥

जिस के चतुर्थ भाव में बृहस्पति बैठा हो वह सन्मान, अनेक प्रकार के धन और वाहन से आनन्द तथा राजा की प्रसन्नता से धन प्राप्ति करने वाला होता है ॥ ४ ॥

पंचमभावस्थितगुरुफलम्—

सन्मित्रपुत्रोत्तममंत्रशास्त्रसुख्यानि नानाधनवाहनानि ।
दद्याद्गुरुः कोमलवाग्विलासं प्रसूतिकाले तनयालयस्थः ॥ ५ ॥

जिस जातक के पञ्चम भाव में गुरु बैठा हो वह सुन्दर मित्र, पुत्र, मन्त्र शास्त्र आदि, अनेक प्रकार के धन, अनेक वाहन और कोमल वाणी से युक्त होता है ॥ ५ ॥

शत्रुभावस्थितगुरुफलम्—

सद्गीतविद्याहृतचित्तवृत्तिः कीर्तिप्रियोऽरातिजनप्रहर्ता ।
प्रारब्धकार्य्यालसकृन्नरः स्यात्सुरेंद्रमंत्री यदि शत्रुसंस्थः ॥ ६ ॥

जिस के षष्ठ भाव में गुरु बैठा हो वह संगीत के प्रेमी, यश के प्रेमी, शत्रुओं को मारने वाला और कार्य को प्रारम्भ कर समाप्त करने में आलसी होता है ॥ ६ ॥

सप्तमभावस्थितगुरुफलम्—

शास्त्राभ्यासासक्तचित्तो विनीतः कांतावित्तात्यंतसंजातसौख्यः ।
मंत्री मर्त्यः काव्यकर्ता प्रसूतौ जायाभावे देवदेवाधिदेवे ॥ ७ ॥

जिस के सप्तम भाव में गुरु बैठा हो वह शास्त्र अभ्यास करने वाला, नम्र, स्त्री और धन से अत्यन्त सुखी, विचारी तथा काव्य करने वाला होता है ॥ ७ ॥

अष्टमभावस्थितगुरुफलम्—

प्रेष्यो मनुष्यो मलिनोऽतिदीनो विवेकहीनोविनयोज्झितश्च ।
नित्यालसः क्षीणकलेवरः स्यादायुर्विशेषे वचसामधीशे ॥ ८ ॥

जिस के अष्टम भाव में वृहस्पति बैठा हो वह मनुष्य नौकरी करने वाला, मलिन, अति दीन, अविचारी, अविनयी, सदा आलसी और दुर्बल होता है ॥ ८ ॥

नवमभावस्थितगुरुफलम्—

नरपतेः सचिवः सुकृती कृती सकलशास्त्रकलाकलनादरः ।
व्रतकरो हि नरो द्विजतत्परः सुरपुरोधसि वै तपसि स्थिते ॥ ९ ॥

जिस के नवम भाव में वृहस्पति बैठा हो वह राजमन्त्री, पुण्यात्मा, पण्डित, सब शास्त्रों को जानने वाला, व्रती और ब्राह्मणों का भक्त होता है ॥ ९ ॥

दशमभावस्थितगुरुफलम्—

सद्राजचिह्नोत्तमवाहनानि मित्रात्मजश्रीरमणीसुखानि ।
यशोभिवृद्धिं बहुधा विधत्ते राज्ये सुरेज्यो विजयं नराणाम् ॥१०॥

यदि दशम भाव में गुरु बैठा हो तो वह सुन्दर राजचिह्न, वाहन, मित्र, पुत्र, सम्पत्ति, स्त्री सुख इन सबों से युक्त और यशस्वी होता है ॥१०॥

एकादशभावस्थितगुरुफलम्—

सामर्थ्यमर्थागमनानि नूनं सद्वस्त्ररत्नोत्तमवाहनानि ।
भूपप्रसादं कुरुते नराणां गीर्वाणवन्द्यो यदि लाभसंस्थः ॥ ११ ॥

जिस के एकादश भाव में गुरु बैठा हो वह सामर्थ्य, धन, सुन्दर वस्त्र, रत्न, उत्तम सवारी और राजा के अनुग्रह प्राप्त करने वाला होता है ॥ ११ ॥

व्ययभावस्थितगुरुफलम्—

नानाचित्तोद्वेगसंजातकोपं पापात्मानं सालसं त्यक्तलज्जम् ।
बुद्धया हीनं मानवं मानहीनं वागीशोऽयं द्वादशस्थः करोति ॥१२॥

जिस के व्यय भाव में बृहस्पति बैठा हो वह अनेक तरह के चित्त में उद्वेग से कोप युक्त, पापी, आलसी, निर्लज्ज, बुद्धि शुन्य और मान रहित होता है ॥ १२ ॥

अथ लग्नस्थितशुक्रफलम्—

बहुकलाकुशलो विमलोक्तिकृत्सुवदनामदनानुभवः पुमान् ।
अवनिनायकमानधनान्वितो भृगुसुते तनुभावगते सति ॥ १ ॥

जिस मनुष्य के लग्न में शुक्र बैठा हो वह कलाओं में अधिक चतुर, प्रिय बोलने वाला, सुन्दरी स्त्री के साथ काम सुख करने वाला, और राजा के आदर से धन प्राप्त करने वाला होता है ॥ १ ॥

धनभावस्थशुक्रफलम्—

सदन्नपानाभिरतं नितांतं सद्वस्त्रभूपाधनवाहनाढ्यम् ।
विचित्रविद्यं मनुजं प्रकुर्याद्धनोपपन्नो भृगुनंदनोऽयम् ॥ २ ॥

जिस के धन भाव में शुक्र बैठा हो वह उत्तम भोजन करने वाला, सुन्दर वस्त्र, भूषण, धन वाहन से युक्त और अनेक विद्या को जानने वाला होता है ॥ २ ॥

तृतीयभावस्थितशुक्रफलम्—

कृशाङ्गयष्टिः कृपणो दुरात्मा द्रव्येणहीनो मदनानुतप्तः ।
सतामनिष्टो बहुदुष्टचेष्टो भृगोस्तनूजे सहजे नरः स्यात् ॥३॥

जिस के तृतीय भाव में शुक्र बैठा हो वह दुर्बल शरीर वाला, कृप-ण, दुराचारी, दरिद्र, कामी, सज्जनों को दुख देने वाला और अनेक प्रकार के खराब कार्य करने वाला होता है ॥ ३ ॥

चतुर्थभावस्थितशुक्रफलम्—

मित्रक्षेत्रग्रामसद्वाहनानां नानासौख्यं वंदनं देवतानाम् ।
नित्यानंदं मानवानां प्रकुर्यादैत्याचार्यस्तुर्यभावस्थितोऽयम् ॥ ४ ॥

जिस के चतुर्थ भाव में शुक्र बैठा हो वह मित्र, खेत, गाँव, वाहन इन सवों से नाना तरह के सुख करने वाला, देवताओं का पूजक और सदा आनन्द युक्त होता है॥ ४ ॥

पञ्चमभावस्थितशुक्रफलम्—

सकलकाव्यकलाभिरलंकृतस्तनयवाहनधान्यसमन्वितः ।
नरपतेर्गुरुगौरवभाङ्नरो भृगुसुते सुतसद्मनि संस्थिते ॥ ५ ॥

यदि शुक्र पञ्चम भाव में बैठा हो तो सम्पूर्ण काव्यकला को जा-नने वाला, पुत्र, वाहन, धान्य से युत और राजा से आदर पाने वाला होता है ॥ ५ ॥

शत्रुभावस्थितशुक्रफलम्—

अभिमतो न भवेत्प्रमदाजने ननु मनोभवहीनतरो नरः ।
विबलताकलितः किल संभवे भृगुसुतेऽरिगतेऽरिभयान्वितः ॥ ६ ॥

जिस के जन्म काल में शुक्र षष्ठ भाव में बैठा हो वह स्त्रियों का अप्रिय, काम रहित, दुर्बल और शत्रुओं के भय से युक्त होता है ॥ ६ ॥

सप्तमभावस्थितशुक्रफलम्—

बहुकलाकुशलो जलकेलिकृद्रतिविलासविधानविचक्षणः ।
अतितरां नटिनीकृतसौहृदः सुनयनाभवने भृगुनंदने ॥ ७ ॥

जिस के जन्म काल में सप्तम भाव में स्थित शुक्र हो वह अनेक कलाओं में चतुर, जल क्रीडा करने वाला, और वेश्याओं से प्रेम रखने वाला होता है ॥ ७ ॥

अष्टमभावस्थितशुक्रफलम्—

प्रसन्नमूर्तिर्नृपमानलब्धः शठोऽतिनिःशङ्कतरः सगर्वः ।
स्त्रीपुत्रचिन्तासहितः कदाचिन्नरोऽष्टमस्थानगते सिताख्ये ॥ ८ ॥

जिस के अष्टम भाव में शुक्र बैठा हो वह प्रसन्न मुख, राजमान्य, शठ, भय रहित, गौरवी, कभी २ स्त्री और पुत्र की चिन्ता से युक्त होता है ॥ ८ ॥

नवमभावस्थितशुक्रफलम्—

अतिथिगुरुसुरार्चातीर्थयात्रापितार्थः
प्रतिदिनधनयानात्यंतसंजातहर्षः ।
मुनिजनसमवेषः पूरुषस्त्यक्तरोषो
भवति नवमभावे संभवे भार्गवेऽस्मिन् ॥ ९ ॥

जिस के नवम भाव में शुक्र बैठा हो वह अतिथि गुरु देवताओं का पूजक, तीर्थयात्रा के लिये धन सञ्चित करने वाला, सदा धन वाहन से आनन्दित मुनि के समान शरीर वाला और क्रोध रहित होता है ॥ ९ ॥

दशमभावस्थितशुक्रफलम्—

सौभाग्यसम्मानविराजमानः स्नानार्चनध्यानमना धनाढ्यः ।
कान्तासुतप्रीतिरतीव नित्यं भृगोः सुते राज्यगते नरस्य ॥ १० ॥

जिस के दशम भाव में शुक्र बैठा हो वह सुन्दर भाग्य वाला, लोगों में आदर युक्त, स्नान पूजा ध्यान में मन लगाने वाला और स्त्री पुत्र से सुखी होता है ॥ १० ॥

एकादशभावस्थितशुक्रफलम्—

सङ्गीतनृत्यादरता नितान्तं नित्यं च चिन्तागमनानि नूनम् ।
सत्कर्मधर्मागमचित्तवृत्तिर्भृगोः सुतो लाभगतो यदि स्यात् ॥ ११ ॥

जिस के एकादश भाव में शुक्र बैठा हो वह संगीत और नाच का आदर करने वाला, सदा चिन्ता के आगमन से युक्त, सत्कार्य करने वाला तथा धर्म में मन लगाने वाला होता है ॥ ११ ॥

व्ययभावस्थितशुक्रफलम्—

संत्यक्तसत्कर्मगतिर्विरोधी मनोभवाराधनमानसश्च ।
दयालुतासत्यविवर्जितश्च काव्ये प्रसूतौ व्ययभावयाते ॥ १२ ॥

जिस के व्यय भाव में शुक्र बैठा हो वह सत्कर्म से हीन, विरोधी, कामी, दया रहित और सत्यशून्य होता है ॥ १२ ॥

अथ तनुस्थितशनिफलम्—

प्रसूतिकाले नलिनीशसूनुः स्वोच्चे त्रिकोणर्क्षगते विलग्ने ।
कुर्यान्नरं देशपुराधिनाथं शेषेष्वभद्रं सरुजं दरिद्रम् ॥ १ ॥

जिस के लग्न में स्थित हो कर शनि अपने उच्च या अपने राशि का हो तो वह मनुष्य राजा होता है । यदि लग्न स्थित हो कर अन्य राशि का हो तो कुशल रहित, रोगी और दरिद्र होता है ॥ १ ॥

धनभावस्थितशनिफलम्—

अन्यालयस्थो व्यसनाभितप्तो जनोज्झितः स्यान्मनुजश्च पश्चात् ।
देशान्तरे वाहनराजमानो धनाभिधाने भवनेऽर्कसूनौ ॥ २ ॥

जिस के धन भाव में शनि बैठा हो वह दूसरे के घर में रहने वाला, व्यसनी, बन्धु रहित हो कर देशान्तर में वाहन और राजा के सम्मान से युक्त होता है ॥ २ ॥

तृतीयभावस्थितशनिफलम्—

राजमान्यशुभवाहनयुक्तो ग्रामपो बहुपराक्रमशाली ।
पालको भवति भूरिजनानां मानवो हि रविजे सहजस्थे ॥ ३ ॥

जिस के तृतीय भाव में शनि बैठा हो वह राजमान्य, उत्तम वाहन से युक्त, गाँव के मालिक, बहुत पराक्रमी और बहुतों का पालन करने वाला होता है ॥ ३ ॥

चतुर्थभावस्थितशनिफलम्—

पित्तानिलक्षीणबलं कुशीलमालस्ययुक्तं कलिदुर्बलाङ्गम् ।
मालिन्यभाजं मनुजं विदध्याद्रसातलस्थो नलिनीशजन्मा ॥ ४ ॥

जिस के चतुर्थ भाव में शनि हो वह पित्त और वात के प्रकोप से निर्बल, कुत्सित स्वभाव वाला, आलसी, झगड़ा करने से दुर्बल शरीर वाला और मलिन होता है ॥ ४ ॥

पञ्चमभावस्थितशनिफलम्—

सदा गदक्षीणतरं शरीरं धनेन हीनत्वमनङ्गहानिम् ।
प्रसूतिकाले नलिनीशपुत्रः पुत्रस्थितः पुत्रभयं करोति ॥ ५ ॥

जिस के पञ्चम भाव में शनि बैठा हो वह सदा रोगों से दुर्बल शरीर वाला, धन रहित, वीर्य रहित और पुत्र सुख से रहित होता है ॥ ५ ॥

रिपुभावस्थितशनैश्चरफलम्—

विनिर्जितारातिगणो गुणज्ञः सुज्ञाभ्यनुज्ञापरिपालकः स्यात् ।
पुष्टाङ्गयष्टिः प्रबलोदराग्निर्नरोऽर्कपुत्रे सति शत्रुसंस्थे ॥ ६ ॥

जिस के षष्ठ भाव में शनि बैठा हो वह शत्रुओं को जीतने वाला, गुण को जानने वाला, पण्डितों की आज्ञा पालन करने वाला, पुष्ट शरीर वाला और प्रबल जठराग्नि वाला होता है ॥ ६ ॥

सप्तमभावस्थितशनिफलम्—

आमयेन बलहीनतां गतो हीनवृत्तिजनचित्तसंस्थितिः ।
कामिनीभवनधान्यदुःखितः कामिनीभवनगे शनैश्चरे ॥ ७ ॥

यदि सप्तम भाव में शनि बैठा हो तो रोगों से पीड़ित हो कर क्षीण शरीर वाला, जीविका रहित, लोगों के मनमें खटकने वाला और स्त्री, गृह, धन के लिये दुखी होता है ॥ ७ ॥

अष्टमभावस्थितशनिफलम्—

कृशतनुर्ननु दद्रुविचर्चिकाप्रभवतो भयतोषविवर्जितः ।
अलसतासहितो हि नरो भवेन्निधनभवेश्मनि भानुसुते स्थिते ॥ ८ ॥

जिस के अष्टम भाव में शनि बैठा हो वह दुर्बल शरीर वाला, दाद, खुजली से ग्रसित, भय-सन्तोष से हीन और आलसी होता है ॥ ८ ॥

नवमभावस्थितशनिफलम्—

धर्मकर्मसहितो विकलाङ्गो दुर्मतिर्हि मनुजोऽतिमनोज्ञः ।
संभवस्य समये किल कोणस्त्रित्रिकोणभवने यदि संस्थः ॥ ९ ॥

जिस के नवम भाव में शनि बैठा हो वह धर्म कर्म करने वाला, विकल शरीर वाला, कुबुद्धि और सुन्दर होता है ॥ ९ ॥

दशमभावस्थितशनिफलम्—

राज्ञः प्रधानमतिनीतियुतं विनीतं सग्रामपत्तनपुटभेदनकाधिकारम् ।
कुर्यान्नरं सुचतुरं द्रविणेन पूर्णं मेषूरणे हि तरणेस्तनुजः करोति १०

जिस के दशम भाव में शनि बैठा हो वह राजा के यहाँ प्रधान, अति नीतिज्ञ, नम्र, ग्राम और देशों का मालिक, बड़ा चतुर और धन से पूर्ण होता है ॥ १० ॥

एकादशभावस्थितशनिफलम्—

कृष्णाश्वानामिन्द्रनीलोर्णकानां नानावस्त्वद्वस्तुदन्तावलानाम् ।
प्राप्तिं कुर्यान्मानवानां बलीयान्प्राप्तिस्थाने वर्तमानोऽर्कसूनुः ॥ ११ ॥

यदि एकादश भाव में शनि बैठा हो तो श्याम वर्ण के घोड़े, नीलम रत्न, ऊन, अनेक सुन्दर वस्तु और हाथी का लाभ होता है ॥ ११ ॥

द्वादशभावस्थितशनिफलम्—

दयाविहीनो विधनो व्ययार्तः सदालसो नीचजनानुयातः ।
नरोऽङ्गभङ्गोज्झितसर्वसौख्यो व्ययस्थिते भानुसुते प्रसूतौ ॥ १२ ॥

जिस के द्वादश भाव में शनि बैठा हो वह दया रहित, धन हीन, खर्च से पीड़ित, आलसी, नीचों का सङ्ग करने वाला, अङ्ग हीन और सब सुख से रहित होता है ॥ १२ ॥

तन्वादिस्थशनेः प्रोक्तं यच्च भावोद्भवं फलम्।
राहोस्तदेव विज्ञेयं मुनीनामपि सम्मतम् ॥ १३ ॥

लग्न आदि द्वादश भावों में स्थित शनि का जो फल कहा गया है, वही राहु का भी जानना चाहिये, ऐसी मुनियों की सम्मति है ॥१३॥

फलमानमाह—

स्वोच्चस्थितः पूर्णफलं हि धत्ते स्वर्क्षे हितर्क्षे हि फलार्द्धमेव।
फलांघ्रिमात्रं रिपुमन्दिरस्थः चास्तं प्रयातः खचरो न किञ्चित् ॥१४॥

पूर्व में लग्न आदि द्वादश भावों में स्थित ग्रहों का जो फल कहा गया है, वह उच्च में ग्रह बैठा हो तो पूर्ण. स्वगृह और मित्र गृह में हो तो आधा, शत्रु गृह में हो तो चतुर्थांश, तथा अस्त हो तो कुछ भी नहीं होता है ॥ १४ ॥

अथ तनुभावस्थितराहुफलम्—

लग्ने तमो दुष्टमतिस्वभावं नरं च कुर्यात्स्वजनानुवञ्चकम्।
शीर्षव्यथाकामरसेन संयुतं करोति वादे विजयं सरोगम् ॥ १ ॥

जिस के लग्न में राहु बैठा हो वह मनुष्य दुष्ट स्वभाव वाला अपने जनों को ठगने वाला, शिरोरोगी, कामी, वाद विवाद में विजय पाने वाला और रोगी होता है ॥ १ ॥

धनभावस्थितराहुफलम्—

धनगतो रविचन्द्रविमर्दनो मुखरताङ्कितभावमथो भवेत्।
धनविनाशकरो हि दरिद्रतां खलु तदा लभते मनुजोऽटनम् ॥ २ ॥

जिस के धन भाव में राहु बैठा हो वह अति अप्रिय बोलने वाला, धन को नाश करने वाला, दरिद्र और भ्रमण करने वाला होता है ॥२॥

सहजभावस्थितराहुफलम्—

दुश्चिक्येऽरिभवं भयं परिहरंल्लोके यशस्वी नरः
श्रेयो वा विभवं तदा हि लभते सौख्यं विलासादिकम्।
भ्रातृणां निधनं पशोश्च मरणं दारिद्र्यसंवर्जितं

नित्यं सौख्यगुणैः पराक्रमयुतं कुर्याच्च राहुः सदा ॥ ३ ॥

जिसके तृतीय भावमें राहु बैठा हो वह मनुष्य शत्रु से रहित, यश स्वी, कुशल, धन और सुख से युक्त, भाई और पशुओं का नाश करने वाला होता है ॥ ३ ॥

चतुर्थभावस्थितराहुफलम्—

सुखगते रविचन्द्रविमर्दने सुखविनाशनतां मनुजो लभेत् ।
स्वजनतां सुतमित्रसुखं नरो न लभते च सदा भ्रमणं नृणाम् ॥ ४ ॥

जिस के चतुर्थ भावमें राहु बैठा हो उस का सुख का नाश, स्वजन, पुत्र, मित्र आदि के सुख से रहित और सदा भ्रमण करने वाला होता है ॥ ४ ॥

पञ्चमभावस्थितराहुफलम्—

गतसुखो न हि मित्रविवर्धनं ह्युदरशूलविलासनिपीडनम् ।
खलु तदा लभते मनुजो भ्रमं सुतगते रविचन्द्रविमर्दने ॥ ५ ॥

जिस के पञ्चम भाव में राहु बैठा हो वह सुख और मित्र से रहित, उदर रोगी तथा व्यर्थ घूमने वाला होता है ॥ ५ ॥

रिपुभावस्थितराहुफलम्—

शत्रुक्षयं द्रव्यसमागमं च पशुप्रपीडां कटिपीडनं च ।
समागमं म्लेच्छजनैर्महाबलं प्राप्नोति जन्तुर्यदि षष्ठगस्तमः ॥ ६ ॥

जिस के षष्ठ भाव में राहु बैठा हो वह शत्रु रहित, धन का लाभ करने वाला, पशुओं को पीड़ा से युक्त, कमर में दर्द वाला और म्लेच्छों की सङ्गति से बल पाने वाला होता है ॥ ६ ॥

सप्तमभावस्थितराहुफलम्—

जायाविरोधं खलु वा प्रणाशं प्रचण्डरूपामथ कोपयुक्ताम् ।
विवादशीलामथ रोगयुक्तां प्राप्नोति जन्तुर्मदने तमे च ॥ ७ ॥

जिस के सप्तम भाव में राहु बैठा हो वह स्त्री से विरोध रखने वाला या स्त्री का नाश करने वाला होता है। और उस को स्त्री क्रोधी, झगड़ालू और रोगी होती है ॥ ७ ॥

अष्टमभावस्थितराहुफलम्—

अनिष्टनाशं खलु गुह्यपीडां प्रमेहरोगं वृषणस्य वृद्धिम् ।
प्राप्नोति जन्तुर्विकलत्वलाभं सिंहीसुते वा खलु मृत्युगेहे ॥ ८ ॥

जिस के अष्टम भाव में राहु बैठा हो उस का अनिष्ट का नाश, गुदा में पीड़ा, प्रमेह, अण्डकोश की वृद्धि और विकलता को प्राप्त करता है ॥ ८ ॥

नवमभावस्थितराहुफलम्—

धर्मार्थनाशः किल धर्मगेऽगौ सुखाल्पता वै भ्रमणं नरस्य ।
दरिद्रता बन्धुसुखाल्पता च भवेच्च लोके किल देहपीडा ॥ ९ ॥

जिस के नवम भाव में राहु बैठा हो उस का धर्म अर्थ का नाश, अल्प सुख, भ्रमणशील, दरिद्र, बन्धुओं से अल्प सुख पाने वाला और शरीर में पीड़ा युक्त होता है ॥ ९ ॥

दशमभावस्थितराहुफलम्—

पितुर्नो सुखं कर्मगो यस्य राहुः स्वयं दुर्भगः शत्रुनाशं करोति ।
रुजोवाहनेवातपीडां च जन्तोर्यदा सौख्यगो मीनगः कष्टभाजम् ॥ १० ॥

जिस के दशम भाव में राहु हो वह पिता के सुख से रहित, दरिद्र, शत्रु रहित, वाहनों के कष्ट से युक्त और वात पीड़ा से युक्त होता है ।

यदि सुख भाव गत मीन का राहु हो तो कष्ट भोगने वाला होता है ॥ १० ॥

एकादशभावस्थितराहुफलम्—

लाभे गते यदि तमे सकलार्थलाभं
सौख्याधिकं नृपगणाद्विविधञ्च मानम् ।
वस्त्रादिकाञ्चनचतुष्पदसौख्यभावं
प्राप्नोति सौख्यविजय च मनोरथं च ॥ ११ ॥

जिस क एकादश भाव में राहु बैठा हो उस को सब पदार्थ का

लाभ, अधिक सुखी, राजाओं से आदर पाने वाला, वक्ता, सुवर्ण चतुष्पद और विजय पाने वाला होता है ॥ ११ ॥

व्ययभावस्थितराहुफलम्—

नेत्रे च रोगं किल पादघातं प्रपञ्चभावं किल वत्सलत्वम् ।
दुष्टे रतिं मध्यमसेवनं च करोति जातं व्ययगे तमे वा ॥ १२ ॥

जिस के व्यय भाव में राहु बैठा हो उस को आँख और पाँव में रोग, प्रपञ्ची, वत्सलता से युक्त, दुष्टों से स्नेह करने वाला, साधारण पुरुषों की सेवा करने वाला होता है ॥ १२ ॥

तनुभावस्थितकेतुफलम्—

यदा लग्नगश्चेच्छिखी सूत्रकर्त्ता सरोगादिभोगो भयव्यग्रता च ।
कलत्रादिचिन्ता महोद्वेगता च शरीरे प्रबाधा व्यथा मारुतस्य ॥१॥

जिस के लग्न में केतु हो वह सूत बनाने वाला, रोगी, भय से व्याकुल, स्त्री आदि की चिन्ता करने वाला, बड़े उद्वेग और वात रोग से युक्त होता है ॥ १ ॥

धनभावस्थितकेतुफलम्—

धने चेच्छिखी धान्यनाशो जनानां कुटुम्बाद्विरोधो नृपाद्द्रव्यचिन्ता ।
मुखे रोगता सन्ततं स्यात्तथासौ यदा स्वे गृहे सौम्यगेहेतिसौख्यम् ॥२॥

जिस के धन भाव में केतु बैठा हो उस का धन का नाश, कुटुम्बों से विरोध, राजा से धन की हानि और सदा मुख रोगी होता है । यदि अपने या शुभग्रह की राशि में केतु हो तो अति सुख होता है ॥ २ ॥

तृतीयभावस्थितकेतुफलम्—

शिखी विक्रमे शत्रुनाशश्च वादो धनं भोगमैश्वर्यतेजोऽधिकं च ।
भवेद्बन्धुनाशः सदा बाहुपीड़ा सुखं स्वोच्चगेहे भयोद्वेगता च ॥३॥

जिस के तृतीय भाव में केतु पड़ा हो उस का शत्रु का नाश, विवाद, धन लाभ, पराक्रम की वृद्धि, बन्धुओं का नाश, बाहु में पीड़ा होती है ।

यदि स्वगृह या उच्च का हो तो भय और उद्वेग होता है ॥ ३ ॥

चतुर्थभावस्थितकेतुफलम्--

चतुर्थे च मातुः सुखं नो कदाचित्सुहृद्वर्गतः पितृतो नाशमेति ।
शिखी बन्धुहीनः सुखं स्वोच्चगेहे चिरं नैति सर्वैः सदा व्यग्रता च ॥४॥

जिस के चतुर्थ भाव में केतु हो उस को माता और मित्रवर्ग से सुख नहीं मिलता है। पिता के द्वारा हानि होती है । बन्धुओं के सुख से रहित होता है। यदि अपने उच्च या अपने गृह में केतु बैठा हो तो थोड़े समय सुखी परञ्च सदा व्यग्रता युक्त होता है ॥ ४ ॥

पञ्चमभावस्थितकेतुफलम्—

यदा पञ्चमे यस्य केतुश्च जातः स्वयं स्वोदरे घातपातादिकष्टम् ।
स बन्धुप्रियः सन्मतिः स्वल्पपुत्रः सदा स्वं भवेद्वीर्ययुक्तो नरश्च ॥५॥

जिस के पञ्चम भाव में केतु बैठा हो उस के उदर में घात पात आदि से कष्ट युक्त, बन्धुओं का प्रिय, सुन्दर बुद्धि वाला, अल्प सन्तति वाला, धनी और बली होता है ॥ ५ ॥

रिपुभावस्थितकेतुफलम्--

शिखी यस्य षष्ठे स्थितो वैरिनाशो
भवेन्मातृपक्षाच्च तन्मानभङ्गः ।
चतुष्पात्सुखं द्रव्यलाभो नितान्तं
न रोगोऽस्य देहे सदा व्याधिनाशः ॥ ६ ॥

जिस के षष्ठ भाव में केतु बैठा हो उस का शत्रु नाश, मातृ पक्ष से अनादर, पशुओं का सुख, अति द्रव्य लाभ और सदा रोग रहित होता है ॥ ६ ॥

सप्तमभावस्थितकेतुफलम्—

शिखी सप्तमे मार्गतश्चित्तवृत्तिः सदा वित्तनाशोऽथवारातिभूतः ।
भवेत्कीटगे सर्वदा लाभकारी कलत्रादिपीडा व्ययो व्यग्रता च ॥७॥

जिस के सप्तम भाव में केतु बैठा हो उस को यात्रा की चिन्ता, शत्रुओं से धन का नाश होता है। यदि सप्तम भाव में स्थित हो कर

केतु वृश्चिक का हो तो सदा लाभ, स्त्री को कष्ट, खर्च और व्यग्रता करता है ॥ ७ ॥

अष्टमभावस्थितकेतुफलम्—

गुदे पीडनं वाहनैर्द्रव्यलाभो यदा कीटगे कन्यकायुग्मगे वा ।
भवेच्छिद्रगः केतुखेटो यदा स्यादजे गोलिगे जायते चातिलाभः ॥८॥

जिस के अष्टम भाव में स्थित हो कर केतु कर्क, कन्या या मिथुन का हो तो उस को गुदमार्ग में पीड़ा वाहनों से धन लाभ होता है। यदि मेष, वृष या वृश्चिक का हो कर अष्टम भाव में हो तो अति लाभ होता है ॥ ८ ॥

नवमभावस्थितकेतुफलम्—

यदा धर्मगः केतुकः क्लेशनाशः सुतार्थी भवेन्म्लेच्छतो भाग्यवृद्धिः ।
सहेतु व्यथां बाहुरोगं विधत्ते तपोदानतो हर्षवृद्धिं करोति ॥ ९ ॥

जिस के नवम भाव में केतु बैठा हो उस को कष्ट नाश, पुत्र सुख, म्लेच्छों के द्वारा भाग्य की वृद्धि, कारण वश पीड़ा युक्त, बाहु में रोग, तपस्या और दान से आनन्द की प्राप्ति होती है ॥ ९ ॥

दशमभावस्थितकेतुफलम्—

पितुर्नो सुखं कर्मगो यस्य केतुः स्वयं दुर्भगः शत्रुनाशं करोति ।
रुजो वाहने वातपीडां च जन्तोर्यदा कन्यकास्थः सुखी द्रव्यभाक्च ॥१०॥

जिस के दशम भाव केतु बैठा हो वह पिता के सुख से रहित, स्वयं भाग्य हीन होते हुए भी शत्रुओं को नाश करने वाला, वाहनों को रोग, स्वयं वात से पीड़ित होता है । यदि दशम भाव में स्थित हो कर केतु कन्या राशि में बैठा हो तो जातक सुखी और धनी होता है ॥ १० ॥

एकादशभावस्थितकेतुफलम्—

सुभाषी सुविद्याधिको दर्शनीयः सुभोगः सुतेजाः सुवस्त्रोऽपि यस्य ।
गुदे पीड्यते सन्ततेर्दुर्भगत्वं शिखी लाभगः सर्वकाले करोति ॥११॥

जिस के एकादश भाव में केतु बैठा हो वह सुन्दर बोलने वाला

सुन्दर अधिक विद्यावाला, सुन्दर, भोगी, तेजस्वी, सुन्दर वस्त्र वाला, गुदमार्ग में रोग वाला और निन्दित सन्तान वाला होता है ॥ ११ ॥

व्ययभावस्थितकेतुफलम्—

शिखी रिःफगः पादनेत्रेषु पीड़ा स्वयं राजतुल्यो व्ययं वै करोति।
रिपोर्नाशनं मानसे नैव शर्म रुजा पीड्यते वस्तिगुह्यं सरोगम्॥१२॥

जिस के द्वादश भाव में केतु बैठा हो उस को पाँव, नेत्र में पीड़ा, स्वयं राजा के समान खर्च करने वाला, शत्रुओं का नाश करने वाला, अपने चित्त में सुख की इच्छा नहीं रखने वाला गुदा और वस्ति में रोग से पीड़ित होता है ॥ १२ ॥

अथ दृष्टिफलाध्यायः।

त्र्याशं त्रिकोणं चतुरस्रमस्तं पश्यन्ति खेटाश्चरणाभिवृद्ध्या।
मन्दो गुरुर्भूमिसुतः परे च क्रमेण सम्पूर्णदृशो भवन्ति ॥ १ ॥

ग्रह जिस स्थान में बैठे हों उस से ३,१० स्थान को एक चरण से, ५,६ को दो चरण से, ४,८ को तीन चरण से, और ७ को चार चरण से देखते हैं।

किन्तु ३,१० को शनि, ५-६ को गुरु, ४,८ को मङ्गल और ७ को सब ग्रह पूर्ण दृष्टि से देखते हैं ॥ १ ॥

अथ भौमगृहे रवौ चन्द्रदृष्टिफलम्—

दानधर्मबहुभृत्यसंयुतः कोमलामलतनुर्गृहप्रियः।
आवनेयभवने विरोचने शीतदीधितिनिरीक्षिते सति ॥ २ ॥

मेष या वृश्चिक में स्थित हो कर सूर्य यदि चन्द्र से देखा जाता हो तो जातक दानी, धर्मी, नोकरों से युक्त, सुन्दर स्वच्छ शरीर वाला और मकान का स्नेही होता है ॥ २ ॥

भौमगृहे रवौ भौमदृष्टिफलम्—

क्रूरो नरः सङ्गरकर्मधीरश्चारक्तनेत्रांघ्रिरलं बलीयान्।
भवेद वश्यं कुजगेहसंस्थे दिवामणौ क्षोणिसुतेन दृष्टे ॥ ३ ॥

मेष, वृश्चिक में स्थित हो कर सूर्य यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक दुष्ट, संग्राम में धीर, लाल नेत्र वाला, लाल पाँव वाला और अति बली होता है ॥ ३ ॥

भौमगृहे रवौ बुधदृष्टिफलम्—

सुखेन सत्त्वेन धनेन हीनः प्रेष्यः प्रवासी मलिनः सदैव ।
भवेदवश्यं परवान्मनुष्यः सहस्ररश्मौ कुजभे ज्ञदृष्टे ॥ ४ ॥

मेष, वृश्चिक में स्थित हो कर सूर्य यदि बुध से देखा जाता हो तो सुख, बल, धन इन से रहित, दास कर्म करने वाला, परदेश में रहने वाला और सदा मलिन हृदय वाला होता है ॥ ४ ॥

भौमगृहे रवौ गुरुदृष्टिफलम—

दाता दयालुर्बहुलार्थयुक्तो नृपालमंत्री कुलधुर्यवर्यः ।
स्यान्मानवो भूतनयालयस्थे पत्यौ नलिन्याः किल जीवदृष्टे ॥ ५ ॥

मेष या वृश्चिक में स्थित हो कर सूर्य यदि बृहस्पति से देखा जाता हो तो जातक दाता, दयालु, बहुत धनों से युक्त, राजा का मन्त्री और अपने कुल में श्रेष्ठ होता है ॥ ५ ॥

भौमगृहे रवौ भृगुदृष्टिफलम्—

हीनाङ्गनाप्रीतिरतीव दीनो धनेन हीनो मनुजः कुमित्रः ।
त्वग्दोषयुक्तः क्षितिपुत्रगेहे मित्रेऽधिसंस्थे भृगुपुत्रदृष्टे ॥ ६ ॥

मेष या वृश्चिक में स्थित हो कर सूर्य यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक नीच स्त्री से प्रेम करने वाला, दीन, दरिद्र, दुष्ट मित्र वाला और चर्म रोगी होता है ॥ ६ ॥

भौमगृहे रवौ शनिदृष्टिफलम्—

उत्साहहीनो मलिनोऽति दीनो दुःखान्वितो वै विमतिर्नरः स्यात् ।
कांते नलिन्याः क्षितिजालयस्थे प्रसूतिकाले रविजेन दृष्टे ॥ ७ ॥

मेष या वृश्चिक में स्थित हो कर सूर्य यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक उत्साह से हीन, मलिन, दीन, दुखी, और कुबुद्धि होता है ॥ ७ ॥

शुक्रगृहे रवौ चन्द्रदृष्टिफलम्—

वाराङ्गनाप्रीतिकरो नितांतं स्याद्भूरिभार्यः सलिलोपजीवी ।
दिनाधिराजे भृगुजालयस्थे कलानिधिप्रेक्षणतां प्रयाते ॥ ८ ॥

वृष या तुला में स्थित हो कर सूर्य यदि चन्द्र से देखा जाता हो तो जातक वेश्याओं से प्रेम करने वाला, अधिक स्त्री वाला और जल से जीविका करने वाला होता है ॥ ८ ॥

शुक्रगृहे रवौ भौमदृष्टिफलम्—

संग्रामधीरोतितरां महौजाः सुसाहसप्राप्तधनोरुकीर्तिः ।
क्षीणो नरः स्याद्भृगुमंदिरस्थे सहस्ररश्मौ कुसुतेन दृष्टे ॥ ९ ॥

वृष या तुला में स्थित हो कर सूर्य यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक युद्ध में धीर, महा बलवान्, साहस से धन और यश प्राप्त करने वाला तथा दुर्बल होता है ॥ ९ ॥

शुक्रगृहे रवौ बुधदृष्टिफलम्—

संगीतसत्काव्यकलाकलापे लेखक्रियायां कुशलो नरः स्यात् ।
प्रसन्नमूर्तिर्भृगुवेश्मयाते प्रद्योतने सोमसुतेन दृष्टे ॥ १० ॥

वृष या तुला में स्थित हो कर सूर्य यदि बुध से देखा जाता हो तो जातक संगीत, काव्य, लेख में कुशल और प्रसन्न स्वरूप वाला होता है ॥ १० ॥

शुक्रगृहे रवौ गुरुदृष्टिफलम्—

वंशानुमानं नृपतिप्रधानः सद्रत्नभूषाद्रविणान्वितो वा ।
भीरुर्नरः शुक्रगृहं प्रयाते दृष्टे रवौ देवपुरोहितेन ॥ ११ ॥

वृष या तुला में स्थित हो कर सूर्य यदि गुरु से देखा जाता हो तो जातक कुल के अनुसार राजा के यहाँ प्रधान, रत्न, भूषण, धन से युक्त और डरपोक होता है ॥ ११ ॥

शुक्रगृहे रवौ शुक्रदृष्टिफलम्—

सुलोचनः कांतवपुः प्रधानो मित्रैरमित्रैः सहितः सचिंतः ।

भवेन्नरो दैत्यगुरोर्गृहेऽर्के संवीक्षिते दैत्यपुरोहितेन ॥ १२ ॥

वृष या तुला में स्थित हो कर सूर्य यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक सुन्दर नेत्र वाला, सुन्दर शरीर वाला, प्रधान, मित्र शत्रु दोनों से युक्त, और सदा चिन्तित रहता है ॥ १२ ॥

शुक्रगृहे रवौ शनिदृष्टिफलम्—

दीनोर्थहीनोऽलसतां प्रपन्नो भार्यामनोवृत्तिविभिन्नवृत्तः ।

असाधुवृत्तामययुङ्नरः स्याच्छुक्रालयेऽर्केऽर्कसुतेन दृष्टे ॥ १३ ॥

वृष या तुला में स्थित हो कर सूर्य यदि शनि से देखा जाता हो तो दीन, दरिद्र, आलसी, स्त्री से विरोध रखने वाला, कुत्सित स्वभाव वाला और रोगी होता है ॥ १३ ॥

सौम्यगृहे रवौ चन्द्रदृष्टिफलम्—

मित्रैरमित्रैः परिपीडितश्च विदेशयातोऽपि धनेन हीनः ।

निरंतरोद्वेगकरो नरः स्यात्सौम्यालयेऽर्के हरिणांकदृष्टे ॥ १४ ॥

मिथुन या कन्या में स्थित हो कर सूर्य यदि चन्द्र से देखा जाता हो तो जातक मित्र शत्रु दोनों से दुखी, विदेश जाने पर भी धन हीन और उद्विग्न चित्त वाला होता है ॥ १४ ॥

सौम्यगृहे रवौ भौमदृष्टिफलम्—

रिपुभयकलहाद्यैः संयुतोत्यंतदीनो
रणजयविधिहीनोऽत्यंतसंजातलज्जः ।
भवति ननु मनुष्यः सालसश्चापि हंसे
बुधभवननिवासे लोहिताङ्गेन दृष्टे ॥ १५ ॥

मिथुन या कन्या में स्थित हो कर सूर्य यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक शत्रुओं के द्वारा भय कलह से युक्त, अति दीन, संग्राम में पराजित, लज्जा युक्त और आलसी होता है ॥ १५ ॥

सौम्यगृहे रवौ बुधदृष्टिफलम्—

भूपप्रसादोन्नतिमात्मजानां नयत्यथो शत्रुजनाप्तवित्तः ।

प्रसूतिकाले नलिनीवनेशे बुधर्क्षसंस्थे च बुधेन दृष्टे ॥ १६ ॥

मिथुन या कन्या में स्थित हो कर सूर्य यदि बुध से देखा जाता हो तो जातक राजा की कृपा से पुत्रों की उन्नति पाने वाला और शत्रुओं से धन लाभ करने वाला होता है ॥ १६ ॥

सौम्यगृहे रवौ गुरुदृष्टिफलम्--

सुगुप्तमन्त्रोऽतितरां स्वतन्त्रः कलत्रपुत्रादिजने सगर्वः ।

भवेन्नरः शीतकरात्मजर्क्षे दिवाकरे देवगुरुप्रदृष्टे ॥ १७ ॥

मिथुन या कन्या में स्थित हो कर सूर्य यदि बृहस्पति से देखा जाता हो तो जातक अपने विचार को गुप्त रखने वाला, स्वतन्त्र, और स्त्री, पुत्र आदि के गौरव से युक्त होता है ॥ १७ ॥

सौम्यगृहे रवौ भृगुदृष्टिफलम्--

विदेशवासी चपलो विलासी विषाग्निशस्त्राङ्कितमूर्तिवर्ती ।

पृथ्वीपतेर्दौत्यकरो नरः स्यादर्के बुधर्क्षे भृगुपुत्रदृष्टे ॥ १८ ॥

मिथुन या कन्या में स्थित हो कर सूर्य यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक परदेश में रहने वाला, चञ्चल, विलासी, विष अग्नि या शस्त्र से क्षत शरीर वाला और राजा के यहाँ दूत कर्म करने वाला होता है ॥ १८ ॥

सौम्यगृहे रवौ शनिदृष्टिफलम्--

धूर्तोऽतिभृत्यो गतचित्तबुद्धिर्निजैः सदोद्विग्नमना मनुष्यः ।

दिवाकरे शीतकरात्मजर्क्षे निरीक्षिते भास्करिणा प्रसूतौ ॥ १९ ॥

मिथुन या कन्या में स्थित हो कर सूर्य शनि से देखा जाता हो तो जातक धूर्त, सदा नोकरी करने वाला, बुद्धि हीन और उद्विग्न चित्त वाला होता है ॥ १६ ॥

चन्द्रगृहे रवौ चन्द्रदृष्टिफलम्--

पण्यैश्च पानीयभवैर्महार्थी पृथ्वीपतिर्वा सचिवश्च रौद्रः ।

भवेन्नरो जन्मनि चण्डरश्मौ कर्काटकस्थे शिशिरांशुदृष्टे ॥ २० ॥

कर्क में स्थित हो कर सूर्य यदि चन्द्र से देखा जाता हो तो जातक

जल से उत्पन्न वस्तु के व्यापार से महा धनी, और राजा या राजमन्त्री होता है ॥ २० ॥

चन्द्रगृहे रवौ भौमदृष्टिफलम्—

स्वबन्धुवर्गे गतचित्तबुद्धिः शोफादिरोगैश्च भगन्दरैर्वा ।
पीडा नराणां हि कुलीरसंस्थे दिवामणौ क्षोणिसुतेन दृष्टे ॥२१॥

कर्क में स्थित हो कर सूर्य यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक अपने बन्धुओं को नहीं मानने वाला, शोफ और भगन्दर रोग से पीड़ित होता है ॥ २१ ॥

चन्द्रगृहे रवौ बुधदृष्टिफलम्—

विद्यायशोमानविराजमानो भूपानुकंपाप्तमनोभिलाषः ।
निरस्तशत्रुश्च बुधेन दृष्टे कर्काटकस्थे द्युमणौ नरः स्यात् ॥ २२ ॥

कर्क राशि में स्थित हो कर सूर्य यदि बुध से देखा जाता हो तो जातक विद्या, यश और मान से युक्त, राजा की कृपा से पूर्ण मनोरथ वाला तथा शत्रु रहित होता है ॥ २२ ॥

चन्द्रगृहे रवौ गुरुदृष्टिफलम्—

कुलाधिकश्चामलकीर्तिशाली भूपालसंप्राप्तमहापदार्थः ।
भवेन्नरः शीतकरर्क्षयाते दिवामणौ वाक्पतिवीक्ष्यमाणे ॥ २३

कर्क राशि में स्थित हो कर सूर्य यदि बृहस्पति से देखा जाता हो तो अपने कुल में प्रधान, विमल कीर्ति से युक्त और राजा से अधिक धन लाभ करने वाला होता है ॥ २३ ॥

चन्द्रगृहे रवौ भृगुदृष्टिफलम्—

स्त्रीसंश्रयाद्वस्त्रधनोपलब्धिः परस्य कृत्ये हृदये विषादः ।
निशाकरागारकृताधिकारे दिवाकरे शुक्रनिरीक्ष्यमाणे ॥ २४ ॥

कर्क राशि में स्थित हो कर सूर्य यदि शुक्र से देखा जाता हो तो स्त्री के आश्रय से वस्त्र, धन का लाभ करने वाला और दूसरों की उन्नति से दुख करने वाला होता है ॥ २४ ॥

चन्द्रगृहे रवौ शनिदृष्टिफलम्—

कफानिलार्तः पिशुनोऽन्यकार्ये स्यादंतरायश्चपलस्वभावः।
क्लेशी नरः शीतकरर्क्षसंस्थे दिवामणौ मंदनिरीक्ष्यमाणे ॥ २५ ॥

कर्क में स्थित हो कर सूर्य यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक कफ वात से दुखी, चुगुलखोर, दूसरों के कार्य में बाधा करने वाला, चञ्चल और रोगी होता है ॥ २५ ॥

सिंहगते रवौ चन्द्रदृष्टिफलम्—

धूर्तो गभीरः क्षितिपालमान्यो धनोपलब्धार्थयुतः प्रसिद्धः।
मित्रे निजक्षेत्रयुते प्रसूतौ नक्षत्रनाथेन निरीक्ष्यमाणे ॥ २६ ॥

सिंह राशि में स्थित हो कर सूर्य यदि चन्द्रमा से देखा जाता हो तो धूर्त, गम्भीर, राजमान्य, धनोपार्जन करके धनी और ख्यात होता है ॥ २६ ॥

सिंहगते रवौ भौमदृष्टिफलम्—

नानाङ्गनाप्रीतिरतीव धूर्तः कफात्मकः क्रूरतरश्च शूरः।
महोद्यमः स्यान्मनुजः प्रधानः सिंहस्थितेऽर्के कुसुतेन दृष्टे ॥ २७ ॥

सिंह राशि में स्थित हो कर सूर्य यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो अनेक स्त्रियों के साथ प्रेम करने वाला, धूर्त, कफप्रकृति वाला, पापी, पराक्रमी, बड़े उद्यमी, और प्रधान होता है ॥ २७ ॥

सिंहगते रवौ बुधदृष्टिफलम्—

धूर्तो नृपानुव्रजनः सुसत्वो विद्वत्प्रियो लेखनतत्परश्च।
भवेन्नरः केसरिणि प्रयाते दिवामणौ सौम्यनिरीक्ष्यमाणे ॥ २८ ॥

सिंह राशि में स्थित हो कर सूर्य यदि बुध से देखा जाता हो तो धूर्त, राजा का अनुचर, बली, विद्वान् का प्रिय और लेख में तत्पर होता है ॥ २८ ॥

निजागारगते रवौ गुरुदृष्टिफलम्—

देवालयारामतडागवापीनिर्माणकर्ता स्वजने प्रियश्च।
भवेन्नरो देवपुरोहितेन निरीक्षितेऽर्के मृगराजसंस्थे ॥ २९ ॥

सिंह राशि में स्थित हो कर सूर्य यदि गुरु से देखा जाता हो तो जातक देवालय, बगीचा, जलाशय बनाने वाला, और अपने बन्धुओं का प्रिय होता है ॥ २६ ॥

निजागारगते रवौ भृगुदृष्टिफलम्—

त्वग्दोषरोषापयशोभिभूतो गतोत्सवः स्वीयजनोज्झितश्च ।
स्यान्मानवः सत्यदयाविहीनः पञ्चाननेऽर्के भृगुजेन दृष्टे ॥ ३० ॥

सिंह राशि में स्थित हो कर सूर्य शुक्र से देखा जाता हो तो जातक चर्म रोगी, क्रोधी, अयश से युक्त, उत्सव से रहित, बन्धुओं से त्यक्त और सत्य दया से रहित होता है ॥ ३० ॥

निजागारगते रवौ शनिदृष्टिफलम्—

शठो नरः कार्यविघातकर्ता संतापयेदात्मजनांश्च नूनम् ।
नरो मृगेंद्रोपगते दिनेशे दिनेशपुत्रेण निरीक्ष्यमाणे ॥ ३१ ॥

सिंह राशि में स्थित हो कर सूर्य यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक शठ, काम को बिगाड़ने वाला और अपने जनों को कष्ट देने वाला होता है ॥ ३१ ॥

गुरुगृहे रवौ चन्द्रदृष्टिफलम्—

कामकांतिसुतसौख्यसमेतो वाग्विलासकुशलः कुलशाली ।
स्यान्नरः सुरपुरोहितभस्थे भास्करे हिमकरेण हि दृष्टे ॥ ३२ ॥

धनु या मीन राशि में स्थित हो कर सूर्य यदि चन्द्रमा से देखा जाता हो तो जातक अति सुन्दर, पुत्र सुख से युक्त, सुन्दर वचन बोलने वाला और अपने कुल में मुख्य होता है ॥ ३२ ॥

गुरुगृहे रवौ भौमदृष्टिफलम्—

संग्रामसंप्राप्तयशो विशेषो वक्ता विमुक्तानुजनानुसङ्गः ।
स्थिराश्रमो जीवगृहस्थितेऽर्के भौमेन दृष्टे पुरुषः प्रचण्डः ॥ ३३ ॥

धनु या मीन में स्थित हो कर सूर्य यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक संग्राम में यश पाने वाला, वक्ता, मुमुक्षु जनों की सङ्गति करने वाला और स्थिर आश्रम वाला होता है ॥ ३३ ॥

गुरुगृहे रवौ बुधदृष्टिफलम्—

धातुक्रियाकाव्यकलाकथाज्ञः सद्वाक्यमंत्रादिविधिप्रवीणः।
सतां मतः स्यात्पुरुषो दिनेशे सौम्येक्षिते जीवगृहोपयाते ॥३४॥

धनु या मीन में स्थित हो कर सूर्य यदि बुध की दृष्टि से युक्त हो तो जातक धातुक्रिया, काव्य, कला और कथाओं का जानने वाला, सुन्दर वाणी वाला, मान्त्रिक और साधुओं का प्रिय होता है ॥ ३४ ॥

गुरुगृहे रवौ गुरुदृष्टिफलम्—

नृपात्तमंत्री कुलभूमिपालः कलाविधिज्ञो धनधान्ययुक्तः।
विद्वान्पुमान्भानुमतीज्यगेहे संदृष्टदेहेऽमरपूजितेन ॥ ३५ ॥

धनु या मीन में स्थित हो कर सूर्य यदि गुरु की दृष्टि से युक्त हो तो जातक राजमन्त्री, कुल में प्रधान, कलाओं को जानने वाला, धन धान्य से युक्त और विद्वान् होता है ॥ ३५ ॥

गुरुगृहे रवौ भृगुदृष्टिफलम्—

सुगन्धमाल्याम्बरचारुयोषाभूषाविशेषानुभवाप्तसौख्यः।
भवेन्नरो देवपुरोहितर्क्षे प्रद्योतने दानववन्द्यदृष्टे ॥ ३६ ॥

धनु या मीन राशि में स्थित हो कर सूर्य यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक सुगन्ध, माला, वस्त्र, सुन्दरी स्त्री, भूषण इनके भोग से विशेष सुख पाता है ॥ ३६ ॥

गुरुगृहे रवौ शनिदृष्टिफलम्—

परान्नभुङ्नीचनरैः प्रवृत्तश्चतुष्पदप्रीतिधरो नरः स्यात्।
सूर्य्ये सुराचार्यगृहे प्रयाते निरीक्षिते भानुसुतेन सूतौ ॥ ३७ ॥

धनु या मीन में स्थित हो कर सूर्य यदि शनि से देखा जाता हो तो दूसरे के अन्न को खाने वाला, नीच मनुष्यों के साथ रहने वाला और पशुओं से प्रेम करने वाला होता है ॥ ३७ ॥

शनिगृहे रवौ चन्द्रदृष्टिफलम्—

नारीप्रसङ्गेन गतार्थसौख्यो मायापटुश्चञ्चलचित्तवृत्तिः।

भवेन्मनुष्यः शनिवेश्मयाते सहस्ररश्मौ हिमरश्मिदृष्टे ॥ ३८ ॥

मकर या कुम्भ में स्थित हो कर सूर्य यदि चन्द्र से देखा जाता हो तो जातक स्त्री के कारण धन, सुख का नाश करने वाला, मायावी और चञ्चल होता है ॥ ३८ ॥

शनिगृहे रवौ भौमदृष्टिफलम्—

परकलहहतार्थो व्याधिवैरप्रतप्त-
स्त्वतिविकलशरीरोऽत्यन्तचिन्तासमेतः ।
भवति ननु मनुष्यो सम्भवे तिग्मरश्मौ
गतवति सुतगेहं दृष्टदेहे कुजेन ॥ ३९ ॥

मकर या कुम्भ में स्थित हो कर सूर्य मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक दूसरे से कलह करके धन नाश करने वाला, रोग और शत्रु से पीड़ित, अति दुर्बल शरीर वाला और चिन्ता युक्त होता है ॥ ३९ ॥

शनिगृहे रवौ बुधदृष्टिफलम्—

क्लीवस्वभावः परवित्तहारी साधूज्झितः शूरतरो नरः स्यात् ।
दिवाकरे शीतकरात्मजेन दृष्टे प्रसूतौ शनिमन्दिरस्थे ॥ ४० ॥

मकर या कुम्भ में स्थित हो कर सूर्य यदि बुध से देखा जाता हो तो नपुंसक स्वभाव वाला, दूसरों का धन हरण करने वाला, साधुओं की सङ्गति से रहित और अत्यन्त शूर होता है ॥ ४० ॥

शनिगृहे रवौ गुरुदृष्टिफलम्—

सत्कर्मकर्त्ता मतिमान्बहूनां समाश्रयश्चारुयशा मनस्वी ।
स्यान्मानवो भानुसुतालयस्थे भानौ च वाचस्पतिना प्रदृष्टे ॥४१॥

मकर या कुम्भ राशि में स्थित हो कर सूर्य यदि गुरु से देखा जाता हो तो सत्कार्य करने वाला, बुद्धिमान्, बहुतों का आश्रय, सुन्दर यश वाला और मनस्वी होता है ॥ ४१ ॥

शनिगृहे रवौ भृगुदृष्टिफलम्—

शङ्खप्रवालामलरत्नवित्तं वराङ्गनाभ्यांपि धनोपलब्धिम् ।

करोति भानुर्ननु मानवानां शन्यालयस्थो भृगुजेन दृष्टः ॥ ४२ ॥

मकर या कुम्भ में स्थित हो कर सूर्य यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक शंख, मूंगा, मोती इन धनों से युक्त और वेश्याओं से धन लाभ करने वाला होता है ॥ ४२ ॥

शनिगृहे रवौ शनिदृष्टिफलम्—

प्रौढप्रतापाद्विजितारिपक्षः क्षोणीपतिप्रीतिमहाप्रतिष्ठः ।
प्रसन्नमूर्तिः प्रभवेन्मनुष्यः शन्यालयेऽर्के शनिना प्रदृष्टे ॥ ४३ ॥

मकर या कुम्भ में स्थित हो कर सूर्य यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक महा प्रतापी, शत्रु को पराजित करने वाला और राजाके द्वारा आदृत हो कर प्रतिष्ठा पाने वाला होता है ॥ ४३ ॥

अथ मेषे शशाङ्के सूर्यदृष्टिफलम्—

उग्रस्वभावोऽपि मृदुर्नतानां धीरो धराधीश्वरगौरवाढ्यः ।
नरो भवेत्सङ्गरभीरुरेव मेषे शशाङ्के नलिनीशदृष्टे ॥ १ ॥

मेष राशि में स्थित हो कर चन्द्र यदि रवि से देखा जाता हो तो जातक उग्र स्वभाव वाला हो कर भी सज्जनों के प्रति नम्र, धीर और राजा के द्वारा आदर पाने वाला होता है ॥ १ ॥

मेषराशिगते चन्द्र भौमदृष्टिफलम्—

विषाग्निवातास्त्रभयं कदाचित्स्यान्मूत्रकृच्छ्रं महदाश्रयश्च ।
दन्ताक्षिपीडा निबिडा जडांशौ मेषस्थिते भूमिसुतेन दृष्टे ॥ २ ॥

मेष राशि में स्थित हो कर चन्द्र यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक विष, अग्नि, वात, शस्त्र इन के भय से युक्त, कभी२ मूत्र-कृच्छ्र रोग से पीड़ित, बड़ों का आश्रय, दन्त रोगी और नेत्र रोगी होता है ॥ २ ॥

मेषराशिगते चन्द्रे बुधदृष्टिफलम्—

विलसदमलकीर्तिः सर्वविद्याप्रवीणो
द्रविणगुणगणाढ्यः संमतः सज्जनानाम् ।

भवति ननु मनुष्यो मेषराशौ शशांके
शशधरसुतदृष्टे श्रेष्ठसंपत्प्रतिष्ठः ॥ ३ ॥

मेष राशि में स्थित हो कर चन्द्रमा यदि बुध से देखा जाता हो तो जातक सुन्दर यश वाला, सब विद्याओं को जानने वाला, द्रव्य और गुणों से युक्त, सज्जनों का स्नेही, उत्तम सम्पत्ति वाला और प्रतिष्ठित होता है ॥ ३ ॥

मेषराशिगते चंद्रे गुरुदृष्टिफलम्—

नृपप्रधानः पृतनापतिर्वा कुलानुभावाद्बहुसम्पदाढ्यः ।
भवेन्नरः कैरविणीवनेशे मेषस्थिते गीष्पतिना प्रदृष्टे ॥ ४ ॥

मेष राशि में स्थित हो कर चन्द्रमा यदि गुरु से देखा जाता हो तो जातक राजमन्त्री या सेनापति और कुल के अनुसार अधिक धन से युक्त होता है ॥ ४ ॥

मेषराशिगते चन्द्रे शुक्रदृष्टिफलम्—

योषाविभूषाधनसूनुसौख्यो भोक्ता सुवक्ता परिमुक्तरोषः ।
स्यात्पूरुषो मेषगतेऽमृतांशौ निरीक्ष्यमाणे भृगुणा गुणज्ञः ॥ ५ ॥

मेष राशि में स्थित हो कर चन्द्रमा यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक स्त्री, भूषण, धन और पुत्र के सुख से युक्त, भोगी, सुन्दर वचन बोलने वाला तथा रोष हीन होता है ॥ ५ ॥

मेषराशिते चन्द्रे शनिदृष्टिफलम्—

गदयुतं हतचित्तसमुन्नतिं विगतवित्तमसत्यमसत्सुतम् ।
क्रियगतोऽर्कसुतेन निरीक्षितो हिमकरो हि नरं कुरुते खलम् ॥६॥

मेष राशि गत चन्द्रमा यदि शनि से देखा जाता हो तो रोगी, चित्त की उन्नति से रहित, निर्धन, असत्य बोलने वाला और दुष्ट सन्तति वाला होता है ॥ ६ ॥

वृषराशिगते चन्द्रे रविदृष्टिफलम्—

कृषिक्रियायां निरतो विधिज्ञः स्यान्मांत्रिको वाहनधान्ययुक्तः ।

नरो नितांतं चतुरः स्वकार्ये दृष्टे दिनेशेन वृषे शशाङ्के ॥ ७ ॥

वृष राशि गत चन्द्रमा यदि सूर्य से देखा जाता हो तो खेती करने वाला, मन्त्र जानने वाला और धन वाहन से युक्त होता है ॥ ७ ॥

वृषराशिगते चन्द्रे भौमदृष्टिफलम्—

कामातुरश्चित्तहरोऽङ्गनानां स्यात्साधुमित्रः सुतरां पवित्रः ।
प्रसन्नमूर्तिश्च नरो वृषस्थे शीतद्युतौ भूमिसुतेन दृष्टे ॥ ८ ॥

वृष राशि गत चन्द्रमा यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक कामी, स्त्रियों का मन हरने वाला, सज्जनों का प्रिय, अति पवित्र और प्रसन्न मूर्ति होता है ॥ ८ ॥

वृषराशिगते चन्द्रे बुधदृष्टिफलम्—

प्राज्ञं विधिज्ञं कृपया समेतं हर्षान्वितं भूतहिते रतं च ।
गुणाभिरामं मनुजं प्रकुर्याद्वृषे शशाङ्के शशिजेन दृष्टे ॥ ९ ॥

वृष राशि गत चन्द्रमा यदि बुध से देखा जाता हो तो जातक पण्डित, कार्यों को जानने वाला, दयालु, हर्ष से युक्त, प्राणियों का हितकारी और गुणी होता है ॥ ९ ॥

वृषराशिगते चन्द्रे गुरुदृष्टिफलम्—

जायात्मजानन्दयुतं सुकीर्तिं धर्मक्रियायां निरतं च पित्रोः ।
भक्तौ प्रसक्तं मनुजं प्रकुर्याद्वृषस्थितेन्दुर्गुरुणा प्रदृष्टः ॥ १० ॥

वृष राशि गत चन्द्रमा गुरु से देखा जाता हो तो जातक स्त्री पुत्रों के सुख से युक्त, यशस्वी, धर्म कार्य में निरत और माता पिता की आज्ञा पालन करने वाला होता है ॥ १० ॥

वृषराशिगते चन्द्रे भृगुदृष्टिफलम्—

भूषणाम्बरगृहासनशय्यागंधमाल्यचतुरंघ्रिसुखानि ।
आतनोति सततं मनुजानां चन्द्रमा वृषगतो भृगुदृष्टः ॥ ११ ॥

वृष राशि गत चन्द्रमा शुक्र से देखा जाता हो तो भूषण, वस्त्र, गृह, आसन, शय्या, सुगन्ध, माला और पशुओं से सुखी होता है ११

वृषराशिगते चन्द्रे शनिदृष्टिफलम्—

कलानिधिः पूर्वदले वृषस्य शनीक्षितश्चेन्निधनं जनन्याः ।
करोति सत्यं मुनिभिर्यदुक्तं तथा परार्धे खलु तातघातम् ॥ १२ ॥

वृष राशि के पूर्वार्ध में गत चन्द्रमा यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक की माता का और उत्तरार्ध में स्थित हो तो पिता का मरण कारक होता है ॥ १२ ॥

मिथुनराशिगते चन्द्रे रविदृष्टिफलम्—

प्राज्ञं सुशीलं द्रविणेन हीनं क्लेशाभिभूतं सततं करोति ।
नरं च सर्वोत्सवदं प्रसूतौ द्वन्द्वे स्थितौ भानुमता च दृष्टः ॥१३॥

मिथुन राशि गत चन्द्र के ऊपर रवि की दृष्टि हो तो पण्डित, सुशील, दरिद्र, कष्ट से पीड़ित परञ्च सब प्रकार के उत्सव से युक्त होता है ॥ १३ ॥

मिथुनराशिगते चन्द्रे भौमदृष्टिफलम्—

उदारदारं चतुरं च शूरं प्राज्ञं-च सुज्ञं धनवाहनाद्यैः ।
युक्तं प्रकुर्यान्मिथुनस्थितेन्दुर्निरीक्षितो जन्मनि भूसुतेन ॥ १४ ॥

मिथुन राशि गत चन्द्र के ऊपर मङ्गल की दृष्टि हो तो उदार स्त्री वाला, चतुर, शूर, पण्डित और धन वाहन से युक्त होता है ॥ १४ ॥

मिथुनराशिगते चन्द्रे बुधदृष्टिफलम्—

धीरं सदाचारमुदारसारं नरं नरेन्द्राप्तधनं करोति ।
निशाधिनाथो मिथुनाधिसंस्थो निशीथिनीनाथसुतेन दृष्टः ॥ १५ ॥

मिथुन राशि गत चन्द्र के ऊपर बुध की दृष्टि हो तो धीर, सदाचार युक्त, उदार और राजा से धन लाभ करने वाला होता है ॥१५॥

मिथुनराशिगते चन्द्रे गुरुदृष्टिफलम्—

विद्याविवेकान्वितमर्थवन्तं ख्यातं विनीतं सुतरां सुपुण्यम् ।
करोति मर्त्यं मिथुनाधिसंस्थो निशीथिनीशो गुरुणा प्रदृष्टः ॥१६॥

मिथुन राशि गत चन्द्र के ऊपर गुरु की दृष्टि हो तो विद्या और

विवेक से युक्त, धनी, विख्यात, विनीत और अतिपुण्यवान् होता है ॥१६॥

मिथुनराशिगते चन्द्रे भृगुदृष्टिफलम्—

वस्त्रप्रसूनान्नवराङ्गनाभ्यः सद्वाहनेभ्यश्च विभूषणेभ्यः।
करोति सौख्यं हि सुधामयूखो द्वन्द्वस्थितो जन्मनि शुक्रदृष्टः॥१७॥

मिथुन राशि गत चन्द्र के ऊपर शुक्र की दृष्टि हो तो जातक वस्त्र, पुष्प, अन्न, सुन्दरी स्त्री, सुन्दर वाहन और विभूषणों के सुख से युक्त होता है ॥ १७ ॥

मिथुनराशिगते चन्द्रे शनिदृष्टिफलम्—

धनाङ्गनावाहननन्दनाद्यैर्विश्लेषमायाति विगर्हितत्वम्।
नरो हि नीहारकरे नृयुग्मे निरीक्षिते भानुसुतेन सूतौ॥१८॥

मिथुन राशि गत चन्द्र के ऊपर शनि की दृष्टि हो तो जातक धन, स्त्री, वाहन और पुत्रों से विरह पाने वाला, तथा निन्दित कर्म करने वाला होता है ॥ १८ ॥

कर्कराशिगते चन्द्रे रविदृष्टिफलम्—

निरर्थकक्लेशकरं विकीर्णैर्नृपाश्रयं दुर्गकृताधिकारम्।
कुर्यात्कलावान्परिसूतिकाले कुलीरसंस्थो नलिनीशदृष्टः॥ १९ ॥

कर्क राशि गत चन्द्रमा के ऊपर रवि की दृष्टि हो तो जातक निरर्थक नीच जातियों को क्लेश देने वाला, राजा के आश्रय में रहने वाला और किला का अधिकारी होता है ॥ १६ ॥

कर्कराशिगते चन्द्रे भौमदृष्टिफलम्—

दक्षं च शूरं जननीविरुद्धं क्षीणाङ्गयष्टिं मनुजं करोति।
कुलीरसंस्थः परिसूतिकाले दृष्टः कलावान्किल मङ्गलेन ॥ २० ॥

कर्क राशि गत चन्द्रमा के ऊपर मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक चतुर, शूर, माता का विरोधी और कृश शरीर वाला होता है ॥ २० ॥

कर्कराशिगते चन्द्रे बुधदृष्टिफलम्—

दारार्थपुत्रोन्नतिनीतिसौख्यं सेनापतिं वा सचिवं मनुष्यम्।

कर्काधिसंस्थे कुरुते हिमांशौ हिमांशुपुत्रेण निरीक्ष्यमाणे ॥ २१ ॥

कर्क राशि गत चन्द्रमा के ऊपर बुध की दृष्टि हो तो जातक स्त्री-पुत्रों की उन्नति करने वाला, नीतिमार्ग से सुखी और सेनापति या राजा का मन्त्री होता है ॥ २१ ॥

कर्कराशिगते चन्द्रे गुरुदृष्टिफलम्—

नृपाधिकारं गुणिनं नयज्ञं सुखान्वितं चारुपराक्रमं च ।
करोति जातं यदि कर्कवर्ती पीयूषमूर्तिर्गुरुणेक्ष्यमाणः ॥ २२ ॥

कर्क राशि गत चन्द्रमा के ऊपर गुरु की दृष्टि हो तो जातक राजा का अधिकारी, गुणी, नीतिज्ञ, सुखी और अत्यन्त पराक्रमी होता है ।२२।

कर्कराशिगते चन्द्रे भृगुदृष्टिफलम्—

सद्रत्नचामीकररत्नभूषावराङ्गनासौख्ययुतं नितान्तम् ।
नरं निजागारगतः करोति सुधाकरः शुक्रनिरीक्ष्यमाणः ॥२३॥

कर्क राशि गत चन्द्रमा के ऊपर शुक्र की दृष्टि हो तो सुन्दर रत्न, सुवर्ण, रत्न, भूषण, सुन्दर स्त्री इन के सुख से संयुक्त होता है ॥ २३ ॥

कर्कराशिगते चन्द्रे शनिदृष्टिफलम्—

सत्येन हीनं जननीविरुद्धं सदाटनं पापरतं गतार्थम् ।
करोति जातं निजगेहगामी चेद्यामिनीशो रविजेन दृष्टः ॥ २४ ॥

कर्क राशि गत चन्द्रमा के ऊपर शनि की दृष्टि हो तो जातक असत्य बोलने वाला, माता का विरोधी, भ्रमणशील, पापी और निर्धन होता है ॥ २४ ॥

सिंहराशिगते चन्द्रे रविदृष्टिफलम्—

गुणयुतं सततं नृपतिप्रियं वरपदं च विलम्बितसन्ततिम् ।
हरिगतो वितनोति निशाकरः खरकरप्रविलोकनसंयुतः ॥२५॥

सिंह राशि गत चन्द्रमा के ऊपर रवि की दृष्टि हो तो जातक गुणी, राजा का प्रिय, उच्च पद प्राप्त करने वाला और देर से सन्तान वाला होता है ॥ २५ ॥

सिंहराशिगते चन्द्रे भौमदृष्टिफलम्—

नरपतेः सचिवो धनवाहनात्मजकलत्रसुखी हि भवेन्नरः।
हरिणलक्ष्मणि केसरिणि स्थिते क्षितिसुतेन ननु प्रविलोकिते ॥२६॥

सिंह राशि गत चन्द्रमा के ऊपर मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक राजा का मन्त्री और धन, वाहन, पुत्र, स्त्री इन सबों के सुख से युक्त होता है ॥ २६ ॥

सिंहराशिगते चन्द्रे बुधदृष्टिफलम्—

धनाङ्गनावाहननन्दनेभ्यः सुखप्रपूरं हि नरं करोति।
द्विजाधिराजो मृगराजसंस्थो द्विजाधिराजात्मजसंप्रदृष्टः ॥ २७ ॥

सिंह राशि गत चन्द्रमा के ऊपर बुध की दृष्टि हो तो जातक धन, वाहन, स्त्री, पुत्रों के द्वारा सुखी होता है ॥ २७ ॥

सिंहराशिगते चन्द्रे गुरुदृष्टिफलम्—

बहुश्रुतं विस्तृतसाधुवृत्तं कुर्यान्नरं भूमिपतेः प्रधानम्।
चन्द्रो मृगेन्द्रोपगतोऽमरेन्द्रोपाध्यायदृष्टिः परिसूतिकाले ॥ २८ ॥

सिंह राशि गत चन्द्रमा के ऊपर गुरु की दृष्टि हो तो जातक बहुत विषयों का ज्ञाता, प्रसिद्ध यश वाला और राजमन्त्री होता है ॥ २८ ॥

सिंहराशिगते चन्द्रे भृगुदृष्टिफलम्—

स्त्रीत्रैभवं वै गुणिनं गुणज्ञं प्राज्ञं विधिज्ञं कुरुते मनुष्यम्।
पीयूषरश्मिर्जनने यदि स्यात्पञ्चाननस्थो भृगुसूनुदृष्टः ॥ २९ ॥

सिंह राशि गत चन्द्रमा के ऊपर शुक्र की दृष्टि हो तो जातक स्त्री के सम्बन्ध से धन प्राप्त करने वाला, गुणी, गुण ज्ञाता, पण्डित और कार्यों को जानने वाला होता है ॥ २९ ॥

सिंहराशिगते चन्द्रे शनिदृष्टिफलम्—

कान्तावियुक्तः कृषिकर्मदक्षो दुर्गाधिकारी हि नरोऽल्पकार्थः।
सिंहोपयाते सति शीतभानौ निरीक्षिते सूर्यसुतेन सूतौ ॥ ३० ॥

सिंह राशि गत चन्द्रमा के ऊपर शनि की दृष्टि हो तो जातक स्त्री

रहित, खेती करने में चतुर, किला का अधिकारी और थोड़े धन वाला होता है ॥ ३० ॥

कन्याराशिगते चन्द्रे रविदृष्टिफलम्—

भूमीशकोशाधिकृतं सुवृत्तं भार्यावियुक्तं गुरुभक्तियुक्तम् ।
जातं च कन्याश्रितशीतरश्मिस्तनोति जन्तुं खररश्मिदृष्टः ॥ ३१ ॥

कन्या राशि गत चन्द्रमा के ऊपर रवि की दृष्टि हो तो जातक राजा का खजाञ्ची, सुन्दर चरित्र वाला, स्त्री से वियुक्त और गुरुभक्त होता है ॥ ३१ ॥

कन्याराशिगते चन्द्रे भौमदृष्टिफलम्—

हिंसापरं शूरतरं सकोपं नृपाश्रितं लब्धजयं रणादौ ।
कुमारिकासंश्रितशीतभानुर्भूसूनुदृष्टो मनुजं करोति ॥ ३२ ॥

कन्या राशि गत चन्द्रमा के ऊपर मङ्गल की दृष्टि हो तो हिंसा करने वाला, शूर, क्रोधी, राजा का आश्रित और युद्ध में विजय पाने वाला होता है ॥ ३२ ॥

कन्याराशिगते चन्द्रे बुधदृष्टिफलम्—

ज्योतिर्विद्याकाव्यसंगीतविद्यं प्राज्ञं युद्धे लब्धकीर्तिं विनीतम् ।
कुर्यान्नूनं मानवं मानवन्तं कन्यास्थोऽब्जश्चेन्दुजेन प्रदृष्टः ॥ ३३ ॥

कन्या राशि में स्थित हो कर चन्द्रमा यदि बुध से देखा जाता हो तो ज्यौतिष विद्या, काव्य, संगीत इन को जानने वाला, पण्डित, युद्ध में यश पाने वाला, नम्र और मानी होता है ॥ ३३ ॥

कन्याराशिगते चन्द्रे गुरुदृष्टिफलम्—

भूरिबन्धुमवनीपतिप्रियं चारुवृत्तशुभकीर्तिसंयुतम् ।
मानवं हि कुरुतेऽङ्गनाश्रितश्चन्द्रमाः सुरपुरोहितेक्षितः ॥ ३४ ॥

कन्या राशि में स्थित हो कर चन्द्रमा यदि गुरु से देखा जाता हो तो बहुत बन्धुओं वाला, राजा का स्नेही, श्रेष्ठ आचार और सुन्दर यश से युक्त होता है ॥ ३४ ॥

कन्याराशिगते चन्द्रे भृगुदृष्टिफलम्—

विलासिनीकेलिविलासचित्तं कान्ताश्रितं भूपतिलब्धवित्तम्।
कुर्यान्नरं शीतकरः कुमार्यां स्थितः सितेन प्रविलोकितश्च ॥ ३५ ॥

कन्या राशि में स्थित हो कर चन्द्रमा यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक स्त्रियों के साथ विलास करने वाला, स्त्री के आश्रय में रहने वाला और राजा से धन लाभ करने वाला होता है ॥ ३५ ॥

कन्याराशिगते चन्द्रे शनिदृष्टिफलम्—

निष्किञ्चनं हीनमतिं नितान्तं स्त्रीसंश्रयादाप्तधनं जनन्या।
हीनं प्रकुर्यात्खलु कन्यकायां गतो मृगाङ्कोऽर्कसुतेन दृष्टः ॥ ३६ ॥

कन्या राशि में स्थित हो कर चन्द्रमा यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक अकिञ्चन, बुद्धिहीन, स्त्री के सम्बन्ध से धन प्राप्त करने वाला और माता के सुख से रहित होता है ॥ ३६ ॥

तुलाराशिगते चन्द्रे रविदृष्टिफलम्—

सदाटनः सौख्यधनैर्विहीनः सदङ्गनासूनुजनैर्विहीनः।
मित्रैरमित्रैश्च नरोऽतितप्तस्तुलाधरे शीतकरेऽर्कदृष्टे ॥ ३७ ॥

तुला राशि में स्थित हो कर चन्द्रमा यदि सूर्य से देखा जाता हो तो जातक भ्रमण शील, सुख रहित, धन रहित, स्त्री रहित, पुत्र रहित और मित्र, शत्रु दोनों से सन्तप्त होता है ॥ ३७ ॥

तुलाराशिगते चन्द्रे भौमदृष्टिफलम्—

बुद्ध्या परार्थाकरणैकचित्तं मायासमेतं विषयाभितप्तम्।
करोति जातं हि तुलागतेन्दुर्निरीक्ष्यमाणो धरणीसुतेन ॥ ३८ ॥

तुला राशि में स्थित होकर चन्द्रमा यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक अपनी बुद्धि से दूसरे के कार्य को बिगाड़ने वाला, मायावी और विषयों से सन्तप्त रहता है ॥ ३८ ॥

तुलाराशिगते चन्द्रे बुधदृष्टिफलम्—

कलाविधिज्ञं धनधान्ययुक्तं वक्तृत्वविद्याविभवैः समेतम्।

कुर्य्यान्नरं शीतकरस्तुलास्थः प्रसूतिकाले शशिजेन दृष्टः ॥ ३९ ॥

तुला राशि में स्थित हो कर चन्द्रमा यदि बुध से देखा जाता हो तो जातक कलाओं को जानने वाला, धन धान्य से युक्त, व्याख्याता और धनी होता है ॥ ३६ ॥

तुलाराशिगते चन्द्रे गुरुदृष्टिफलम्—

विचक्षणो वस्त्रविभूषणानां क्रयेऽथवा विक्रयताविधाने ।
तुलाधरे शीतकरो नरः स्याद्द्‌ दृष्टः शुनासीरपुरोहितेन ॥ ४० ॥

तुला राशि में स्थित हो कर चन्द्रमा यदि गुरु से देखा जाता हो तो जातक वस्त्र, विभूषण आदि के खरीदने बेचने में चतुर होता है ॥४०॥

तुलाराशिगते चन्द्रे भृगुदृष्टिफलम्—

प्राज्ञस्त्वनेकोद्यमसाधितार्थः स्यात्पार्थिवानां कृपया समेतः ।
हृष्टो नरः पीनकलेवरश्च जूके मृगाङ्के भृगुजेन दृष्टे ॥ ४१ ॥

तुला राशि में स्थित हो कर चन्द्रमा यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक पण्डित, अनेक प्रकार से धन सञ्चय करने वाला, राजा का कृपापात्र और हर्षित होता है ॥ ४१ ॥

तुलाराशिगतेचन्द्रे शनिदृष्टिफलम्—

धनैश्च धान्यैर्वरवाहनैश्च युतोऽपि हीनो विषयोपभोगैः ।
भवेन्नरस्तौलिनि जन्मकाले कलानिधौ भानुतनूजदृष्टे ॥ ४२ ॥

तुला राशि में स्थित हो कर चन्द्रमा यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक धन, धान्य, उत्तम वाहन इन से युक्त होने पर भी विषय सुख से रहित होता है ॥ ४२ ॥

वृश्चिकराशिगते चन्द्रे रविदृष्टिफलम्—

सद्वृत्तिहीनं धनिनं जनानामसह्यमत्यन्तकृतप्रयासम् ।
सेनानिवासं मनुजं प्रकुर्य्यात्ताराधिपः कौर्प्यगतोऽर्कदृष्टः ॥ ४३ ॥

वृश्चिक राशि गत चन्द्रमा के ऊपर रवि की दृष्टि हो तो जातक आचार रहित, धनी, लोगों का अप्रिय, अधिक यत्न करने वाला और सैनिक होता है ॥ ४३ ॥

वृश्चिकराशिगते चन्द्रे भौमदृष्टिफलम्—

रणाङ्गनावाप्तयशोविशेषो गभीरतागौरवसंयुतश्च।
भूपानुकम्पासमुपात्तवित्तो नरोऽलिनीन्दौ क्षितिजेन दृष्टे ॥ ४४ ॥

वृश्चिक राशि गत चन्द्रमा के ऊपर मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक युद्ध में विजय पाने वाला, गंभीर, गौरवी और राजा की कृपा से धन प्राप्त करने वाला होता है ॥ ४४ ॥

वृश्चिकराशिगते चन्द्रे बुधदृष्टिफलम्—

वाग्विलासकुशली रणशीलो गीतनृत्यनिरतश्च नितान्तम्।
कूटकर्मणि नरो निपुणः स्याद्वृश्चिके शशिनि चन्द्रजदृष्टे ॥ ४५ ॥

वृश्चिक राशि गत चन्द्रमा के ऊपर बुध की दृष्टि हो तो जातक बोलने में चतुर, रणप्रिय, नाच गान में तत्पर और प्रपञ्ची होता है ४५॥

वृश्चिकराशिगते चन्द्रे गुरुदृष्टिफलम्—

लोकानुरूपः सुतरां सुरूपः सत्कर्मकृद्वित्तविभूषणाढ्यः।
स्यान्मानवो जन्मनि शितरश्मौ संस्थेऽलिनीज्येन निरीक्ष्यमाणे ४६

वृश्चिक राशि में स्थित चन्द्रमा यदि गुरु से देखा जाता हो तो जातक लोगों का प्रिय, अति सुन्दर, सुकर्म करने वाला और धन भूषणों से युक्त होता है ॥ ४६ ॥

वृश्चिकराशिगते चन्द्रे भृगुदृष्टिफलम्—

प्रसन्नमूर्तिः समुदारकीर्तिः कूटक्रियाज्ञो धनवाहनाढ्यः।
कान्ताहतार्थः पुरुषोऽलियाते शीतद्युतौ दैत्यगुरुप्रदृष्टे ॥ ४७ ॥

वृश्चिक राशि गत चन्द्रमा के ऊपर शुक्र की दृष्टि हो तो जातक प्रसन्न वदन वाला, विमल कीर्ति वाला, कूट नीति को जानने वाला, धन वाहन से युक्त और स्त्रियों के पीछे धन नाश करने वाला होता है ॥४७॥

वृश्चिकराशिगते चन्द्रे शनिदृष्टिफलम्—

स्थानभ्रंशं दैन्यनाशाल्पवित्तं नीचापत्यासत्त्वयक्ष्मप्रकोपम्।
कुर्याच्चन्द्रः सूतिकालेऽलिसंस्थश्छायापुत्रप्रेक्षणत्वं भयातः ॥ ४८ ॥

वृश्चिक राशि गत चन्द्रमा के ऊपर शनि की दृष्टि हो तो जातक स्थान रहित, अतिदीन, थोड़े धन वाला, नीच सन्तान वाला, निर्बल और यक्ष्मा से पीड़ित होता है ॥ ४८ ॥

धनराशिगते चन्द्रे रविदृष्टिफलम्—

प्रौढप्रतापोत्तमकीर्तिसम्पत्सद्वाहनान्याहवजं जयं च ।
नृपप्रसादं कुरुते नराणां ताराधिपश्चापगतोऽर्कदृष्टः ॥ ४९ ॥

धनु राशि गत चन्द्रमा के ऊपर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक बड़ा प्रतापी, उत्तम कीर्ति वाला, धन वाहन से युक्त, संग्राम में विजयी और राजा का कृपापात्र होता है ॥ ४९ ॥

धनराशिगते चन्द्रे भौमदृष्टिफलम्—

सेनापतित्वं च महत्प्रतापं पद्मालयालङ्करणोपलब्धिम् ।
कुर्यान्नराणां हरिणाङ्क एष शरासनस्थोऽवनिजेन दृष्टः ॥५०॥

धनु राशि गत चन्द्रमा के ऊपर मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक सेनापति, बड़ा प्रतापी और लक्ष्मीवान् होता है ॥ ५० ॥

धनराशिगते चन्द्रे बुधदृष्टिफलम्—

सद्वाग्विलासं बहुभृत्ययुक्तं कुर्यान्नरं ज्योतिषशिल्पविद्यम् ।
तुरङ्गजङ्घे हि कुरङ्गजन्मा कुरङ्गलक्ष्मप्रभवेण दृष्टः ॥ ५१ ॥

धनु राशि गत चन्द्रमा के ऊपर बुध की दृष्टि हो तो जातक सुन्दर वचन बोलने वाला, बहुत नौकरों से युक्त, ज्योतिष और शिल्प विद्या को जानने वाला होता है ॥ ५१ ॥

धनराशिगते चन्द्रे गुरुदृष्टिफलम्—

महापदस्थो धनवान्सुवृत्तो भवेन्नरश्चारुशरीरयष्टिः ।
धनुर्धरे शीतकरे प्रयाते निरीक्षिते शक्रपुरोहितेन ॥ ५२ ॥

धनु राशि गत चन्द्रमा के ऊपर गुरु की दृष्टि हो तो जातक उच्च पद पाने वाला, धनी, सदाचारी और सुन्दर शरीर वाला होता है ५२

धनराशिगते चन्द्रे भृगुदृष्टिफलम्—

सन्तानार्थात्यन्तसंजातधर्मः शश्वत्सौख्येनान्वितो मानवः स्यात्

तारास्वामी चापगामी प्रसूतौ दैत्यामात्यप्रेक्षणात्स्यं प्रयातः ॥ ५३ ॥

धनु राशि गत चन्द्र के ऊपर शुक्र को दृष्टि हो तो जातक सन्तान, धन, धर्म इन से युक्त और सदा सुखी रहता है ॥ ५३ ॥

धनराशिगते चन्द्रे शनिदृष्टिफलम्—

सत्त्वोपेतं नित्यशास्त्रानुरक्तं सद्वक्तारं मानवं च प्रचण्डम् ।
कोदण्डस्थस्तीक्ष्णरश्म्यात्मजेन दृष्टः सूतौ शीतरश्मिः करोति ॥५४॥

धनु राशि गत चन्द्रमा के ऊपर शनि को दृष्टि हो तो जातक बली, शास्त्राभ्यासी, सत्य बोलने वाला और प्रतापी होता है ॥ ५४ ॥

मकरराशिगते चन्द्रे रविदृष्टिफलम्—

गतधनो मलिनश्चलनप्रियो हतमतिः खलु दुःखितमानसः ।
हिमकरे मकरे च दिवाकरेक्षिततनौ हि नरः प्रभवेद्यदि ॥ ५५ ॥

मकर राशि गत चन्द्रमा के ऊपर रवि की दृष्टि हो तो जातक निर्धन, मलिन, भ्रमणशील, निर्बुद्धि और दुखी होता है ॥ ५५ ॥

मकरराशिगते चन्द्रे भौमदृष्टिफलम्—

अतिप्रचण्डो धनवाहनाढ्यः प्राज्ञश्च दारात्मजसौख्ययुक्तः ।
स्यान्मानवो वैभवभाङ्नितान्तं मृगे मृगाङ्केऽवनिजेन दृष्टे ॥ ५६ ॥

मकर राशि गत चन्द्रमा के ऊपर मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक बड़ा प्रतापी, धन वाहनों से युक्त, पण्डित, स्त्री, पुत्र के द्वारा सुखी और विभव युक्त होता है ॥ ५६ ॥

मकरराशिगते चन्द्रे बुधदृष्टिफलम्—

बुद्ध्या हीनो निर्धनस्त्यक्तगेहो गेहिन्याद्यैरुज्झितः पूरुषः स्यात् ।
आर्कौ केरः स्थावरे शीतरश्मौ पीयूषांशोरात्मजेन प्रदृष्टे ॥ ५७ ॥

मकर राशि गत चन्द्र के ऊपर बुध को दृष्टि हो तो जातक बुद्धिहीन, निर्धन, गृह को त्यागने वाला और स्त्री पुत्र से रहित होता है ॥५७॥

मकरराशिगते चन्द्रे गुरुदृष्टिफलम्—

नृपात्मजः सत्ययुतो गुणज्ञः कलत्रपुत्रादियुतो नरः स्यात् ।

मृगानने जन्मनि यामिनीशे वाचामधीशेन निरीक्ष्यमाणे ॥ ५८ ॥

मकर राशि गत चन्द्र के ऊपर गुरु की दृष्टि हो तो जातक राजपुत्र, सत्य बोलने वाला, गुणज्ञ, और स्त्री पुत्रों से युक्त होता है ॥५८॥

मकरराशिगते चन्द्रे भृगुदृष्टिफलम्—

सुनयनो धनवाहनसंयुतः सुतविभूषणवस्त्रसुखी नरः ।
कुमुदिनीदयिते मृगसंस्थिते भृगुसुतेन जनो ननु वीक्षिते ॥ ५९ ॥

मकर राशि गत चन्द्र के ऊपर शुक्र की दृष्टि हो तो सुन्दर नेत्र वाला, धन वाहनों से युक्त और पुत्र, भूषण वस्त्र इन सबों से सुखी रहता है ॥ ५६ ॥

मकरराशिगते चन्द्रे शनिदृष्टिफलम्—

महालसो मन्दधनस्त्वसत्यो मलीमसः स्याद्व्यसनाभिभूतः ।
पीयूषमूर्तिर्यदि नक्रवर्त्ती त्रिमूर्तिपुत्रेण निरीक्ष्यमाणः ॥६०॥

मकर राशि में स्थित हो कर चन्द्रमा यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक बहुत आलसी, अल्प धन वाला, असत्य बोलने वाला, मलिन और व्यसनी होता है ॥ ६० ॥

कुम्भराशिगते चन्द्रे रविदृष्टिफलम्—

कृषीवलः कैतवसंयुतश्च नृपाश्रितो धर्मरतो नरः स्यात् ।
पीयूषमूर्तिर्यदि कुम्भगामी त्वम्भोजिनीस्वामिनिरीक्ष्यमाणः ॥६१॥

कुम्भ राशि गत चन्द्रमा के ऊपर रवि की दृष्टि हो तो जातक खेतीकरनेवाला, धूर्त, राजा का आश्रित और धर्म में रत रहता है ॥६ ॥

कुम्भराशिगते चन्द्रे भौमदृष्टिफलम्—

धनभवनजनित्रीतातविश्लेषयुक्तो
विषमतमपदार्थोत्पादकोऽनल्पजल्पः ।
भवति मलिनचित्तोत्यन्तधूर्तो हि मर्त्यः
शशिनि कलशयाते वीक्षिते भूसुतेन ॥ ६२ ॥

कुम्भ राशि गत चन्द्रमा के ऊपर मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक

धन, घर, माता, पिता इन से रहित, कठिन चीज को बनाने वाला, बहुत बोलने वाला, मलिन चित वाला और अति धूर्त होता है ॥६२॥

कुम्भराशिगते चन्द्रे बुधदृष्टिफलम्—

विषयसौख्यरतोऽशनसंविधारुचिरतीव शुचिः प्रियभाषणः ।
युवतिगीतसुनीतिकृतादरो घटगतेन्दुरिह ज्ञनिरीक्षितः ॥ ६३ ॥

कुम्भ राशि में स्थित हो कर चन्द्रमा यदि बुध से देखा जाता हो तो जातक विषय सुख में निरत, भोजन प्रिय, अतिपवित्र, प्रिय बोलने वाला, स्त्री, सङ्गीत और नीति में आदर रखने वाला होता है ॥६३॥

कुम्भराशिगते चन्द्रे गुरुदृष्टिफलम्—

महीपुरग्रामसुखादिसौख्यं भोगान्वितं साधुजनप्रवृत्तिम्।
कुर्यान्नरं श्रेष्ठतरं घटस्थो निशाकरः शक्रगुरुप्रदृष्टः ॥ ६४ ॥

कुम्भ राशि में स्थित हो कर चन्द्रमा यदि बृहस्पति से देखा जाता हो तो जातक पृथ्वी, शहर, गांव, सुख इन को भोगने वाला, भोगी, सज्जनों का प्रिय और प्रसिद्ध होता है ॥ ६४ ॥

कुम्भराशिगते चन्द्रे भृगुदृष्टिफलम्—

मित्रात्मजस्त्रीगृहसौख्यहीनो दीनो जनोत्सारितगौरवः स्यात् ।
निशाकरे कुम्भधरे प्रसूतौ संवीक्षिते दानवपूजितेन ॥ ६५ ॥

कुम्भ राशि में स्थित हो कर चन्द्रमा यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक मित्र, पुत्र, स्त्री, गृह इन सबों के सुख से हीन, दुखी और गौरव रहित होता है ॥ ६५ ॥

कुम्भराशिगते चन्द्रे शनिदृष्टिफलम्—

खरोष्ट्रबालाश्वनरादिलाभं कुस्त्रीरतं धर्मविरुद्धवृत्तिम् ।
करोति मर्त्यं हि घटेऽधितिष्ठन्निशाकरो भास्करसूनुदृष्टः ॥ ६६ ॥

कुम्भ राशि में स्थित हो कर चन्द्रमा यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक गधा, ऊँट, नया घोड़ा इन का लाभ करने वाला, नीच स्त्री में रत और धर्म का विरोधी होता है ॥ ६६ ॥

मीनराशिगते चन्द्रे रविदृष्टिफलम्—

मनोद्भवोत्कर्षमतीव सौख्यं सेनापतित्वं बहुवित्तवृद्धिम् ।
सत्कर्मसिद्धिं कुरुते हिमांशौ झषे दिनेशेन निरीक्ष्यमाणे ॥ ६७ ॥

मीन राशि में स्थित हो कर चन्द्रमा यदि रवि से देखा जाता हो तो जातक अति कामी, सेनापति, धन की वृद्धि और कार्यों को सिद्ध करने वाला होता है ॥ ६७ ॥

मीनराशिगते चन्द्रे भौमदृष्टिफलम्—

पराभिभूतं कुलटाधिसख्यं सौख्योज्झितं पापरतं नितान्तम् ।
करोति जातं हि निधिः कलानां मीनस्थितो भूमिसुतेन दृष्टः ॥६८॥

मीन राशि में स्थित हो कर चन्द्रमा यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक शत्रुओं से पराजित, कुलटा स्त्री से प्रेम करने वाला, दुखी और पापी होता है ॥ ६८ ॥

मीनराशिगते चन्द्रे बुधदृष्टिफलम्—

वराङ्गनासूनुसुखानि नूनं मानं धनं भूमिपतेः प्रसादम् ।
कुर्यान्नराणां हरिणाङ्क एष वैसारिणस्थो ज्ञनिरीक्ष्यमाणः ॥ ६९ ॥

मीन राशि में स्थित हो कर चन्द्रमा यदि बुध से देखा जाता हो तो जातक स्त्री पुत्रों से सुखी, मानी, राजा का कृपापात्र हो कर धनी होता है ॥ ६९ ॥

मीनराशिगते चन्द्रे गुरुदृष्टिफलम्—

उदारदेहं सुकुमारदेहं सद्गेहिनीसूनुधनादिसौख्यम् ।
नृपं विदध्यात्पृथुरोमगामी तमीपतिर्वाक्पतिवीक्षितश्चेत् ॥ ७० ॥

मीन राशि में स्थित हो कर चन्द्रमा यदि गुरु से देखा जाता हो तो जातक उदार और कुमार शरीर वाला, तथा सुन्दर स्त्री, पुत्र, धन आदि के सुख से युक्त होता है ॥ ७० ॥

मीनराशिगते चन्द्रे भृगुदृष्टिफलम्—

सद्गीतविद्यादिरतं सुवृत्तं विलासिनीकेलिविलासशीलम् ।

करोति मर्त्यं तिमिझुषराशौ शीतद्युतिर्जन्मनि शुक्रदृष्टः ॥ ७१ ॥

मीन राशि में स्थित हो कर चन्द्रमा यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक गीत आदि विद्या में निरत, सदाचारी और स्त्रियों के साथ विलास करने वाला होता है ॥ ७१ ॥

मीनराशिगते चन्द्रे शनिदृष्टिफलम्—

कामातुरं दारसुतैर्विहीनं नीचाङ्गनासख्यमविक्रमं च ।
नीहाररश्मिः शफरं प्रपन्नो नरं विदध्यादविसूनुदृष्टः ॥ ७२ ॥

मीन राशि में स्थित होकर चन्द्रमा यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक कामातुर, स्त्री पुत्र से हीन, नीच स्त्रियों से प्रेम करने वाला और निर्बल होता है ॥ ७२ ॥

अथ स्वभे भौमे रविदृष्टिफलम्—

प्राज्ञः सुवक्ता पितृमातृभक्तो धनी प्रधानोऽतितरामुदारः ।
नरो भवेदात्मगृहे महीजे सरोजिनीराजनिरीक्ष्यमाणे ॥ १ ॥

मेष या वृश्चिक में स्थित हो कर मङ्गल यदि रवि से देखा जाता हो तो जातक पण्डित, वक्ता, माता पिता का भक्त, धनी, प्रधान और उदार होता है ॥ १ ॥

स्वभे भौमे चन्द्रदृष्टिफलम्—

अन्याङ्गनासक्तमतीव शूरं कृपाविहीनं हतचौरवर्गम् ।
नरं प्रकुर्यान्निजधामगामी भूमीतनूजो द्विजराजदृष्टः ॥ २ ॥

मेष या वृश्चिक में स्थित हो कर मङ्गल यदिचन्द्रमासे देखा जाता हो तो जातक परस्त्री के साथ रमण करने वाला, शूर, निर्दयी और चोरों को नाश करने वाला होता है ॥ २ ॥

स्वभे भौमे बुधदृष्टिफलम्—

पण्याङ्गनालङ्करणैकवृत्तिर्विचक्षणोऽन्यद्रविणापहारी ।
भवेन्नरः स्वर्क्षगते प्रसूतौ क्षोणीसुते सोमसुतेन दृष्टे ॥ ३ ॥

मेष या वृश्चिक में स्थित हो कर मङ्गल यदि बुध से देखा

जाता हो तो जातक वेश्याओं के लिये अलङ्करण बनाने वाला, चतुर और दूसरे का धन हरण करने वाला होता है ॥ ३ ॥

स्वभे भौमे गुरुदृष्टिफलम्—

वंशेऽवनीशो धनवान्सकोपो नृपोपचारः कृतचौरसख्यः ।
आरे निजागारगते नरः स्यात्सूतौ सुराचार्यनिरीक्ष्यमाणे ॥ ४ ॥

मेष या वृश्चिक में स्थित हो कर मङ्गल यदि गुरु से देखा जाता हो तो जातक अपने कुल में प्रधान, धनवान्, क्रोधी, राजा के सदृश कार्य करने वाला और चोरों से मित्रता करने वाला होता है ॥ ४ ॥

स्वभे भौमे भृगुदृष्टिफलम्—

भूयो भूयो भोजनौत्सुक्ययुक्तः कान्ताहेतोर्यानचिन्ता नितान्तम् ।
प्राणी पुण्ये कर्मणि प्रीतिमान्स्यात्स्वर्क्षे भौमे भार्गवेण प्रदृष्टे ॥५॥

मेष या वृश्चिक में स्थित हो कर मङ्गल यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक बार २ भोजन की अभिलाषा रखने वाला, स्त्री के लिये सवारी की चिन्ता करने वाला और पुण्य कार्य में प्रेम रखने वाला होता है ॥ ५ ॥

स्वभे भौमे शनिदृष्टिफलम्—

मित्रोज्झितं मातृवियोगतप्तं कृशाङ्गयष्टिं विषमं कुटुम्बे ।
ईर्ष्याविशेषं पुरुषं विदध्यात्कुजः स्वभस्थोऽर्कसुतेन दृष्टः ॥ ६ ॥

मेष या वृश्चिक राशि में स्थित हो कर मङ्गल यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक मित्र से रहित, माता के वियोग से संतप्त, दुर्बल और कुटुम्ब के साथ द्वेष रखने वाला होता है ॥ ६ ॥

शुक्रगृहस्थे भौमे रविदृष्टिफलम्—

कान्तामनोवृत्तिविहीनमुच्चैर्वनाद्रिसंस्थानरुचिं विपक्षम् ।
प्रचण्डकोपं कुरुते मनुष्यं कुजः सितागारगतोऽर्कदृष्टः ॥ ७ ॥

वृष या तुला में स्थित हो कर मङ्गल यदि रवि से देखा जाता हो तो जातक काम रहित, वन पर्वत में रुचि रखने वाला, पक्ष रहित और अतिक्रोधी होता है ॥ ७ ॥

शुक्रगृहस्थे भौमे चन्द्रदृष्टिफलम्—

अम्बाविरुद्धः खलु युद्धभीरुर्बह्वङ्गनानामपि नायकश्च।
स्यान्मानवो भूतनये सितर्क्षे नक्षत्रनाथेन निरीक्ष्यमाणे॥ ८॥

वृष या तुला में स्थित हो कर मङ्गल यदि चन्द्र से देखा जाता हो तो जातक माता का विरोधी, युद्ध से डरने वाला और अनेक स्त्रियों का पति होता है॥ ८॥

शुक्रगृहस्थे भौमे बुधदृष्टिफलम्—

शास्त्रप्रवृत्तिः कलहप्रियः स्यादनल्पजल्पोऽल्पधनागमश्च।
सत्कायकांतिः पृथिवीतनूजे सितालयस्थे शशिजेन दृष्टे॥ ९॥

वृष या तुला में स्थित हो कर मङ्गल यदि बुध से देखा जाता हो तो जातक शास्त्राभ्यासी, कलहप्रिय, बहुत बोलने वाला, अल्प धन वाला और सुन्दर होता है॥ ९॥

शुक्रगृहस्थे भौमे गुरुदृष्टिफलम्—

बन्धुप्रिये स्यान्निरतोऽतिभाग्यः सङ्गीतिनृत्यादिविधिप्रवीणः।
क्षोणीतनूजे भृगुजर्क्षयाते निरीक्षिते वाक्पतिना प्रसूतौ॥ १०॥

वृष या तुला में स्थित हो कर मङ्गल यदि गुरु से देखा जाता हो तो जातक बन्धुओं का स्नेही, अति भाग्यवान्, नृत्य गीत आदि को जानने वाला होता है॥ १०॥

शुक्रगृहस्थे भौमे शुक्रदृष्टिफलम्—

सुश्लाघ्यनामा क्षितिपालमंत्री सेनापतिर्वा बहुसौख्ययुक्तः।
स्यान्मानवः शुक्रगृहोपयाते निरीक्षिते भूमिसुते सितेन॥ ११॥

वृष या तुला में स्थित हो कर मङ्गल यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक प्रशंसा के योग्य, राजा का मन्त्री या सेनापति और अनेक प्रकार के सुख से युक्त होता है॥ ११॥

शुक्रगृहस्थे भौमे शनिदृष्टिफलम्—

ख्यातो विनीतो धनवान्सुमित्रः पवित्रबुद्धिः कृतशास्त्रयत्नः।

नरः पुरग्रामपतिः सितर्क्षे भूनंदने भानुसुतेन दृष्टे ॥ १२ ॥

वृष या तुला में स्थित हो कर मङ्गल यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक प्रसिद्ध, नम्र, धनी, सुन्दर मित्र वाला, निर्मलबुद्धि, शास्त्राभ्यासी और शहर या गाँव का स्वामी होता है ॥ १२ ॥

बुधगृहे भौमे रविदृष्टिफलम्—

विद्याधनैश्वर्ययुतं ससत्त्वमरण्यदुर्गाचलकेलिशीलम् ।
कुर्यान्नरं सोमसुतालयस्थः क्षोणीसुतः सूर्यनिरीक्ष्यमाणः ॥ १३ ॥

मिथुन या कन्या राशि में स्थित हो कर मङ्गल यदि सूर्य से देखा जाता हो तो जातक विद्या, धन और अनेक तरह के धन से युक्त, बली, वन पर्वत में विहार करने वाला होता है ॥ १३ ॥

बुधगृहे भौमे चन्द्रदृष्टिफलम्—

संरक्षणे भूपतिना नियुक्तं कांतारतिं सत्त्वयुतं सतोषम् ।
भूमीसुतः संजनयेन्मनुष्यं बुधर्क्षसंस्थः शशिना प्रदृष्टः ॥ १४ ॥

मिथुन या कन्या राशि गत मङ्गल के ऊपर चन्द्र की दृष्टि हो तो जातक राजा के दरबार में रक्षक, स्त्री में रत, बली और संन्तोषी होता है ॥ १४ ॥

बुधगृहे भौमे बुधदृष्टिफलम्—

अनल्पजल्पं गणितप्रगल्भं काव्यप्रियं चानृतचारुवाक्यम् ।
दौत्ये प्रयासैः सहितं प्रकुर्याद्धरातनूजो ज्ञगृहे ज्ञदृष्टः ॥ १५ ॥

मिथुन या कन्या राशि में स्थित हो कर मङ्गल यदि बुध से देखा हो तो जातक अधिक बोलने वाला, गणित में कुशल, काव्य का प्रेमी, असत्य प्रिय बोलने वाला और दूतकर्म में कुशल होता है ॥ १५ ॥

बुधगृहे भौमे गुरुदृष्टिफलम्—

अन्यदेशगमनं व्यसनाद्यैः संयुतं हि कुरुते नरमुच्चैः ।
सोमसूनुभवनेऽवनिसूनुर्दानवारिसचिवेन च दृष्टः ॥ १६ ॥

मिथुन या कन्या में स्थित हो कर मङ्गल यदि गुरु से देखा जाता

हो तो जातक विदेश में गमन करने वाला, व्यसनी और उन्मत्त होता है ॥ १६ ॥

बुधगृहे भौमे शुक्रदृष्टिफलम्—

वस्त्रान्नपानीयसुखैः समेतं कान्ताप्रसक्तं सुतरां समृद्धम् ।
कुर्यान्नरो भूमिसुतो बुधर्क्षसंस्थः प्रदृष्टो भृगुनंदनेन ॥ १७ ॥

मिथुन या कन्या राशि में स्थित हो कर मङ्गल यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक वस्त्र, अन्न, पानी आदि के सुख से युक्त, स्त्री में रत और अति सम्पत्तिशाली होता है ॥ १७ ॥

बुधगृहे भौमे शनिदृष्टिफलम्—

अतीव शूरो मलिनोऽलसश्च दुर्गाचलारण्यविलासशीलः ।
भवेन्नरो भास्करपुत्रदृष्टे धरासुते सोमसुतालयस्थे ॥ १८ ॥

मिथुन या कन्या में स्थित हो कर मङ्गल यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक अत्यन्त शूर, मलिन, आलसी, वन और पर्वत के ऊपर विहार करने वाला होता है ॥ १८ ॥

कर्कस्थे भौमे रविदृष्टिफलम्—

पित्तप्रकोपार्तियुतोऽतिधीरो दण्डाधिकारी सुतरां महौजाः ।
भवेन्नरः कर्कगते महीजे निरीक्ष्यमाणे रविणा प्रसूतौ ॥ १९ ॥

कर्क राशि में स्थित मङ्गल के ऊपर रवि की दृष्टि हो तो जातक पित्त रोग से पीडित, अति धीर, दण्ड देने वाला और अति बली होता है ॥ १६ ॥

कर्कस्थे भौमे चन्द्रदृष्टिफलम्—

गदाभिभूतो गतवस्तुशोको विहीनवेषो गतसाधुवृत्तः ।
भवेन्नरः कर्कटगे महीजे सोमेन सूतौ च निरीक्ष्यमाणे ॥ २० ॥

कर्क राशि में स्थित मङ्गल के ऊपर चन्द्र की दृष्टि हो तो जातक रोगी, गत का शोच करने वाला, कुरूप और आचारहीन होता है ॥२०॥

कर्कस्थे भौमे बुधदृष्टिफलम्—

मित्रैर्विमुक्तोऽल्पकुटुम्बभारः पापप्रचारः खलचित्तवृत्तिः ।

बुधेन दृष्टे सति कर्कटस्थे भौमे नरः स्याद्व्यसनाभिभूतः ॥ २१ ॥

कर्क राशि गत मङ्गल के ऊपर बुध की दृष्टि हो तो जातक मित्रों से वियोग पाने वाला, कुटुम्बियों की थोड़ा देखभाल करने वाला, पाप का प्रचार करने वाला और दुष्ट होता है ॥ २१ ॥

कर्कस्थे भौमे गुरुदृष्टिफलम्—

नरेंद्रमंत्री गुणगौरवाढ्यो मान्यो वदान्यो मनुजः प्रसिद्धः ।
कुलीरसंस्थे तनये धरित्र्या निरीक्षिते चित्रशिखण्डिजेन ॥ २२ ॥

कर्क राशि गत मङ्गल यदि गुरु से देखा जाता हो तो जातक राजा का मन्त्री, गुण गौरवों से युक्त, माननीय, दाता और विख्यात होता है ॥ २२ ॥

कर्कस्थे भौमे भृगुदृष्टिफलम्—

अर्थक्षयो दुर्व्यसनेन नूनं निरन्तरानर्थसमुद्भवः स्यात् ।
भवेन्नराणां भृगुणा प्रदृष्टे त्वङ्गारके कर्कटराशिसंस्थे ॥ २३ ॥

कर्क राशि गत मङ्गल यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक बुरे व्यसन में धन नाश करने वाला और सदा अनर्थ करने वाला होता है २३

कर्कस्थे भौमे शनिदृष्टिफलम्—

कीलालधान्यादिधनः सुकान्तिर्महीपतिप्राप्तधनो मनुष्यः ।
महीसुते कर्कटराशिसंस्थे निरोक्षिते सूर्यसुतेन सूतौ ॥ २४ ॥

कर्क राशि गत मङ्गल यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक जल से उत्पन्न धन वाला, सुन्दर और राजा से धन प्राप्त करने वाला होता है ॥ २४ ॥

सिंहस्थे भौमे रविदृष्टिफलम्—

हितप्रकर्ताऽभिमतेषु नूनं द्विषज्जनानामहितप्रदाता ।
वनाद्रिकुञ्जेषु कृतप्रचारः सिंहे महीजे रविणा प्रदृष्टे ॥ २५ ॥

सिंह राशि गत मङ्गल पर रवि की दृष्टि हो तो जातक मित्रों का प्रिय और शत्रुओं का अप्रिय करने वाला होता है ॥ २५ ॥

सिंहस्थे भौमे चन्द्रदृष्टिफलम्—

अपुष्टमूर्तिः कठिनस्वभावश्चाम्बाविनीतो निपुणः स्वकार्ये।
तीव्रः पुमांश्चारुमतिः प्रसूतौ सिंहे महीजे द्विजराजदृष्टे ॥ २६ ॥

सिंह राशि में स्थित मङ्गल यदि चन्द्रमा से देखा जाता हो तो जातक पुष्ट शरीर वाला, कठिन प्रकृति वाला, माता का भक्त, अपने कार्य में कुशल, तीव्र और बुद्धिमान् होता है ॥ २६ ॥

सिंहस्थे भौमे बुधदृष्टिफलम्—

सत्काव्यशिल्पादिकलाकलापे विज्ञोऽपि लुब्धश्चलचित्तवृत्तिः।
स्वकार्यसिद्धौ निपुणो नरः स्यात्सिंहे महीजे शशिजेन दृष्टे ॥२७॥

सिंह राशि गत मङ्गल के ऊपर बुध की दृष्टि हो तो जातक सुन्दर काव्य तथा शिल्पकला में चतुर, लोभी, चञ्चल और कार्य को साधन करने वाला होता है ॥ २७ ॥

सिंहस्थे भौमे गुरुदृष्टिफलम्—

प्रशस्तबुद्धिर्नृपतेः सुहृच्च सेनाधिनाथोऽभिमतो बहूनाम्।
विद्याप्रवीणो हि नरः प्रसूतौ जीवेक्षिते सिंहगते महीजे ॥ २८ ॥

सिंह राशि में स्थित हो कर मङ्गल यदि गुरु से देखा जाता हो तो जातक उत्तम बुद्धि वाला, राजा का मित्र, सेनापति, बहुतों का स्नेही और अनेक विद्या को जानने वाला होता है ॥ २८ ॥

सिंहस्थे भौमे भृगुदृष्टिफलम्—

गर्वोन्नतोऽत्यन्यशरीरकान्तिर्नानाङ्गनाभोगयुतः समृद्धः।
भूमीसुते सिंहगते प्रसूतौ निरीक्षिते दैत्यपुरोहितेन ॥ २९ ॥

सिंह राशि में स्थित हो कर मङ्गल यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक महा गौरवी, अति सुन्दर, अनेक स्त्रियों के साथ रमण करने वाला और धनी होता है ॥ २९ ॥

सिंहस्थे भौमे शनिदृष्टिफलम्—

भवेन्निवासोऽन्यगृहेऽतिचिंता वृद्धाकृतित्वं ह्रतिणोज्झितत्वम्।

भवेन्नराणां धरणीतनूजे सिंहस्थिते भानुसुतेन दृष्टे ॥ ३० ॥

सिंह राशि में स्थित हो कर मङ्गल यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक दूसरे के गृह में रहने वाला, चिन्ता युक्त, वृद्ध की आकृति वाला और निर्धन होता है ॥ ३० ॥

गुरुभवनस्थे भौमे रविदृष्टिफलम्—

वनाद्रिदुर्गेषु कृताधिवासं क्रूरं सभाग्यं जनपूजितं च ।
करोति जातं धरणीतनूजो जीवर्क्षयातस्तरणिप्रदृष्टः ॥ ३१ ॥

धनु या मीन में स्थित हो कर मङ्गल यदि रवि से देखा जाता हो तो जातक वन, पर्वत और गुहा में निवास करने वाला, क्रूर, भाग्यशाली और माननीय होता है ॥ ३१ ॥

गुरुभवनस्थे भौमे चन्द्रदृष्टिफलम्—

विद्वद्विधिज्ञं नृपतेरसह्यं कलिप्रियं सर्वनिराकृतं च ।
प्राज्ञं प्रकुर्यान्मनुजं धराजो जीवर्क्षगः शीतकरप्रदृष्टः ॥ ३२ ॥

धनु या मीन में स्थित हो कर मङ्गल यदि चन्द्र से देखा जाता हो तो जातक पाण्डित्य को जानने वाला, राजा का अप्रिय, झगड़ालू, सब से अलग रहने वाला और चतुर होता है ॥ ३२ ॥

गुरुभवनस्थे भौमे बुधदृष्टिफलम्—

प्राज्ञं च शिल्पे निपुणं सुशीलं समस्तविद्याकुशलं विनीतम् ।
करोति जातं खलु लोहिताङ्गः सौम्येन दृष्टो गुरुगेहयातः ॥ ३३ ॥

धनु या मीन में स्थित हो कर मङ्गल यदि बुध से देखा जाता हो तो जातक, पण्डित, शिल्पकला में कुशल, सुशील, सब विद्याओं में कुशल और नम्र होता है ॥ ३३ ॥

गुरुभवनस्थे भौमे गुरुदृष्टिफलम्—

कांतातिचिंतासहितं नितांतमरातिवर्गैः कलहानुरक्तम् ।
स्थानच्युतं भूमिसुतः प्रकुर्य्याज्जीवेक्षितो जीवगृहाधिसंस्थः ॥ ३४ ॥

धनु या मीन में स्थित हो कर मङ्गल यदि गुरु से देखा जाता हो

तो जातक स्त्री के लिये अधिक चिन्ता करने वाला, शत्रुओं से झगड़ा करने वाला और अपने स्थान से च्युत होता है ॥ ३४ ॥

गुरुभवनस्थे भौमे भृगुदृष्टिफलम्—

उदारचेता विषयानुसक्तो विचित्रभूषापरिभूषितश्च ।
भाग्यान्वितः सत्पुरुषोऽवनीजे जीवर्क्षगे दानवपूज्यदृष्टे ॥ ३५ ॥

धनु या मीन में स्थित हो कर मङ्गल यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक उदार चित्त वाला, विषय में रत, नाना तरह के भूषणों से भूषित, भाग्यवान् और सज्जन होता है ॥ ३५ ॥

गुरुभवनस्थे भौमे शनिदृष्टिफलम्—

कायकान्तिरहितश्च नितान्तं स्थानसंचलरतोऽपि च दुःखी ।
अन्यकर्मनिरतश्च नरः स्याज्जीवधाम्नि कुसुतेर्कजदृष्टे ॥ ३६ ॥

धनु या मीन में स्थित हो कर मङ्गल यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक कान्तिहीन, अनेक स्थान में भ्रमण करने पर भी दुखी और दूसरों का कार्य करने वाला होता है ॥ ३६ ॥

शन्यागारगते भौमे रविदृष्टिफलम्—

कलत्रपुत्रार्थसुखैः समेतं श्यामं सुतीक्ष्णं सुतरां च शूरम् ।
कुर्यान्नरं भूतनयोऽर्कदृष्टश्चार्कात्मजागारगतः प्रसूतौ ॥ ३७ ॥

मकर या कुम्भ में स्थित हो कर मङ्गल यदि रवि से देखा जाता हो तो जातक स्त्री-पुत्र के सुख से युक्त, श्याम, तीक्ष्ण प्रकृति वाला और शूर होता है ॥ ३७ ॥

शन्यागारगते भौमे चन्द्रदृष्टिफलम्—

सद्भूषणं मातृसुखेन हीनं स्थानच्युतं चञ्चलसौहृदं च ।
उदारचित्तं प्रकरोति जातं कुजोऽर्कजर्क्षे शशिना प्रदृष्टः ॥ ३८ ॥

मकर या कुम्भ में स्थित हो कर मङ्गल यदि चन्द्रमा से देखा जाता हो तो जातक सुन्दर भूषण वाला, माता के सुख से हीन, स्थान रहित, चञ्चल मित्र वाला और उदार होता है ॥ ३८ ॥

शून्यागारगते भौमे बुधदृष्टिफलम्—

प्रियोक्तियुक्तोऽटनवित्तलब्धः सत्त्वान्वितः कैतवसंयुतश्च ।
अभीर्नरो मन्दगृहं प्रयाते पृथ्वीसुते चन्द्रसुतेन दृष्टे ॥ ३९ ॥

मकर या कुम्भ में स्थित हो कर मङ्गल यदि बुध से देखा जाता हो तो जातक प्रिय बोलने वाला, घूम कर द्रव्य संग्रह करने वाला, बलवान् , धूर्त और भय रहित होता है ॥ ३९ ॥

शून्यागारगते भौमे गुरुदृष्टिफलम्—

दीर्घायुषं भूपकृपागुणाढ्यं बंधुप्रियं चारुशरीरकांतिम् ।
कार्यप्रलापं जनयेन्मनुष्यं जीवेक्षितो मन्दगृहे महीजः ॥ ४० ॥

मकर या कुम्भ में स्थित हो कर मङ्गल यदि गुरु से देखा जाता हो तो जातक दीर्घजीवी, राजा का कृपापात्र, गुणों से युक्त, सुन्दर और समय पर बोलने वाला होता है ॥ ४० ॥

शून्यागारगते भौमे भृगुदृष्टिफलम्—

सद्भोगसौभाग्यसुखैः समेतः कांताप्रियोऽत्यंतकलिप्रियश्च ।
क्षोणीसुते मन्दगृहं प्रयाते निरीक्ष्यमाणे भृगुणा नरः स्यात् ॥४१॥

मकर या कुम्भ राशि में स्थित हो कर मङ्गल यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक सुन्दर भोग करने वाला, सुन्दर सुख से युक्त, स्त्री का प्रिय और कलह का अत्यन्त प्रेमी होता है ॥ ४१ ॥

शून्यागारगते भौमे शनिदृष्टिफलम्—

नृपात्तवित्तो वनिताविपक्षी बहुश्रुतोऽत्यन्तमतिः सकष्टः ।
रणप्रियः स्याद्धरणीतनूजे मंदेक्षिते मंदगृहं प्रयाते ॥ ४२ ॥

मकर या कुम्भ राशि में स्थित हो कर मङ्गल यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक राजा से धन लाभ करने वाला, स्त्री का शत्रु, बहुत जानने वाला, अत्यन्त बुद्धिमान् , दुखी और युद्धप्रिय होता है ॥

अथ भौमगेहे बुधे रविदृष्टिफलम्—

बंधुप्रियं सत्यवचोविलासं नृपालसद्गौरवसंयुतं च ।

करोति जातं क्षितिसूनुगेहे संस्थो बुधो भानुमता प्रदृष्टः ॥ १ ॥

मेष या वृश्चिक में स्थित हो कर बुध यदि रवि से देखा जाता हो तो जातक बन्धुओं का स्नेही, सत्य बोलने वाला, और राजा के द्वारा गौरव युक्त होता है ॥ १ ॥

भौमगृहे बुधे चंद्रदृष्टिफलम्—

सद्गीतनृत्यादिरुचः प्रकामं कांतारतिर्वाहनभृत्ययुक्तः।
कौटिल्यभाक्स्यान्मनुजः कुजर्क्षे सोमात्मजे शीतकरप्रदृष्टे ॥ २ ॥

मेष या वृश्चिक गत बुध पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक गीत, नृत्य में रुचि रखने वाला, स्त्रियों का प्रेमी, वाहन और नौरक से युक्त तथा कुटिल होता है ॥ २ ॥

भौमगृहे बुधे भौमदृष्टिफलम्—

भूपप्रियं भूरिधनं च शूरं कलाप्रवीणं कलहोद्यतं च।
क्षुधान्वितं सञ्जनयेन्मनुष्यं सौम्यः कुजर्क्षे कुसुतेन दृष्टः ॥ ३ ॥

मेष या वृश्चिक गत बुध पर मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक राजा का प्रिय, अत्यन्त धनी, शूर, कलाओं में चतुर, झगड़ालू और बहुत भोजन करने वाला होता है ॥ ३ ॥

भौमगेहे बुधे गुरुदृष्टिफलम्—

सुखोपपन्नं चतुरं सुवाक्यं कांतासुताद्यैः सहितं प्रसन्नम्।
करोति मर्त्यं कुजगेहगामी सोमात्मजो वाक्पतिना प्रदृष्टः ॥ ४ ॥

मेष या वृश्चिक राशि गत बुध पर गुरु की दृष्टि हो तो जातक सुखी, चतुर, सुन्दर बोलने वाला, स्त्री पुत्रों से युक्त और प्रसन्न होता है ॥ ४ ॥

भौमगेहे बुधे भृगुदृष्टिफलम्—

कांताविलासं गुणगौरवाढ्यं सुहृत्प्रियं चारुमतिं विनीतम्।
करोति जातं शशिजः कुजर्क्षे संस्थश्च शुक्रेण निरीक्ष्यमाणः ॥ ५ ॥

मेष या वृश्चिक राशि बुगत ध पर शुक्र की दृष्टि हो तो जातक

स्त्री के साथ विलास करने वाला, गुण गौरव से युक्त, मित्र का प्रिय, सुन्दर बुद्धि वाला और नम्र होता है ॥ ५ ॥

भौमगेहे बुधे शनिदृष्टिफलम्—

सुसाहसं चोग्रतरस्वभावं कुलोत्कलिमीतिमसाधुवृत्तिम् ।
करोति मर्त्यं हरिणाङ्कसूनुर्भौमर्क्षसंस्थः शनिना प्रदृष्टः ॥ ६ ॥

मेष या वृश्चिक में स्थित हो कर बुध यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक साहसी, उग्र स्वभाव वाला, अपने बन्धुओं के साथ कलह करने वाला और कुत्सित चरित्र वाला होता है ॥ ६ ॥

शुक्रगेहे बुधे रविदृष्टिफलम्—

दारिद्र्यदुःखामयतप्तदेहं परोपकारातिरतं नितांतम् ।
शांतं सुचित्तं पुरुषं प्रकुर्यात्सौम्यो भृगुक्षेत्रयुतोऽर्कदृष्टः ॥ ७ ॥

वृष या तुला में स्थित हो कर बुध यदि सूर्य से देखा जाता हो तो जातक दरिद्र, दुखी, रोगी, परोपकारी, शान्त और स्थिर होता है॥७॥

शुक्रर्क्षे बुधे चन्द्रदृष्टिफलम्—

बहुप्रपञ्चं धनधान्ययुक्तं दृढव्रतं भूमिपतिप्रधानम् ।
ख्यातं प्रकुर्यान्मनुजं हि सौम्यः शुक्रर्क्षसंस्थः शशिना प्रदृष्टः ॥८॥

वृष या तुला में स्थित हो कर बुध यदि चन्द्रमा से देखा जाता हो तो जातक अधिक प्रपञ्ची, धन धान्य से युक्त, दृढ, राजमन्त्री और प्रसिद्ध होता है ॥ ८ ॥

शुक्रर्क्षे बुधे भौमदृष्टिफलम्—

राजापमानादिगदप्रतप्तं त्यक्तं सुहृद्भिर्विषयैश्च नूनम् ।
कुर्यान्नरं सोमसुतः सितर्क्षे स्थितो धरापुत्रनिरीक्ष्यमाणः ॥ ९ ॥

वृष या तुला में स्थित हो कर बुध यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक राजा से अपमानित होकर रोगी, मित्र रहित और विषय वासना से रहित होता है ॥ ९ ॥

शुक्रर्क्षे बुधे गुरुदृष्टिफलम्—

देशोत्तमग्रामपुराधिराजं प्राज्ञं गुणाज्ञं गुणिनं सुशीलम् ।

कुर्य्यान्नरं चन्द्रसुतः सितर्क्षसंस्थः सुराचार्यनिरीक्ष्यमाणः ॥ १० ॥

वृष या तुला में स्थित हो कर बुध यदि गुरु से देखा जाता हो तो जातक देश, उत्तम ग्राम या शहर का अधिकारी, पण्डित, गुणों को जानने वाला, गुणी और सुशील होता है ॥ १० ॥

शुक्रर्क्षे बुधे भृगुदृष्टिफलम्—

अतिसुललितवेषं वस्त्रभूषाविशेषै-
र्युवतिजनमनोज्ञं मन्मथोत्कर्षहर्षम् ।
अतिचतुरमुदारं चारुभाग्यं च कुर्याद्
भृगुगृहगतसौम्यो भार्गवेण प्रदृष्टः ॥ ११ ॥

वृष या तुला में स्थित हो कर बुध यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक अति सुन्दर, वस्त्र भूषणों से युक्त, स्त्रियों का प्रिय, कामी, अति चतुर, उदार और भाग्यशाली होता है ॥ ११ ॥

शुक्रर्क्षे बुधे शनिदृष्टिफलम—

कलत्रमित्रात्मजयानपीडासंतप्तचित्तं सुखवित्तहीनम् ।
कुर्य्यान्नरं शत्रुजनाभिभूतं मंदेक्षितो ज्ञः सितधामगामी ॥ १२ ॥

वृष या तुला में स्थित हो कर बुध यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक स्त्री, पुत्र, मित्र, वाहन इन से पीड़ित, सुख और धन से रहित होता है ॥ १२ ॥

स्वक्षेत्रस्थे बुधे रविदृष्टिफलम्—

सत्योपेतं चारुलीलाविलासं भूमीपालात्प्राप्तमानोन्नतिं च ।
चञ्चत्क्षीणं चापि कुर्यान्मनुष्यं स्वक्षेत्रस्थश्चंद्रपुत्रोऽर्कदृष्टः ॥ १३ ॥

मिथुन या कन्या में स्थित हो कर बुध यदि रवि से देखा जाता हो तो जातक सत्य बोलने वाला, क्रीड़ा विलास करने वाला, राजा से आदर पाने वाला और कृश होता है ॥ १३ ॥

स्वक्षेत्रस्थे बुधे चन्द्रदृष्टिफलम्—

अनल्पजल्पोऽमृततुल्यभाषी कलिप्रियो राजसमीपवर्ती ।

भवेन्नरः सोमसुते स्वगेहे निरीक्ष्यमाणो मृगलाञ्छनेन ॥ १४ ॥

मिथुन या कन्या में स्थित हो कर बुध यदि चन्द्र से देखा जाता हो तो जातक बहुत बोलने वाला, अमृत के समान वचन बोलने वाला, कलह प्रिय और राजा के समीप में रहने वाला होता है ॥ १४ ॥

स्वक्षेत्रस्थे बुधे भौमदृष्टिफलम्—

प्रसन्नगात्रं कुटिलं कलाज्ञं नरेन्द्रकृत्ये सुतरां प्रवीणम् ।
जनप्रियं सञ्जनयेन्मनुष्यं भौमेक्षितो ज्ञः स्वगृहेऽधिसंस्थः ॥ १५ ॥

मिथुन या कन्या में स्थित हो कर बुध यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक प्रसन्न, कुटिल, कलाओं का ज्ञाता, राज कार्य में चतुर और जन प्रिय होता है ॥ १५ ॥

स्वक्षेत्रस्थे बुधे गुरुदृष्टिफलम्—

बह्वर्थसामर्थ्यविराजमानं सद्राजमानाप्तपदाधिकारम् ।
सुतं प्रकुर्यान्निजमंदिरस्थः सौम्यः प्रदृष्टः सुरपूजितेन ॥ १६ ॥

मिथुन या कन्या में स्थित हो कर बुध यदि गुरु से देखा जाता हो तो जातक अधिक धन बल से युक्त, राजा से आदर और अधिकार पाने वाला होता है ॥ १६ ॥

स्वक्षेत्रस्थे बुधे भृगुदृष्टिफलम्—

नरेंद्रदूतो विजितारिवर्गः संधिक्रियामार्गविधिप्रगल्भः ।
वाराङ्गनासक्तमनोभिलाषः शुक्रेक्षिते ज्ञे निजभे नरः स्यात् ॥ १७ ॥

मिथुन या कन्या में स्थित हो कर बुध यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक राजा का दूत, शत्रुओं को नाश करने वाला सन्धि कराने में कुशल और वेश्यागामी होता है ॥ १७ ॥

स्वक्षेत्रस्थे बुधे शनिदृष्टिफलम्—

प्रारब्धसिद्धिं विनयं विशेषात्सद्वस्त्रभूषादिसमृद्धिमुच्चैः ।
कुर्यान्नराणाममृतांशुजन्मा स्वमंदिरस्थो रविसूनुदृष्टः ॥ १८ ॥

मिथुन या कन्या में स्थित हो कर बुध यदि शनि से देखा जाता हो

तो जातक कार्य को आरम्भ कर अन्त करने वाला, विनयी, वस्त्र और भूषण से युक्त होता है ॥ १८ ॥

कर्कस्थे बुधे रविदृष्टिफलम्—

कांतानिमित्तास्महान्यलीको द्रव्यव्ययात्यन्तकृशांगयष्टिः ।
बहूपसर्गोऽपि भवेन्मनुष्यः कुलीरगे ज्ञे नलिनीशदृष्टे ॥ १९ ॥

कर्क राशि में स्थित हो कर बुध यदि सूर्य से देखा जाता हो तो जातक स्त्री के हेतु अनादृत, द्रव्य के व्यय होने से दुर्बल और अनेक उत्पात से युक्त होता है ॥ १६ ॥

कर्कस्थे बुधे चन्द्रदृष्टिफलम्—

वस्त्रादिशुद्धौ मणिसंग्रहे च गृहादिनिर्माणविधौ प्रवीणः ।
प्रसूनमालाग्रथनेऽपि मर्त्यः कुलीरगे ज्ञे शशिना प्रदृष्टे ॥ २० ॥

कर्क राशि में स्थित हो कर बुध यदि चन्द्रमा से देखा जाता हो तो जातक वस्त्रों को साफ करने में, मणियों के संग्रह करने में, गृह आदि बनाने में और माला गूँथने में चतुर होता है ॥ २० ॥

कर्कस्थे बुधे भौमदृष्टिफलम्—

स्वल्पश्रुतं चार्थरतं च शूरं प्रियंवदं कूटविधौ प्रवीणम् ।
कुर्यान्नरं शीतकरस्य सूनुः कुलीरसंस्थोऽवनिसूनुदृष्टः ॥ २१ ॥

कर्क में स्थित हो कर बुध यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक थोड़े सुन कर ज्यादा जानने वाला, शूर, प्रिय बोलने वाला और कूट नीति में चतुर होता है ॥ २१ ॥

कर्कस्थे बुधे गुरुदृष्टिफलम्—

प्राज्ञो विधिज्ञो विधिनातिशाली सद्वाग्विलासोऽवनिपालमान्यः ।
स्यान्मानवो जन्मनि सोमसूनौ कुलीरगामिन्यमरेज्यदृष्टे ॥ २२ ॥

कर्क राशि में स्थित हो कर बुध यदि गुरु से देखा जाता हो तो जातक पण्डित, कार्यों को जानने वाला, भाग्यवान्, सुन्दर बोलने वाला और राजा का माननीय होता है ॥ २२ ॥

कर्कस्थे बुधे भृगुदृष्टिफलम्—

प्रियंवदश्चारुशरीरभाक् च सङ्गीतवाद्यादिविधौ प्रवीणः ।
स्यान्मानवो दानववंद्यदृष्टे कर्काटकस्थेऽमृतभानुसूनौ ॥ २३ ॥

कर्क राशि में स्थित हो कर बुध यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक प्रिय बोलने वाला, सुन्दर, सङ्गीत और वाद्य आदि बजाने में कुशल होता है ॥ २३ ॥

कर्कस्थे बुधे शनिदृष्टिफलम्—

गुणैर्विहीनं स्वजनैर्वियुक्तमलीकदम्भानुरतं कृतघ्नम् ।
करोति मर्त्यं परिसूतिकाले कुलीरगो ज्ञो रविसूनुदृष्टः ॥ २४ ॥

कर्क राशि में स्थित हो कर बुध यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक गुणहीन, अपने बन्धुओं से त्यक्त, मिथ्या में रत, गौरवी और उपकार को नहीं मानने वाला होता है ॥ २४ ॥

सिंहस्थे बुधे रविदृष्टिफलम्—

कृपाविहीनं च चलस्वभावं सेर्ष्यं च हिंसाभिरतं च रौद्रम् ।
क्षुद्रं प्रकुर्यान्मनुजं प्रसूतौ बुधोऽर्कदृष्टो मृगराजसंस्थः ॥ २५ ॥

सिंह राशि में स्थित बुध के ऊपर रवि की दृष्टि हो तो जतक निर्दयी, चञ्चल, ईर्ष्या करने वाला, हिंसक, भयानक और क्षुद्र होता है ॥ २५ ॥

सिंहस्थे बुधे चन्द्रदृष्टिफलम्—

रूपान्वितं चारुमतिं विनीतं सङ्गीतनृत्याभिरतं नितांतम् ।
सद्वृत्तवृत्तं कुरुते हि मर्त्यं चंद्रेक्षितः सिंहगतो बुधाख्यः ॥ २६ ॥

सिंह राशि में स्थित हो कर बुध यदि चन्द्रमा से देखा जाता हो तो जातक सुन्दर, सुन्दर बुद्धि वाला, नम्र, सङ्गीत और नृत्य में रत तथा सदाचारी होता है ॥ २६ ॥

सिंहस्थे बुधे भौमदृष्टिफलम्—

कन्दर्पसत्त्वोज्झितमुक्तवृत्तं क्षताङ्कितं हीनमतिं विचित्रम् ।

सुदुःखितं संजनयेत्पुमांसं भौमेक्षितः सिंहगतश्च सौम्यः ॥ २७ ॥

सिंह राशि में स्थित हो कर बुध यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक काम रहित, चरित्र हीन, क्षत शरीर वाला, बुद्धि रहित और दुखी होता है ॥ २७ ॥

सिंहस्थे बुधे गुरुदृष्टिफलम्—

कोमलामलरुचिः कुलवर्यश्चारुलोचनयुतश्च समर्थः ।
वाहनोत्तमधनो मनुजः स्यादिन्दुजे हरिगते गुरुदृष्टे ॥ २८ ॥

सिंह राशि में स्थित हो कर बुध यदि गुरु से देखा जाता हो तो जातक कोमल और निर्मल कान्ति वाला, कुल में प्रधान, सुन्दर नेत्र वाला, समर्थ, वाहन और उत्तम धन से युक्त होता है ॥ २८ ॥

सिंहस्थे बुधे भृगुदृष्टिफलम्—

सद्रूपशाली प्रियवाग्विलासो नृपाश्रितो वाहनवित्तयुक्तः ।
भवेन्नरः सोमसुते प्रसूतौ सिंहस्थिते दानववन्द्यदृष्टे ॥ २९ ॥

सिंह राशि में स्थित हो कर बुध यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक सुन्दर रूप वाला, प्रिय बोलने वाला, राजा का आश्रित और वाहन धन से युक्त होता है ॥ २९ ॥

सिंहस्थे बुधे शनिदृष्टिफलम्—

स्वेदोद्गमोद्भूतमहोग्रगंधं विस्तीर्णगात्रं च कुरूपमुग्रम् ।
सुखेन हीनं मनुजं प्रकुर्यान्मंदेक्षितः सिंहगतो यदि ज्ञः ॥ ३० ॥

सिंह राशि में स्थित हो कर बुध यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक पसीने के दुर्गन्धों से युक्त, विशाल देह वाला, कुरूप, उग्र और सुख रहित होता है ॥ ३० ॥

गुरुभवनस्थे बुधे रविदृष्टिफलम्—

शूलाश्मरीमेहनिपीडिताङ्गो सङ्गोज्झितः शांतिमुपागतश्च ।
स्यात्पूरुषो गीष्पतिवेश्मसंस्थे निशीथिनीस्वामिसुतेऽर्कदृष्टे ॥ ३१ ॥

धनु या मीन राशि में स्थित हो कर बुध यदि सूर्य से देखा जाता

हो तो जातक शूल, मृगी और प्रमेह से पीड़ित, सत्सङ्ग से रहित, और शान्त होता है ॥ ३१ ॥

गुरुभवनस्थे बुधे चन्द्रदृष्टिफलम्—

लेखक्रियायां सुतरां प्रवीणः सुसंगतः साधुसुहृज्जनानाम् ।
नरः सुखी शीतमयूखपुत्रे चन्द्रेक्षिते जीवगृहं प्रयाते ॥ ३२ ॥

धनु या मीन में स्थित हो कर बुध यदि चन्द्रमा से देखा जाता हो तो जातक, लेख करने में कुशल, सज्जन और मित्रों से सङ्गति करने वाला और सुखी होता है ॥ ३२ ॥

गुरुभवनस्थे बुधे भौमदृष्टिफलम्—

परम्पराचोरवनस्थितानां स्युर्लेखका धान्यधनैर्विहीनाः ।
नरास्तु नीहारकरप्रसूतौ जीवालये मंगलदृष्टदेहे ॥ ३३ ॥

धनु या मीन में स्थित हो कर बुध यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक कुल परम्परा से चोर, बन में रहने वाला, लेखक और धन धान्य से रहित होता है ॥ ३३ ॥

गुरुभवनस्थे बुधे गुरुदृष्टिफलम्—

विज्ञातशाली स्वकुलावतंसो नृपालकोशालयलेखकर्ता ।
भर्ता बहूनां मनुजस्तु सौम्ये जीवेक्षिते जीवगृहं प्रयाते ॥ ३४ ॥

धनु या मीन में स्थित हो कर बुध यदि गुरु से देखा जाता हो तो जातक विज्ञान को जानने वाला, अपने कुल में मुख्य, खजाञ्ची और अनेकों का पालन करने वाला होता है ॥ ३४ ॥

गुरुभवनस्थे बुधे शुक्रदृष्टिफलम्—

भूपामात्यापत्यलेखाधिकारं चौर्यासक्तं सौकुमार्येण युक्तम् ।
द्रव्योपेतं मानवं सोमसूनुर्जीवर्क्षस्थः शुक्रदृष्टः करोति ॥ ३५ ॥

धनु या मीन में स्थित हो कर बुध यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक राजा का मन्त्री, लेख के अधिकार को पाने वाला, चोरों में आसक्त, सुकुमार और धनी होता है ॥ ३५ ॥

गुरुभवनस्थे बुधे शनिदृष्टिफलम्—

बह्वन्नभोक्ता मलिनः कुवृत्तः कांतारदुर्गाचलवासशीलः।
कार्योपयुक्तो न भवेन्मनुष्यो जीवर्क्षगो ज्ञोऽर्कसुतेन दृष्टः॥ ३६॥

धनु या मीन में स्थित हो कर बुध यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक बहुत अन्न खाने वाला, मलिन. दुराचारी, दुर्ग और पर्वत में रहने वाला तथा काम के लायक नहीं होता है॥ ३६॥

शन्यालयगे बुधे रविदृष्टिफलम्—

प्रारब्धकार्याकलितप्रतापं सन्मल्लविद्याकुशलं कुशीलम्।
कुटुम्बिनं संजनयेन्मनुष्यं बुधः शनिक्षेत्रगतोर्कदृष्टः॥ ३७॥

मकर या कुम्भ राशि में स्थित हो कर बुध यदि सूर्य से देखा जाता हो तो जातक अपने प्रारब्ध से प्रतापी, युद्ध में कुशल, दुष्ट स्वभाव वाला और अधिक कुटुम्बों से युक्त होता है॥ ३७॥

शन्यालयगते बुधे चन्द्रदृष्टिफलम्—

जलोपजीवी धनवांश्च भीरुः प्रसूनकन्दोद्यमतत्परश्च।
पुमान्भवेद्भानुसुतालयस्थे बुधे सुधारश्मिनिरीक्ष्यमाणे॥ ३८॥

मकर या कुम्भ में स्थित हो कर बुध यदि चन्द्रमा से देखा जाता हो तो जातक जल से जीविका करने वाला धनवान्, डरपोक और पुष्प कन्दों का संग्रह करने वाला होता है॥ ३८॥

शन्यालयगते बुधे भौमदृष्टिफलम्—

व्रीडालसस्तब्धतरस्वभावः सौम्यः सुखी वाक्चपलोऽर्थयुक्तः।
स्यान्मानवो भानुसुतर्क्षसंस्थे दृष्टेऽब्जसूनौ क्षितिनन्दनेन॥ ३९॥

मकर या कुम्भ राशि में स्थित हो कर बुध यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक लज्जा और आलस से स्तब्ध स्वभाव वाला, सुन्दर, सुखी, बोलने में चञ्चल, और धनी होता है॥ ३९॥

शन्यालयगे बुधे गुरुदृष्टिफलम्—

धान्यवाहनधनान्वितः सुखी ग्रामपत्तनपतिर्महामतिः।

भानुसूनुभवनेऽब्जनंदने देवदेवसचिवेक्षिते नरः ॥ ४० ॥

मकर या कुम्भ राशि में स्थित होकर बुध यदि गुरु से देखा जाता हो तो जातक धन धान्य वाहनों से युक्त, गाँव और शहर का अधिपति और अति बुद्धिमान् होता है ॥ ४० ॥

शन्यालयगे बुधे भृगुदृष्टिफलम्—

बहुप्रजासंजनकं कुरूपं प्रज्ञोज्झितं नीचजनानुयातम् ।
कामाधिकं संजनयेन्मनुष्यं शुक्रेक्षितो ज्ञः शनिगेहसंस्थः ॥ ४१ ॥

मकर या कुम्भ राशि में स्थित हो कर बुध यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक अधिक सन्तति वाला, कुरूप, अज्ञानी, नीच जनों का सङ्ग करने वाला और कामी होता है ॥ ४१ ॥

शन्यालयगे बुधे शनिदृष्टिफलम्—

सुखोज्झितं पापरतं च दीनमकिंचनं हीनजनानुयातम् ।
करोति मर्त्यः शनिधामसंस्थः सौम्यस्तमोहंतृसुतेन दृष्टः ॥ ४२ ॥

मकर या कुम्भ राशि में स्थित हो कर बुध यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक सुख रहित, पापी, दरिद्र, दीन, अकिञ्चन और नीचों के सङ्गति करने वाला होता है ॥ ४२ ॥

अथ भौमर्क्षगे गुरौ रविदृष्टिफलम् —

असत्यभीरुर्बहुधर्मकर्त्ता ख्यातश्च सद्भाग्ययुतो विनीतः ।
भवेन्नरो देवगुरौ प्रयाते भौमस्य गेहे रविदृष्टदेहे ॥ १ ॥

मेष या वृश्चिक राशि में स्थित हो कर गुरु यदि सूर्य से देखा जाता हो तो जातक मिथ्या से डरने वाला, अनेक धर्म कार्य करने वाला, प्रसिद्ध, भाग्यवान्, और नम्र होता है ॥ १ ॥

भौमर्क्षगे गुरौ चन्द्रदृष्टिफलम्—

ख्यातो विनीतो वनितानुयातः सतां मतो धर्मरतः प्रशांतः ।
जातो भवेद्भूमिसुतर्क्षयाते वाचां पतौ शीतकरेण दृष्टे ॥ २ ॥

मेष या वृश्चिक राशि में स्थित हो कर गुरु यदि चन्द्रमा से देखा जाता हो तो जातक विख्यात, नम्र, स्त्री के वश में रहने वाला, सज्जनों का प्रेमी, धर्म में रत और शान्त होता है ॥ २ ॥

भौमर्क्षगे गुरौ भौमदृष्टिफलम्—

क्रूरोऽतिधूर्तः परगर्वहर्त्ता नृपाश्रयाज्जीवनवृत्तिकर्ता।
भर्त्ता बहूनां ननु मानवः स्याज्जीवे कुजर्क्षे च कुजेन दृष्टे ॥ ३ ॥

मेष या वृश्चिक राशि गत गुरु के ऊपर मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक क्रूर, अति धूर्त, शत्रुओं के गौरव नाश करने वाला, राजा के आश्रय में रह कर जीविका चलाने वाला और बहुतों का पालन करने वाला होता है ॥ ३ ॥

भौमर्क्षगे गुरौ बुधदृष्टिफलम्—

सद्वृत्तसत्योत्तमवाग्विहीनश्छिद्रप्रतीक्षी प्रणयानुयातः।
मर्त्यो भवेत्कैतवसंप्रयुक्तो वाचस्पतौ भौमगृहे ज्ञदृष्टे ॥ ४ ॥

मेष या वृश्चिक राशि में स्थित हो कर गुरु यदि बुध से देखा जाता हो तो जातक श्रेष्ठ आचार, सत्य और प्रिय वचन से हीन, दूसरे का छिद्र खोजने वाला, नम्रता से वश में आने वाला और धूर्त होता है ॥ ४ ॥

भौमर्क्षगे गुरौ भृगुदृष्टिफलम्—

गन्धमाल्यशयनासनभूषायोषिदम्बरनिकेतनसौख्यम्।
संप्रयच्छति नृणां भृगुणा चेद्वीक्षितः सुरगुरुः कुजभस्थः ॥ ५ ॥

मेष या वृश्चिक राशि में स्थित हो कर गुरु यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक सुगन्धि, माला, शय्या, आसन, भूषण स्त्री, वस्त्र, और गृह के सुख से युक्त होता है ॥ ५ ॥

भौमर्क्षगे गुरौ शनिदृष्टिफलम्—

लुब्धं रौद्रं साहसैः संयुतं च मित्रापत्योद्भूतसौख्योज्झितञ्च।
कुर्यान्मंत्रे निष्ठुरं देवमन्त्री धात्रीपुत्रक्षेत्रगो मन्ददृष्टः ॥ ६ ॥

मेष या वृश्चिक राशि में स्थित हो कर गुरु यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक लोभी, दुष्ट, साहसी, मित्र और सन्तान के सुख से हीन और निष्ठुर विचार करने वाला होता है ॥ ६ ॥

शुक्रर्क्षे गुरौ रविदृष्टिफलम्—

सङ्ग्रामविजयं क्षतगात्रं सामयं च बहुवाहनभृत्यम् ।
मन्त्रिणं हि कुरुते सुरमन्त्री दैत्यमन्त्रिगृहगो रविदृष्टः ॥ ७ ॥

वृष या तुल में स्थित हो कर गुरु यदि सूर्य से देखा जाता हो तो जातक युद्ध में विजय पाने वाला, क्षत शरीर वाला, रोगी, बहुत वाहन और नौकरों से युक्त तथा राजमन्त्री होता है ॥ ७ ॥

शुक्रर्क्षे गुरौ चंद्रदृष्टिफलम्—

सत्येन युक्तं सततं विनीतं परोपकाराभिरतं सुचित्तम् ।
सद्भाग्यभाज कुरुते मनुष्यं जीवः सितर्क्षेऽमृतरश्मिदृष्टः ॥ ८ ॥

वृष या तुला राशि में स्थित हो कर गुरु यदि चन्द्रमा से देखा जाता हो तो जातक सत्य बोलने वाला, सदा नम्र, परोपकारी, स्थिर हृदय वाला और भाग्यवान् होता है ॥ ८ ॥

शुक्रर्क्षे गुरौ भौमदृष्टिफलम्—

भाग्योपपन्नं सुतसौख्यभाजं प्रियंवदं भूपतिलब्धमानम् ।
नरं सदाचारपरं करोति भौमेक्षितेज्यो भृगुजालयस्थः ॥ ९ ॥

वृष या तुला राशि में स्थित हो कर गुरु यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक भाग्यवान्, पुत्र सौख्य पाने वाला, प्रिय बोलने वाला, राजा से आदर पाने वाला और सदाचारी होता है ॥ ९ ॥

शुक्रर्क्षे गुरौ बुधदृष्टिफलम्—

सन्मन्त्रविद्यानिरतं नितान्तं भाग्यान्वितं भूपतिलब्धवित्तम् ।
चंचत्कलाज्ञं पुरुषं प्रकुर्याद्गुरुर्भृगुक्षेत्रगतो ज्ञदृष्टः ॥ १० ॥

वृष या तुला में स्थित हो कर गुरु यदि बुध से देखा जाता हो तो जातक मन्त्र विद्या में निरत, अति भाग्यशाली, राजा से धन पाने वाला और कलाओं को जानने वाला होता है ॥ १० ॥

शुक्रर्क्षे गुरौ भृगुदृष्टिफलम्—

धनान्वितं चारुविभूषणाढ्यं सद्वृत्तचित्तं विभवैः समेतम्।
करोति मर्त्यं सुरराजमन्त्री शुक्रालयस्थो भृगुसूनुदृष्टः॥ ११॥

वृष या तुला में स्थित हो कर गुरु यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक धनी सुन्दर विभूषणों से युक्त, सदाचारी और अनेक विभवों से युक्त होता है॥ ११॥

शुक्रर्क्षे गुरौ शनिदृष्टिफलम्—

सत्पुत्रदारादिसुखैरुपेतं प्राज्ञं पुरग्रामभवोत्सवाढ्यम्।
नरं प्रकुर्याच्चतुरं सुरेज्यो दैत्येज्यभस्थोऽर्कसुतेन दृष्टः॥ १२॥

वृष या तुला राशि में स्थित हो कर गुरु यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक सुन्दर पुत्र और स्त्रियों के सुख से युक्त, पण्डित, शहरू और ग्रामीण उत्सवों से युक्त तथा चतुर होता है॥ १२॥

बुधर्क्षे गुरौ रविदृष्टिफलम्—

सत्पुत्रदारं धनमित्रसौख्यं श्रेष्ठप्रतिष्ठाप्तविराजमानम्।
नरं प्रकुर्य्यात्सुरराजमन्त्री रविप्रदृष्टो बुधवेश्मसंस्थः॥ १३॥

मिथुन या कन्या राशि में स्थित हो कर गुरु यदि रवि से देखा जाता हो तो जातक सुन्दर पुत्र और स्त्री से युक्त, धन और मित्र के सुख से युक्त तथा उत्तम प्रतिष्ठा पाकर शोभित होता है॥ १३॥

बुधर्क्षे गुरौ चन्द्रदृष्टिफलम्—

गुणान्वितं ग्रामपुरोपकारं विराजमानं बहुगौरवेण।
कुर्य्यान्नरं देवगुरुर्बुधर्क्षसंस्थो निशानाथनिरीक्ष्यमाणः॥ १४॥

मिथुन या कन्या में स्थित हो कर गुरु यदि चन्द्रमा से देखा जाता हो तो जातक गुणी, गाँव और शहर में रहने वालों का उपकारी और अधिक गौरव से युक्त होता है॥ १४॥

बुधर्क्षे गुरौ भौमदृष्टिफलम्—

संग्रामसम्प्राप्तजयं क्षताङ्गं धनेन सारेण समन्वितं च।
करोति जातं विबुधेन्द्रमन्त्री बुधालयस्थः क्षितिसूनुदृष्टः॥ १५॥

मिथुन या कन्या में स्थित हो कर गुरु यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक संग्राम में विजय पाने वाला, व्रणाङ्कित शरीर वाला, धनी और बली होता है ॥ १५ ॥

"बुधर्क्षे गुरौ बुधदृष्टिफलम्—

सन्मित्रदारात्मजवित्तसौख्यो दक्षो भवेज्ज्योतिषशिल्पवेत्ता ।

स्याच्चारुभाषी पुरुषः प्रकामं जीवे बुधर्क्षे च बुधेन दृष्टः ॥ १६ ॥

मिथुन या कन्या में स्थित हो कर गुरु यदि बुध से देखा जाता हो तो जातक सुन्दर मित्र, स्त्री, पुत्र, धन इन से सुखी, चतुर, ज्यौतिष और शिल्प विद्या को जानने वाला होता है ॥ १६ ॥

बुधर्क्षे गुरौ भृगुदृष्टिफलम्—

धनाङ्गनासूनुसुखैरुपेतः प्रासादवापीकृपिकर्मचित्तः ।

भवेत्प्रसन्नः पुरुषः सुरेज्ये दैत्येज्यदृष्टे बुधवेश्मसंस्थे ॥ १७ ॥

मिथुन या कन्या में स्थित हो कर गुरु यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक धन, स्त्री, पुत्र इन के सुख से सुखी, कोठा बनवाने वाला, जलाशय निर्माण करवाने वाला, खेती करने वाला और प्रसन्न होता है ॥ १७ ॥

बुधर्क्षे गुरौ शनिदृष्टिफलम्—

नरेंद्रसद्गौरवसंप्रयुक्तं नित्योत्सवं पूर्णगुणाभिरामम् ।

नरं पुरग्रामपतिं करोति गुरुर्ज्ञगेहे शनिना प्रदृष्टः ॥ १८ ॥

मिथुन या कन्या में स्थित हो कर गुरु यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक राजा से गौरव पाने वाला, नित्य उत्सव कराने वाला, गुणी और शहर गाँव का अधिपति होता है ॥ १८ ॥

कुलीरस्थे गुरौ रविदृष्टिफलम्—

दारात्मजार्थोद्भवसौख्यहानिं पूर्वं च पश्चात्खलु तत्सुखानि ।

कुर्य्यान्नराणां हि गुरुः सुराणां कुलीरसंस्थो रविणा प्रदृष्टः ॥१९॥

कर्क राशि में स्थित हो कर गुरु यदि सूर्य से देखा जाता हो तो जातक पहले स्त्री, पुत्र, धन इन के सुख से हीन, पश्चात् इन के सुख से युक्त होता है ॥ १९ ॥

कुलीरस्थे गुरौ चन्द्रदृष्टिफलम्—

नरेन्द्रकोशाधिकृतं सुकांतं सद्वाहनार्थादिसुखोपपन्नम्।
सद्वृत्तचित्तं जनयेन्मनुष्यं कर्कस्थितेज्यो शशिना हि दृष्टः ॥२०॥

कर्क राशि में स्थित हो कर गुरु यदि चन्द्रमा से देखा जाता हो तो जातक राजा का खजानची, सुन्दर, सुन्दर वाहन, धन आदि के सुख से युक्त और सदाचारी होता है ॥ २० ॥

कुलीरस्थे गुरौ भौमदृष्टिफलम्—

कुमारदाराम्बरचारुभूषाविशेषभाजं गुणिनं च शूरम्।
प्राज्ञं क्षताङ्गं कुरुते मनुष्यं कर्कस्थितेज्योऽवनिजेन दृष्टः ॥२१॥

कर्क राशि में स्थित हो कर गुरु यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक पुत्र, स्त्री. वस्त्र, विभूषण इनका सुख पाने वाला, गुणी, शूर, पण्डित और व्रणाङ्कित शरीर वाला होता है ॥ २१ ॥

कुलीरस्थे गुरौ बुधदृष्टिफलम्—

मित्राश्रयोत्पादितसर्वसिद्धिः सद्वृत्तिबुद्धिर्विलसत्प्रतापः।
मंत्री नरः कर्कटराशिसंस्थे गीर्वाणवन्द्ये शशिसूनुदृष्टे ॥२२॥

कर्क राशि में स्थित हो कर गुरु यदि बुध से देखा जाता हो तो जातक मित्रों के द्वारा कार्य सिद्ध करने वाला, सदाचारी, बुद्धिमान्, प्रतापी और मन्त्री होता है ॥ २२ ॥

कुलीरस्थे गुरौ भृगुदृष्टिफलम्—

बह्वङ्गनावैभवमात्मजादिनानासुखानामुपलब्धयः स्युः।
कुलीरयाते वचसामधीशे निरीक्षिते दैत्यपुरोहितेन ॥ २३ ॥

कर्क राशि में स्थित हो कर बृहस्पति यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक बहुत स्त्रियों से युक्त, पुत्र आदि के द्वारा अनेक तरह के सुख पाने वाला होता है ॥ २३ ॥

कुलीरस्थे गुरौ शनिदृष्टिफलम्—

सन्मानभूषागुणचारुशीलः सेनापुरग्रामपतिर्नरः स्यात्।

अनल्पजल्पः खलु कर्कटस्थे वाचस्पतौ सूर्यसुतेन दृष्टे ॥२४॥

कर्क राशि में स्थित हो कर गुरु यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक मानी, भूषणों से युक्त, गुणी, सुन्दर स्वभाव वाला, सेना, पुर ग्राम का स्वामी तथा अधिक बोलने वाला होता है ॥ २४ ॥

सिंहस्थे गुरौ रविदृष्टिफलम्—

व्ययान्वितं ख्यातमतीव धूर्तं नृपाप्तवित्तं शुभकर्मचित्तम् ।
नरं प्रकुर्यात्सुरराजपूज्यः सूर्येण दृष्टो मृगराजसंस्थः ॥२५॥

सिंह राशि में स्थित हो कर गुरु यदि सूर्य से देखा जाता हो तो जातक अधिक खर्च करने वाला, प्रसिद्ध, धूर्त, राजा से धन लाभ करने वाला और उत्तम कार्य करने वाला होता है ॥ २५ ॥

सिंहस्थे गुरौ चन्द्रदृष्टिफलम्—

प्रसन्नमूर्तिं गतचित्तशुद्धिं स्त्रीहेतुसंप्राप्तधनं वदान्यम् ।
कुर्यात्पुमांसं वचसामधीशः शशांकदृष्टः करिवैरिसंस्थः ॥ २६ ॥

सिंह राशि में स्थित हो कर गुरु यदि चन्द्रमा से देखा जाता हो तो जातक प्रसन्न मुख वाला, अपवित्र चित्त वाला, स्त्री के कारण धन प्राप्त करने वाला और दानी होता है ॥ २६ ॥

सिंहस्थे गुरौ भौमदृष्टिफलम्—

मान्यो गुरूणां गुणगौरवेण सत्कर्मनिर्माणविधौ प्रवीणः ।
प्राणी भवेत्केसरिणि स्थितेऽस्मिन्गीर्वाणवंद्येऽवनिजेन दृष्टे ॥२७॥

सिंह राशि में स्थित हो कर गुरु यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक गुरुजनों के मध्य में भी अपने गुण-गौरव से माननीय और उत्तम कार्य करने में कुशल होता है ॥ २७ ॥

सिंहस्थे गुरौ बुधदृष्टिफलम्—

गृहादिनिर्माणविधौ प्रवीणो गुणाग्रणीः स्यात्सचिवो नृपाणाम् ।
वाणीविलासे चतुरो नरः स्यात्सिंहस्थिते देवगुरौ ज्ञदृष्टे ॥२८॥

सिंह राशि में स्थित हो कर गुरु यदि बुध से देखा जाता हो तो

जातक घर बनाने में कुशल, गुणियों में श्रेष्ठ, राजमन्त्री और चतुर होता है ॥ २८ ॥

सिंहस्थे गुरौ भृगुदृष्टिफलम्—

भूमीपतिप्राप्तमहापदस्थः कान्ताजनप्रीतिकरो गुणज्ञः ।
भवेन्नरो देवगुरौ हरिस्थे निरीक्षिते चासुरपूजितेन ॥ २९ ॥

सिंह राशि में स्थित हो कर गुरु यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक राजा से उच्च पद पाने वाला, स्त्री को प्रसन्न करने वाला और गुणज्ञ होता है ॥ २९ ॥

सिंहस्थे गुरौ शनिदृष्टिफलम्—

सुखेन हीनं मलिनं सुवाचं कृशाङ्गयष्टिं विगतोत्सवं च ।
करोति मर्त्यं मरुताममात्यः सिंहस्थितः सूर्यसुतेन दृष्टः ॥ ३० ॥

सिंह राशि में स्थित हो कर गुरु यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक दुखी, मलिन, सुन्दर बोलने वाला, दुर्बल और उत्सवरहित होता है ॥ ३० ॥

स्वगेहस्थे गुरौ रविदृष्टिफलम्—

राज्ञा विरुद्धत्वमतीव नूनं सुहृज्जनेनापि च वैमनस्यम् ।
शत्रूद्गमः स्यान्नियतं नराणां जीवेऽर्कदृष्टे स्वगृहं प्रयाते ॥ ३१ ॥

धनु या मीन राशि में स्थित हो कर गुरु यदि सूर्य से देखा जाता हो तो जातक राजा का अति विरोधी, मित्रों के साथ वैमनस्य रखने वाला और अनेक शत्रुओं से युक्त होता है ॥ ३१ ॥

स्वगेहस्थे गुरौ चन्द्रदृष्टिफलम्—

सुगर्वितं भाग्यधनाभिवृद्ध्या प्रियाप्रियत्वाभिमतं विशेषात् ।
करोति जातं सुखिनं विनीतं चन्द्रेक्षितो देवगुरुः स्वभस्थः ॥ ३२ ॥

धनु या मीन राशि में स्थित हो कर गुरु यदि चन्द्र से देखा जाता हो तो जातक भाग्य और धन के वृद्धि से गौरव युक्त, विशेष कर स्त्री से प्रेम करने वाला, सुखी और नम्र होता है ॥ ३२ ॥

स्वगेहस्थगुरौ भौमदृष्टिफलम्—

व्रणाङ्कितं सङ्गरकर्मदक्षं हिंसापरं क्रूरतरस्वभावम् ।
परोपकाराभिरतं प्रकुर्याद् गुरुः स्वभस्थः क्षितिजेन दृष्टः ॥ ३३ ॥

धनु या मीन राशि में स्थित हो कर गुरु यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक व्रण से अङ्कित शरीर वाला, युद्ध में कुशल, हिंसक, अति क्रूर स्वभाव वाला और परोपकारी होता है ॥ ३३ ॥

स्वगेहस्थे गुरौ बुधदृष्टिफलम्—

नृपाश्रयप्राप्तमहाधिकारो दाराधनैश्वर्यसुखोपपन्नः ।
परोपकारादरतैकचित्तो नरो गुरौ स्वर्क्षगते ज्ञदृष्टे ॥ ३४ ॥

धनु या मीन राशि में स्थित हो कर गुरु यदि बुध से देखा जाता हो तो जातक राजा के आश्रय से उच्च पद पाने वाला, स्त्री, धन और ऐश्वर्य से युक्त तथा परोपकारी होता है ॥ ३४ ॥

स्वगेहस्थे गुरौ भृगुदृष्टिफलम्—

सुखोपपन्नं सधनं प्रसन्नं प्राज्ञं सदैश्वर्यविराजमानम् ।
नूनं प्रकुर्यान्मनुजं सुरेज्यो दैत्येज्यदृष्टो निजमन्दिरस्थः ॥ ३५ ॥

धनु या मीन राशि में स्थित हो कर गुरु यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक सुख से युक्त, धनी, प्रसन्न, पण्डित और सदा ऐश्वर्य से युक्त होता है ॥ ३५ ॥

स्वगेहस्थे गुरौ शनिदृष्टिफलम्—

पदच्युतं सौख्यसुतैर्विहीनं संग्रामसंजातपराभव च ।
करोति दीनं स्वगृहे सुरेज्यः सूर्यात्मजेन प्रविलोक्यमानः ॥ ३६ ॥

धनु या मीन राशि में स्थित हो कर गुरु यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक अपने पद से हीन, सुख और पुत्र से हीन, संग्राम में पराजित तथा दीन होता है ॥ ३६ ॥

शनिक्षेत्रगते गुरौ रविदृष्टिफलम्—

प्रसन्नकान्तिं शुभवाग्विलासं परोपकारादरतासमेतम् ।
कुले नृपालं कुरुते सुरेज्यो मंदालयस्थो यदि भानुदृष्टः ॥ ३७ ॥

मकर या कुम्भ राशि में स्थित हो कर गुरु यदि रवि से देखा जाता हो तो जातक प्रसन्न कान्ति वाला, सुन्दर बोलने वाला, परोपकारी, आदरणीय और कुल में श्रेष्ठ होता है ॥ ३७ ॥

शनिक्षेत्रगते गुरौ चन्द्रदृष्टिफलम्—

कुलोद्वहस्तीव्रमतिः सुशीलो धर्मक्रियायां सुतरामुदारः।
नरोऽभिमानी पितृमातृभक्तो जीवे शनिक्षेत्रगतेन्दुदृष्टे ॥ ३८ ॥

मकर या कुम्भ राशि में स्थित हो कर गुरु यदि चन्द्रमा से देखा जाता हो तो जातक अपने कुल जन का पालन करने वाला, तीव्र बुद्धि, सुशील, धर्म कार्य करने वाला, अभिमानी और माता पिता का भक्त होता है ॥ ३८ ॥

शनिक्षेत्रगते गुरौ भौमदृष्टिफलम्—

स्यादर्थसिद्धिर्नृपतेः प्रसादात्कीर्तिः सुखानामुपलब्धिरेव।
सूतौ सुरेज्ये शनिमन्दिरस्थे निरीक्ष्यमाणे धरणीसुतेन ॥ ३९ ॥

मकर या कुम्भ राशि में स्थित हो कर गुरु यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक राजा की प्रसन्नता से प्रयोजन सिद्ध करने वाला, यशस्वी और सुखों की प्राप्ति करने वाला होता है ॥ ३९ ॥

शनिक्षेत्रगते गुरौ बुधदृष्टिफलम्—

शान्तं नितान्तं वनितानुकूलं धर्मक्रियार्थे निरतं नितान्तम्।
करोति मर्त्यं मरुतां पुरोधा बुधेन दृष्टः शनिमन्दिरस्थः ॥ ४० ॥

मकर या कुम्भ राशि में स्थित हो कर बृहस्पति यदि बुध से देखा जाता हो तो जातक शान्त, स्त्री के वश में रहने वाला, और धर्मकार्य में निरत होता है ॥ ४० ॥

शनिक्षेत्रगते गुरौ भृगुदृष्टिफलम्—

विद्याविवेकार्थगुणैः समेतः पृथ्वीपतिप्राप्तमनोभिलाषः।
स्यात्पूरुषः सूर्यसुतर्क्षसंस्थे जीवे प्रसूतौ भृगुजेन दृष्टे ॥ ४१ ॥

मकर या कुम्भ राशि में स्थित हो कर गुरु यदि शुक्र से देखा

जाता हो तो जातक विद्या, विवेक, धन और गुण से युक्त तथा राजा से अपनी अभिलाषा पूरा करने वाला होता है ॥ ४१ ॥

शनिक्षेत्रगते गुरौ शनिदृष्टिफलम्—

काम सकामं सुगुणाभिरामं सद्मार्थप्राप्तिं धनधान्ययुक्तम् ।
ख्यातं विनीतं कुरुते मनुष्यं मन्देक्षितो मन्दगृहस्थजीवः ॥ ४२ ॥

मकर या कुम्भ में स्थित हो कर गुरु यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक कामी, सुन्दर गुणों से युक्त, गृह, धन, धान्य से युक्त, प्रसिद्ध और नम्र होता है ॥ ४२ ॥

भौमर्क्षगते शुक्रे रविदृष्टिफलम्—

कृपाविशेषं नृपतेर्नितान्तमतीव जायाजनितव्यलीकम् ।
कुर्यान्नराणां तरणिप्रदृष्टः शुक्रो हि वक्रस्य गृहं प्रयातः ॥ १ ॥

मेष या वृश्चिक राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि रवि से देखा जाता हो तो जातक राजा का कृपापात्र, स्त्रीजनित व्यवहार को मिथ्या समझने वाला होता है ॥ १ ॥

भौमर्क्षगते शुक्रे चन्द्रदृष्टिफलम्—

श्रेष्ठप्रतिष्ठं चलचित्तवृत्तिं कामातुरत्वाद्विकृतिं प्रयातम् ।
करोति मर्त्यं कुजगेहयातो भृगोः सुतः शीतकरेण दृष्टः ॥ २ ॥

मेष या वृश्चिक राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि चन्द्र से देखा जाता हो तो जातक उत्तम प्रतिष्ठा पाने वाला, चञ्चल और कामी होता है ॥ २ ॥

अथ भौमर्क्षगते शुक्रे भौमदृष्टिफलम्—

धनेन मानेन सुखेन हीनं दीनं विशेषान्मलिनं करोति ।
नूनं धरित्रीतनयालयस्थः शुक्रो धरित्रीतनयेन दृष्टः ॥ ३ ॥

मेष या वृश्चिक राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक धन, धान्य, सुखों से हीन, दीन और मलिन होता है ॥ ३ ॥

कुजर्क्षगते शुक्रे बुधदृष्टिफलम्—

अनार्यमर्थात्मजनैर्विहीनं स्वबुद्धिसामर्थ्यपराङ्मुखं च।
क्रूरं परार्थापहरं नरं हि करोति शुक्रः कुजभे ज्ञदृष्टः॥ ४॥

मेष या वृश्चिक राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि बुध से देखा जाता हो तो जातक दुष्ट, धन-पुत्रों से हीन, क्रूर और दूसरे के धन को हरण करने वाला होता है॥ ४॥

भौमर्क्षगते शुक्रे गुरुदृष्टिफलम्—

कलत्रपुत्रादिसुखैः समेतं सत्कायकान्ति सुतरां विनीतम्।
उदारचित्तं प्रकरोति मर्त्यं जीवेक्षितो दैत्यगुरुः कुजर्क्षे॥ ५॥

मेष या वृश्चिक राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि गुरु से देखा जाता हो तो जातक स्त्री, पुत्र आदि के सुख से युक्त, सुन्दर शरीर वाला, नम्र और उदार होता है॥ ५॥

भौमर्क्षगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम्—

सुगुप्तवित्ताभिमतं प्रशान्तं मान्यं वदान्यं स्वजनानुयातम्।
करोति जातं क्षितिपुत्रगेहे संस्थः सितो भानुसुतेन दृष्टः॥ ६॥

मेष या वृश्चिक राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक धन को गुप्त रखने वाला, शान्त, माननीय, दाता और बन्धुओं को मानने वाला होता है॥ ६॥

स्वगेहगते शुक्रे रविदृष्टिफलम्—

वराङ्गनाभ्यो धनवाहनेभ्यः सुखानि नूनं लभते मनुष्यः।
प्रसूतिकाले निजवेश्मयाते सिते पतङ्गेन निरीक्ष्यमाणे॥ ७॥

वृष या तुला राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि रवि से देखा जाता हो तो मनुष्य श्रेष्ठ स्त्री, धन, वाहन से सुख भोगने वाला होता है॥७॥

स्वगेहगते शुक्रे चन्द्रदृष्टिफलम्—

विलासिनीकेलिविलाससक्तः कुलाधिपालोऽमलबुद्धिशाली।
नरः सुशीलः शुभवाग्विलासः स्त्रीयालयस्थास्फुजितीन्दुदृष्टे॥ ८॥

वृष या तुला में स्थित हो कर शुक्र यदि चन्द्र से देखा जाता हो तो जातक स्त्रियों के साथ क्रीडा करने वाला, अपने कुल में प्रधान, निर्मल बुद्धि वाला, सुशील और प्रिय बोलने वाला होता है ॥ ८ ॥

स्वगेहगते शुक्रे भौमदृष्टिफलम्—

गृहादिसौख्योपहतं नितान्तं कलिप्रसङ्गाभिभवोपलब्धिम् ।
कुर्य्यान्नराणां दनुजेन्द्रमन्त्री स्वक्षेत्रसंस्थः क्षितिपुत्रदृष्टः ॥ ९ ॥

वृष या तुला राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक घर के सुख से हीन और कलह करने से पराभव पाने वाला होता है ॥ ९ ॥

स्वक्षेत्रगते शुक्रे बुधदृष्टिफलम्—

गुणाभिरामं सुभग प्रकामं सौम्यं सुसत्त्वं धृतिसंयुतं च ।
स्वक्षेत्रगो दैत्यगुरुः प्रकुर्य्यान्नरं तुषारांशुसुतेन दृष्टः ॥ १० ॥

वृष या तुला राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि बुध से देखा जाता हो तो जातक गुणी, सुन्दर, बली और धैर्य से सयुक्त होता है ॥ १० ॥

स्वक्षेत्रगते शुक्रे गुरुदृष्टिफलम्—

सद्वाहनानां गृहिणीगणानां सुमित्रपुत्रद्रविणादिकानाम् ।
करोति लब्धिं निजवेश्मयातः सितः सुराचार्यनिरीक्षितश्चेत् ॥ ११ ॥

वृष या तुला में स्थित हो कर शुक्र यदि गुरु से देखा जाता हो तो जातक सुन्दर वाहन, स्त्रीगण, सुन्दर मित्र, पुत्र, धन आदि की प्राप्ति करने वाला होता है ॥ ११ ॥

स्वक्षेत्रगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम्—

गदाभिभूतो हतसाधुवृत्तः सौख्यार्थहीनो मनुजोऽतिदीनः ।
भवेत्प्रसूतौ निजवेश्म याते भृगोः सुते भानुसुतेन दृष्टे ॥ १२ ॥

वृष या तुला राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक रोगी, सदाचार रहित, सुख तथा धन से रहित और दरिद्र होता है ॥ १२ ॥

बुधवेश्मगते शुक्रे रविदृष्टिफलम्—

नृपावरोधाधिकृतं विनीतं गुणान्वितं शास्त्रकृतप्रवेशम् ।
कुर्यान्नरं दैत्यगुरुः प्रसूतौ सौम्यर्क्षसंस्थो रविणा प्रदृष्टः ॥१३॥

मिथुन या कन्या राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि सूर्य से देखा जाता हो तो जातक राजान्तःपुर का अधिकारी, नम्र, गुणी और शास्त्रों में प्रवेश करने वाला होता है ॥ १३ ॥

बुधवेश्मगते शुक्रे चन्द्रदृष्टिफलम्—

सदन्नवस्त्रादिसुखोपपन्नं नीलोत्पलश्यामलचारुनेत्रम् ।
सुकेशपाशं मनुजं प्रकुर्यात्सौम्यर्क्षसंस्थो भृगुरिन्दुदृष्टः ॥ १४ ॥

मिथुन या कन्या राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि चन्द्रमा से दृष्ट हो तो जातक श्रेष्ठ अन्न वस्त्र आदि के सुख से युक्त, सुन्दर नेत्र और काले केश वाला होता है ॥ १४ ॥

बुधवेश्मगते शुक्रे भौमदृष्टिफलम्—

भाग्यान्वितः कामविधिप्रवीणः कान्तानिमित्तं द्रविणव्ययः स्यात् ।
कुर्यान्नराणामुशनाः प्रकामं बुधर्क्षसंस्थः कुसुतेन दृष्टः ॥ १५ ॥

मिथुन या कन्या राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक भाग्यशाली, कामी, स्त्री के हेतु व्यर्थ खर्च करने वाला होता है ॥१५ ॥

बुधवेश्मगते शुक्रे बुधदृष्टिफलम्—

प्राज्ञं महावाहनवित्तवृद्धिं सेनापतित्वं परिवारसौख्यम् ।
कुर्यान्नराणामुशनाः प्रवीणं बुधर्क्षसंस्थश्च बुधेन दृष्टः ॥ १६ ॥

मिथुन या कन्या राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि बुध से देखा जाता हो तो जातक पण्डित, धन वाहनों को अधिक वृद्धि करने वाला, सेनापति और परिवारों से सुखी होता है ॥ १६ ॥

बुधवेश्मगते शुक्रे गुरुदृष्टिफलम्—

सद्बुद्धिवृद्धिर्बहुवैभवाढ्यः प्रसन्नचेताः सुतरां विनीतः ।

मर्त्यो भवेत्सौम्यगृहोपयाते दृष्टे सिते देवपुरोहितेन ॥ १७ ॥

मिथुन या कन्या राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि गुरु से देखा जाता हो तो जातक श्रेष्ठ बुद्धि वाला, अति विभव से युक्त, प्रसन्न और अति नम्र होता है ॥ १७ ॥

बुधवेश्मगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम्—

पराभिभूतं चपलं विविक्तं सुदुःखितं सर्वजनोज्झितं च ।
मर्त्यं करोत्येव भृगोस्तनूजः सोमात्मजर्क्षे रविजेन दृष्टः ॥ १८ ॥

मिथुन या कन्या राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक शत्रुओं से पराजित, चञ्चल, अकेला, दुखी और सब से पृथक् रहने वाला होता है ॥ १८ ॥

कर्कराशिगते शुक्रे रविदृष्टिफलम्—

सरोषयोषाकृतहर्षनाशः स्यात्पूरुषः शत्रुजनाभिभूतः ।
दैत्यार्चिते कर्कटराशियाते निरीक्षितेऽहर्पतिना प्रसूतौ ॥ १९ ॥

कर्क राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि सूर्य से देखा जाता हो तो जातक क्रोधी, स्त्री के सम्बन्ध से दुखी और शत्रुओं से पीड़ित होता है ॥ १९ ॥

कर्कराशिगते शुक्रे चन्द्रदृष्टिफलम्—

कन्याप्रजापूर्वकपुत्रलाभमम्बां सपत्नीं बहुगौरवाणि ।
कुर्यान्नराणां हरिणाङ्कदृष्टः कुलीरगो भार्गवनामधेयः ॥ २० ॥

कर्क राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि चन्द्र से देखा जाता हो तो जातक को पहले कन्या और पीछे पुत्र होता है। और माता, विमाता दोनों का भक्त होता है ॥ २० ॥

कर्कराशिगते शुक्रे कुजदृष्टिफलम्—

कलासु दक्षो हतशत्रुपक्षो बुध्या च सौख्येन युतो मनुष्यः ।
परंतु कान्ताकृतचिन्तयार्तो भौमेक्षिते कर्कटगे सिते स्यात् ॥ २१ ॥

कर्क राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो

जातक कलाओं में चतुर, शत्रुओं का नाश करने वाला, बुद्धिमान्, सुखी होता है, किन्तु स्त्री सम्बन्धी चिन्ता से पीड़ित रहता है ॥२१॥

कर्कराशिगते शुक्रे बुधदृष्टिफलम्—

विद्याप्रवीणं गुणिनं गुणज्ञं कलत्रपुत्रोद्भवदुःखतप्तम् ।
जनोज्झितं चापि करोति मर्त्यं काव्यः कुलीरोपगतो ज्ञदृष्टः ॥२२॥

कर्क राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि बुध से देखा जाता हो तो जातक विद्या में प्रवीण, गुणी, गुणज्ञ, स्त्री पुत्र से दुखी और अपने जनों से त्यक्त होता है ॥ २२ ॥

कर्कराशिगते शुक्रे गुरुदृष्टिफलम्—

अतिचतुरमुदारं चारुवृत्तिं विनीत-
मतिविभवसमेतं कामिनीसूनुसौख्यम् ।
प्रियवचनविलासं मानुषं संविधत्ते
सुरपतिगुरुदृष्टो भार्गवः कर्कटस्थः ॥ २३ ॥

कर्क राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि गुरु से देखा जाता हो तो जातक चतुर, उदार, सुन्दर आचरण वाला, नम्र, महाधन, स्त्री पुत्र से सुखी और प्रिय बोलने वाला होता है ॥ २३ ॥

कर्कराशिगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम्—

सद्वृत्तसौख्योपहृतं गतार्थं व्यर्थप्रयत्नं वनिताजितं च ।
स्थानच्युतं संजनयेन्मनुष्यं मन्देक्षितः कर्कगतः सिताख्यः ॥२४॥

कर्क राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक आचार रहित, दुखी, निर्धन, व्यर्थ प्रयत्न करने वाला, स्त्री के वश में रहने वाला और स्थान रहित होता है ॥ २४ ॥

सिंहराशिगते शुक्रे रविदृष्टिफलम्—

स्पर्द्धातिसंवर्द्धितचित्तवृत्तिः कान्ताश्रयोत्पन्नधनो मनुष्यः ।
क्रमेलकाद्यैर्यदि वा युतःस्यादर्केक्षिते सिंहगते सिताख्ये ॥ २५ ॥

सिंह राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि सूर्य से देखा जाता हो

वो जातक दूसरे के साथ स्पर्धा से मनो वृत्ति को बढाने वाला, स्त्री के आश्रय से धन लाभ करने वाला और ऊँट आदि वाहन से युक्त होता है ॥ २५ ॥

सिंहराशिगते शुक्रे चन्द्रदृष्टिफलम्—

नूनं जनन्याश्च भवेत्सपत्नी पत्नीविरोधो विभवोद्भवश्च ।
यस्य प्रसूतौ दनुजेन्द्रमन्त्री चन्द्रेक्षितः सिंहगतो यदि स्यात् ॥२६॥

सिंह राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि चन्द्रमा से देखा जाता हो तो जातक दो माता वाला, स्त्री से विरोध रखने वाला, और विभव से युक्त होता है ॥ ॥ २६ ॥

सिंहराशिगते शुक्रे भौमदृष्टिफलम्—

नृपप्रियं धान्यधनैरुपेतं कन्दर्पजातव्यसनाभिभूतम् ।
करोति मर्त्यं मृगराजसंस्थो भृगोस्तनूजोऽवनिजेन दृष्टः ॥ २७ ॥

सिंह राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक राजा का प्रिय, धन धान्य से युक्त और काम सम्बन्धी व्यसन में निरत होता है ॥ २७ ॥

सिंहराशिगते शुक्रे बुधदृष्टिफलम्—

धनान्वितं संग्रहचित्तवृत्तिं लुब्धं स्मराधिक्यविकारनिन्द्यम् ।
दैत्येन्द्रमन्त्री कुरुते मनुष्यं सिंहस्थितः सोमसुतेन दृष्टः ॥ २८ ॥

सिंह राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि बुध से देखा जाता हो तो जातक धन से युक्त, संग्रही, लोभी और काम के आधिक्य होने के कारण निन्दनीय होता है ॥ २८ ॥

सिंहराशिगते शुक्रे गुरुदृष्टिफलम—

नरेंद्रमंत्री धनवाहनाढयो वहङ्गनानंदनभृत्यसौख्यः ।
विख्यातकर्मा च भृगोस्तनूजे जीवेक्षिते सिंहगते नरः स्यात् ॥२९॥

सिंह राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि गुरु से देखा जाता हो तो जातक राजा का मन्त्री, धन वाहनों से युक्त, स्त्री, पुत्र नौकरों के सुख से युक्त और विख्यात यश वाला होता है ॥ २९ ॥

सिंहराशिगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम्—

नृपोपमं सर्वसमृद्धिभाजं दण्डाधिकारेऽप्यथ वा नियुक्तम् ।
करोति मर्त्यं मृगराजवर्ती दैत्यार्चितः सूर्यसुतेन दृष्टः ॥ ३० ॥

सिंह राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक राजा के समान, सब सम्पत्ति से युक्त या न्यायाधीश होता है ॥ ३० ॥

गुरुगेहगते शुक्रे रविदृष्टिफलम्—

रौद्रं प्राज्ञं भाग्यसौभाग्यभाजं सत्त्वोपेतं वित्तवन्तं विशेषात् ।
नानादेशभ्रामयान मनुष्यं कुर्य्याच्छुक्रो जीवभे भानुदृष्टः ॥ ३१ ॥

धनु या मीन राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि सूर्य से देखा जाता हो तो जातक क्रूर, पण्डित, भाग्यशाली, बली, धनवान् और अनेक देशों में भ्रमण करने वाला होता है ॥ ३१ ॥

गुरुगेहगते शुक्रे चन्द्रदृष्टिफलम्—

सद्राजमानेन विराजमानं ख्यातं विनीतं बहुभोगयुक्तम् ।
धीरं ससारं हि नरं करोति भृगुर्गुरुक्षेत्रगतोऽब्जदृष्टः ॥३२॥

धनु या मीन राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि चन्द्रमा से देखा जाता हो तो जातक उत्तम राजा के आदर से युक्त, प्रसिद्ध, नम्र, बहुत भोगी, धीर और बली होता है ॥ ३२ ॥

गुरुगेहगते शुक्रे भौमदृष्टिफलम्—

द्विषामसह्यं धनिनं प्रसन्नं कान्ताकृतप्रेमभरं सुपुण्यम् ।
सद्वाहनाढ्यं कुरुते मनुष्यं भौमेक्षितेज्यालयगामिशुक्रः॥ ३३ ॥

धनु या मीन राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक शत्रुओं का नाश करने वाला, धनी, प्रसन्न, स्त्री का प्रेमी, पुण्यात्मा और वाहनों से युक्त होता है ॥ ३३ ॥

गुरुगेहगते शुक्रे बुधदृष्टिफलम्—

सद्वाहनार्थाम्बरभूषणानां लाभं सदन्नानि सुखानि नूनम् ।

कुर्यान्नराणां गुरुमन्दिरस्थो दैत्यार्चितः सोमसुतेन दृष्टः ॥३४॥

धनु या मीन राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि बुध से देखा जाता हो तो जातक सुन्दर वाहन, धन, वस्त्र, भूषण इन का लाभ करने वाला और उत्तम अन्न के सुख से युक्त होता है ॥ ३४ ॥

गुरुगेहगते शुक्रे गुरुदृष्टिफलम्—

तुरंगहेमाम्बरभूषणानां महागजानां वनितासुखानाम् ।
करोत्यवाप्तिं भृगुजः प्रसूतौ जीवेक्षितो जीवगृहाश्रितश्च ॥ ३५॥

धनु या मीन राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि गुरु से देखा जाता हो तो जातक घोड़ा, सुवर्ण, वस्त्र, भूषण, हाथी और स्त्री इन के सुख की प्राप्ति करने वाला होता है ॥ ३५ ॥

गुरुगेहगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम्—

सद्भोगसौख्योत्तमकर्मभाजं नित्योत्सवोत्कर्षयुतं सुवित्तम् ।
करोति मर्त्यं गुरुगेहयातो दैत्यार्चितो भानुसुतेक्षितश्च ॥ ३६ ॥

धनु या मीन राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक उत्तम चीज़ों का भोग करने वाला, उत्तम कार्य करने वाला, नित्य उत्सव कार्य करने वाला और उत्तम धन से युक्त होता है ॥ ३६ ॥

शनिक्षेत्रगते शुक्रे रविदृष्टिफलम्—

स्थिरस्वभावं विभवोपपन्नं महाधनं सारविराजमानम् ।
कान्ताविलासैः सहितं प्रकुर्याद्भृगुः शनिक्षेत्रगतोऽर्कदृष्टः ॥३७ ॥

मकर या कुम्भ राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि सूर्य से देखा जाता हो तो जातक स्थिर स्वभाव वाला, विभवों से युक्त, महाधन, बली और स्त्री के साथ विलास करने वाला होता है ॥ ३७ ॥

शनिक्षेत्रगते शुक्रे चन्द्रदृष्टिफलम्—

ओजस्विनं चारुशरीरयष्टिं प्रकृष्टसत्त्वं धनवाहनाढ्यम् ।
करोति मर्त्यं शनिगेहयातो भृगोः सुतः शीतकरेण दृष्टः ॥ ३८ ॥

मकर या कुम्भ राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि चन्द्रमा से देखा

जाता हो तो जातक तेजस्वी, सुन्दर शरीर वाला, महाबली और धन वाहनों से युक्त होता है ॥ ३८ ॥

शनिक्षेत्रगते शुक्रे भौमदृष्टिफलम्—

असामयाभ्यामतितप्तमूर्तिमनर्थतोर्थक्षतिसंयुतं च।
कुर्यान्नरं दानवराजपूज्यः कुजेक्षितः सूर्यसुतालयस्थः॥ ३९ ॥

मकर या कुम्भ राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक परिश्रम और रोग से संतप्त तथा व्यर्थ धन का नाश करने वाला होता है ॥ ३९ ॥

शनिक्षेत्रगते शुक्रे बुधदृष्टिफलम्—

विद्वद्विधिज्ञं धनिनं सुतुष्टं प्राज्ञं सुसत्त्वं बहुलप्रपञ्चम्।
सद्वाग्विलासं मनुजं प्रकुर्य्याद्भृगुः शनिक्षेत्रगतो ज्ञदृष्टः॥ ४० ॥

मकर या कुम्भ राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि बुध से देखा जाता हो तो जातक पण्डितों के कार्य को जानने वाला, धनी, सन्तोषी बहुत प्रपञ्ची और सुन्दर बोलने वाला होता है ॥ ४० ॥

शनिक्षेत्रगते शुक्रे गुरुदृष्टिफलम्—

सद्गन्धमाल्यास्वरचारुवाद्यसंजातसङ्गीतरुचिः शुचिश्च।
स्यान्मानवो दानवराजपूज्ये सुरेज्यदृष्टे शनिमन्दिरस्थे॥ ४१ ॥

मकर या कुम्भ राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि गुरु से देखा जाता हो तो जातक सुगन्ध, माला, वस्त्र, सुन्दर बाजा और संगीत में रुचि रखने वाला, तथा पवित्र होता है ॥ ४१ ॥

शनिक्षेत्रगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम्—

प्रसन्नगात्रं च विचित्रलाभं धनाङ्गनावाहनसूनुसौख्यम्।
कुर्यान्नरं दानववृन्ददेवो मन्देक्षितो मन्दगृहाधिसंस्थः॥ ४२ ॥

मकर या कुम्भ राशि में स्थित हो कर शुक्र यदि शनि से देखा जाता हो तो जातक प्रसन्न वदन वाला, नाना प्रकार के वस्तुओं का लाभ करने वाला, धन, स्त्री, वाहन और पुत्र से सुखी होता है ॥४२॥

अथ भौमालयस्थे शनौ रविदृष्टिफलम्—

तुलायगोजाविसमृद्धिभाजं कृषिक्रियायां निरतं सदैव ।
सत्कर्मसक्तं जनयेन्मनुष्यं भौमालयस्थः शनिरर्कदृष्टः ॥ १ ॥

मेष या वृश्चिक राशि में स्थित हो कर शनि यदि रवि से देखा जाता हो तो जातक भैंस, गाय, भेड़, बकड़ा इन से युक्त, खेती करने में सदा निरत और सत्कर्म करने वाला होता है ॥ १ ॥

भौमालयस्थे शनौ चन्द्रदृष्टिफलम्—

नीचानुयातं चपलं कुशीलं खलं सुखार्थैः परिवर्जितं च ॥
कुर्यादवश्यं रविजो मनुष्यं शशीक्षितो भूसुतवेश्मसंस्थः ॥ २ ॥

मेष या वृश्चिक में स्थित हो कर शनि यदि चन्द्र से देखा जाता हो तो जातक नीच जनों का संसर्ग करने वाला, चञ्चल, कुत्सित प्रकृति वाला, दुष्ट, सुख और धन से रहित होता है ॥ २ ॥

भौमालयस्थे शनौ भौमदृष्टिफलम्—

अनल्पजल्पं गतसत्पदार्थं कार्यक्षतिं जातविनष्टवित्तम् ।
करोति जातं ननु भानुसूनुः कुजेन दृष्टः कुजवेश्मसंस्थः ॥ ३ ॥

मेष या वृश्चिक में स्थित हो कर शनि यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक अधिक बोलने वाला, सुन्दर चीजों से रहित, कार्य को नाश करने वाला और निर्धन होता है ॥ ३ ॥

भौमालयस्थे शनौ बुधदृष्टिफलम्—

चौर्यकर्मकलहादितत्परं कामिनीजनगतोत्सवं नरम् ।
ईक्षितो हि कुरुतेऽर्कनन्दनो भूमिसूनुभवनाधिसंस्थितः ॥ ४ ॥

मेष या वृश्चिक राशि में स्थित हो कर शनि यदि बुध से देखा जाता हो तो जातक चोर, झगड़ालू और स्त्री जन में उत्सव मानने वाला होता है ॥ ४ ॥

भौमालयस्थे शनौ गुरुदृष्टिफलम्—

सुखधनैः सहितं नृपमन्त्रिणं नृपसमाश्रितमुख्यतयान्वितम् ।
सुरपुरोहितवीक्षितभानुजोवनिजवेश्मगतः कुरुते नरम् ॥ ५ ॥

मेष या वृश्चिक राशि में स्थित हो कर शनि यदि गुरु से देखा जाता हो तो जातक सुख-धनों से युक्त, राजमन्त्री, राजा के आश्रय में रह कर सुख्य होता है ॥ ५ ॥

भौमालयस्थे शनौ भृगुदृष्टिफलम्—

बहुप्रयाणाभिरतं विकान्तिं पापाङ्गनासक्तमतिं विचित्तम् ।
करोति मर्त्यं क्षितिजालयस्थो भानोस्तनूजो भृगजेन दृष्टः ॥ ६ ॥

मेष या वृश्चिक राशि में स्थित हो कर शनि यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक अनेक जगह यात्रा करने वाला, कान्ति रहित, परस्त्री में रत और दुष्ट होता है ॥ ६ ॥

भृगुजालयस्थे शनौ रविदृष्टिफलम्—

विद्याविचारे प्रचुरोऽतिवक्ता परान्नभोक्ता विधनश्च शान्तः ।
भवेन्नरस्तिग्मकरेण दृष्टे सूर्यात्मजे भार्गववेश्मसंस्थे ॥ ७ ॥

वृष या तुला राशि में स्थित हो कर शनि यदि सूर्य से देखा जाता हो तो जातक शास्त्रीय विचार में अत्यधिक बोलने वाला, परान्न भोजी, निर्धन और शान्त होता है ॥ ७ ॥

भृगुजालयस्थे शनौ चंद्रदृष्टिफलम्—

नृपप्रसादाप्तमहाधिकारं योषाविभूषाम्बरजातसौख्यम् ।
बलान्वितं सञ्जनयेन्मनुष्यं मन्दः सितर्क्षे हरिणाङ्कदृष्टे ॥ ८ ॥

वृष या तुला में स्थित हो कर शनि यदि चन्द्रमा से देखा जाता हो तो जातक राजा की अनुकम्पा से उत्तम अधिकार को पाने वाला, स्त्री,भूषण और वस्त्रों से सुखी होता है ॥ ८ ॥

भृगुजालयस्थे शनौ भौमदृष्टिफलम्—

संग्रामकार्याभिरतं नितान्तमनल्पजल्पं च महत्प्रसादम् ।
कुर्यान्नरं तिग्मकरस्य सूनुर्भूसूनुदृष्टो भृगुजालयस्थः ॥ ९ ॥

वृष या तुला राशि में स्थित हो कर शनि यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक युद्ध में रत, अत्यधिक बोलने वाला और अति प्रसन्न होता है ॥ ६ ॥

भृगुजालयस्थे शनौ बुधदृष्टिफलम्—

कान्तारतो नीचजनानुयातो विनोदहास्याभिरतो गतार्थः ।
क्लीबादिसख्यश्च भवेन्मनुष्यः शनौ सितर्क्षे शशिसूनुदृष्टे ॥ १० ॥

वृष या तुला राशि में स्थित हो कर शनि यदि बुध से देखा जाता हो तो जातक स्त्री में रत, नीचों के सङ्ग रहने वाला, हास्य विनोद में रत और नपुंसक का मित्र होता है ॥ १० ॥

भृगुजालयस्थे शनौ गुरुदृष्टिफलम्—

परोपकारे कृतचित्तवृत्तिः परस्य दुःखेन सुदुःखितश्च ।
दातोद्यमी सर्वजनप्रियश्च मन्दे सितर्क्षे गुरुणा प्रदृष्टे ॥ ११ ॥

वृष या तुला में स्थित हो कर शनि यदि गुरु से देखा जाता हो तो जातक परोपकार में मन लगाने वाला, दूसरों के दुखों से दुखी, दाता, उद्योगी और सबों का स्नेही होता है ॥ ११ ॥

भृगुजालयस्थे शनौ शुक्रदृष्टिफलम्—

रत्नादिलाभं वनिताविलासं जलाधिकत्वं नृपगौरवाप्तिम् ।
कुर्यान्नराणां तरणेस्तनूजः शुक्रेक्षितः शुक्रगृहं प्रयातः ॥ १२ ॥

वृष या तुला राशि में स्थित हो कर शनि यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक रत्नों का लाभ करने वाला, स्त्री के साथ विलास करने वाला, जल को अधिक चाहने वाला और राजा से गौरव पाने वाला होता है ॥ १२ ॥

बुधर्क्षे शनौ रविदृष्टिफलम्—

सुखोज्झितं नीचरतं सकोपमधार्मिकं द्रोहकरं सुधीरम् ।
कुर्यान्नरं तिग्मकरस्य सूनुर्भानुप्रदृष्टो बुधमन्दिरस्थः ॥ १३ ॥

मिथुन या कन्या राशि में स्थित हो कर शनि यदि सूर्य से देखा जाता हो तो जातक सुखरहित, नीचों का साथी, क्रोधी, अधर्मी, द्रोही और धीर होता है ॥ १३ ॥

बुधर्क्षे शनौ चंद्रदृष्टिफलम्—

प्रसन्नमूर्तिर्नृपतिप्रसादात्प्राप्ताधिकारोन्नतिकार्यवृत्तिः ।

कान्ताधिकारो यदि वा नरः स्यान्मदे ज्ञभस्थेऽमृतरश्मिदृष्टे ॥१४॥

मिथुन या कन्या राशि में स्थित हो कर शनि यदि चन्द्रमा से देखा जाता हो तो जातक प्रसन्न शरीर वाला, राजा से अधिकार प्राप्त कर उन्नति करने वाला, और स्त्रियों का अधिकारी होता है॥१४॥

बुधर्क्षे शनौ भौमदृष्टिफलम्—

प्रकृष्टबुद्धिं सुतरां विधिज्ञं ख्यातं गभीरं च नरं करोति ।
सोमात्मजक्षेत्रगतोऽर्कसूनुर्भूसूनुदृष्टः परिसूतिकाले ॥ १५ ॥

मिथुन या कन्या में स्थित हो कर शनि यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक श्रेष्ठ बुद्धि वाला, कार्य को जानने वाला, प्रसिद्ध और गंभीर होता है ॥ १५ ॥

बुधर्क्षे शनौ बुधदृष्टिफलम्—

धनान्वितं चारुमतिं विनीतं गीतप्रियं सङ्गरकर्मदक्षम् ।
शिल्पेऽप्यभिज्ञं मनुजं प्रकुर्यात्सौम्येक्षितः सौम्यगृहस्थमन्दः ॥१६॥

मिथुन या कन्या राशि में स्थित हो कर शनि यदि बुध से देखा जाता हो तो जातक धनी, सुन्दर बुद्धि वाला, नम्र, गीत प्रिय और युद्ध कार्य में कुशल होता है ॥ १६ ॥

बुधर्क्षे शनौ गुरुदृष्टिफलम्—

राजाश्रितश्चारुगुणैः समेतः प्रियः सतां गुप्तधनो मनस्वी ।
भवेन्नरो मन्दचरो यदि स्याज्ज्ञराशिसंस्थः सुरपूज्यदृष्टः ॥ १७ ॥

मिथुन या कन्या राशि में स्थित हो कर शनि यदि गुरु से देखा जाता हो तो जातक राजा के आश्रय में रहने वाला, श्रेष्ठ गुणों से युक्त, साधुओं का प्रिय, गुप्त धन रखने वाला और मनस्वी होता है॥१७॥

बुधर्क्षे शनौ भृगुदृष्टिफलम्—

योषाविभूषाकरणे प्रवीणं सत्कर्मधर्मानुरतं नितान्तम् ।
स्त्रीसक्तचित्तं प्रकरोति मर्त्यं सितेक्षितो भानुसुतो ज्ञराशौ ॥ १८ ॥

मिथुन या कन्या में स्थित हो कर शनि यदि शुक्र से देखा जाता

हो तो जातक स्त्रियों के भूषण बनाने में चतुर, सत्कार्य और धर्म में रत तथा स्त्रियों में रत होता है ॥ १८ ॥

कर्कस्थे शनौ रविदृष्टिफलम्—

आनन्ददाराद्रविणैर्विहीनः सदान्नभोगैरपि वोज्झितश्च ।
मातुर्महाक्लेशकरो नरः स्यान्मन्दे कुलीरोपगतेऽर्कदृष्टे ॥ १९ ॥

कर्क में स्थित हो कर शनि यदि रवि से देखा जाता हो तो जातक आनन्द, स्त्री और धन से रहित या अन्न और भोग विलास से हीन तथा माता को कष्ट देने वाला होता है ॥ १९ ॥

कर्कस्थे शनौ चन्द्रदृष्टिफलम्—

निपीडिनं बन्धुजने जनन्यां नूनं धनानामभिवर्द्धनं च ।
कुर्यान्नराणां द्युमणेस्तनूजः कुलीरसंस्थो द्विजराजदृष्टः ॥ २० ॥

कर्क राशि में स्थित हो कर शनि यदि चन्द्रमा से देखा जाता हो तो जातक बन्धुजन और माता को क्लेश देने वाला, किन्तु निश्चय धन को बढाने वाला होता है ॥ २० ॥

कर्कराशिगते शनौ भौमदृष्टिफलम्—

गलद्बलः क्षीणकलेवरश्च नृपार्पितार्थोत्तमवैभवोऽपि ।
स्यान्मानुषो भानुसुते प्रसूतौ कर्कस्थिते क्षोणिसुतेन दृष्टे ॥२१॥

कर्क राशि में स्थित हो कर शनि यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक क्षीणबली, क्षीण शरीर वाला, किन्तु राजा के द्वारा प्राप्त उत्तम धन और विभव वाला होता है ॥ २१ ॥

कर्कराशिगते शनौ बुधदृष्टिफलम्—

वाग्विलासकठिनोऽटनबुद्धिश्चेष्टितैर्बहुविधैरपि युक्तः ।
दम्भवृत्तिचतुरोऽपि नरः स्यात्कर्कगामिनि शनौ बुधदृष्टे ॥ २२ ॥

कर्क राशि में स्थित हो कर शनि यदि बुध से देखा जाता हो तो जातक कठोर वाणी बोलने वाला, भ्रमणशील, अनेक तरह की चेष्टा करने वाला, छली और चतुर होता है ॥ २२ ॥

कर्कराशिगते शनौ गुरुदृष्टिफलम्—

क्षेत्रपुत्रगृहगेहिनीधनै रत्नवाहनविभूषणैरपि।
संयुतो भवति मानवो जनौ जीवदृष्टियुजि कर्कगे शनौ ॥ २३ ॥

कर्क राशि में स्थित शनि के ऊपर गुरु की दृष्टि हो तो जातक जमीन, पुत्र, गृह, गृहिणी, धन, रत्न, वाहन, भूषण इन सबों से युक्त होता है ॥ २३ ॥

कर्कराशिगते शनौ भृगुदृष्टिफलम्—

उदारतागौरवचारुमानैः सौन्दर्यवर्यामलवाग्विलासैः।
नूनं विहीना मनुजा भवेयुः शुक्रेक्षिते कर्कगतेऽर्कपुत्रे ॥ २४ ॥

कर्क राशि में स्थित हो कर शनि यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक उदारता, गौरव, मान, सौन्दर्य, श्रेष्ठता और प्रिय वचन से हीन होता है ॥ २४ ॥

सिंहराशिगते शनौ रविदृष्टिफलम्—

धनेन धान्येन च वाहनेन सद्वृत्तसत्योत्तमचेष्टितैश्च।
भवेद्विहीनो मनुजः प्रसूतौ सिंहस्थिते भानुसुतेऽर्कदृष्टे ॥ २५ ॥

सिंह राशि में स्थित हो कर शनि यदि सूर्य से देखा जाता हो तो जातक धन, धान्य, वाहन, आचार और उत्तम कार्य से रहित होता है ॥ २५ ॥

सिंहराशिगते शनौ चन्द्रदृष्टिफलम्—

सद्रत्नभूषाम्बरचारुकीर्तिं कलत्रमित्रात्मजसौख्यपूर्तिम्।
प्रसन्नमूर्तिं कुरुतेऽर्कसूनुर्नरं हरिस्थो हरिणाङ्कदृष्टः ॥ २६ ॥

सिंह राशि में स्थित हो कर शनि यदि चन्द्रमा से देखा जाता हो तो जातक रत्न, भूषण, वस्त्र, सुन्दर यश, स्त्री, मित्र, पुत्र, सुख इन से पूर्ण होता है ॥ २६ ॥

सिंहराशिगते शनौ भौमदृष्टिफलम्—

संग्रामकर्मण्यतिनैपुणः स्यात्कारुण्यहीनो मनुजः सकोपः।
क्रूरस्वभावो ननु भानुसूनौ सिंहस्थिते भूमिसुतेक्षिते च ॥ २७ ॥

सिंह राशि में स्थित हो कर शनि यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक युद्ध में अति कुशल, निर्दयी, क्रोधी और क्रूर प्रकृति वाला होता है ॥ २७ ॥

सिंहराशिगते शनौ बुधदृष्टिफलम्—

धनाङ्गनासूनुसुखेन हीनं दीनं च नीचव्यसनाभिभूतम् ।
करोति जातं तपनस्य सूनुः सिंहस्थितः सोमसुतेक्षितश्च ॥ २८ ॥

सिंह राशि में स्थित हो कर शनि यदि बुध से देखा जाता हो तो जातक धन, स्त्री, पुत्र इन के सुख से हीन, दीन और नीच कर्म में रत होता है ॥ २८ ॥

सिंहराशिगते शनौ गुरुदृष्टिफलम्—

सन्मित्रपुत्रादिगुणैरुपेतं ख्यातं सुवृत्तं सुतरां विनीतम् ।
नरं पुरग्रामपतिं करोति सौरिर्हरिस्थो गुरुणा प्रदृष्टः ॥ २९ ॥

सिंह राशि में स्थित हो कर शनि यदि गुरु से देखा जाता हो तो जातक श्रेष्ठ मित्र, पुत्र आदि और गुणों से युक्त, प्रसिद्ध, सदाचारी, अति नम्र तथा पुर ग्राम का स्वामी होता है ॥ २९ ॥

सिंहराशिगते शनौ भृगुदृष्टिफम्—

धनैश्च धान्यैरपि वाहनैश्च सुखैरुपेतं वनितागतस्वम् ।
कुर्य्यान्मनुष्यं तपनस्य सूनुः पञ्चाननस्थो भृगुसूनुदृष्टः ॥ ३० ॥

सिंह राशि में स्थित हो कर शनि यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक धन, धान्य, वाहन, सुख इन से युक्त और स्त्री के द्वारा पीड़ित होता है ॥ ३० ॥

गुरुगृहगते शनौ रविदृष्टिफलम्—

ख्यातिं धनाप्तिं बहुगौरवाणि स्नेहप्रवृत्तिं परनन्दनेषु ।
लभेन्नरो देवगुरोरगारे शनैश्चरे पद्मिनिनाथदृष्टे ॥ ३१ ॥

धनु या मीन में स्थित हो कर शनि यदि सूर्य से देखा जाता हो तो जातक प्रसिद्ध, धन लाभ करने वाला, अधिक गौरवी और दूसरे के लड़कों को प्यार करने वाला होता है ॥ ३१ ॥

गुरुगेहगते शनौ चन्द्रदृष्टिफलम्—

सद्वृत्तशाली जननीवियुक्तो नामद्वयालङ्करणप्रयातः ।
सुतार्थभार्यासुखभाङ्नरः स्यात्सौरे सुरेज्यालयगेऽब्जदृष्टे ॥ ३२ ॥

धनु या मीन राशि में स्थित हो कर शनि यदि चन्द्रमा से देखा जाता हो तो जातक आचार युक्त, माता से वियोग पाने वाला, दो नामों से युक्त, सुत के हेतु स्त्री सुख चाहने वाला होता है ॥ ३२ ॥

गुरुगेहगते शनौ भौमदृष्टिफलम्—

वातान्वितं लोकविरुद्धचेष्टं प्रवासिनं दीनतरं करोति ।
नरं धरासूनुनिरीक्ष्यमाणो मार्तण्डपुत्रः सुरमन्त्रिणो भे ॥ ३३ ॥

धनु या मीन राशि में स्थित हो कर शनि यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक वात रोग से युक्त, लोगों से विरुद्ध रहने वाला, विदेश में निवास करने वाला और दरिद्र होता है ॥ ३३ ॥

गुरुगेहगते शनौ बुधदृष्टिफलम्—

गुणाभिरामो धनवान्प्रकामं नराधिराजाप्तमहाधिकारः ।
नरः सदाचारविराजमानः शनौ ज्ञदृष्टे गुरुमन्दिरस्थे ॥ ३४ ॥

धनु या मीन राशि में स्थित होकर शनि यदि बुध से देखा जाता हो तो जातक गुणों से सुन्दर, धनवान् , महाराजा से अधिकार प्राप्त करने वाला और सदाचारी होता है ॥ ३४ ॥

गुरुगेहगते शनौ गुरुदृष्टिफलम्—

नृपप्रधानः पृतनापतिर्वा सर्वार्थशाली बलवान्सुशीलः ।
स्यान्मानवो भानुसुते प्रसूतौ जीवेक्षिते जीवगृहं प्रयाते ॥ ३५ ॥

धनु या मीन राशि में स्थित हो कर शनि यदि गुरु से देखा जाता हो तो जातक राजा का मन्त्री या सेनापति, सब सम्पत्तियों से युक्त, बलवान् और सुशील होता है ॥ ३५ ॥

गुरुगेहगते शनौ भृगुदृष्टिफलम्—

विदेशवासी बहुकार्यसक्तो द्विमातृपुत्रः सुतरां पवित्रः ।

स्यान्मानवो दानवमन्त्रिदृष्टे मन्देऽमराचार्यगृहं प्रयाते ॥ ३६ ॥

धनु या मीन राशि में स्थित हो कर शनि यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक विदेश में रहने वाला, बहुत कार्य करने वाला, विमाता वाला और अति पवित्र होता है ॥ ३६ ॥

स्वगृहगते शनौ रविदृष्टिफलम्—

कुरूपभार्यश्च परान्नभोक्ता नानाप्रयासामयसंयुतश्च ।
विदेशवासी प्रभवेन्मनुष्यो मन्दे निजागारगतेऽर्कदृष्टे ॥ ३७ ॥

मकर या कुम्भ राशि में स्थित हो कर शनि यदि रवि से देखा जाता हो तो जातक कुरूपा स्त्री वाला, दूसरे का अन्न खाने वाला अनेक प्रयास करने पर रोग युक्त और विदेश निवास करने वाला होता है ॥ ३७ ॥

स्वगृहगते शनौ चन्द्रदृष्टिफलम्—

धनाङ्गनाढ्यं वृजिनानुयातं चलस्वभावं जननीविरुद्धम् ।
कामातुरं चापि नरं प्रकुर्यान्मन्दः स्वभस्थोऽमृतरश्मिदृष्टः ॥ ३८ ॥

मकर या कुम्भ राशि में स्थित हो कर शनि यदि चन्द्रमा से देखा जाता हो तो जातक धन, औरत से युक्त, पापी, चञ्चल, माता से विरुद्ध रहने वाला और कामी होता है ॥ ३८ ॥

स्वगेहगते शनौ भौमदृष्टिफलम्—

शूरः क्रूरः साहसी सुद्गुणाढ्यः सर्वोत्कृष्टः सर्वदा हृष्टचित्तः ।
ख्यातो मर्त्यश्चात्मभस्थेऽर्कपुत्रे धात्रीपुत्रप्रेक्षणत्वं प्रयाते ॥ ३९ ॥

मकर या कुम्भ राशि में स्थित हो कर शनि यदि मङ्गल से देखा जाता हो तो जातक शूर, क्रूर, साहसी, सुन्दर गुणों से युक्त, लोगों में श्रेष्ठ, सदा प्रसन्न और प्रसिद्ध होता है ॥ ३९ ॥

स्वगेहगते शनौ बुधदृष्टिफलम्—

सद्वाहनान्साहसिकान्ससत्त्वान्धीरांश्च नानाविधकार्यसक्तान् ।
करोति मर्त्यान्नतु भानुपुत्रः स्वक्षेत्रसंस्थः शशिपुत्रदृष्टः ॥ ४० ॥

मकर या कुम्भ राशि में स्थित हो कर शनि यदि बुध से देखा जाता हो तो जातक सुन्दर वाहन, साहस, बल तथा धैर्य से युक्त और अनेक तरह के कार्य में सक्त होता है ॥ ४० ॥

स्वगेहगते शनौ गुरुदृष्टिफलम्—

गुणान्वितं क्षोणिपतिप्रधानं निरामयं चारुशरीरयष्टिम् ।
कुर्यान्नरं देवगुरुप्रदृष्टश्चण्डांशुसूनुर्निजवेश्मसंस्थः ॥ ४१ ॥

मकर या कुम्भ राशि में स्थित हो कर शनि यदि गुरु से देखा जाता हो तो जातक गुणी, राजमन्त्री, निरोग और सुन्दर शरीर वाला होता है ॥ ४१ ॥

स्वगेहगते शनौ भृगुदृष्टिफलम्—

कामातुरं सन्नियमेन हीनं भाग्योपपन्नं सुखिनं धनाढ्यम् ।
भोक्तारमीशं कुरुते स्वभस्थो रवेः सुतो भार्गवसूनुदृष्टः ॥४२॥

मकर या कुम्भ राशि में स्थित हो कर शनि यदि शुक्र से देखा जाता हो तो जातक कामातुर, नियम से हीन, भाग्यशाली, सुखी, धनी, भोगी और प्रधान होता है ॥ ४२ ॥

अथ ग्रहाणां राशिफलानि-तत्र मेषराशिगतसूर्यफलम्—

भवति साहसकर्मकरो नरो रुधिरपित्तविकारकलेवरः ।
क्षितिपतिर्मतिमान्सहितस्तदा सुमहसामहसामधिपे क्रिये ॥ १ ॥

जन्म समय में सूर्य यदि मेष राशि में हो तो जातक साहसी, रक्त पित्त विकार से युक्त शरीर वाला, राजा, बुद्धिमान् और तेजस्वी होता है ॥ १ ॥

वृषराशिगतसूर्यफलम्—

परिमलैर्विमलैः कुसुमाशनैः सुवसनैः पशुभिस्सुखमद्भुतम् ।
गवि गतो हि रविर्जलभीरुतां विहितमाहितमादिशते नृणाम् ॥ २ ॥

सूर्य वृष राशि में हो तो जातक सुगन्ध, पुष्प, भोजन, वस्त्र तथा पशुओं के सुख से युक्त और भीरु होता है ॥ २ ॥

मिथुनराशिगतसूर्यफलम्—

गणितशास्त्रकलामलशीलतासुललिताद्भुतवाक्प्रथितो भवेत् ।
दिनपतौ मिथुने ननु मानवो विनयतानयतातिशयान्वितः ॥ ३ ॥

सूर्य मिथुन राशि में हो तो जातक गणित शास्त्र और कलाओं को जानने वाला, सुन्दर और आश्चर्य जनक वाणी बोलने वाला, प्रसिद्ध, विनयी और नीति शास्त्र को जानने वाला होता है ॥ ३ ॥

कर्कराशिगतसूर्यफलम्—

सुजनतारहितः किल कालविज्जनकवाक्यविलोपकरो नरः ।
दिनकरे हि कुलीरगते भवेत्सधनताधनतासहिताधिकः ॥ ४ ॥

सूर्य यदि कर्क राशि में हो तो जातक सुजनता से रहित, काल को जानने वाला, पिता की आज्ञा को न मानने वाला, सधनता (धनी) अधनता सहित (निर्धन) दोनों में माननीय होता है ॥ ४ ॥

सिंहराशिगतसूर्यफलम्—

स्थिरमतिश्च पराक्रमताधिको विश्रुतयाद्भुतकीर्तिसमन्वितः ।
दिनकरे करिवैरिगते नरो नृपरतो परतोषकरो भवेत् ॥ ५ ॥

सूर्य यदि सिंह राशि में बैठा हो तो जातक, स्थिर बुद्धि, पराक्रमी, पराक्रम से यशस्वी, राजा का प्रिय और परोपकारी होता है ॥ ५ ॥

कन्याराशिगतसूर्यफलम्—

दिनपतौ युवतौ समवस्थिते नरपतेर्द्रविणं हि नरो लभेत् ।
मृदुवचाः श्रुतगेयपरायणः सुमहिमामहिमापहिताहितः ॥ ६ ॥

सूर्य यदि कन्या राशि में स्थित हो तो जातक राजा से धन लाभ करने वाला, कोमल बोलने वाला, संगीत का प्रेमी और अत्यन्त सामर्थ्य से शत्रु को नाश करने वाला होता है ॥ ६ ॥

तुलाराशिगतसूर्यफलम्—

नरपतेरतिभीरुरहर्निशं जनविरोधविधानमयं दिशेत् ।
कलिमनाः परकर्मरतिर्घटे दिनमणिर्न भणिद्रविणादिकम् ॥ ७ ॥

सूर्य यदि तुला राशि में स्थित हो तो जातक सदा राजा से भयभीत, लोगों से विरोध करने वाला, पापी, झगड़ालू, दूसरे का कार्य करने वाला और मणि धन आदि से हीन होता है ॥ ७ ॥

वृश्चिकराशिगतसूर्यफलम्—

कृपणतां कलहं च भृशं रुषं विषहुताशनशस्त्रभयं दिशेत् ।
अलिगतः पितृमातृविरोधितां दिनकरो न करोति समुन्नतिम् ॥८॥

सूर्य यदि वृश्चिक राशि में स्थित हो तो जातक कृपण, झगड़ालू, क्रोधी, विष, अग्नि, शस्त्र इन से भय पाने वाला, माता पिता का विरोधी और उन्नति न करने वाला होता है ॥ ८ ॥

धनूराशिगतसूर्यफलम्—

स्वजनकोपमतीव महामतिं बहुधनं हि धनुर्धरगो रविः ।
सुजनपूजनमादिशते नृणां सुमतितो मतितोषविवर्द्धनम् ॥ ९ ॥

सूर्य यदि धनु राशि में स्थित हो तो जातक अपने जनों पर क्रोध करने वाला, बड़ा बुद्धिमान्, बहुत धन वाला, सज्जनों का पूजन करने वाला, अपनी सुन्दर बुद्धि से मनुष्यों का हर्ष बढ़ाने वाला होता है॥९॥

मकरराशिगतसूर्यफलम्—

अटनतां निजपक्षविपक्षतामधनतां कुरुते सततं नृणाम् ।
मकरराशिगतो विगतोत्सवं दिनविभुर्न विभुत्वसुखं दिशेत् ॥१०॥

सूर्य यदि मकर राशि में स्थित हो तो जातक भ्रमणशील, अपने जनों का विरोधी, निर्धन, उत्सव रहित और प्रभुता रहित होता है ॥१०॥

कुंभराशिगतसूर्यफलम्—

कलशगामिनि पंकजिनीपतौ शठतरो हि नरो गतसौहृदः ।
मलिनताकलितो रहितः सदा करुणयारुणयात्तसुखो भवेत् ॥११॥

सूर्य यदि कुम्भ राशि में बैठा हो तो जातक अति शठ, मित्रता से हीन, मलिन, दयाहीन और सुखी होता है ॥ ११ ॥

मीनराशिगतसूर्यफलम्—

बहुधनं क्रयविक्रयतः सुखं निजजनादपि गुह्यमहाभयम् ।

दिनपतौ गुरुभेऽभिमतो भवेत्सुजनतो जनतोपदसन्मतिः ॥१२॥

सूर्य यदि मीन राशि में स्थित हो तो जातक क्रय विक्रय से धनी, अपने जनों से सुखी, गुप्त बात से भयभीत, और सुजनता से जनों को सुख देने वाला होता है ॥ १२ ॥

मेषराशिगतचंद्रफलम्—

स्थिरधनो रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदाविजितो भवेत् ।
अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक् ॥१३॥

चन्द्रमा यदि मेष राशि में स्थित हो तो जातक स्थिरधन वाला, सज्जनों से हीन, पुत्र युक्त, स्त्री के वश में रहने वाला और अद्भुत पराक्रम से सुयश वाला होता है ॥ १३ ॥

वृषराशिगतचंद्रफलम्—

स्थिरगतिं सुमतिं कमनीयतां कुशलतां हि नृणामुपभोगताम् ।
वृषगतो हिमगुर्भृशमादिशेत्सुकृततः कृतितश्च सुखानि च ॥१४॥

चन्द्रमा यदि वृष राशि मे स्थित हो तो जातक स्थिर गति, सुन्दर बुद्धि वाला, सुन्दर, कुशली, मनुष्यों का पोषण करने वाला और सुन्दर कार्य से सुख पाने वाला होता है ॥ १४ ॥

मिथुनराशिगतचंद्रफलम्—

प्रियकरः करमत्स्ययुतो नरः सुरतसौख्यभरो युवतिप्रियः ।
मिथुनराशिगते हिमगौ भवेत्सुजनताजनताकृतगौरवः ॥१५॥

चन्द्रमा यदि मिथुन राशि में स्थित हो तो जातक प्रिय करने वाला, मत्स्य रेखा से युक्त हस्त वाला, सुरत से अति सुखी, स्त्री का प्रिय और अपनी सुजनता से जनसमूहों में गुरुता युक्त होता है ॥१५॥

कर्कराशिगतचंद्रफलम्—

श्रुतकलावलनिर्मलवृत्तयः कुसुमगंधजलाशयकेलयः ।
किल नरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमती सुमतीस्मितलब्धयः ॥१६॥

चन्द्रमा यदि कर्क राशि में बैठा हो तो जातक शास्त्र को सुनने

वाला, कला को जानने वाला, निर्दुष्ट आचार वाला, कुसुम गन्ध से युक्त जलाशय में क्रीड़ा करने वाला, पृथ्वी पाने वाला, सुन्दर बुद्धि और ईषद् हास्य से युक्त होता है ॥ १६ ॥

सिंहराशिगतचंद्रफलम्—

अचलकाननयानमनोरथं गृहकलिञ्च गलोदरपीड़नम् ।
द्विजपतिर्मृगराजगतो नृणां वितनुते तनुतेजविहीनताम् ॥१७॥

चन्द्रमा यदि सिंह राशि में बैठा हो तो जातक पर्वत वन में भ्रमण करने वाला, घर में झगड़ा करने वाला, गला और पेट में रोग युक्त तथा तेज हीन शरीर वाला होता है ॥ १७ ॥

कन्याराशिगतचंद्रफलम्—

युवतिगे शशिनि प्रमदाजनप्रबलकेलिविलासकुतूहलैः ।
विमलशीलसुताजननोत्सवैः सुविधिना विधिना सहितः पुमान् ॥१८॥

चन्द्रमा यदि कन्या राशि में स्थित हो तो जातक स्त्री के साथ विशेष केलि, विलास, कुतूहल करने वाला, निर्मल स्वभाव वाला, कन्या सन्तति वाला, उत्सव से युक्त, सत्कार्य से युक्त और भाग्य शाली होता है ॥ १८ ॥

तुलाराशिगतचंद्रफलम्—

वृषतुरंगमविक्रमविक्रमद्द्विजसुरार्चनदानमनाः पुमान् ।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभवसञ्चितविक्रमः ॥१९॥

चन्द्रमा यदि तुला राशि में बैठा हो तो जातक बैल, घोड़ा आदि रखने वाला, महा पराक्रमी, ब्राह्मण देवताओं का पूजक, बहुत स्त्रियों का भोग करने वाला और विभव के तुल्य पराक्रम से युक्त होता है ॥१६॥

वृश्चिकराशिगतचंद्रफलम्—

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः ।
कलिरुचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत् ॥२०॥

चन्द्रमा यदि वृश्चिक राशि में स्थित हो तो जातक राजा और जूए

से धन नाश करने वाला, झगड़ालू, निर्बल, दुष्ट स्वभाव वाला, दुर्बल मन वाला और शान्ति रहित होता है ॥ २० ॥

धनूराशिगतचंद्रफलम्—

बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक् ।
शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम् ॥२१॥

चन्द्रमा यदि धनु राशि में स्थित हो तो जातक अनेक कलाओं को जानने वाला, बली, अत्यन्त निर्मल स्वभाव वाला, सरल वाणी बोलने वाला, धनी और थोड़ा व्यय करने वाला होता है ॥ २१ ॥

मकरराशिगतचंद्रफलम्—

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरुपासहितो मदनातुरः ।
निजकुलोत्तमवृत्तिकरः परं हिमकरे मकरे पुरुषो भवेत् ॥ २२ ॥

चन्द्रमा यदि मकर राशि में स्थित हो तो जातक शीत से भयभीत, गीत जानने वाला, थोड़ा रोष करने वाला, कामी और अपने कुल के अनुसार उत्तम कार्य करने वाला होता है ॥ २२ ॥

कुंभराशिगतचंद्रफलम्—

अलसतासहितोन्यसुतप्रियः कुशलताकलितोऽतिविचक्षणः ।
कलशगामिनि शीतकरे नरः प्रशमितः शमितोरुरिपुव्रजः ॥२३॥

चन्द्रमा यदि कुम्भ राशि में बैठा हो तो जातक आलसी, दूसरे के लड़के से प्रेम करने वाला, अति चतुर, पण्डित, शान्त प्रकृति वाला और शत्रुओं को नाश करने वाला होता है ॥ २३ ॥

मीनराशिगतचंद्रफलम्—

शशिनि मीनगते विजितेंद्रियो बहुगुणः कुशलो जललालसः ।
विमलधीः किल शास्त्रकलादरस्त्वबलताबलताकलितो नरः ॥२४॥

चन्द्रमा यदि मीन राशि में बैठा हो तो जातक जितेन्द्रिय, अनेक गुणों से युक्त, चतुर, जल की अधिक लालसा रखने वाला, निर्मल बुद्धि वाला, शास्त्र विद्या में आदर रखने वाला और अति दुर्बल होता है ॥ २४ ॥

मेषराशिगतभौमफलम्—

क्षितिपतेः क्षितिमानधनागमैः सुवचसा महसा बहुसाहसैः ।
अवनिजः कुरुते सततं युतं स्वजगतो जगतोभिमतन्नरम् ॥२५॥

मङ्गल यदि मेष राशि में बैठा हो तो जातक राजा के द्वारा मान धन से युक्त, प्रिय बोलने वाला, तेजस्वी, बहुत साहसी और संसार में सब का प्रिय होता है ॥ २५ ॥

वृषराशिगतभौमफलम्—

गृहधनाल्पसुखञ्च रिपूदयं परगृहस्थितिमादिशते नृणाम् ।
अविनयाग्निरुजौ वृषभस्थितः क्षितिसुतोऽतिसुतोद्भवपीडनम् ॥२६॥

मङ्गल यदि वृष राशि में बैठा हो तो जातक गृह और धन से थोड़ा सुखी, शत्रुओं की वृद्धि वाला, दूसरे के घर में वास करने वाला, अविनयी, अग्निमान्द्य रोग युक्त और पुत्र से पीड़ित होता है ॥ २६ ॥

मिथुनराशिगतभौमफलम्—

बहुकलाकलनं कुलजोत्कलिं प्रचलनप्रियताञ्च निजस्थलात् ।
ननु नृणां कुरुते मिथुनस्थितः कुतनयस्तनयप्रमुखात्सुखम् ॥२७॥

मङ्गल यदि मिथुन राशि में बैठा हो तो जातक अनेक कलाओं में निपुण, बन्धुओं के साथ कलह करने वाला, भ्रमण का प्रिय और पुत्र आदि से सुख पाने वाला होता है ॥ २७ ॥

कर्कराशिगतभौमफलम्—

परगृहस्थिरतामतिदीनतां विमतितां शमिताञ्च रिपूदयम् ।
हिमकरालयगे किल मंगले प्रबलयाबलया कलहं व्रजेत् ॥२८॥

मङ्गल यदि कर्क राशि में बैठा हो तो जातक दूसरे के घर में निवास करने वाला, अति दीन, निर्बुद्धि, शत्रुओं से पीड़ित और प्रबल स्त्री से कलह करने वाला होता है ॥ २८ ॥

सिंहराशिगतभौमफलम्—

अतितरां सुतदारसुखान्वितो हतरिपुर्विततोद्यमसाहसः ।

अवनिजे मृगराजगते पुमाननयतानयताभियुतो भवेत् ॥२९॥

मङ्गल यदि सिंह राशि में बैठा हो तो जातक पुत्र स्त्री से अति सुखी, शत्रुओं के नाश करने वाला, अति उद्यम और साहस करने वाला तथा नीति अनीति को जानने वाला होता है ॥ २६ ॥

कन्याराशिगतभौमफलम्—

सुजनपूजनताजनताधिको यजनयाजनकर्मरतो भवेत् ।
क्षितिसुते सति कन्यकयान्विते त्ववनितो वनितोत्सवतः सुखी ॥३०॥

मङ्गल यदि कन्या राशि में बैठा हो तो जातक साधुओं का पूजक, जनसमूहों में मुख्य, यज्ञ कराने और करने वाला तथा पृथ्वी और स्त्री से सुख भोगने वाला होता है ॥ ३० ॥

तुलाराशिगतभौमफलम्—

बहुधनव्ययतांगविहीनतागतगुरुप्रियतापरितापितः ।
वणिजि भूमिसुते विकलः पुमानवनितोवनितोद्भवदुःखितः ॥३१॥

तुला राशि में मङ्गल स्थित हो तो जातक बहुत धन का व्यय करने वाला, अङ्गहीन, गुरु जनों का पूर्व में अप्रिय करके पश्चात् संतप्त, विकल, पृथ्वी और स्त्री से दुखी होता है ॥ ३१ ॥

वृश्चिकराशिगतभौमफलम्—

विषहुताशनशस्त्रभयान्वितः सुतसुतावनितादिमहत्सुखम् ।
वसुमतीसुतभाजि सरीसृपे नृपरतः परतश्च जयं व्रजेत् ॥३२॥

वृश्चिक राशि में मङ्गल स्थित हो तो जातक विष, अग्नि, शस्त्र इन के भय से युक्त, पुत्र, कन्या, स्त्री इन से अत्यन्त सुखी, राजा में रत और शत्रुओं को जीतने वाला होता है ॥ ३२ ॥

धनूराशिगतभौमफलम्—

रथतुरंगमगौरवसंयुतः परमरातितनुक्षतिदुःखितः ।
भवति नावनिजे धनुषि स्थिते सुवनितावनिताभ्रमणप्रियः ॥३३॥

धनु राशि में मङ्गल बैठा हो तो जातक रथ, घोड़ा, गौरव इन से

युक्त, किन्तु शत्रु से चोट खा कर दुःखित और अति सुन्दरी अपनी स्त्री के साथ भ्रमण का प्रिय होता है ॥ ३३ ॥

मकरराशिगतभौमफलम्—

रणपराक्रमताबनितासुखं निजजनप्रतिकूलतया श्रमः।
विभवता मनुजस्य धरात्मजे मकरगे करगेव रमा भवेत् ॥ ३४ ॥

मकर राशि में मङ्गल बैठा हो तो जातक युद्ध में पराक्रमी, स्त्री सुख से युक्त, अपने जनों के विरुद्ध कार्य में श्रम करने वाला, विभव और लक्ष्मी को हाथ में रखने वाला, होता है ॥ ३४ ॥

कुम्भराशिगतभौमफलम्—

विनयतारहितं सहितं रुजा निजजनप्रतिकूलमलङ्घलम्।
प्रकुरुते मनुजङ्कलशाश्रितः क्षितिसुतोऽतिसुतोद्भवदुःखितः ॥ ३५ ॥

कुम्भ राशि में मङ्गल बैठा हो तो जातक अविनयी, रोग युक्त, बन्धुओं का विरोधी, अति दुष्ट और पुत्र के दुख से दुखी होता है ॥ ३५ ॥

मीनराशिगतभौमफलम्—

व्यसनतां खलतामदयालुतां विकलतां चलनं च निजालयात्।
क्षितिसुतस्तिमिना सुसमन्वितो विमतिनामतिनाशनमादिशेत् ॥३६॥

मीन राशि में मङ्गल बैठा हो तो जातक व्यसनी, दुष्ट, निर्दयी, विकल, अपने स्थान छोड़ कर अन्य स्थान में जाने वाला और बुद्धि हीन जनों के साथ हो कर उस की भी बुद्धि नाश हो जाती है ॥ ३६ ॥

मेषराशिगतबुधफलम्—

खलमतिः किल चञ्चलमानसो ह्यविरतं कलहाकुलितो नरः।
अकरुणोऽनृणवांश्च बुधे भवेदविगते विगतेच्छितसाधनः ॥३७॥

मेष राशि में बुध बैठा हो तो जातक दुष्ट बुद्धि, चञ्चल, सदा कलह करने के लिये आकुलित, निर्दयी, ऋण हीन और मनोऽभिलषित कार्य साधन करने में असमर्थ होता है ॥ ३७ ॥

वृषराशिगतबुधफलम्—

वितरणप्रणयं गुणिनं दिशेद्बहुकलाकुशलं रतिलालसम् ।
धनिनमिंदुसुतो वृषभस्थितो तनुजतोनुजतोऽतिसुखं नरम् ॥३८॥

वृष राशि में बुध बैठा हो तो जातक नम्रता युक्त, दानी, गुणी, बहुत कलाओं को जानने वाला, रति करने की इच्छा रखने वाला, धनी, पुत्र और भाइयों के द्वारा सुखी होता है ॥ ३८ ॥

मिथुनराशिगतबुधफलम्—

प्रियवचोरचनासु विचक्षणो द्विजननीतनयः शुभवेषभाक् ।
मिथुनगे जनने शशिनन्दने सदनतोऽदनतोऽपि सुखी नरः ॥३९॥

मिथुन राशि में बुध बैठा हो तो जातक प्रिय बोलने वाला, वस्तु बनाने में कुशल, विमाता वाला, सुन्दर शरीर वाला, घर और भोजन से सुखी होता है ॥ ३९ ॥

कर्कराशिगतबुधफलम्—

कुचरितानि च गीतकथादरो नृपरुचिः परदेशगतिर्नृणाम् ।
किल कुलीरगते शशभृत्सुते सुरततारतता नितरां भवेत् ॥४०॥

कर्क राशि में बुध बैठा हो तो जातक कुत्सित चरित्र वाला, संगीत प्रिय, राजा का कृपापात्र, परदेशी, और सुरत क्रिया में निरत होता है ॥ ४० ॥

सिंहराशिगतबुधफलम्—

अनृततासहितं विमतिं परं सहजवैरकरं कुरुते नरम् ।
युवतिहर्षपरं शशिनः सुतो हरिगतोऽरिगतोन्नतिदुःखितम् ॥४१॥

सिंह राशि में बुध बैठा हो तो जातक मिथ्या बोलने वाला, दुर्बुद्धि, सहोदर के साथ वैर भाव रखने वाला, स्त्री को आनन्द देने वाला और शत्रुओं की उन्नति से दुःखित होता है ॥ ४१ ॥

कन्याराशिगतबुधफलम्—

सुवचनानुरतश्चतुरो नरो लिखनकर्मपरो हि वरोन्नतिः ।

शशिसुते युवतौ च गते सुखी सुनयनानयनाञ्चलचेष्टितैः ॥४२॥

कन्या राशि में बुध बैठा हो तो जातक सुन्दर बोलनेवाला, चतुर, लेखक, उन्नति शाली और स्त्रियों के कटाक्ष से सुखी होता है ॥४२॥

तुलाराशिगतबुधफलम्—

अनृतवाग्व्ययभाक्खलु शिल्पवित्कुचरिताभिरतिर्बहुजल्पकः ।
व्यसनयुङ्मनुजः सहिते बुधेऽत्र तुलयातुलयात्त्वसता युतः ॥४३॥

तुला राशि में बुध बैठा हो तो जातक मिथ्या बोलने वाला, खर्च करने वाला, शिल्प विद्या को जानने वाला, कुकर्म में मन लगाने वाला, अधिक बोलने वाला, व्यसनी और अत्यन्त पापी होता है॥४३॥

वृश्चिकराशिगतबुधफलम्—

कृपणतातिरतिप्रणयश्रमो विहितकर्मसुखोपहतिर्भवेत् ।
धवलभानुसुतेऽलिगते क्षतिस्त्वलसतो लसतोऽपि च वस्तुनः ॥४४॥

वृश्चिक राशि में बुध बैठा हो तो जातक कृपण, रति क्रिया के लिये अति श्रम करने वाला, किसी कार्य को आरम्भ कर के दुखी होने वाला, और आलस्य से अच्छी वस्तु का भी हानि करने वाला होता है ॥ ४४ ॥

धनूराशिगतबुधफलम्—

वितरणप्रणयो बहुवैभवः कुलपतिश्च कलाकुशलो भवेत् ।
शशिसुतेऽत्र शरासनसंस्थिते विहितया हितया रमयान्वितः ॥४५॥

धनु राशि में बुध बैठा हो तो जातक नम्र, दानी, बहुत विभव से युक्त, अपने कुल में श्रेष्ठ, कलाओं में चतुर और प्रिय स्त्री वाला होता है ॥ ४५ ॥

मकरराशिगतबुधफलम्—

रिपुभयेन युतः कुमतिर्नरः स्मरविहीनतरः परकर्मकृत् ।
मकरगे सति शीतकरात्मजे व्यसनतः स नतः पुरुषो भवेत् ॥४६॥

मकर राशि में बुध बैठा हो तो जातक शत्रुओं से भयभीत, क

बुद्धि, काम रहित, दूसरों का कार्य करने वाला और अभ्यास से नम्र होता है ॥ ४६ ॥

कुम्भराशिगतबुधफलम्—

गृहकलिं कलशे शशिनंदनो वितनुते तनुतां ननु दीनताम् ।
धनपराक्रमधर्मविहीनतां विमतितामतितापितशत्रुभिः ॥ ४७ ॥

कुम्भ राशि में बुध बैठा हो तो जातक घर में कलह करने वाला, कृश, दीन, धन पराक्रम धर्म से हीन, कुबुद्धि और शत्रुओं से पीड़ित होता है ॥ ४७ ॥

मीनराशिगतबुधफलम्—

परधनादिकरक्षणतत्परो द्विजसुरानुचरो हि नरो भवेत् ।
शशिसुते पृथुरोमसमाश्रिते सुवदनावदनानुविलोकनः ॥ ४८ ॥

मीन राशि में बुध बैठा हो तो जातक पराये धन का रक्षा करने वाला, देवता ब्राह्मण का भक्त और सुन्दरी स्त्री का मुख देखने वाला होता है ॥ ४८ ॥

मेषराशिगतगुरुफलम्—

बहुतरां कुरुते समुदारतां सुरचितां निजवैरिसमुन्नतिम् ।
विभवतां च मरुत्पतिपूजितः क्रियगतोयगतोरुमतिप्रदः ॥ ४९ ॥

मेष राशि में बृहस्पति बैठा हो तो जातक अधिक उदार, अपने शत्रुओं की भी उन्नति करने वाला, विभव से युक्त और सुन्दर बुद्धि वाला होता है ॥ ४९ ॥

वृषराशिगतगुरुफलम्—

द्विजसुरार्चनभक्तिविभूतयो द्रविणवाहनगौरवलब्धयः ।
सुरगुरौ वृषभे बहुवैरिणश्चरणगा रणगाढपराक्रमैः ॥ ५० ॥

वृष राशि में बृहस्पति बैठा हो तो जातक द्विज देव का भक्त, धन, वाहन और गौरव का लाभ करने वाला तथा युद्ध में अपने पराक्रम से शत्रुओं को वश में लाने वाला होता है ॥ ५० ॥

मिथुनराशिगतगुरुफलम्—

कवितया सहितः प्रियवाक्छुचिर्विमलशीलरुचिर्निपुणः पुमान् ।
मिथुनगे सति देवपुरोहिते सहितता हिततासहितैर्भवेत् ॥ ५१ ॥

मिथुन राशि में बृहस्पति बैठा हो तो जातक कविता बनाने वाला, प्रिय बोलने वाला, पवित्र, सुशील, कुशल, और मित्रोंसे युक्त होता है ५१

कर्कराशिगतगुरुफलम्—

बहुधनागमनो मदनोन्नतिर्विविधशास्त्रकलाकुशलो नरः ।
प्रियवचाश्च कुलीरगते गुरौ चतुरगैस्तुरगैः करिभिर्युतः ॥ ५२ ॥

कर्क राशि में बृहस्पति बैठा हो तो जातक बहुत धन की आमदनी करने वाला, कामी, अनेक शास्त्र में कुशल, प्रिय बोलने वाला और सुन्दर हाथी घोड़ा रखने वाला होता है ॥ ५२ ॥

सिंहराशिगतगुरुफलम्—

अचलदुर्गवनप्रभुतोर्जितो दृढतनुर्ननु दानपरो भवेत् ।
अरिविभूतिहरो हि नरो युतः सुवचसा वचसामधिपे हरौ ॥५३॥

सिंह राशि में बृहस्पति बैठा हो तो जातक पर्वत, दुर्ग, वन का अधिपति, बलवान्, कठोर शरीर वाला, दानी, शत्रुओं का धन हरने वाला, और प्रिय बोलने वाला होता है ॥ ५३ ॥

कन्याराशिगतगुरुफलम्—

कुसुमगन्धसदम्बरशालिता विमलता धनदानमतिर्भृशम् ।
सुरगुरौ सुतया सति संयुते रुचिरता चिरतापितशत्रुता ॥५४॥

कन्या राशि में बृहस्पति बैठा हो तो जातक इतर, वस्त्र से युक्त, निर्मल, अति दानी, सुन्दर और शत्रुओं को पीड़ित करनेवाला होता है ॥

तुलाराशिगतगुरुफलम्—

श्रुततपोजपहोममहोत्सवे द्विजसुरार्चनदानमतिर्भवेत् ।
वणिजि जन्मनि चित्रशिखण्डिजे चतुरतातुरताहिततारिता ॥५५॥

तुला राशि में बृहस्पति बैठा हो तो जातक शास्त्र श्रवण करने

वाला, तप करने वाला, जप होम यज्ञ करने वाला, ब्राह्मण देव का पूजक, दानी, चतुर और आतुर होकर शत्रु को मारने वाला होता है॥५५॥

वृश्चिकराशिगतगुरुफलम्—

धनविनाशनदोषसमुद्भवैः कृशतरो बहुदम्भपरो नरः।
अलिगते सति देवपुरोहिते भवनतो वनतोऽपि च दुःखभाक्॥५६॥

वृश्चिक राशि में बृहस्पति बैठा हो तो जातक पहले धन का अपव्यय कर पश्चात्ताप से कृश शरीर वाला, बहुत छली और घर बाहर सर्वत्र दुख भोगने वाला होता है ॥ ५६ ॥

धनूराशिगतगुरुफलम्—

वितरणप्रणयो बहुवैभवो ननु धनान्यथ वाहनसञ्चयः।
धनुषि देवगुरौ हि मतिर्भवेत्सुरुचिरा रुचिराभरणानि च ॥५७॥

धनु राशि में बृहस्पति बैठा हो तो जातक दानी, अनेक विभव से युक्त, वाहनों से युक्त, सुन्दर बुद्धि और सुन्दर भूषणों से युक्त होता है५७

मकरराशिगतगुरुफलम्—

हतमतिः परकर्मकरो नरः स्मरविहीनतरो बहुरोषभाक्।
सुरगुरौ मकरे विदधाति नो जनमनो न मनोरथसाधनम् ॥५८॥

मकर राशि में बृहस्पति बैठा हो तो जातक कुबुद्धि, दूसरों का कार्य करने वाला, काम रहित, अधिक क्रोधी और मनोरथ से हीन होता है ॥ ५८ ॥

कुंभराशिगतगुरुफलम्—

गदयुतः कुमतिर्द्रविणोज्झितः कृपणतानिरतः कृतकिल्बिषः।
घटगते सति देवपुरोहिते कदशनो दशनोदरपीडितः ॥५९॥

कुम्भ राशि में बृहस्पति बैठा हो तो जातक रोग युक्त, कुबुद्धि, निर्धन, कृपण, पापी, कुत्सित अन्न खाने वाला और दाँत पेट में रोग युक्त होता है ॥ ५९ ॥

मीनराशिगतगुरुफलम्—

नृपकृपाप्तधनो मदनोन्नतिः सदनसाधनदानपरो नरः।

सुरगुरौ तिमिना सहिते सतामनुमतोनुमतोत्सवदो भवेत् ॥६०॥

मीन राशि में बृहस्पति बैठा हो तो जातक राजा की दया से धन पाने वाला, कामी, घर बनाने वाला, दानी, सज्जनों का प्रिय और नम्र होता है ॥ ६० ॥

मेषराशिगतभृगुफलम्—

भवनवाहनवृन्दपुराधिपः प्रचलनप्रियताविहितादरः ।
यदि च सज्जनने हि भवेदविः कविग्रुतो वियुतो रिपुभिर्नरः ॥६१॥

मेष राशि में शुक्र बैठा हो तो जातक गृह, वाहन और पुरों का अधिपति, भ्रमण प्रिय, आदर युक्त और शत्रुओं से रहित होता है ॥६१॥

वृषराशिगतशुक्रफलम्—

बहुकलत्रसुतोत्सवगौरवं कुसुमगन्धरुचिः कृषिनिर्मितः ।
वृषगते भृगुजे कमला भवेदविरला विरला रिपुमण्डली ॥ ६२ ॥

वृष राशि में बृहस्पति बैठा हो तो जातक अनेक स्त्री पुत्रों के द्वारा उत्सव से युक्त, पुष्प गन्ध में रुचि रखने वाला, खेती करने वाला, स्थिर लक्ष्मी वाला और अल्प शत्रु वाला होता है ॥ ६२ ॥

मिथुनराशिगतशुक्रफलम्—

भृगुसुते जनने मिथुनस्थिते सकलशास्त्रकलामलकौशलम् ।
सरलता ललिता किल भारती सुमधुरा मधुरान्नरुचिर्भवेत् ॥६३॥

मिथुन राशि में शुक्र हो तो जातक अनेक विद्या और कलाओं में कुशल, सरल प्रकृति वाला, सुन्दर, कोमल वाणी बोलने वाला और मिष्टान्न खाने वाला होता है ॥ ६३ ॥

कर्कराशिगतशुक्रफलम्—

द्विजपतेः सदने भृगुनंदने विमलकर्ममतिर्गुणसंयुतः ।
जनमलं सकलं कुरुते वशं सुकलया कलयापि गिरा नरः ॥६४॥

कर्क राशि में शुक्र हो तो जातक उत्तम कार्य करने वाला, गुणी और अपनी मधुर वाणी से जनों को वश में करने वाला होता है ॥६४॥

सिंहराशिगतशुक्रफलम्—

हरिगते सुरवैरिपुरोहिते युवतितो धनमानसुखानि च ।
निजजनव्यसनान्यपि मानवस्त्वहिततो हिततोषमनुव्रजेत् ॥६५॥

सिंह राशि में शुक्र बैठा हो तो जातक स्त्री के द्वारा धन, मान और सुख पाने वाला, अपने जनों का अहित तथा शत्रुओं का हित करने वाला होता है ॥ ६५ ॥

कन्याराशिगतशुक्रफलम्—

भृगुसुते सति कन्यकयान्विते बहुधनी खलु तीर्थमनोरथः ।
कमलया पुरुषोऽतिविभूषितस्त्वमितया मितयापि गिरान्वितः ॥६६॥

कन्या राशि में शुक्र हो तो जातक अधिक धनी, तीर्थ करने वाला, अमित लक्ष्मी से शोभित और थोड़ा बोलने वाला होता है ॥ ६६ ॥

तुलाराशिगतशुक्रफलम्—

कुसुमवस्त्रविचित्रधनान्वितो बहुगमागमनो ननु मानवः ।
जननकालतुलाकलनं यदा सुकविना कविनायकतां व्रजेत् ॥६७॥

तुला राशि में शुक्र हो तो जातक पुष्प, वस्त्र और अनेक प्रकार के धनों से युक्त, अनेक जनों के आवागमन से युक्त और कवियों में श्रेष्ठ होता है ॥ ६७ ॥

वृश्चिकराशिगतशुक्रफलम्—

कलहघातमतिं जननिन्द्यतां प्रजननामयतां नियतं नृणाम् ।
व्यसनतां जननेऽलिसमाश्रितः कविरलं विरलं कुरुते धनम् ॥६८॥

वृश्चिक राशि में शुक्र हो तो जातक लड़ाई में दूसरे को मारने वाला, जनों में निन्दित, जन्म से ही रोगी, व्यसनी और थोड़े धन वाला होता है ॥ ६८ ॥

धनूराशिगतशुक्रफलम्—

युवतिसूनुधनागमनोत्सवं सचिवतां नियतं शुभशीलताम् ।
जनुषि कार्मुकगः कुरुते कविः क्वचिरतिं विरतिं चिरतो नृणाम् ।६९।

धनु राशि में शुक्र हो तो जातक स्त्री, पुत्र, धन का आगमन इन से सुखी, राजमन्त्री, सुन्दर स्वभाव वाला, कवियों का स्नेही, स्वयं काव्य कर्ता और दीर्घायु होता है ॥ ६९ ॥

मकरराशिगशुक्रफलम्—

अभिरतिस्तु जराङ्गनया नृणां व्ययभयं कृशतामतिचिंतया ।
भृगुसुते मृगराजगते सदा कविजने विजनेपि मनोभवेत् ॥ ७० ॥

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक वृद्धा स्त्री से प्रेम करने वाला, खर्च करने में भयभीत, अत्यन्त चिन्ता से दुर्बल और एकान्त का प्रेमी होता है ॥ ७० ॥

कुम्भराशिगतशुक्रफलम्—

उशनसः कलशे जनुषि स्थितौ वसनभूषणभोगविहीनता ।
विमलकर्ममहालसता नृणामुपगतापगतापि रमा भवेत् ॥ ७१ ॥

कुम्भ राशि में शुक्र हो तो जातक वस्त्र, भूषण के भोग से रहित, अच्छा काम करने में आलसी और आई हुई सम्पत्ति को भी नाश करने वाला होता है ॥ ७१ ॥

मीनराशिगतशुक्रफलम्—

भृगुसुते सति मीनसमन्विते नरपतेर्विभुता विनता भवेत् ।
रिपुसमाक्रमणं द्रविणागमो वितरणे तरणे प्रणयो नृणाम् ॥७२॥

मीन राशि में शुक्र हो तो जातक राजा से ऐश्वर्य पाने वाला, नम्र, शत्रुओं पर आक्रमण करने वाला, धन का लाभ करने वाला, दानी और जल में तैरने की अभिलाषा रखने वाला होता है ॥ ७२ ॥

मेषराशिगतशनिफलम्—

धनविहीनतया तनुता तनौ जनविरोधतयेप्सितनाशनम् ।
क्रियगतेर्कसुते स्वजनैर्नृणां विपगताशगताशमनं भवेत् ॥७३॥

मेष राशि में शनि हो तो जातक निर्धन, दुर्बल, जनों में विरोध के कारण अभीष्ट वस्तु का भी नाश करने वाला, अपने जनों से विरोध रखने वाला और शान्ति रहित होता है ॥ ७३ ॥

वृषराशिगतशनिफलम्—

युवतिसौख्यविनाशनतां भृशं पिशुनसङ्गरुचिं मतिविच्युतिम् ।
तनुभृतां जनने वृषभस्थितो रविसुतो विसुतोत्सवमादिशेत् ॥७४॥

वृष राशि में शनि हो तो जातक स्त्री सुख से हीन, चुगलों के साथ रहने वाला, बुद्धि हीन और पुत्र सुख से रहित होता है ॥ ७४ ॥

मिथुनराशिगतशनिफलम्—

प्रचलनं विमलत्वविहीनतां भवनबाह्यविलासकुतूहलम् ।
व्रजति ना मिथुनोपगते सुते दिनविभोर्न विभोर्लभते सुखम् ॥७५॥

मिथुन राशि में शनि हो तो जातक भ्रमणशील, मलिन, अपने घर के बाहर विलास करने वाला और बड़ों के सुख से हीन होता है ॥७५॥

कर्कराशिगतशनिफलम्—

शशिनिकेतनगामिनि भानुजे तनुभृतां कृशता भृशमंबया ।
वरविलासकरा कमला भवेद्विकलं विकलं रिपुमण्डलम् ॥७६॥

कर्क राशि में शनि हो तो जातक माता के चरित्र से दुर्बल, लक्ष्मी का सुख भोगने वाला, और शत्रुओं को जीतने वाला होता है ॥ ७६ ॥

सिंहराशिगतशनिफलम्—

लिपिकलाकुशलश्च कलिप्रियो विमलशीलविहीनतरो नरः ।
रविसुते रविवेश्मनि संस्थिते हतनयस्तनयप्रमदार्तिभाक् ॥७७॥

सिंह राशि में शनि हो तो जातक लेख करने में चतुर, झगड़ालू, दुष्ट स्वभाव वाला, अन्यायी और पुत्र, स्त्री के सम्बन्ध से दुखी होता है ॥ ७७ ॥

कन्याराशिगतशनिफलम्—

विहितकर्मणि शर्म कदापि नो विनयतोपहतिश्चलसौहृदम् ।
रविसुते सति कन्यकयान्विते विमलताबलतासहितो भवेत् ॥७८॥

कन्या राशि में शनि हो तो जातक कार्य को आरम्भ कर असफल होने वाला, नम्रता से रहित, चलमैत्री वाला, स्वच्छ और बली होता है ॥ ७८ ॥

तुलाराशिगतशनिफलम्—

निजकुलेऽवनिपालबलान्वितः स्मरकलाकुलितो बहुदानदः।
जलजिनीशसुते हि तुलान्विते नृपकृतोपकृतो हि नरो भवेत् ॥७९॥

तुला राशि में शनि हो तो जातक अपने कुल में राजा के समान बली, कामी, बहुत दानी और राजा से उपकृत होता है ॥ ७९ ॥

वृश्चिकराशिगतशनिफलम्—

विषहुताशनशस्त्रभयान्वितो धनविनाशनवैरिगदार्दितः।
विकलता कलितालिसमन्विते रविसुते विसुतेष्टसुखो नरः ॥ ८० ॥

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक विष, अग्नि और शस्त्र से भय पाने वाला, धन का नाश करने वाला, शत्रु रूप रोग से पीड़ित, विकल तथा पुत्र के द्वारा अभिलषित सुख न पाने वाला होता है ॥८०॥

धनूराशिगतशनिफलम्—

रविसुतेन युते सति कार्मुके सुतगणैः परिपूर्णमनोरथः।
प्रथितकीर्तिसुवृत्तपरो नरो विभवतो भवतोषयुतो भवेत् ॥ ८१ ॥

धनु राशि में शनि बैठा हो तो जातक पुत्रों से पूर्ण मनोरथ वाला, प्रसिद्ध यश वाला, सदाचारी और ऐश्वर्य से संसार में सन्तुष्ट मन वाला होता है ॥ ८१ ॥

मकरराशिगतशनिफलम्—

नरपतेरिव गौरवतां व्रजेद्रविसुते मृगराशिगते नरः।
अगुरुणा कुसुमैर्मृगजातया विमलया मलयाचलजैः सुखम्॥ ८२ ॥

मकर राशि में शनि हो तो जातक राजा के तुल्य गौरव से युक्त, अगर, पुष्प, कस्तूरी, चन्दन इन सबों से सुख पाने वाला होता है ॥८२॥

कुम्भराशिगतशनिफलम्—

ननु जितो रिपुभिर्व्यसनावृत्तो विहितकर्मपराङ्मुखतान्वितः।
रविसुते कलशेन समन्विते सुसहितः सहितः प्रचयैर्नरः ॥ ८३ ॥

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक शत्रुओं से पराजित, व्यसनी,

आरम्भ किये हुए कार्यों से विमुख, जनों से युक्त, और मित्रों से सहित होता है ॥ ८३ ॥

मीनराशिगतशनिफलम्—

विनयताव्यवहारसुशीलतासकललोकगृहीतगुणो नरः ।
उपकृतानिपुणस्तिमिसंश्रिते रविभवे विभवेन समन्वितः ॥ ८४ ॥

मीन राशि में स्थित शनि हो तो जातक विनयी, व्यवहारी, सुशील, सर्व का स्नेही और विभव से युक्त होता है ॥ ८४ ॥

फले न्यूनाधिकत्वमाह—

बलान्विते राशिपतौ च राशौ खेटेऽथ वा राशिफलं समग्रम् ।
नीचोच्चगेहास्तमयादिभावैर्न्यूनाधिकत्वं परिकल्पनीयम् ॥ ८५ ॥

राशि और राशि का स्वामी ग्रह दोनों प्रबल हों तो कथित राशि फल समग्र देते हैं। नीच, उच्च, गृह, अस्त आदि स्थानों में राशिपति के रहने से फल में न्यूनाधिक्य कल्पना करनी चाहिये ॥ ८५ ॥

शुभाशुभज्ञानार्थं शनिचक्रं विलिख्यते—

नराकारं लिखेच्चक्रं शनिचक्रं तदुच्यते ।
वेदितव्यं फलं तस्मान्मानवानां शुभाशुभम् ॥ १ ॥

जन्मर्क्षतो यत्र च कुत्र संस्थं मित्रस्य पुत्रं प्रथमं विदित्वा ।
चक्रे नराख्ये खलु जन्मधिष्ण्याद्विन्यस्य भानि प्रवदेत्फलानि ॥२॥

नराकार चक्र लिख कर जातक का शुभाशुभ फल ज्ञान करना चाहिये, इस को शनि चक्र कहते हैं। शनि चक्र में जन्म नक्षत्र से लेकर सब नक्षत्रों को आगे कथित श्लोक के रीति से न्यास कर शनि का नक्षत्र जिस अङ्ग में पड़े उस के अनुसार फल समझना चाहिये॥ १-२ ॥

नराकारशनिचक्रे नक्षत्रन्यासमाह—

नक्षमेकं च शिरोविभागे मुखे लिखेत्त्रीणि युगं च गुह्ये ।
नेत्रे च नक्षत्रयुगं हृदिस्थं भपञ्चकं वामकरे चतुष्कम् ॥ ३ ॥

वामे च पादे त्रितयं हि भानां भानां त्रयं दक्षिणपादसंस्थम् ।
चत्वारि ऋक्षाणि च दक्षिणाख्ये पाणौ प्रणीतं मुनिनारदेन ॥ ४ ॥

जन्म नक्षत्र से लेकर १ नक्षत्र शिर में, ३ नक्षत्र मुख में, २ नक्षत्र लिङ्ग में, २ नक्षत्र नेत्रों में ५ नक्षत्र हृदय में, ४ नक्षत्र बायें हाथ में, ३ नक्षत्र बायें पैर में, ३ नक्षत्र दहिने पैर में और ४ नक्षत्र दहिने हाथ में स्थापन करना चाहिये, यह नारद मुनि ने कहा है ॥ ३ ४ ॥

क्रमान्नक्षत्रन्यासेन शनिनक्षत्रफलम्—

रोगो लाभो हानिरर्थाप्तिश्च सौख्यं बन्धः पीडा संप्रयाणं च लाभः ।
मन्दे चक्रे मार्गगे कल्पनीयं तद्वैलोम्याच्छीघ्रगे स्युः फलानि ॥५॥

नराकार शनि चक्र में शनि नक्षत्र शिर में पड़े तो रोग, मुख में पड़े तो लाभ, लिङ्ग में पड़े तो हानि, नेत्र में पड़े तो धन का लाभ, हृदय में पड़े तो सौख्य, बायें हाथ में पड़े तो बन्धन, बायें पैर में पड़े तो पीड़ा, दहिने पैर में पड़े तो यात्रा और दहिने हाथ में पड़े तो लाभ कराता है ॥ ५ ॥

उदाहरण—

जैसे किसी का जन्म नक्षत्र उत्तरभाद्र और शनि का नक्षत्र विशाखा है तो जन्म नक्षत्र उत्तरभाद्र से विशाखा तक गिनने से १८ संख्या हुई। शनि चक्र में १८ वाँ नक्षत्र बायें पैर में है, अतः "रोगो हानिः" इत्यादि के अनुसार इस जातक को विशेष कर अपने जीवन में पीड़ा होनी चाहिये।

सर्वतोभद्रचक्रम्—

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि चक्रं त्रैलोक्यदीपकम् ।
विख्यातं सर्वतोभद्रं सद्यः प्रत्ययकारकम् ॥ १ ॥

इस के अनन्तर तीनों लोकों को प्रकाश करने वाला, शीघ्र विश्वास कराने वाला सर्वतोभद्र नामक चक्र को कहते हैं ॥ १ ॥

चक्रप्रकारमाह—

याम्योत्तराः प्रागपराश्च कोष्ठा नवात्र चक्रे सुधिया विधेयाः ।

स्वरक्षवर्णादिकमत्र लेख्यं प्रसिद्धभावान्न मया तदुक्तम् ॥ २ ॥

उत्तर, दक्षिण और पूर्व, पश्चिम के क्रम से नव कोष्ठ का एक चक्र बनावे, उस में स्वर, वर्ण, नक्षत्र, तिथि, वार और राशि लिख कर वक्ष्य माण रीति के अनुसार फल जानना चाहिये । प्रसिद्ध होने के कारण चक्र में इन का न्यास प्रकार मैंने नहीं बताया ॥ २ ॥

सर्वतोभद्रचक्रम्—

अ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	ऽऽश्ले.	आ
भ.	ठ.	अ.	व.	क.	ह.	ड.	ऊ.	म.
अ.	ल.	लृ.	वृ.	मि.	कर्क	लृ.	म.	पू. फा.
रे.	च.	मे.	ओ.	१।६।११	औ.	सिं.	ट.	उ. फा.
उ. भा.	द.	मी.	४।१४।९	५।१०।१५	२,७।१२	क.	प.	ह.
पू. भा	स.	कुं.	अः	३।८।१३	अं.	तु.	र.	चि.
श.	ग.	ऐ.	म.	ध.	वृश्चि.	ए.	त.	स्वा.
ध.	ऋ.	ख.	ज.	म.	य.	न.	ऋ.	वि.
ई.	श्र.	अ.	उ. षा.	पू. षा.	मू.	ज्ये.	अ.	इ.

अथ पापग्रहवेधफलमाह—

भ्रमो भवेद्भेऽक्षरजे च हानिर्व्याधिः स्वरे भीश्च तिथौ निरुक्ता ।
राशौ च वेधे सति विघ्नमेव जन्तुः कथं जीवति पञ्चवेधे ॥ ३ ॥

जन्म नक्षत्र में पाप ग्रह का वेध हो तो भ्रम, नाम के अक्षर में वेध हो तो हानि, स्वर में वेध हो तो रोग, तिथि में वेध हो तो भय, राशि में वेध हो तो विघ्न होता है ॥

यदि जन्म नक्षत्र आदि पाचों को पाप ग्रह वेधे तो वह मनुष्य कैसे जीवित रह सकता है ॥ ३ ॥

वेधप्रकारमाह—

भरण्यकारौ वृषभं च नन्दां भद्रां तकारं श्रवणं विशाखाम् ।
तुलां च विध्येदनलर्क्षसंस्थो ग्रहोऽत्र चक्रं गदितं स्वरज्ञैः ॥ ४ ॥
वकारमौकारमुकारदास्रे स्वातीं रकारम्मिथुनञ्च कन्याम् ।
तथाभिजित्संज्ञकभं च विध्येद्ब्रह्मर्क्षसंस्थो हि नभश्चरेन्द्रः ॥ ५ ॥
कर्कं ककारं च हरिं पकारं चित्रां च पौष्णं च तथा लकारम् ।
अकारकं वैश्वभमत्र विध्येदलं नभोमण्डलगो मृगस्थः ॥ ६ ॥
एवं वेधः सर्वतोभद्रचक्रे सर्वर्क्षेभ्यश्चिंतनीयः सुधीभिः ।
दद्याद्वेधः सत्फलं सौम्यजातोऽत्यंतं कष्टं दुष्टवेधः करोति ॥ ७ ॥
यस्मिन्नृक्षे संस्थितो वेधकर्ता पापः खेटः सोऽन्यभं याति यस्मिन् ।
काले तस्मिन्मङ्गलं पीडितानां प्रोक्तं सद्भिर्नान्यथास्यात्कदाचित् ॥ ८ ॥

इस चक्र में तिरछा और सम्मुख वेध होता है। अतः कृत्तिका नक्षत्र में स्थित ग्रह हो तो भरणी नक्षत्र, अकार, वृष राशि, नन्दा, भद्रा तिथि, तकार, श्रवणा, विशाखा नक्षत्र, तुला राशि को वेध करता है।

रोहिणी नक्षत्र में स्थित ग्रह वकार, औकार, उकार, रकार, अश्विनी स्वाती, अभिजित् नक्षत्र, मिथुन, कन्या राशि को वेध करता है।

मृगशिरा में स्थित ग्रह हो तो कर्क राशि, ककार, सिंह राशि, पकार, चित्रा, रेवती नक्षत्र, लकार, अकार, उत्तराषाढ नक्षत्र को वेध करता है। इस तरह सर्वतोभद्र चक्र में सब नक्षत्रों में वेध का विचार करना चाहिये। शुभ ग्रहों का वेध हो तो शुभ फल और पाप ग्रहों का वेध हो तो अशुभ फल देता है ॥ ४-७ ॥

उदाहरण—यहाँ जन्म नक्षत्र उत्तराभाद्रपदा, तृतीया तिथि, मीन राशि, दकार नाम का वर्ण, उकार स्वर है।

तथा धनिष्ठा में सूर्य, उत्तराभाद्र में चन्द्र, मूल में मङ्गल, उत्तराभाद्र में बुध, श्रवणा में गुरु, उत्तराषाढ में शुक्र और शनि विशाखा में है।

अब यहाँ देखना चाहिए कि जन्म नक्षत्र आदि पर शनि का वेध है या नहीं तो शनि नक्षत्र उत्तराभाद्र पदा से हस्त नक्षत्र, सकार, ऐकार, जकार, पूर्वाषाढ नक्षत्र, चकार, लृकार, वकार, आर्द्रा नक्षत्र, इनमें वेध है। किन्तु इन में जन्म नक्षत्र आदि कोई भी न हीं पड़ता है, अतः वेध नहीं हुआ। इसी तरह सूर्य आदि ग्रहों से वेध विचार कर फल समझना चाहिए॥

जिस किसी नक्षत्र में स्थित हो कर पाप ग्रह यदि जन्म नक्षत्र आदि को वेध करे तो वह पीड़ा देने वाला होता है। किन्तु जब वह पाप ग्रह विद्ध नक्षत्र को त्याग कर गोचर वश अन्य नक्षत्र में जाता है तो उस समय उस मनुष्य की पीड़ा नाश कर कुशल करता है ॥८॥

सूर्यकालानलचक्रम्—

सूर्यकालानलं चक्रं स्वरशास्त्रोदितं हि यत्।
तदहं विशदं वक्ष्ये चमत्कृतिकरं परम् ॥ १ ॥
त्रिशूलकाग्राः सरलाश्च तिस्रः किलोर्ध्वरेखाः परिकल्पनीयाः।
रेखात्रयं मध्यगतं च तत्र द्वे द्वे च कोणोपरिगे विधेये ॥ २ ॥
त्रिशूलकोणांतरगान्यरेखा तदग्रयोः शृंगयुगं विधेयम्।
मध्ये त्रिशूलस्य च दण्डमूलात्सव्येन भान्यर्कभतोऽभिजिच्च ॥ ३ ॥

अब स्वर शास्त्र में वर्णित चमत्कारी सूर्य कालानल चक्र को मैं विस्तार पूर्वक वर्णन करता हूं। पहिले ऊर्ध्वाधर तीन सीधी रेखा लिख कर उन के अग्र भाग में त्रिशूल का आकार बनावें फिर मध्य भाग में तीन रेखा तिरछी लिखे फिर एक कोण से सम्मुख स्थित अन्य कोण तक दो दो रेखा बनावें। फिर त्रिशूल और कोण के मध्य में एक रेखा के अग्र भाग में दो शृङ्ग बनावे। इस तरह सूर्य-कालानल चक्र बन जाता है।

अब जिस नक्षत्र में तात्कालिक सूर्य स्थित हो उस नक्षत्र को मध्य वाले त्रिशूल के मूल में लिख कर अभिजित् सहित २८ नक्षत्रों को क्रम से लिख कर वक्ष्यमाण रीति से फल समझना चाहिये ॥१-३॥

सूर्यकालानलचक्रम्—
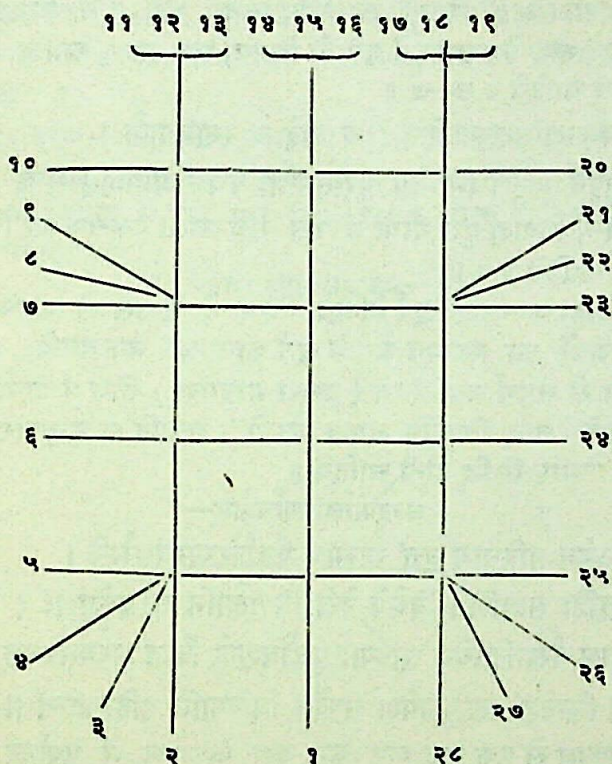
सूर्यकालानलचक्रविचारः—

स्वनामभं यत्र गतं च तत्र प्रकल्पनीयं सदसत्फलं हि ।
तलस्थऋक्षत्रितये क्रमेण चिन्ता वधश्च प्रतिवन्धनानि ॥ ४ ॥
शृङ्गद्वये स्वच भवेद्धि भङ्गं शूलेषु मृत्युः परिकल्पनीयः ।

शेषेषु धिष्ण्येषु जयश्च लाभोऽभीष्टार्थसिद्धिर्बहुधा नराणाम् ॥ ५ ॥

अब अपना नाम नक्षत्र (जन्म नक्षत्र) जहां पड़े तदनुसार शुभाशुभ फल समझना चाहिये।

जैसे नीचे के ३ नक्षत्रों में नाम नक्षत्र पड़े तो क्रम से चिन्ता, वध, बन्धन; दोनों शृङ्गों में पड़े तो रोग, तथा भङ्ग, तीनों त्रिशूलों में पड़े तो मरण, शेष स्थान में पड़े तो विजय, सुख लाभ, अभीष्ट सिद्धि समझना चाहिये ॥ ४—५ ॥

श्रीसूर्यकालानलचक्रमेतद्वदे च वादे च रणप्रयाणे।

प्रयत्नपूर्वं ननु चिन्तनीयं पुरातनानां वचनं प्रमाणम् ॥ ६ ॥

रोग, विवाद, युद्ध यात्रा में इस सूर्य काला नलचक्र का विचार करना चाहिये ॥ ७ ॥

उदाहरण— यहाँ सूर्य धनिष्ठा नक्षत्र में है उस से आरम्भ कर सब नक्षत्रों का स्थापन कर के सूर्य कालानल चक्र बनावे, उस में धनिष्ठा से चतुर्थ जन्म नक्षत्र (उत्तरा भाद्रपदा) कोण में पड़ता है। इस लिये "शेषेषु धिष्ण्येषु जयश्च लाभो" इत्यादि के अनुसार जय, लाभ, अभीष्ट सिद्धि होनी चाहिये ॥

चन्द्रकालानलचक्रम्—

कर्काटकेन प्रविधाय वृत्तं तस्मिंश्च पूर्वापरयाम्यसौम्ये।

वृत्ताद्बहिः सञ्चलिते विधेये रेखे त्रिशूलानि तदग्रकेषु ॥ १ ॥

कोणाश्च रेखाद्वितयेन साध्याः पूर्वत्रिशूले किल मध्यसंस्थम्।

चान्द्रं लिखेद्भं तदनुक्रमेण सव्येन धिष्ण्यानि बहिस्तदन्ते ॥ २ ॥

प्रकाल से एक वृत्त बना कर उस के मध्य में पूर्वापर और दक्षिणोत्तर रेखा वृत्त के बाहर तक लिखनी चाहिये। उन के दोनों अग्र भागों में त्रिशूल का चिह्न बनाना चाहिये। फिर अग्नि कोण से वायु कोण तक, ईशान कोण से नैर्ऋत्य कोण तक दो रेखा लिखनी चाहिये। पूर्व दिशा के त्रिशूल के मध्य में चन्द्र नक्षत्र स्थापन कर उस के बाँई ओर के क्रम से १ नक्षत्र बाहर और १ नक्षत्र चक्र के

भीतर लिखते हुए सब नक्षत्रों को लिखना चाहिए। इस तरह चन्द्र कालानल चक्र बन जाता है।

अथ चन्द्रकालानलनक्षत्रफलम्—

कालानलं चक्रमिदं हि चान्द्रं रणप्रयाणादिषु जन्मभं चेत्।
त्रिशूलसंस्थं निधनाय नूनमन्तर्बहिःस्थं तु शुभप्रदं हि॥ ३॥

जन्म नक्षत्र त्रिशूल में पड़े तो मृत्यु, अन्यत्र पड़े तो शुभ होता है॥ १—३॥

उदाहरण—जैसे पूर्वोक्त उदाहरण में चन्द्र नक्षत्र मूल से जन्म नक्षत्र उत्तराभाद्रपदा तक गिनने से ८ संख्या आई। यह बाँई तरफ की त्रिशूल में पड़ा इस लिये इस की मृत्यु होनी चाहिए। हुआ भी ऐसा ही।

चन्द्रकालानलचक्रम्—
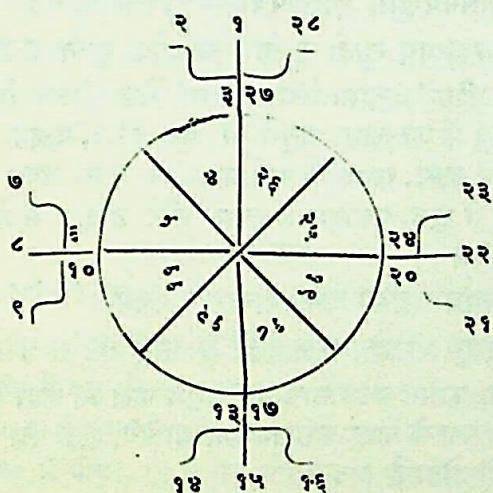
अथ गोचरफलम्—

नृजन्मराशेः खचरप्रचारैर्यद्गोचरैः सांहितिकैः प्रणीतम्।
स्थूलं फलं तत्किल संप्रवच्मि बालावबोधप्रदमभ्रगानाम्॥ १॥

मनुष्यों की जन्म राशि से ग्रहों के सञ्चार वश जो संहिताकारों ने स्थूल गोचर फल कहा है, बालकों के बोध के लिये वह फल मैं कहता हूँ ॥ १ ॥

गोचरेण द्वादशधा सूर्यफलम्—

गतिर्भयं श्रीर्व्यसनं च दैन्यं शत्रुक्षयो यानमतीव पीडा ।
कान्तिक्षयोऽभीष्टवरिष्ठसिद्धिर्लाभो व्ययोऽर्कस्य फलं क्रमेण ॥ २॥

जन्म राशि में सूर्य स्थित हो तो यात्रा, द्वितीय में भय, तृतीय में लक्ष्मी, चतुर्थ में दुख, पञ्चम में दैन्य, षष्ठ में शत्रुओं का नाश, सप्तम में यात्रा, अष्टम में अति पीड़ा, नवम में कान्ति का नाश, दशम में अभीष्ट सिद्धि, एकादश में लाभ और द्वादश में हो तो खर्च होता है ॥ २ ॥

गोचरेण द्वादशधा चन्द्रफलम्—

सदन्नमर्थक्षयमर्थलाभं कुक्षिव्यथां कार्यविघातलाभम् ।
वित्तं रुजं राजभय सुखं च लाभं च शोकं कुरुते मृगाङ्कः॥३॥

जन्म राशि में चन्द्रमा स्थित हो तो श्रेष्ठ भोजन, द्वितीय में धन हानि, तृतीय में धन लाभ, चतुर्थ में पेट पीड़ा, पञ्चम में कार्य का नाश, षष्ठ में लाभ, सप्तम में धन, अष्टम में रोग, नवम में राजा का भय, दशम में सुख, एकादश में लाभ और द्वादश में हो तो शोक होता है ॥ ३ ॥

पुत्रधर्मधनस्थस्य चन्द्रस्योक्तमसत्फलम् ।
कलाक्षये परिज्ञेयं कलावृद्धौ तु साधु तत् ॥ ४ ॥

द्वितीय, पञ्चम, नवम चन्द्र का अशुभ फल जो कहा गया है, वह केवल कृष्ण पक्ष के चन्द्र का समझना चाहिये, शुक्ल पक्ष के चन्द्र का शुभ फल ही होता है ॥ ४ ॥

गोचरे भौमफलम्—

भीतिं क्षतिं वित्तमरिप्रवृद्धिमर्थप्रणाशं धनमर्थनाशम् ।
शस्त्रोपघातं च रुजं च रोगं लाभं व्ययं भूतनयस्तनोति ॥ ५ ॥

जन्म राशि में मङ्गल स्थित हो तो भय, द्वितीय में क्षति, तृतीय में धन, चतुर्थ में शत्रु की वृद्धि, पञ्चम में धन नाश, षष्ठ में धन, सप्तम में धन नाश, अष्टम में शस्त्रघात, नवम में रोग, दशम में रोग, एकादश में लाभ, द्वादश में व्यय होता है ॥ ५ ॥

गोचरे बुधफलम्—

वन्धं धनं वैरिभयं धनाप्तिं पीडां स्थितिं पीडनमर्थलाभम् ।
खेदं सुखं लाभमथार्थनाशं क्रमात्फलं यच्छति सोमसूनुः ॥ ६ ॥

जन्म राशि में बुध हो तो बन्धन, २ में धन, ३ में शत्रु का भय, ४ में धन लाभ, ५ में पीड़ा, ६ में स्थिरता ७ में पीड़ा, ८ में धन लाभ, ९ में खेद, १० में सुख, ११ में लाभ और १२ में खर्च होता है ॥ ६ ॥

गोचरे गुरुफलम्—

भीतिं वित्तं पीडनं वैरिवृद्धिं सौख्यं शोकं राजमानं च रोगम् ।
सौख्यं दैन्यं मानवित्तं च पीडां दत्ते जीवो जन्मराशेः सकाशात् ॥७॥

जन्म राशि में गुरु हो तो भय, २ में धन लाभ, ३ में पीड़ा, ४ में शत्रु भय, ५ में सुख, ६ में शोक, ७ में राज सम्मान, ८ में रोग, ९ में सुख, १० में दैन्य, ११ में आदर पूर्वक धन लाभ और १२ में पीड़ा होती है ॥ ७ ॥

गोचरे शुक्रफलम्—

रिपुक्षयं वित्तमतीव सौख्यं वित्तं सुतप्रीतिमरातिवृद्धिम् ।
शोकं धनाप्तिं वरवस्त्रलाभं पीडां स्वमर्थं च ददाति शुक्रः ॥८॥

जन्म राशि में शुक्र हो तो शत्रुनाश, २ में धन, ३ में सुख, ४ में धन, ५ में पुत्र सुख, ६ में शत्रु की वृद्धि, ७ में शोक, ८ में धन लाभ, ९ सुन्दर वस्त्र लाभ, १० में पीड़ा, ११ में धन और १२ में धन होता है ॥ ८ ॥

गोचरे शनिफलम्—

भ्रंशं क्लेशं शं च शत्रुप्रवृद्धिं पुत्रात्सौख्यं सौख्यवृद्धिं च दोषम् ।
पीडां सौख्यं निर्धनत्वं धनाप्तिं नानानर्थं भानुसूनुस्तनोति ॥ ९ ॥

जन्म राशि में शनि हो तो स्थानच्युत, २ में क्लेश, ३ में कुशल,

४ में शत्रु वृद्धि, ५ में पुत्र सुख, ६ में सुख, ७ में दोष, ८ में पीड़ा, ९ में सुख, १० में धन हानि, ११ में धन लाभ और १२ में अनर्थ होता है ॥९॥

गोचरे राहुकेतुफलम्—

हानिं नैःस्वं स्वं च वैरं च शोकं वित्तं वादं पीडनं चापि पापम्।
वैरं सौख्यं द्रव्यहानिं प्रकुर्य्याद्राहुः पुंसां गोचरे केतुरेवम् ॥१०॥

जन्म राशि में राहु या केतु हो तो हानि, २ में निर्धनता, ३ में धन लाभ, ४ में शत्रुता, ५ में शोक, ६ में धन, ७ में बाद विवाद, ८ में पीड़ा, ९ में पाप की वृद्धि, १० में शत्रुता, ११ में सुख और १२ में धन हानि होती है ॥१०॥

गोचरेऽष्टवर्गस्य विशेषतामाह—

राशौ राशौ गोचरे खेचराणामुक्तं पूर्वैर्यत्फलं जन्मराशेः।
तन्मर्त्यानामेकभोत्पत्तिकानां भिन्नं भिन्नं दृश्यतेऽवश्यमेव ॥११॥

ग्रहों के गोचर में जन्म राशि से प्रत्येक राशि का जो फल पूर्वाचार्यों ने कहा है, वह एक राशि वाले मनुष्यों मे ही भिन्न२ देखे जाते हैं॥

फलभेदे हेतुमाह—

यस्मिन्राशौ शीतरश्मिः प्रसूतौ
संस्थः प्रोक्तो जन्मराशिः स एव।
एवं लग्नेनान्विताः सप्त खेटा-
स्ते किं न स्युः प्राणिनां जन्मभानि ॥ १२ ॥

पुंसामतोऽष्टौ किल राशयः स्युः शुभाशुभान्यत्र फलानि तेभ्यः।
ततश्च रेखामिलनान्तरालात्स्पष्टं फलं चाष्टकवर्गयुक्तम् ॥ १३ ॥

मनुष्यों के जन्म काल में जिस राशि में चन्द्रमा बैठा हो उस का जन्म राशि कहते हैं। इसी प्रकार लग्न सहित सातो ग्रह जिन जिन राशियों में हों वे सब जन्म राशि क्यों नहीं होती है। इसलिये पुरुषों की आठ जन्म राशि होती है। उन से शुभाशुभ फल समझ कर शुभ स्थान में रेखा और अशुभ स्थान में बिन्दु देकर दोनों के अन्तर बरा

शुभ या अशुभ फल समझना चाहिये। अर्थात् अन्तए करने से रेखा शेष बचे तो शुभ और विन्दु शेष बचे तो अशुभ फल समझना चाहिये। इस तरह अष्टवर्ग युक्त गोचर फल एकराशि वालों के भी भिन्न २ आवेंगे ॥ १२-१३ ॥

सूर्याष्टकवर्गमाह—

स्वान्मन्दात्कुजतो रविर्मृतितपोलाभार्थकेन्द्रस्थितः
शुक्राद्स्तरिपुव्ययेषु च गुरोर्धर्मारिपुत्राप्तिषु ।
चन्द्रात्प्राप्तिरिपुत्रिखेषु शशिजात्पञ्चत्रिनन्दव्यया-
रिप्राप्त्यम्बगतस्तनोस्त्रिषु सुखोपान्त्यारिरिःफे शुभः ॥ १४ ॥

सूर्य अपने स्थान, शनि और मङ्गल से १। २। ४। ७। ८। ९। १०। ११ इन स्थानों में शुभ फल देते हैं। शुक्र से ६। ७। १२, गुरु से ५। ६। ९। ११, चन्द्रमा से ३। ६। १०। ११, बुध से ३। ५। ६। ९। १०। ११। १२, लग्न से ३। ४। ६। ११। १२ स्थानोंमें शुभ फल देते हैं ॥ १४ ॥

चन्द्राष्टकवर्गमाह—

भौमाद्दुग्लौर्नवधीधनोपचयगः षट्त्र्याप्तिधीस्थोर्कजा-
ल्लग्नाच्चोपचयो रवेरुपचयाष्टास्तेषु शस्तो बुधात् ।
धीरन्ध्रेषु चतुष्टये त्रिषु गुरोः केन्द्राष्टलाभव्यये
स्वादेकोपचयास्तगस्त्रिखभवास्ताम्बुत्रिकोणे भृगोः ॥ १५ ॥

मङ्गल से ९। ५। २। ३। ६। १०। ११, शनि से ६। ३। ११। ,५ लग्न से३। ६। १०। ११, रवि से ३। ६। १०। ११। ८। ७। बुध से ५। ८। १। ४। ७। १०।३, गुरु से १। ४। ७। १०। ८। ११। १२, अपने स्थान से १। ३। ६। १०। ११। ७ और शुक्र से ३। १०। ११। ७। ४। ९। ५ इन स्थानों में चन्द्रमा शुभ फल देता है ॥ १५ ॥

भौमाष्टकवर्गमाह—

स्वाद्भौमोष्ट चतुष्टयायधनगो जीवात्षडायान्त्यखे

चन्द्रादायरिपुत्रिगो भृगुसुतादष्टान्त्यलाभारिगः।
ज्ञात्पञ्चायरिपुत्रिगोऽर्कतनयात्केन्द्राष्टधर्मान्त्यगः
सूर्याच्चोपचयात्मजेषु तनुतस्त्र्यायारिखाद्ये शुभः ॥ १६ ॥

अपने स्थान से ८। १। ४। ७। १०। ११। २, गुरु से ६। ११। १०। १२, चन्द्र से ११। ६। ३, शुक्र से ८। १२। ११। ६, बुध से ५। ११। ६। ३, शनि १। ४। ७। १०। ६। १२, रवि से ६। ३। १०। ११। ५ और लग्न से ३। ११। ६। १०। १ इन स्थानों में मङ्गल शुभ फल देता है ॥ १६ ॥

बुधाष्टकवर्गमाह—

शुक्रादासुतधर्मलाभमृतिगः सौम्यः कुजार्क्योस्तपः
केन्द्रायाष्टधने स्वतोप्युपचयान्त्यैकत्रिकोणे शुभः।
कोणान्त्यारिभवे रवे रिपुभवाष्टान्त्ये गुरोरिन्दुतः
खायाष्टारिसुखार्थगः सुखभवान्त्यैकाङ्कषट्सूदयात् ॥ १७ ॥

शुक्र से १। २। ३। ४। ५। ६। ११। ८, मङ्गल और शनि से ६। १। ४। ७। १०। ८। २, अपने स्थान से ३। ६। १०। ११। १२। १। ५। ६, रवि से ६। ५। १२। ६। ११, गुरु से ६। ११। ८। १२, चन्द्रमा से १०। ११। ६। ४। ५ और लग्न से ४। ११। १२। १। ६। ६ इन स्थानों में बुध शुभ फल देता है ॥ १७ ॥

गुरोरष्टकवर्गमाह—

स्वात्स्वायाष्टत्रिकेन्द्रेस्वनवदशभवारातिधीस्थश्च शुक्राल्लग्ना-
त्केन्द्रायधीषट्स्वनवसु च कुजात्स्वाष्टकेन्द्राय इज्यः।
इन्दोर्धूनार्थकोणात्रिषु सहजनवाष्टायकेन्द्रेषु गोऽर्काज्ज्ञा-
त्कोणेव्यायखाद्याम्बुधिरिपुषु शनेस्त्र्यन्त्यधीषट्सु शस्तः ॥ १८ ॥

अपने स्थान से २। ११। ८। ३। १। ४। ७। १०, शुक्र से २। ६। १०। ११। ६। ५, लग्न से १। ४। ७। १०। ११। ५। ६। २। ६, मङ्गल से २। ८। १। ४। ७। १०। ११, चन्द्रमा से २। ७। ५।

९ । ११, सूर्य से ३ । ६ । ८ । ११ । १ । ४ । ७ । १० । बुध से ६ । ५ । २ । ११ । १० । १ । ४ । ६ और शनि से ३ । १२ । ५ । ६, इन स्थानों में गुरु शुभ फल देता है ॥ १८ ॥

शुक्राष्टकवर्गम्—

खास्तांत्याहितवर्जितेषु तनुतः शुक्रो विनास्तारिखं
चन्द्रात्स्वान्मदनव्ययारिरहितेष्वर्काद्व्ययाष्टाम्तिषु ।
मन्दाद्द्व्येकरिपुव्ययास्तरहितेष्विज्यान्नवायाष्टधीः—
खे ज्ञात्कोणभवत्रिषट्सु भवधीत्र्यन्त्यारिधर्मे कुजात् ॥ १९ ॥

लग्न से १ । २ । ३ । ४ । ५ । ८ । ९ । ११, चन्द्रमा से १ । २ । ३ । ४ । ५ । ८ । ९ । ११ । १२, स्वस्थान से १ । २ । ३ । ४ । ५ । ८ । ९ । १० । ११, रवि से १२ । ८ । ११, शनि से ३ । ४ । ५ । ८ । ९ । १० । ११, गुरु से ९ । ११ । ८ । ५ । १०, बुध से ५ । ९ । ११ । ३ । ६ और मङ्गल से ११ । ५ । ३ । १२ । ६ । ९ इन स्थानों में शुक्र शुभ फल देता है ॥ १९ ॥

शनेरष्टकवर्गम्—

स्वान्मन्दस्त्रिषडायधीषु रवितोष्टायाद्विकेन्द्रे शुभो
भौमात्खायषडन्त्यधीत्रिषु तनोः खायाम्बुषट्त्र्येकगः ।
ज्ञादायारिनवान्त्यखाष्टसु भृगोरन्त्यायषट्संस्थितः
चन्द्रादायरिपुत्रिगः सुरगुरोरन्त्यायधीशत्रुगः ॥ २० ॥

अपने स्थान से ३ । ६ । ११ । ५, रविसे ८ । ११ । २ । १ । ४ । ७ । १०, मङ्गल से १० । ११ । ६ । १२ । ५ । ३, लग्न से १० । ११ । ४ । ६ । ३ । १, बुध से ११ । ६ । ९ । १२ । १० । ८, शुक्र से १२ । ११ । ६, चन्द्रमा से ११ । ६ । ३ और गुरु से १२ । ११ । ५ । ६ इन स्थानों में शनि शुभ फल देता है ॥ २० ॥

स्थानानि यानि प्रतिपादितानि शुभानि चान्यान्यशुभानि नूनम् ।
तयोर्वियोगादधिकं फलं यत्स्वराशितो यच्छति तद्ग्रहेन्द्रः ॥२१॥

लग्न सहित सातों ग्रहों के जो स्थान कहे गये हैं वे शुभ और शेष स्थान अशुभ हैं। इस तरह शुभ स्थानों में रेखा और अशुभ

स्थानों में विन्दु से चिन्हित कर दोनों का अन्तर करने से जिस का शेष बचे उक्त स्थान में गोचर वश जाने से ग्रह वही फल देता है ॥२१॥

रेखासंख्या आह—

भुजङ्गवेदा नवसागराश्च नवाग्नयः सागरसायकाश्च ।
रसेषवो युग्मशरा नवत्रितुल्याः क्रमेणाष्टकवर्गलेखाः ॥ २२ ॥

सूर्य के अष्टक वर्ग में कुल रेखा ४८, चन्द्र में ४६, मङ्गल में ३६, बुध में ५४, गुरु में ५६, शुक्र में ५२, शनि में ३९ रेखायें होती हैं ॥२२॥

लग्नाष्टकवर्गनिरूपणमाह—

विलग्ननाथाश्रितराशितोऽत्र भवन्ति रेखाः खलु यत्र यत्र ।
विलग्नतस्तत्र च तत्र राशौ संस्थापनीयाः सुधिया क्रमेण ॥ २३ ॥

जन्म लग्न का स्वामी जिस ग्रह से जिस राशि में शुभ है, उसी स्थान में लग्न भी शुभ है इस लिये लग्न स्वामी की तरह पण्डित जन लग्न का अष्टक वर्ग बनावें ॥ २३ ॥

एकादिरेखाफलमाह—

क्लेशोऽर्थहानिर्व्यसनं समत्वं शश्वत्सुखं नित्यधनागमश्च ।
सम्पत्प्रवृद्धिर्विपुलामलश्रीः प्रत्येकरेखाफलमामनन्ति ॥ २४ ॥

एक रेखा वाली राशि में गोचर वश जाने से क्लेश, २ में धन हानि, ३ में व्यसन, ४ में समान, ५ में सर्वदा सुख, ६ में नित्य धन की प्राप्ति, ७ में सम्पत्ति की वृद्धि, ८ में अति लक्ष्मी होती है॥ २४ ॥

इत्येकखेटस्य हि सम्प्रदिष्टा रेखायुतिश्चाखिलखेटरेखाः ।
अष्टद्विसंख्यास्तु समास्ततोऽपि यथाधिकोनाः सदसत्फलास्ताः॥२५॥

यह एक ग्रह के एकादि रेखा वश फल कहा गया है, इसी तरह प्रत्येक ग्रह की प्रत्येक राशियों में स्थित रेखाओं का योग कर के फल जानना चाहिये ॥

रेखा योग २८ हो तो मध्यम फल होता है। २८ रेखा से जैसे २ अधिक या न्यून रेखा आवें उसी तरह से शुभ या अशुभ फल तारतम्य से समझना चाहिये ॥ २५ ॥

कः कदा फलदातेत्याह—

इलातनूजश्च पतिर्नलिन्याः प्रवेशकाले फलदः किल स्यात् ।
राश्यर्द्धभोगे भृगुजामरेज्यौ प्रान्ते शनीन्दू च सदेन्दुसूनुः ॥२६॥

मङ्गल और सूर्य राशि में प्रवेश करते ही फल देते हैं। बृहस्पति और शुक्र राशि के मध्य में, शनि और चन्द्र राशि के अन्त में फल देते हैं ॥ २६ ॥

अथाङ्गविभागेन ग्रहारिष्टमाह—

शिरःप्रदेशे वदने दिनेशो वक्षःस्थले चापि गले कलावान्।
पृष्ठोदरे भूतनयः प्रभुत्वं करोति सौम्यश्चरणे च पाणौ ॥ २७ ॥

कटिप्रदेशे जघने च जीवः कविस्तु गुह्यस्थलमुष्कयुग्मे ।
जानूरुदेशे नलिनीशसूनुश्चारेण वा जन्मनि चिन्तनीयम् ॥ २८ ॥

सूर्य शिर और मुख में अशुभ फल देते हैं। चन्द्रमा छाती और गले में, मङ्गल पीठ और पेट में, बुध पैर और हाथ में, बृहस्पति कमर और जंघो में, शुक्र गुदा और अण्डकोश में और शनि जानु में अशुभ फल देते हैं ॥ २७-२८ ॥

यदा यदा स्यात्प्रतिकूलवर्ती स्वाङ्गेऽस्य दोषेण करोति पीड़ाम् ।
इदं तु पूर्वं प्रविचार्य सर्वं प्रश्नप्रसूत्यादिषु कल्पनीयम् ॥ २९ ॥

जब २ ग्रह प्रतिकूल हों तब २ अपने २ कहे हुए अङ्गों में पीड़ा करते हैं। प्रश्न काल या जन्म काल में इन को विचार कर फल कल्पना करनी चाहिये ॥ २६ ॥

इत्यष्टकवर्गः।
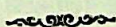
अथ द्विग्रहयोगाध्यायः

सूर्यचन्द्रयोगफलम्—

पाषाणयन्त्रक्रयविक्रयेषु कूटक्रियायां हि विचक्षणः स्यात् ।
कामी प्रकामी पुरुषः सगर्वः सर्वौषधोशेन रवौ समेते ॥ १ ॥

जिस के जन्म काल में सूर्य और चन्द्रमा का योग हो तो जातक पत्थल, यन्त्र के क्रय विक्रय में और माया करने में कुशल, कामी तथा अत्यन्त गौरवी होता है ॥ १ ॥

सूर्यभौमयोगफलम्—

भवेन्महौजा बलवान्विमूढो गाढोद्धतो सत्यवचा मनुष्यः ।
सुसाहसः शूरतरोऽतिहिंस्रो दिवामणौ क्षोणिसुताभ्युपेते ॥ २ ॥

जिस के जन्म काल में सूर्य और मङ्गल का योग हो तो जातक महा तेजस्वी, बलवान्, मूढ, बड़ा उद्धत, झूठ बोलने वाला, साहसी, शूर और हिंसक होता है ॥ २ ॥

सूर्यबुधयोगफलम्—

प्रियवचाः सचिवो बहुसेवयार्जितधनश्च कलाकुशलो भवेत् ।
श्रुतपटुर्हि नरो नलिनीपतौ कुमुदिनीपतिसूनुसमन्विते ॥ ३ ॥

जिस के जन्म काल में सूर्य और बुध का योग हो तो जातक प्रिय बोलने वाला, राजा का मन्त्री, बहुत सेवा कर के धन इकट्ठा करने वाला, कलाओं में चतुर और शास्त्र श्रवण में चतुर होता है ॥ ३ ॥

सूर्यगुरुयोगफलम्—

पुरोहितत्वे निपुणो नृपाणां मन्त्री च मित्राप्तधनः समृद्धः ।
परोपकारी चतुरो दिनेशे वाचामधीशेन युते नरः स्यात् ॥ ४ ॥

जिस के जन्म काल में सूर्य और बृहस्पति का योग हो तो वह पुरोहिती में कुशल, राजा का मन्त्री, मित्र से धन लाभ करने वाला, धनी, परोपकारी, और चतुर होता है ॥ ४ ॥

सूर्यशुक्रयोगफलम्—

सङ्गीतवाद्यायुधचारुबुद्धिर्भवेन्नरो नेत्रबलेन हीनः ।
कान्तानियुक्ताप्तसुहृत्समाजः सिताऽन्विते जन्मनि पद्मिनीशे ॥ ५ ॥

जिस के जन्म काल में सूर्य और शुक्र का योग हो वह संगीत, वाद्य, शस्त्र विद्या इन में कुशल, कमज़ोर नेत्र वाला, स्त्री और मित्रों से युक्त होता है ॥ ५ ॥

सूर्यशनियोगफलम्—

धातुक्रियापण्यमतिर्गुणज्ञो धर्मप्रियः पुत्रकलत्रसौख्यः ।
सदा समृद्धोऽतितरां नरः स्यात्प्रद्योतने भानुसुतेन युक्ते ॥ ६ ॥

जिस के जन्म काल में सूर्य और शनि का योग हो वह धातु क्रिया और व्यापार को जानने वाला, गुणज्ञ, धर्म स्नेही, पुत्र स्त्री के सुख से युक्त और सदा अति धन से युक्त होता है ॥ ६ ॥

चन्द्रभौमयोगफलम्—

आचारहीनः कुटिलप्रतापी पण्यानुजीवो कलहप्रियश्च ।
स्यान्मातृशत्रुर्मनुजो रुजार्तः शीतद्युतौ भूसुतसंयुते वै ॥ ७ ॥

जिस के जन्म काल में चन्द्रमा और मङ्गल का योग हो वह आचार रहित, कुटिल, प्रतापी, व्यापारी, कलह प्रिय, माता का शत्रु और रोग से पीड़ित होता है ॥ ७ ॥

चन्द्रबुधयोगफलम्—

सद्वाग्विलासो धनवान्सुरूपः कृपार्द्रचेताः पुरुषो विनीतः ।
कान्तापरप्रीतिरतीव वक्ता चन्द्रे सचान्द्रौ बहुधर्मकृत्स्यात् ॥ ८ ॥

जिस के जन्म काल में चन्द्रमा और बुध का योग हो वह सुन्दर बोलने वाला, धनवान्, सुन्दर, दयालु, नम्र, स्त्री का स्नेही, अत्यन्त बोलने वाला और बहुत धर्म कार्य करने वाला होता है ॥ ८ ॥

चन्द्रगुरुयोगफलम्—

सदा विनीतो दृढगूढमन्त्रः स्वधर्मकर्माऽभिरतो नरः स्यात् ।
परोपकारादिरतैकचित्तो शीतद्युतौ वाक्पतिना समेते ॥ ९ ॥

जिस के जन्म काल में चन्द्रमा और गुरु का योग हो वह सदा नम्र, दृढ प्रतिज्ञ, अपने धर्म कर्म में रत और परोपकार में निरत होता है ॥ ९ ॥

चन्द्रभृगुयोगफलम्—

वस्त्रादिकानां क्रयविक्रयेषु दक्षो नरः स्याद्व्यसनी विधिज्ञः ।
सुगन्धपुष्पोत्तमवस्त्रचित्तो द्विजाधिराजे भृगुजेन युक्ते ॥ १० ॥

जिस के जन्म समय में चन्द्रमा और शुक्र का योग हो वह वस्त्र

आदि के क्रय विक्रय में चतुर, व्यसनी, कार्य को जानने वाला और सुगन्धि, पुष्प, उत्तम वस्त्रों को चाहने वाला होता है ॥ १० ॥

चन्द्रशनियोगफलम्—

नानाङ्गनानां परिसेवनेच्छुर्वेश्यानुवृत्तिर्गतसाधुशीलः ।
परात्मजः स्यात्पुरुषार्थहीन इन्दौ समन्दे प्रवदन्ति सन्तः ॥ ११ ॥

जिस के जन्म काल में चन्द्रमा और शनि का योग हो वह अनेक स्त्रियों के साथ विलास करने की इच्छा रखने वाला, वेश्या गामी, निन्दित स्वभाव वाला, दूसरे से उत्पन्न और पुरुषार्थ रहित होता है ॥

भौमबुधयोगफलम्—

बाहुयुद्धकुशलो विपुलस्त्रीलालसो विविधभेषजपण्यः ।
हेमलोहविधिबुद्धिविभावः सम्भवेद्यदि कुजेंदुजयोगः ॥१२॥

जिस के जन्म काल में मङ्गल और बुध का योग हो वह बाहु युद्ध में कुशल, अनेक स्त्रियों को चाहने वाला, अनेक औषधी को बेचने वाला, सुवर्ण और लोह की चीज बनाने में कुशल होता है ॥ १२ ॥

भौमगुरुयोगफलम्—

मन्त्रार्थशस्त्रादिकलाकलापे विवेकशीलो मनुजः किल स्यात् ।
चमूपतिर्वा नृपतिः पुरेशो ग्रामेश्वरो वा सकुजे सुरेज्ये ॥ १३ ॥

जिस के जन्म काल में मङ्गल और बृहस्पति का योग हो वह जातक मन्त्र, अर्थ और कलाओं को जानने वाला, सेनापति, राजा या ग्राम पुर का अधिपति होता है ॥ १३ ॥

भौमभृगुयोगफलम्—

नानाङ्गनाभोगविधानचित्तो द्यूतानृतप्रीतिरतिप्रपञ्चः ।
नरः सगर्वः कृतसर्ववैरो भृगोः सुते भूसुतसंयुते स्यात् ॥ १४ ॥

जिस के जन्म काल में मङ्गल और शुक्र का संयोग हो वह अनेक स्त्रियों के साथ भोग करने वाला, जुआरी, असत्य बोलने वाला, अति प्रपञ्ची, गौरवी और सब से शत्रुता रखने वाला होता है ॥१४॥

भौमशनियोगफलम्—

शस्त्रास्त्रवित्सङ्गरकर्मकर्ता स्तेयानृतप्रीतिकरः प्रकामम्।
सौख्येन हीनो नितरां नरः स्याद्धरासुते मन्दयुतेऽतिनिन्द्यः ॥१५॥

जिस के जन्म काल में मङ्गल और शनि का योग हो वह अस्त्र शस्त्र चलाने वाला, युद्ध करने वाला, चोरी करने में तत्पर, मिथ्या बोलने वाला और सुख से हीन होता है ॥ १५ ॥

बुधगुरुयोगफलम्—

सङ्गीतविन्नीतिपतिर्विनीतः सौख्यान्वितोऽत्यन्तमनोभिरामः।
धीरो नरः स्यात्सुतरामुदारः सुगन्धभाग्वाक्पतिसौम्ययोगे ॥१६॥

जिसके जन्म काल में बुध और गुरु का योग हो वह संगीत विद्या को जानने वाला, नीतिज्ञ, नम्र, सुख से युक्त, धीर और अत्यन्त उदार होता है ॥ १६ ॥

बुधशुक्रयोगफलम्—

कुलाधिशाली शुभवाग्विलासः सदा सहर्षः पुरुषः सुवेषः।
भर्ता बहूनां गुणवान्विवेकी सभार्गवे जन्मनि सोमसूनौ ॥ १७ ॥

जिस के जन्म काल में बुध और शुक्र का योग हो वह अपने कुल में श्रेष्ठ, सुन्दर बोलने वाला, सदा हर्ष युक्त, सुन्दर, बहुतों का पालन करने वाला, गुणी और विचारी होता है ॥ १७ ॥

बुधशनियोगफलम्—

चलस्वभावश्च कलिप्रियश्च कलाकलापे कुशलः सुवेषः।
पुमान्बहूनां प्रतिपालकश्चेद्भवेत्प्रसूतौ मिलनं ज्ञशन्योः ॥ १८ ॥

जिस के जन्म काल में बुध और शनि का योग हो वह चञ्चल प्रकृति वाला, झगड़ालू, कलाओं में कुशल, सुन्दर और बहुतों का पालक होता है ॥ १८ ॥

गुरुशुक्रयोगफलम्—

विद्यया भवति पण्डितः सदा पण्डितैरपि करोति विवादम्।
पुत्रमित्रधनसौख्यसंयुतो मानवः सुरगुरौ भृगुयुक्ते ॥ १९ ॥

जिस के जन्म समय में गुरु और शुक्र का योग हो वह विद्या से पण्डित, विद्वानों से विवाद करने वाला, पुत्र, मित्र, धन और सुख से युक्त होता है ॥ १९ ॥

गुरुशनियोगफलम्—

शूरोऽर्थवान्ग्रामपुराधिनाथो भवेद्यशस्वी कुशलः कलासु ।
स्त्रीसंश्रयप्राप्तमनोरथश्च नरः सुरेज्ये रविजेन युक्ते ॥ २० ॥

जिसके जन्म काल में गुरु और शनि का योग हो वह शूर, धनवान्, पुरों का अधिपति, यशस्वी, कलाओं में कुशल और स्त्री के सम्बन्ध से अभिलाषा पूरा करने वाला होता है ॥ २० ॥

शुक्रशनियोगफलम्—

शिल्पलेख्यविधिजातकौतुको दारुणो रणकरो नरो भवेत् ।
अश्मकर्मकुशलश्च जन्मनि भार्गवे रविसुतेन संयुते ॥ २१ ॥

जिस के जन्म काल में शुक्र और शनि का योग हो वह चित्र बनाने में और लेख करने में रत, कठोर, युद्ध करने वाला, पत्थल के कार्य में कुशल होता है ॥ २१ ॥

इति द्विग्रहयोगाध्यायः ।

अथ त्रिग्रहयोगाध्यायः

सूर्यचन्द्रभौमयोगफलम्—

शूराश्च यन्त्राश्वविधिप्रवीणास्त्रपाकृपाभ्यां सुतरां विहीनाः ।
नक्षत्रनाथक्षितिपुत्रमित्रैरेकत्र संस्थैर्मनुजा भवन्ति ॥ १ ॥

जिस के जन्म समय में रवि, चन्द्र और मङ्गल का योग हो वह शूर, यन्त्र बनाने में तथा अश्व विद्या में कुशल, निर्लज्ज और दया रहित होता है ॥ १ ॥

सूर्यचन्द्रबुधयोगफलम्—

भवेन्महौजा नृपकार्यकर्त्ता वार्ताविधौ शास्त्रकलासु दक्षः ।

दिवामणिज्ञामृतरश्मिसंस्थैः प्राणी भवदेकगृहं प्रयातैः ॥ २ ॥

जिस के जन्म काल में रवि, चन्द्र और बुध का योग हो वह बड़ा बलवान्, राजा का कार्य करने वाला, वार्ता करने में और शास्त्रकला में कुशल होता है ॥ २ ॥

सूर्यचन्द्रगुरुयोगफलम्—

सेवाविधिज्ञश्च विदेशगामी प्राज्ञः प्रवीणश्चपलोऽतिधूर्तः।
नरो भवेच्चन्द्रसुरेन्द्रवन्द्यप्रद्योतनानां मिलने प्रसूतौ ॥ ३ ॥

जिस के जन्म समय में रवि, चन्द्र और गुरु का योग हो वह सेवा कार्य को जानने वाला, विदेश में जाने वाला, पण्डित, प्रवीण, चञ्चल और धूर्त होता है ॥ ३ ॥

सूर्यचन्द्रशुक्रयोगफलम्—

परस्वहर्ता व्यसनानुरक्तो विमुक्तसत्कर्मरुचिर्नरः स्यात्।
मृगाङ्कपङ्केरुहबन्धुशुक्राश्चैकत्र भावे यदि संयुताः स्युः ॥ ४ ॥

यदि रवि, चन्द्र, शुक्र तीनों एक स्थान में बैठे हों तो जातक दूसरों का धन अपहरण करने वाला, व्यसनी, और सत्कर्म की इच्छा से रहित होता है ॥ ४ ॥

सूर्यचन्द्रशनियोगफलम्—

परेङ्गितज्ञो विधनश्च मन्दो धातुक्रियायां निरतो नितान्तम्।
व्यर्थप्रयासप्रकरो नरः स्यात्क्षेत्रे यदैकत्र रवीन्दुमन्दाः ॥ ५ ॥

यदि रवि, चन्द्र, शनि तीनों एक स्थान में स्थित हों तो जातक दूसरों की चेष्टा को जानने वाला, निर्धन, मूढ, धातुक्रिया में निरत, और व्यर्थ प्रयास करने वाला होता है ॥ ५ ॥

सूर्यमङ्गलबुधयोगफलम्—

ख्यातो भवेन्मन्त्रविधिप्रवीणः सुसाहसो निष्ठुरचित्तवृत्तिः।
लज्जार्थजायात्मजमित्रयुक्तो युक्तैर्बुधार्कक्षितिजैर्नरः स्यात् ॥ ६ ॥

यदि रवि, मङ्गल, बुध तीनों एक स्थान में बैठे हों तो जातक

प्रसिद्ध, मन्त्र शास्त्र को जानने वाला, साहसी, निष्ठुर और लज्जा, धन, स्त्री, मित्र इन से युक्त होता है ॥ ६ ॥

सूर्यमङ्गलवृहस्पतियोगफलम्—

वक्तार्थयुक्तः क्षितिपालमन्त्री सेनापतिर्नीतिविधानदक्षः ।
महामनाः सत्यवचोविलासः सूर्यारजीवैः सहितैर्नरः स्यात् ॥७॥

यदि रवि, मङ्गल, वृहस्पति तीनों एक स्थान में स्थित हों तो जातक वोलने वाला, धनी, राजा का मन्त्री, सेनापति, नीति को जानने वाला, गम्भीर और सत्य वोलने वाला होता है ॥ ७ ॥

सूर्यमङ्गलशुक्रयोगफलम्—

भाग्यान्वितोऽत्यन्तमतिर्विनीतः कुलीनवाक्शीलविराजमानः ।
स्यादल्पजल्पश्चतुरो नरश्चेद्भौमास्फुजित्सूर्ययुतिः प्रसूतौ ॥ ८ ॥

यदि सूर्य, मङ्गल, शुक्र तीनों एक स्थान में स्थित हों तो जातक भाग्यशाली, अति बुद्धिमान् , नम्र, कुलीन, सुन्दर प्रकृति वाला, थोड़ा वोलने वाला और चतुर होता है ॥ ८ ॥

सूर्यमङ्गलशनियोगफलम्—

धनेन हीनः कलहान्वितश्च त्यागी वियोगी पितृबन्धुवर्गैः ।
विवेकहीनो मनुजः प्रसूतौ योगे यदार्कारशनैश्चराणाम् ॥ ९ ॥

यदि सूर्य, मङ्गल, शनि तीनों एक स्थान में स्थित हों तो जातक धनहीन, झगड़ालू, माता, पिता और वन्धु वर्गों से वियोग पाने वाला तथा विवेक रहित होता है ॥ ९ ॥

सूर्यबुधवृहस्पतियोगफलम्—

विचक्षणः शास्त्रकलाकलापे सुसंग्रहार्थः प्रबलः सुशीलः ।
दिवाकरज्ञामरपूजितानां योगे भवेन्ना नयनामयार्तः ॥ १० ॥

यदि सूर्य, बुध, गुरु तीनों एक राशि में हों तो जातक शास्त्र कलाओं में कुशल, धन संग्रही, वली, सुशील और नेत्र रोगी होता है ॥ १० ॥

सूर्यबुधशुक्रयोगफलम्—

साधुद्वेषी निन्दितोऽत्यन्ततप्तः कान्ताहेतोर्मानवः संयुतश्चेत् ।
दैत्यामात्यादित्यसौम्याख्यखेटा वाचालः स्यादन्यदेशाटनश्च ॥११॥

यदि सूर्य, बुध, शुक्र तीनों एक राशि में हो तो जातक साधुओं से द्वेष करने वाला, निन्दित, स्त्री के लिये अत्यन्त तप्त, बहुत बोलने वाला और अन्य देशों में भ्रमण करने वाला होता ॥ ११ ॥

सूर्यबुधशनियोगफलम्—

तिरस्कृतः स्वीयजनैश्च हीनोऽत्यन्यैर्महादोषकरो नरः स्यात् ।
षण्ढाकृतिर्हीनतरानुयातश्चादित्यमन्देन्दुसुतैः समेतैः ॥ १२ ॥

यदि सूर्य, बुध, शनि तीनों एक राशि में स्थित हो तो जातक अपने जनों से तिरस्कृत, अन्य जनों से भी रहित, बड़े भारी दोष करने वाला, नपुंसक के समान और नीचजनों का अनुसरण करने वाला होता है ॥ १२ ॥

सूर्यबृहस्पतिशुक्रयोगफलम्—

अप्रगल्भवचनो धनहीनोऽप्याश्रितोऽवनिपतेर्मनुजः स्यात् ।
शूरताप्रियतरः परकार्ये सादरोऽर्कगुरुभार्गवयोगे ॥ १३ ॥

यदि सूर्य, गुरु, शुक्र तीनों एक राशि में स्थित हों तो जतक बोलने में अक्षम, धन हीन किन्तु राजा के आश्रय में रहने वाला, शूर और दूसरों के कार्य को करने वाला होता है ॥ १३ ॥

सूर्यबृहस्पतिशनियोगफलम्—

नृपप्रियो मित्रकलत्रपुत्रैर्नित्यं युतः कान्तवपुर्नरः स्यात् ।
शनैश्चराचार्यदिवामणीनां योगे सुनीत्या व्ययकृत्प्रगल्भः ॥१४॥

यदि सूर्य, गुरु, शनि तीनों एक राशि में हों तो जातक राजा का प्रिय, स्त्री, पुत्र, मित्रों से युक्त, सुन्दर शरीर वाला, विचार कर व्यय करने वाला और प्रौढ़ होता है ॥ १४ ॥

सूर्यशुक्रशनियोगफलम्—

रिपुभयपरियुक्तः सत्कथाकाव्यमुक्तः

कुचरितरुचिरेवाऽत्यन्तकण्डूयनार्तः ।
निजजनधनहीनो मानवः सर्वदा स्यात्
कविरविरविजानां संयुतिश्चेत्प्रसूतौ ॥ १५ ॥

यदि रवि, शुक्र, शनि तीनों एक राशि में स्थित हों तो जातक शत्रुओं के भय से युक्त, भगवान् की कथा और काव्य से रहित, बुरे आचरण में निरत, खुजली से अति पीड़ित, अपने जन और के धन से हीन होता है ॥ १५ ॥

चन्द्रमङ्गलबुधयोगफलम्—

भवन्ति दीना धनधान्यहीना नानाविधानात्मजनापमानाः ।
स्युर्मानवा हीनजनानुयाताश्चेत्संयुताः क्षोणिसुतेन्दुसौम्याः॥१६॥

यदि चन्द्र, मङ्गल, बुध तीनों एक राशि में हों तो जातक दीन, धन धान्य से हीन, अपने जनों में अनेक तरह अपमानित और नीचों सङ्ग में रहने वाला होता है ॥ १६ ॥

चन्द्रमङ्गलबृहस्पतियोगफलम्—

व्रणाङ्कितः कोपयुतश्च हर्ता कान्तारतः कान्तवपुर्नरः स्यात् ।
प्रसूतिकाले मिलिता भवन्ति चेदारनीहारकरामरेज्याः ॥ १७ ॥

यदि चन्द्र, मङ्गल, गुरु तीनों एक राशि में हों तो जातक व्रणों से चिह्नित, क्रोधी, दूसरों का धन हरने वाला, स्त्री में रत और सुन्दर होता है ॥ १७ ॥

चन्द्रमङ्गलशुक्रयोगफलम्—

दुःशीलकान्तापतिरस्थिरः स्याद्दुःशीलकान्तातनुजोऽल्पशीलः ।
नरो भवेज्जन्मनि चैकभावे भौमास्फुजिच्चन्द्रमसो यदि स्युः ॥१८॥

यदि चन्द्र, मङ्गल, शुक्र तीनों एक राशि में हों तो जातक कुत्सित स्वभाव वाली स्त्री का पति, चञ्चल, दुष्ट स्त्री का पुत्र और थोड़े शील वाला होता है ॥ १८ ॥

चंद्रमंगलशनियोगफलम्—

शैशवे हि जननीमृतिप्रदः सर्वदाऽपि कलहान्वितो भवेत् ।

संभत्रे रविभत्रेन्दुभूसुताः संयुता यदि नरोऽतिगर्हितः ॥ १९ ॥

यदि चन्द्र, मङ्गल, शनि तीनों एक राशि में हों तो जातक बाल्य काल में माता से रहित, सर्वदा कलह करने वाला और अत्यन्त निन्दनीय होता है ॥ १९ ॥

चंद्रबुधबृहस्पतियोगफलम्—

विख्यातकीर्तिर्मतिमान्महौजा विचित्रमित्रो बहुभाग्ययुक्तः ।
सद्वृत्तविद्योऽतितरां नरः स्यादेकत्र संस्थैर्गुरुसोमसौम्यैः ॥ २० ॥

यदि चन्द्र, बुध, गुरु तीनों एक राशि में हों तो जातक प्रसिद्ध यश वाला, बुद्धिमान्, अधिक बली, अनेक तरह के मित्रों से युक्त, भाग्यशाली, सदाचारी और श्रेष्ठ विद्या से युक्त होता है ॥ २० ॥

चंद्रबुधशुक्रयोगफलम्—

विद्याप्रवीणोऽपि च नीचवृत्तः स्पर्धाऽभिवृद्ध्यां च रुचिर्विशेषात् ।
स्यादर्थलुब्धो हि नरः प्रसूतौ मृगांकसौम्यास्फुजितां युतिश्चेत् ॥ २१ ॥

यदि चन्द्र, बुध, शुक्र तीनों एक राशि में हों तो जातक विद्वान् होकर भी नीच कर्म करने वाला, विशेष कर दूसरों से स्पर्धा करने वाला और धन का लोभी होता है ॥ २१ ॥

चंद्रबुधशनियोगफलम्—

कालाकलापाऽमलबुद्धिशाली ख्यातः क्षितीशाभिमतो नितांतम् ।
नरः पुरग्रामपतिर्विनीतो बुधेंदुमंदाः सहिता यदि स्युः ॥ २२ ॥

यदि चन्द्र, बुध, शनि तीनों एक राशि में हों तो जातक सब कलाओं को जानने वाला, प्रसिद्ध, राजा का प्रिय, पुर गाँव का स्वामी और नम्र होता है ॥ २२ ॥

चंद्रबृहस्पतिशुक्रयोगफलम्—

भाग्यभाग्भवति मानवः सदा चारुकीर्तिमतिवृत्तिसंयुतः ।
भार्गवेन्दुसुरराजपूजिताः संयुता यदि भवन्ति संभवे ॥ २३ ॥

यदि चन्द्र, गुरु, शुक्र तीनों एक राशि में हों तो जातक भाग्यशाली सुन्दर यश वाला, सुन्दर बुद्धि और आचार से युक्त होता है ॥ २३ ॥

चंद्रबृहस्पतिशनियोगफलम्—

विचक्षणः क्षोणिपतिप्रियश्च सन्मंत्रशास्त्राधिकृतो नितांतम् ।
भवेत्सुवेषो मनुजो महौजाः संयुक्तमंदेंदुसुरेंद्रवन्द्यैः ॥ २४ ॥

यदि चन्द्र, गुरु, शनि तीनों एक राशि में हों तो जातक चतुर, राजा का स्नेही, मन्त्र शास्त्र को जानने वाला, सुन्दर और बली होता है॥

चंद्रशुक्रशनियोगफलम्—

पुरोधसां वेदविदां वरेण्याः स्युः प्राणिनः पुण्यपरायणाश्च ।
सत्पुस्तकालोकनलेखनेच्छाः कवींदुमंदा मिलिता यदि स्युः ॥२५॥

यदि चन्द्र, शुक्र, शनि तीनों एक राशि में हों तो जातक पुरोहित और वेद जानने वालों में श्रेष्ठ, पुण्य कर्म में रत, श्रेष्ठ पुस्तक देखने वाला और लिखने वाला होता है ॥ २५ ॥

मंगलबुधबृहस्पतिफलयोगम्—

क्ष्मापालकः स्वीयकुले नरः स्यात्कवित्वसङ्गीतकलाप्रवीणः ।
परार्थसंसाधकतैकचित्तो वाचस्पतिज्ञावनिसूनुयोगे ॥ २६ ॥

यदि मङ्गल, बुध, गुरु तीनों एक राशि में हों तो जातक अपने कुल में श्रेष्ठ, कविता और संगीत कला में कुशल और दूसरों का उपकार करने वाला होता है ॥ २६ ॥

मंगलबुधशुक्रयोगफलम्—

वित्तान्वितः क्षीणकलेवरश्च वाचालताचंचलतासमेतः ।
धृष्टः सदोत्साहपरो नरः स्यादेकत्र यातैः कविभौमसौम्यैः ॥२७॥

यदि मङ्गल, बुध, शुक्र तीनों एक राशि में हों तो जातक धनी, कृश शरीर वाला, वक्ता, चञ्चल, ढीठ, और सदा उत्साही होता है ॥२७॥

मंगलबुधशनियोगफलम्—

कुलोचनः क्षीणतनुर्वनस्थः प्रेष्यः प्रवासी बहुहास्ययुक्तः ।
स्यान्नो सहिष्णुश्च नरोऽपराधी मंदारसौम्यैः सहितैः प्रसूतौ ॥२८॥

यदि मङ्गल, बुध, शनि तीनों एक राशि में हों तो जातक बुरे

नेत्र वाला, दुर्बल, वन में रहने वाला, दूत कर्म करने वाला, विदेश वासी, अधिक हँसने वाला, असहिष्णु और दूसरों को क्षति करने वाला होता है ॥ २८ ॥

मंगलबृहस्पतिशुक्रयोगफलम्—

सत्पुत्रदारादिसुखैरुपेतः क्ष्मापालमान्यः सुजनानुयातः।
वाचस्पतिक्षोणिसुतास्फुजिद्भिः चेत्रे यदैकत्र गतैर्नरः स्यात् ॥२९॥

यदि मङ्गल, गुरु, शुक्र तीनों एक राशि में हों तो जातक सुपुत्र और स्त्री के सुख से युक्त, राजा के यहाँ माननीय और सज्जनों के साथ रहने वाला होता है ॥ २६ ॥

मंगलबृहस्पतिशनियोगफलम्—

नृपाप्तमानं कृपया विहीनं कृशं कुवृत्तं गतमित्रसख्यम्।
जन्यां च शन्यङ्गिरसावनीजाः संयोगभाजो मनुजं प्रकुर्युः ॥ ३० ॥

यदि मङ्गल, गुरु, शनि तीनों एक राशि में हों तो जातक राजा से आदर पाने वाला, निर्दयी, कृश, आचार हीन, और मित्रों से मित्रता छुड़ाने वाला होता है ॥ ३० ॥

मंगलशुक्रशनियोगफलम्—

वासो विदेशे जननी त्वनार्या भार्या तथैवोपहतिः सुखानाम्।
दैत्येन्द्रपूज्यावनिजार्कजानां योगे भवेज्जन्म नरस्य यस्य ॥ ३१ ॥

यदि मङ्गल, शुक्र शनि तीनों एक राशि में हों तो जातक परदेश में रहने वाला, ख़राब माता और खराब स्त्री वाला तथा सुखों से रहित होता है ॥ ३१ ॥

बुधबृहस्पतिशुक्रयोगफलम्—

नृपानुकंप्यो बहुगीतकीर्तिः प्रसन्नमूर्तिर्विजितारिवर्गः।
सौम्यामरेज्यास्फुजितां प्रसूतौ चेत्संयुतिः सत्त्वपरो नरः स्यात् ३२

यदि बुध, गुरु, शुक्र तीनों एक राशि में हों तो जातक राजा का पापात्र, बहुत यश वाला, प्रसन्न मुख वाला, शत्रुओं को जीतने वाला और बली होता है ॥ ३२ ॥

बुधबृहस्पतिशनियोगफलम्—

स्थानार्थसद्वैभवसंयुतः स्यादनल्पजल्पो धृतिमान्सुवृत्तः ।
शनैश्चराचार्यशशांकपुत्राः क्षेत्रे यदैकत्र गता भवन्ति ॥ ३३ ॥

यदि बुध, गुरु, शनि तीनों एक राशि में हों तो जातक स्थान, धन और विभव से युक्त, अधिक बोलने वाला, धीर तथा सदाचारी होता है

बुधशुक्रशनियोगफलम्—

साधुशीलरहितोऽनृतवक्ताऽनल्पजल्पनरुचिः खलु धूर्तः ॥
दूरयाननिरतश्च कलाज्ञो भार्गवज्ञशनिसंयुतिजन्मा ॥ ३४ ॥

यदि बुध, शुक्र, शनि तीनों एक राशि में हों तो जातक दुष्ट स्वभाव वाला, मिथ्या बोलने वाला, धूर्त, दूरदेश जाने में रत और कलाज्ञ होता है ॥

बृहस्पतिशुक्रशनियोगफलम्—

नीचान्वये यद्यपि जातजन्मा नरः सुकीर्तिः पृथिवीपतिः स्यात् ।
सद्वृत्तिशाली परिसूतिकाले मन्देज्यशुक्रा मिलिता यदि स्युः ॥३५॥

यदि गुरु, शुक्र, शनि तीनों एक राशि में हों तो जातक नीच कुल में जन्म लेकर भी यशस्वी, राजा और उत्तम आचरण से युक्त होता है ॥

शुभाशुभयुक्तचंद्रसूर्यफलम्—

पापान्विते शीतरुचौ जनन्या नूनं भवेन्नैधनमायनंति ।
तादृग्दिनेशः पितृनाशकर्ता मिश्रं विमिश्रं फलमत्र कल्प्यम् ॥३६॥

जिस के जन्म काल में चन्द्रमा पाप ग्रह से युक्त हो उसकी माता की और सूर्य पाप ग्रह से युक्त हो तो पिता की मृत्यु होती है। यदि शुभ ग्रह, अशुभ ग्रह दोनों से युक्त हो तो तारतम्य से शुभाशुभ दोनों फल कहना चाहिये ॥ ३६ ॥

शुभान्वितो जन्मनि शीतरश्मिर्यशोर्थभूकीर्तिविवृद्धिलाभम् ।
करोति जातं स्वकुलप्रदीपं श्रेष्ठप्रतिष्ठं नृपगौरवेण ॥ ३७ ॥

यदि चन्द्रमा शुभ ग्रह से युक्त हो तो जातक यशस्वी, धन का लाभ करने वाला, अपने कुल में श्रेष्ठ और राजा के द्वारा उत्तम प्रतिष्ठा पाने वाला होता है ॥ ३७ ॥

एकालये चेत्खलखेचराणां त्रयं करोत्येव नरं कुरूपम्।
दारिद्र्यदुःखैः परितप्तदेहं कदापि गेहं न समाश्रयेत्सः॥ ३८॥

जिस के जन्म काल में तीन पाप ग्रह एक स्थान में स्थित हों सो जातक कुरूप, दरिद्र, दुख से तप्त और कभी भी अपने घर में स्थिर नहीं होता है॥ ३८॥

इति त्रिग्रहयोगाध्यायः।

अथ राजयोगाध्यायः

मङ्गलाचरणम्—

सद्विलासकलगर्जनशीलः शुण्डिकावलयकृत्प्रतिवेलम्।
अस्तु वः कलितभालतलेंदुर्मंगलाय किल मंगलमूर्तिः॥ १॥

सुन्दर विलास में मधुर शब्द करने वाले, शुण्ड दण्ड को सदा वलयाकार बनाने वाले, मस्तक पर शोभित चन्द्र वाले, मङ्गल स्वरूप श्री गणेश जी आप के मङ्गल के लिए होवें॥ १॥

राजयोगकथनहेतुमाह—

भाग्यादिभावप्रतिपादितं यद्भाग्यं भवेत्तत्खलु राजयोगैः।
तान्विस्तरेण प्रवदामि सम्यक्तैः सार्थकं जन्म यतो नराणाम्॥२॥

भाग्य आदि भावों के द्वारा जो भाग्य योग कहे गये हैं वे राजयोगों के साथ प्राप्त होते हैं। इस लिए जिन से मनुष्यों का जन्म सार्थक होता है, उन्हीं राजयोगों को कहता हूं॥ २॥

अथ राजयोगः—

नभश्चराः पंच निजोच्चसंस्था यस्य प्रसूतौ स तु सार्वभौमः।
त्रयः स्वतुंगादिगताः स राजा राजात्मजस्त्वन्यसुतोऽत्र मंत्री॥३॥

जिस जातक के पांच ग्रह उच्च के हों वह चक्रवर्ती राजा होता है। जिस के तीन ग्रह उच्च के हों तो भी वह मनुष्य राजा होता है।

इस योग में राजा के घर में उत्पन्न लड़का ही राजा होता है। अगर राजवंश में उत्पन्न न हो तो वह मनुष्य मन्त्री होता है ॥ ३ ॥

तुंगोपगा यस्य चतुर्नभोगा महापगासंतरणे बलानाम् ।
दंतावलानां किल सेतुबंधा कीर्तिप्रबंधा वसुधातलेऽस्य ॥ ४ ॥

जिस के जन्म काल में चार ग्रह उच्च के हों उस की सेनाओं को नदी पार होने के लिये हाथियों का पुल होता है और पृथ्वी पर उस का अति यश होता है ॥ ४ ॥

स्वोच्चे सूर्यशनीज्यभूमितनयैर्यद्वा त्रिभिर्लग्नगे
तेषामन्यतमे हि षोडशमिताः श्रीराजयोगाः स्मृताः ।
तन्मध्ये निजतुंगगे ग्रहयुगे यद्वैकखेटे विधौ
स्वर्क्षे तुंगसमाश्रितैकखचरे लग्ने परे षोडश ॥ ५ ॥

सूर्य, शनि, गुरु, मङ्गल ये चार ग्रह, या इन में से तीन ग्रह उच्च के हों इन्हीं में से कोई एक लग्न में हो तो १६ प्रकार के राजयोग होते हैं। यदि उन ग्रहों में से दो या एक ग्रह उच्च के हो, एक लग्न में हो और कर्क का चन्द्रमा हो तो भी १६ प्रकार के राजयोग होते हैं ॥५॥

वर्गोत्तमेऽमृतकरे यदि वा शरीरे
संवीक्षिते च चतुरादिभिरिंदुहीनैः ।
द्वाविंशतिप्रमितय खलु संभवन्ति
योगाः समुद्रवलयक्षितिपालकानाम् ॥ ६ ॥

चन्द्रमा यदि वर्गोत्तम नवांश में स्थित हो और चन्द्र रहित चार आदि ग्रह से देखा जाता हो तो २२ प्रकार के राजयोग होते हैं ॥६॥

उदग्वसिष्ठो भृगुजश्च पश्चात्प्राग्वाक्पतिर्दक्षिणतस्त्वगस्त्यः ।
प्रसूतिकाले स भवेदिलाया नाथो हि पाथोनिधिमेखलायाः ॥७॥

जिस के उत्तर (चतुर्थ भाव) में वशिष्ठ (धनु का अन्त) हो, पश्चिम (सप्तम भाव) में शुक्र, पूर्व (लग्न) में गुरु और दक्षिण

(दशम भाव) में अगस्त्य (मिथुन का अन्त) हो वह समुद्र पर्य्यन्त पृथ्वी का स्वामी होता है ॥ ७ ॥

स्वोच्चे मूर्तिगतेऽमृतांशुतनये नक्रे सवक्रे शनौ
चापे वागधिपेंदुभार्गवयुते स्याज्जन्मभूमीपतेः।
स्वस्थाने ननु यस्य भूमितुरगो मत्तेभमालामिल-
त्सेनांदोलितभूमिगोलकलनं दिग्दंतिनः कुर्वते ॥ ८ ॥

अगर लग्न में उच्च का बुध हो, वक्री शनि मकर राशि का हो, बृहस्पति, चन्द्रमा और शुक्र धनु में हों तो जातक राजा होता है, तथा उस की हाथी घोड़ा सहित सेनाओं के भार से व्यस्त दिग्गज पृथ्वी को सम्भालने में खेदित होते है ॥ ८ ॥

दिनाधिराजे मृगराजसंस्थे नक्रे सवक्रे कलशेऽर्कसूनौ।
पाठीरलग्ने शशिना समेते महीपतेर्जन्म महौजसः स्यात् ॥ ९ ॥

यदि सिंह में रवि, मकर में मङ्गल, कुम्भ में शनि और लग्न का हो कर मीन में चन्द्रमा हो तो जातक बड़े तेजस्वी राजा होता है ॥९॥

महीसुते मेषगते तनुस्थे बृहस्पतौ वा तनुगे स्वतुंगे।
योगद्वयेऽस्मिन्नृपती भवेतां जितारिपक्षौ नृपनीतिदक्षौ ॥ १० ॥

जिस के मेष राशि का मङ्गल लग्न में हो या बृहस्पति उच्च का हो कर लग्न में हो तो जातक अपने शत्रुओं को जीतने वाला और राजनीति में चतुर राजा होता है ॥ १० ॥

वाचस्पतिः स्वोच्चगते विलग्ने मेषे दिनेशः शनिशुक्रसौम्याः।
लाभालयस्थाः किल भूमिपालं तं भूतलस्याभरणं गृणंति ॥११॥

जिस के उच्च का बृहस्पति लग्न में, मेष राशि में सूर्य, लाभस्थान में शनि, शुक्र और बुध बैठे हो तो वह भूतल में सर्वोपरि राजा होता है ॥ ११ ॥

इंदो यदा नक्रविलग्नवर्ती मृगेन्द्रयुग्माजतुलाकुलीराः।
स्वस्वामियुक्ता जनयंति नाथं पाथोनिधिप्रांतमहीतलस्य ॥ १२ ॥

यदि मङ्गल मकर लग्न में, सूर्य सिंह राशि में, बुध मिथुन में, मङ्गल मेष में, शुक्र तुला में और चन्द्रमा कर्क में हों तो जातक समुद्र पर्यन्त पृथ्वी का स्वामी होता है ॥ १२ ॥

द्वन्द्वे दैत्यगुरौ निशाकरसुते मूर्तौ च तुंगस्थिते
नक्रे वक्रशनैश्चरौ च शफरे चंद्रामरेज्यौ स्थितौ ।
योगोऽयं प्रभवेत्प्रसूतिसमये यस्यावनीशो महान्
वैरिव्रातमहोद्धतेभदलने पञ्चाननः केवलम् ॥ १३ ॥

जिस के जन्म काल में मिथुन का बृहस्पति, उच्च का बुध लग्न में, वक्री शनि मकर में, चन्द्रमा और गुरु मीन में हों तो जातक शत्रु रूपी हाथी को मारने के लिये राजा रूपी महा बलवान् सिंह होता है ॥

सिंहोदयेऽर्कस्त्वजगो मृगांकः शनैश्चरे कुंभधरे सुरेज्यः ।
धनुर्धरे चेन्मकरे महीजो राजाधिराजो मनुजो भवेत्सः ॥ १४ ॥

यदि सिंह का रवि लग्न में, चन्द्रमा मेष में, शनि कुम्भ में, गुरु धनु में और मङ्गल मकर में हों तो जातक राजाधिराज होता है ॥१४॥

मेषे गतो मूर्तिगतः प्रसूतौ बृहस्पतिश्चास्तगतः कलावान् ।
रसातले व्योमगृहे सितश्चेन्महीपतिर्गीतदिगंतकीर्तिः ॥ १५ ॥

यदि लग्न का हो कर बृहस्पति मेष में, चन्द्रमा सप्तम स्थान में, शुक्र चतुर्थ या दशम स्थान में हो तो जातक प्रसिद्ध यश वाला राजा होता है ॥ १५ ॥

गुरुः कुलीरोपगतः प्रसूतौ स्मराम्बुखस्था भृगुमंदभौमाः ।
तद्यानकाले जलधेर्जलानि भेरीनिनादोच्छलनं प्रयांति ॥ १६ ॥

यदि लग्न का हो कर कर्क में गुरु, सप्तम में शुक्र, चतुर्थ में शनि, दशम स्थान में मङ्गल हो तो जातक राजा होता है और उस की यात्रा के समय में सारथियों के धमक से समुद्र का जल उछल पड़ता है ॥१६॥

प्रसूतिकाले स्फुरदंशुजालः षड्वर्गशुद्धोऽदितिभे स्वभे वा ।

तुङ्गे त्रिकोणे स नभश्चरेंद्रो नरं प्रकुर्यात्खलु सार्वभौमम् ॥ १७ ॥

जिस के जन्म काल में षडवर्ग शुद्ध चन्द्रमा पुनर्वसु नक्षत्र, कर्क राशि, अपने उच्च या अपने मूल त्रिकोण में हो तो जातक सार्वभौम राजा होता है ॥ १७ ॥

षड्वर्गशुद्धौ खचरद्वयं चेद्यथोक्तरीत्या जनने नृपस्य।
तस्याधिपत्यं खलु किंनरेषु द्वीपांतरे चात्र न किं धरायाम् ॥ १८ ॥

षड्वर्ग शुद्ध दो ग्रह पूर्ववत् बैठे हों अर्थात् उच्च, अपने गृह या मूलत्रिकोण में हों तो जातक किन्नर देश का भी राजा होता है। मर्त्यलोकों की क्या बात ॥ १८ ॥

तुंगत्रिकोणाद्यधिकारहीनैः षड्वर्गशुद्धैस्त्रिभिरेव मंत्री।
राजा चतुर्भिः खलु सार्वभौमः पंचादिभिर्वाक्पतिनैककेन ॥ १९ ॥

जिस के जन्म काल में तीन ग्रह अपने उच्च और मूल त्रिकोण से हीन हो कर षड्वर्ग से शुद्ध हों तो वह मन्त्री होता है। यदि चार ग्रह षड्वर्ग शुद्ध हों तो राजा, पाँच या केवल गुरु षड्वर्ग शुद्ध हों तो सार्वभौम होता है ॥ १९ ॥

वृषे शशी लग्नगतोम्बुसप्तखस्था रवीज्यार्कसुता भवन्ति।
तद्दंडयात्रासु रजोन्धकाराद्दिनेऽपि रात्रिः कुरुते प्रवेशम् ॥ २० ॥

यदि लग्न में स्थित हो कर चन्द्रमा वृष का हो, सूर्य, बृहस्पति, शनि क्रम से ४, ७, १० में हों तो जातक की युद्ध यात्रा में उड़ती हुई धुलियों से दिन में भी रात्रि का प्रवेश मालुम होता है ॥ २० ॥

गुर्विंदुसौम्यास्फुजितश्च यस्य मूर्तित्रिधर्मायगता भवन्ति।
मृगेर्कसूनुस्तनुगोत्र नूनमेकातपत्रां स भुनक्ति धात्रीम् ॥ २१ ॥

लग्न में स्थित हो कर शनि मकर राशि में हो और बृहस्पति, चन्द्रमा, बुध, शुक्र क्रम से १, ३, ९, ११ भाव में बैठे हों तो जातक चक्रवर्ती राजा होता है ॥ २१ ॥

तुंगस्थितौ शुक्रबुधौ विलग्ने नक्रे च वक्रो धनुषीज्यचंद्रौ।

प्रसूतिकाले किल तौ भवेतामाखंडलौ भूमितलेऽपि संस्थौ ॥ २२ ॥

जिसके जन्म काल में उच्च स्थित शुक्र, बुध हो कर लग्न में बैठे हों, मकर राशि में मङ्गल और धनु में बृहस्पति, चन्द्र हों तो जातक पृथ्वी पर स्थित हो कर भी इन्द्र के समान राजा होता है ॥ २२ ॥

कर्केऽर्कचन्द्रौ सुरराजमन्त्री शत्रुस्थितश्चापि बुधः स्वतुंगे ।
कश्चिद्बली लग्नगतः स राजा राजाधिराजाभिधयालमेव ॥ २३ ॥

यदि कर्क राशि में सूर्य, चन्द्रमा, षष्ठ स्थान में बृहस्पति, उच्च स्थान में बुध और कोई ग्रह बलवान् हो कर लग्न में बैठा हो तो जातक महाराजा होता है ॥ २३ ॥

गुरुर्निजोच्चे यदि केन्द्रशाली राज्यालये दानवराजपूज्यः ।
प्रसूतिकले किल तस्य मुद्रा चतुःसमुद्रावधि गामिनी स्यात् ॥२४॥

जिस के जन्म काल में उच्च का हो कर गुरु केन्द्र में बैठा हो, दशम स्थान में शुक्र हो तो उस के रुपये चारों समुद्र पर्य्यन्त जाते हैं, अर्थात् चक्रवर्ती राजा होता है ॥ २४ ॥

लग्ने पूज्यदिनेश्वरौ क्रियगतौ मेषूरणे क्षोणिजः
पुण्ये भार्गवसौम्यशीतकिरणा यस्य प्रसूतौ स्थिताः ।
नूनं दिग्विजयप्रयाणसमये सैन्यैरिला व्याकुला
चिंतामुद्वहतीति का गतिरहो सर्वंसहाख्यास्थितैः ॥ २५ ॥

जिस के जन्म काल में मेष में स्थित हो कर गुरु, सूर्य दोनों लग्न में बैठे हों, दशम स्थान में मङ्गल, नवम भाव में शुक्र, बुध, चन्द्र तीनों हों तो उस के दिग्विजय यात्रा काल फौज के द्वारा धरती व्याकुल हो जाती है। सब मनुष्य चिन्तित हो कर कहते हैं, कि क्या गति होने वाली है ॥ २५ ॥

नीचारातिलवोज्झिता बलयुताः संत्यक्तवैराः परं
स्फारस्फांतिधरा भवन्ति खचराः संस्थो वृषे भार्गवः ।

भ्रातृणां यदि मण्डले समुदितो जीवो भवेत्संभवे
देवैस्तुल्यपराक्रमः स च नृपः कोपप्रमृष्टाहितः ॥ २६ ॥

जिस के जन्म काल में नीच और शत्रुनवांश से रहित बल युक्त वैर से हीन अधिक तेज को धारण करने वाले ग्रह हों, वृष में शुक्र, भ्रातृभाव में उदित बृहस्पति हो तो वह देवताओं के समान क्रोध से शत्रु को नाश करने वाला राजा होता है ॥ २६ ॥

मेषोदयेर्कश्च गुरुः कुलीरे तुलाधरे मंदविधू भवेताम्।
भवेन्नृपालोऽमलकीर्तिशाली भूपालमालापरिपालिताज्ञः ॥ २७ ॥

यदि मेष लग्न में सूर्य, कर्क में गुरु, तुला में शनि, चन्द्रमा हो तो जातक यशस्वी, राजाओं पर भी अपनी आज्ञा चलाने वाला राजा होता है।

मीने निशाकरः पूर्णः सर्वग्रहनिरीक्षितः।
सार्वभौमं नरं कुर्य्यादिन्द्रतुल्यपराक्रमम् ॥ २८॥

यदि मीन में पूर्ण बली चन्द्रमा स्थित हो कर सब ग्रहों से देखा जाता हो तो जातक इन्द्र के समान पराक्रमशाली राजा होता है ॥२८॥

धने दिनेशाद्भृगुजीवसौम्या नास्तं गता नो रिपुदृष्टियुक्ताः।
स्यात्सङ्कटं तत्कटकं रिपूणां यशः पटो दिग्वसनाय नूनम् ॥ २६ ।

यदि सूर्य से द्वितीय स्थान में अस्त रहित शुक्र, गुरु, बुध हो और शत्रु ग्रह की दृष्टि से रहित हो तो जातक की सेना शत्रु के लिये कण्टक रूप होती है। उस का यश दिशाओं का वस्त्र स्वरूप होता है॥

सत्त्वोपेतः शुभजननपः पूर्णचंद्रं प्रपश्ये-
द्यस्योत्पत्तौ भवति नृपतिर्निर्जितारातिपक्षः।
यात्राकाले गजहयरथात्यंततूर्यस्वनानां
ब्रह्मांडं नोऽखिलमपि भवेत्पूरणार्थं समर्थम् ॥ ३० ॥

जिस के, जन्म काल में लग्न स्वामी बली हो कर पूर्ण चन्द्र को देखता हो तो वह शत्रु को जीतने वाला राजा होता है। उसकी यात्रा समय हाथी, घोड़ा आदि के शब्द से ब्रह्माण्ड पूर्ण हो जाता है ॥३०॥

स्वोच्चेषु वाचस्पतिसूर्यशुक्राः शनीक्षितः शीतरुचिर्निजोच्चे ।
यद्यानकाले रजसो वितानं रुणद्धि सूर्याश्वविलोचनानि ॥ ३१ ॥

अपने २ उच्च स्थान में गुरु, सूर्य, शुक्र हों, चन्द्रमा भी अपने उच्च का हो और शनि से देखे जाते हों तो जातक राजा होता है, और उस के प्रयाण समय पृथ्वीरज से आकाश व्याप्त हो जाता है जिस से सूर्य के घोड़े की आँख भी बन्द हो जाती है ॥ ३१ ॥

नास्तं याताः सुतगृहगताः सौम्यशुक्रामरेज्या
नक्रे वक्रो रविरहितगोधर्मगो यस्य मंदः ।
यात्राकाले किल कमलिनीपुष्पसंकोचकर्ता
श्रीसूर्योऽपि प्रचलितदलोद्भूतधूली कृतास्तः ॥ ३२ ॥

जिस के जन्म काल में पञ्चम स्थान में अस्त रहित बुध, शुक्र, गुरु हों, मकर में मङ्गल, षष्ठ भाव में रवि, नवम भाव में शनि हो तो वह राजा होता है। उसकी यात्रा समय पृथ्वी से उड़ते हुए रज से आच्छादित सूर्य कमलिनी पुष्प को भी बन्द कर देते हैं ॥ ३२ ॥

कन्यालग्नगते बुधे च विबुधामात्ये च जायास्थिते
भौमार्कौ सहजेऽर्कजोऽरिभवनेऽम्बुस्थे भृगोर्नंदने ।
योगेऽस्मिन्मनुजस्य यस्य जननं तच्छासनं सर्वदा
राजानः प्रवहन्त्यलं सुविमलां मालां व मौलिस्थले॥३३॥

यदि कन्या लग्न में बुध, सप्तम भाव में गुरु, तृतीय भाव में सूर्य, मङ्गल, षष्ठ भाव में शनि और चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो राजयोग होता है। इस योग में उत्पन्न जातक की आज्ञा को माला की तरह राजा सब शिर से धारण करते हैं ॥ ३३ ॥

मीनोदये दानवराजपूज्यश्चंद्रामरेज्यौ भवतः कुलीरे ।
मेषेऽर्कभौमौ नृपतिः किल स्यादाखण्डलेनापि तुलां प्रयाति ॥३४॥

यदि मीन लग्न म शुक्र, कर्क में चन्द्रमा, गुरु और मेष में सूर्य,

मङ्गल हों तो जातक इन्द्र तुल्य पराक्रमशाली राजा होता है ॥ ३४ ॥

इति निगदितयोगैर्नीचवंशोद्भवोऽपि
भवति हि पतिरुर्व्याः किं पुना राजसूनुः।
नरपतिकुलजातो वक्ष्यमाणैश्च योगै-
र्भवति नृपतिरेवं तत्समोऽन्यस्य सूनुः ॥ ३५ ॥

इन योगों में नीच कुल में उत्पन्न भी जातक राजा होता है, तो राजा के कुल में उत्पन्न की क्या बात।

वक्ष्यमाण योगों में राजकुल में उत्पन्न जातक ही राजा होते हैं, अन्य राजा के समान होते हैं ॥ ३५ ॥

छायासुतो नक्रविलग्नवर्ती चास्ते प्रसूतौ यदि पुष्पवंतौ।
लाभे कुजो वै भृगुजोऽष्टमस्थः स्याद्भूपतिर्भूपकुलप्रसूतः ॥ ३६ ॥

यदि मकर लग्न में शनि, सप्तम में सूर्य, चन्द्र, एकादश भाव में मङ्गल और अष्टम में शुक्र हो तो राजा के वंश में उत्पन्न जातक राजा होता है ॥ ३६ ॥

सुरासुरेज्यौ भवतश्चतुर्थेऽत्यर्थं समर्थः पृथिवीपतिः स्यात्।
कर्कस्थितो देवगुरुः सचंद्रः काश्मीरदेशाधिपतिं करोति ॥ ३७ ॥

यदि गुरु, शुक्र चतुर्थ भाव में हों तो जातक अति बली राजा होता है। यदि चन्द्रमा सहित गुरु कर्क राशि में स्थित हो कर चतुर्थ भाव में हो तो ज़ातक काश्मीर देश का राजा होता है ॥ ३७ ॥

सुरासुरेज्यस्थितदृष्टिरिंदुः स्वोच्चे स्थितो भूमिपतिं करोति।
विलोकयंतः परिपूर्णचन्द्रं शुक्रज्ञजीवा जनयन्ति भूपम् ॥ ३८ ॥

यदि उच्च स्थान में स्थित चन्द्र पर गुरु, शुक्र दोनों की दृष्टि हो तो जातक राजा होता है। यदि केवल पूर्ण चन्द्र को बुध, गुरु, शुक्र, तीनों देखते हों तो राजा के कुल में उत्पन्न जातक राजा होता है ३८

पश्येन्मृगाङ्कात्मजमिद्रमन्त्री विचित्रसम्पन्नृपतिं करोति।
एकोऽपि खेटो यदि पञ्चमांशे प्रसूतिकाले कुरुते नृपालम् ॥ ३९ ॥

यदि किसी राशि में स्थित बुध के ऊपर गुरु की दृष्टि हो तो जातक विचित्र सम्पत्ति शाली राजा होता है। यदि पञ्चम नवांश में कोई ग्रह स्थित हो तो जातक राजा होता है ॥ ३९ ॥

नक्षत्रनाथोऽप्यधिमित्रभागे शुक्रेण दृष्टो नृपतिं करोति ।
स्वांशाधिमित्रांशगतोऽथवा स्याज्जीवेन दृष्टः कुरुते नृपालम् ॥ ४० ॥

यदि चन्द्रमा अधिमित्र के नवांश में स्थित हो कर शुक्र से देखा जाता हो तो जातक राजा होता है। अपने वा अधिमित्र के नवांश में स्थित हो कर चन्द्रमा यदि गुरु से देखा जाता हो तो जातक राजा होता है ॥ ४० ॥

दिनादिनाथोऽप्यधिमित्रभावे चन्द्रेण सम्यक्सुविलोकितो वा ।
स्यात्तस्कराणां निचये नृपालः सच्छीलशाली सुतरामुदारः ॥४१॥

यदि सूर्य अपने अधिमित्र के भाव में स्थित हो कर रवि, चन्द्र दोनों से देखा जाता हो तो जातक चोरों के मध्य में स्थित हो कर भी सुन्दर स्वभाव वाला अति उदार राजा होता है ॥ ४१ ॥

स्वोच्चस्थितः सोमसुतः ससोमः कुर्यान्नरं मागधदेशराजम् ।
कलाधिशाली बलवान्कलावान्करोति भूपं शुभधामसंस्थः ॥४२॥

यदि चन्द्र सहित बुध कन्या राशि में हो तो जातक मगध देश का राजा होता है। यदि पूर्णबली चन्द्रमा बलवान् हो कर शुभ स्थान में स्थित हो तो जातक राजा होता है ॥ ४२ ॥

जन्मेश्वरो जन्मविलग्नपो वा केन्द्रे बली नीचकुलेऽपि भूपम् ।
कुर्यादुदारं सुतरां पवित्रं किमत्र चित्रं क्षितिपालपुत्रम् ॥ ४३ ॥

जिस के जन्म काल में जन्म राशि का स्वामी या जन्म लग्न का स्वामी बली हो कर केन्द्र में स्थित हो तो नीच कुल में उत्पन्न भी मनुष्य राजा होता है। राजा के कुल में उत्पन्न की बात ही क्या ४३

मेषे दिनेशः शशिना समेतो यस्य प्रसूतौ स तु भूपतिः स्यात् ।
कर्णाटकद्राविडकेरलान्ध्रदेशाधिपानामनुकूलवर्ती ॥ ४४ ॥

यदि मेष में स्थित हो कर रवि चन्द्रमा से युक्त हो तो जातक कार्णाट, द्राविड़, केरल और आन्ध्र देश के राजा के अनुकूल रहने वाला राजा होता है ॥ ४४ ॥

स्वतुङ्गगेहोपगतौ सितेज्यौ केन्द्रत्रिकोणेषु गतौ भवेताम्।
प्रसूतिकाले कुरुतो नृपालं नृपालजातं सचिवेन्द्रमन्यम् ॥ ४५ ॥

यदि अपने २ उच्च राशि में स्थित हो कर गुरु, शुक्र दोनों केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो राजा के कुल में उत्पन्न मनुष्य राजा और अन्य वंश में उत्पन्न मनुष्य राज मन्त्री होता है ॥ ४५ ॥

प्रसूतिकाले मदने धने च व्यये विलग्ने यदि सन्ति खेटाः।
ते छत्रयोगं जनयंति तस्य प्राक्पुण्यपाकाभ्युदयो हि यस्य ॥४६॥

जन्म काल में सप्तम, द्वितीय, द्वादश और लग्न में अगर सब ग्रह बैठे हों तो छत्र योग होता है। पूर्वार्जित पुण्य के उदय से ऐसा योग होता है ॥ ४६ ॥

पापो विलग्ने यदि यस्य सूतौ दृष्टो भवेच्चित्रशिखण्डिजेन।
कर्के गुरुर्ब्राह्मणदेवभक्तः प्रासादवापीपुरकृन्नरः स्यात् ॥ ४७ ॥

जिस के जन्म समय लग्न में पाप ग्रह स्थित हो कर बृहस्पति से देखे जाते हों और कर्क में बृहस्पति हो तो जातक ब्राह्मण और देवों का भक्त, मकान, वापी और पुर का बनवाने वाला राजा होता है ॥४७॥

एकोऽपि शस्तः शुभदः स्वतुङ्गे केन्द्रे पतङ्गो बलवान्प्रदृष्टः।
सुतस्थितेनामरपूजितेन चेन्मानवो मानवनायकः स्यात् ॥ ४८ ॥

जन्म समय एक भी शुभ ग्रह अपने उच्च या केन्द्र में स्थित हो कर पञ्चम स्थित गुरु से देखा जाता हो तो जातक राजा होता है ४८

मृगराशिं परित्यज्य स्थितो लग्ने बृहस्पतिः।
करोति पृथिवीनाथं मत्तेभपरिवारितम् ॥ ४९ ॥

यदि मकर राशि को त्याग कर लग्न में स्थित गुरु हो तो जातक मतवाले हाथियों से युक्त राजा होता है ॥ ४६ ॥

कलाकलापाधिकृताधिशाली चन्द्रो भवेज्जन्मनि केन्द्रवर्ती।
विहाय लग्नं कुरुते नृपालं लीलाविलासकलितारिवृन्दम् ॥ ५० ॥

यदि पूर्ण बली चन्द्रमा लग्न को छोड़ कर केन्द्र स्थान में स्थित हो तो जातक खेल से शत्रुओं को मारने वाला राजा होता है ॥ ५० ॥

केन्द्रगः सुरगुरुः शशाङ्को यस्य जन्मनि च भार्गवदृष्टः।
भूपतिर्भवति सोऽतुलकीर्तिर्नीचगो न यदि कश्चिदिह स्यात् ॥ ५१॥

यदि चन्द्रमा से युक्त बृहस्पति केन्द्र में स्थित हो कर शुक्र से देखा जाता हो तो जातक अति यश वाला राजा होता है। यदि नीच स्थान में कोई ग्रह न हो ॥ ५१ ॥

धनस्थिताः सौम्यसितामरेज्या मन्दारचन्द्रा यदि सप्तमस्थाः।
यस्य प्रसूतौ स तु भूपतिः स्यादरातिदन्तिक्षतिसिंह एव ॥ ५२ ॥

यदि धन स्थान में बुध, गुरु, शुक्र हों और सप्तम स्थान में शनि, चन्द्र, मङ्गल हों तो जातक राजा होता है। तथा शत्रु रूपी हाथियों को मारने के लिये सिंह स्वरूप होता है ॥ ५२ ॥

कुम्भाष्टमांशे शशिनि त्रिकोणे मेषेऽद्रिभागे धरणीसुतो वा।
द्वन्द्वैकविंशांशगतेऽथवा ज्ञे यस्य प्रसूतौ स तु भूपतिः स्यात् ॥५३॥

यदि कुम्भ के अष्टमांश में स्थित हो कर चन्द्रमा अपने मूल त्रिकोण में स्थित हो, मेष के सप्तमांश में मङ्गल हो, मिथुन के २१ वे अंश में बुध हो तो जातक राजा होता है ॥ ५३ ॥

कुम्भस्य चेत्पञ्चदशे विभागे कर्के दशांशोपगतो विधुश्चेत्।
तृतीयभागे धनुषीन्द्रवन्द्यः सिंहे शशाङ्केऽप्यथवापि भूपः ॥ ५४ ॥

यदि कुम्भ के पञ्चदशांश और कर्क के दशमांश में चन्द्रमा बैठा हो, धनु के तृतीयांश में गुरु तथा सिंह के तृतीयांश में चन्द्रमा हो तो जातक राजा होता है ॥ ५४ ॥

पुष्येऽश्विभे वाप्यथ कृत्तिकासु वर्गोत्तमे पूर्णतनुः कलावान्।
करोति जातं खलु सार्वभौमं त्रिपुष्करोत्पन्नरोऽपि भूपः ॥ ५५ ॥

यदि पुष्य, अश्विनी, कृत्तिका के वर्गोत्तम नवांश में पूर्ण बली चन्द्रमा हो तो जातक राजा होता है। तथा त्रिपुष्कर योग में उत्पन्न मनुष्य भी राजा होता है ॥ ५५ ॥

तिथिश्च भद्रा विषमांघ्रिभे चेद्वारे गुरुक्ष्मातनयार्कजानाम् ।
त्रिपुष्करो योग इति प्रदिष्टो वृद्धौ च हानौ त्रिगुणात्मकर्ता ॥५६॥

जिस के जन्म काल में भद्रा तिथि, नक्षत्र का प्रथम तृतीय चरण और बृहस्पति, मङ्गल, शनि वार हो तो त्रिपुष्कर योग होता है। यह वृद्धि, हानि दोनों में त्रिगुणित फल देता है ॥ ५६ ॥

मैत्रे च दास्रेऽप्यथवात्मतुङ्गे वार्गोत्तमे भूमिसुतः करोति ।
महीपतिं पार्थिववंशजातं चान्यं प्रधानं धनिनं समृद्धम् ॥ ५७ ॥

यदि अनुराधा, अश्विनी नक्षत्र, अपने उच्च या अपने वर्गोत्तम नवांश में मङ्गल स्थित हो तो राजा के वंश में उत्पन्न जातक राजा होता है और अन्य कुल में उत्पन्न मनुष्य धनी, मन्त्री होता है ॥ ५७ ॥

चेद्भार्गवो जन्मनि यस्य पुण्ये मेषूरणे पूर्णतनुः शशाङ्कः ।
अन्ये ग्रहा लाभगता भवेयुः पृथ्वीपतिः पार्थिववंशजातः ॥ ५८ ॥

जिस के जन्म काल में नवम में शुक्र, दशम में पूर्णबली चन्द्रमा और एकादश में शेष ग्रह स्थित हों तो राजकुलोत्पन्न जातक राजा होता है ॥ ५८ ॥

उपचयभवनस्थाः सर्वखेटाः शशाङ्का-
द्रविगुशशिनश्चेद्भूमिसूनोर्भवन्ति ।
त्रितनयनवमस्थाः कुर्वते ते नरेन्द्रं
गजतुरगरथानां सम्पदा राजमान्यम् ॥ ५९ ॥

जिस के जन्म काल में चन्द्रमा से ३, ६, १०, ११, में सब ग्रह बैठे हों या मङ्गल से ३, ५, ९ में क्रम से सूर्य, गुरु, चन्द्रमा हों तो जातक हाथी घोड़ों से युक्त राजा का आदरणीय होता है ॥ ५९ ॥

सुखे सितज्ञौ सहजेऽम्बुजेशस्तिष्ठन्ति खेटाः सुतधाम्नि चान्ये ।
निजारिराशौ नहि कश्चिदत्र धात्रीपतिश्चैककृतातपत्रः ॥ ६० ॥

जिस के जन्म काल में चतुर्थ में शुक्र, बुध, तृतीय में सूर्य, पञ्चम में शेष ग्रह स्थित हो और अपने शत्रु की राशि में कोई भी ग्रह न हो तो जातक राजा होता है ॥ ६० ॥

सिंहे कमलिनीभर्ता कुलीरस्थो निशाकरः ।
दृष्टौ द्वावपि जीवेन पार्थिवं कुरुते सदा ॥ ६१ ॥

जिस के जन्म काल में सिंह राशि में सूर्य और कर्क में चन्द्रमा स्थित हो कर दोनों बृहस्पति से देखे जाते हों तो जातक राजा होता है ॥ ६१ ॥

बुधः कर्कटमारूढो वाक्पतिश्च धनुर्धरे ।
रविभूसुतदृष्टौ तौ पर्थिवं कुरुते सदा ॥ ६२ ॥

जिस के जन्म समय कर्क में बुध और धनु में गुरु स्थित हो कर शनि, मङ्गल से देखे जाते हों तो जातक राजा होता है ॥ ६२ ॥

शफरीयुगले चन्द्रः कर्कटे च बृहस्पतिः ।
शुक्रः कुम्भे भवेद्राजा गजवाजिसमृद्धिभाक् ॥ ६३ ॥

जिस के जन्म समय मीन में चन्द्रमा, कर्क में गुरु, कुम्भ में शुक्र हो तो वह हाथी, घोड़ा और सम्पत्तियों से युक्त राजा होता है ॥६३॥

सितदृष्टः शनिः कुम्भे पद्मिनीनायकोदये ।
चन्द्रे जलचरे राशौ यदि राजा तदा भवेत् ॥ ६४ ॥

यदि शुक्र से दृष्ट शनि कुम्भ राशि में स्थित हो, लग्न में सूर्य और कर्क में चन्द्रमा हो तो जातक राजा होता है ॥ ६४ ॥

चेत्खेचरो नीचगृहं प्रयातस्तदीश्वरश्चापि तदुच्चनाथः ।
केन्द्रस्थितौ तौ भवतः प्रसूतौ प्रकीर्तितौ भूपतिसम्भवाय ॥ ६५ ॥

जन्म समय जो ग्रह नीच में स्थित हो, नीच राशि और उच्च

राशि के स्वामी केन्द्र में बैठा हो तो राजा के कुल में उत्पन्न जातक राजा होता है ॥ ६५ ॥

कृत्तिका रेवती स्वाती पुष्यस्थायी भृगोः सुतः।

करोति भूभुजां नाथमश्विन्यामपि संस्थितः ॥ ६६ ॥

यदि कृत्तिका, रेवती, स्वाती, पुष्य या अश्विनी में शुक्र हो तो जातक राजा होता है ॥ ६६ ॥

राज्यप्राप्तिकालमाह—

राज्योपलब्धिर्दशमस्थितस्य विलग्नगस्याप्यथवा दशायाम्।

तयोरलाभे बलशालिनो वा सद्राजयोगो यदि जन्मकाले ॥ ६७ ॥

यदि जन्म काल में प्रबल राज योग हो तो दशम स्थान में स्थित ग्रह की दशा में या लग्न में स्थित ग्रह की दशा में या इन के अभाव होने से बलवान् ग्रह की दशा में राज्य लाभ होता है ॥ ६७ ॥

इति राजयोगाध्यायः।

अथ राजयोगसङ्कलितसामुद्रिकाध्यायः

प्रसूतिकाले प्रबला यदि स्युर्नृपालयोगाः पुरुषस्य यस्य।

सद्राजचिह्नानि पदे तदीये भवन्ति वा पाणितलेऽमलानि ॥ १ ॥

जिस के जन्म काल में प्रबल राजयोग हो उस के हाथ और पाँव में निर्मल राज चिन्ह होते हैं ॥ १ ॥

अनामिका मूलगता प्रशस्ता सा कीर्तिता पुण्यविधानरेखा।

मध्याङ्गुलेर्या मणिबन्धमाप्ता राज्याप्तये सा च किलोर्ध्वरेखा ॥२॥

अनामिका अङ्गुली की जड़ में पुण्य रेखा, और मध्यमा अङ्गुली से मणिबन्ध तक उर्ध्व रेखा होती है। यह रेखा राज्य लाभ कराने वाली होती है ॥ २ ॥

विराजमानं यवलाञ्छनं चेदङ्गुष्ठमध्ये पुरुषस्य यस्य।

भवेद्यशस्वी निजवंशभूषा भूपाविशेषैः सहितो विनीतः ॥ ३ ॥

जिस के अंगुठे के बीच में यव का चिह्न हो वह यशस्वी, अपने कुल में अलङ्करण के समान, अनेक भूषणों से सहित और नम्र होता है ॥

चेद्वारणो वातपवारणो वा वैसारिणः पुष्करिणी सृणिर्वा ।
वीणा च पादौ चरणे नराणां तैः स्युर्नराणामधिपा वरेण्याः ॥४॥

जिस के हथेली या पांव में हाथी, छत्र, मछली, तालाव, अंकुश या वीणा की रेखा पड़ी हो वह राजा होता है ॥ ४ ॥

आदर्शमालाकरवालशैलहलाश्च तत्पाणितले मिलन्ति ।
स्यान्माण्डलीकोऽवनिपालको वा कुले नृपालः कुलतारतम्यात् ॥५॥

जिस मनुष्य के हथेली में शीशे की माला, कमण्डलु, पर्वत और हल के समान रेखा हो वह अपने कुल के अनुसार बड़ा या छोटा राजा होता है ॥ ५ ॥

चेद्यस्य पाणौ चरणे च चक्रे धनुर्ध्वजाब्जव्यजनासनानि ।
रथाश्च दोलाकमलाविलासास्तस्यालये स्युर्गजवाजिशालाः ॥ ६ ॥

जिस के हाथ या पाँव में चक्र, धनुष, ध्वजा, कमल, पंखा या आसन की रेखा पड़ी हो उस के घर पर रथ, पालकी, लक्ष्मी का विलास और हाथी घोड़ा की शाला होती है ॥ ६ ॥

स्तम्भस्तु कुम्भस्तु तरुस्तुरङ्गो गदा मृदङ्गोऽङ्घ्रिकरप्रदेशे ।
दण्डोऽथवा खण्डितराज्यलक्ष्म्या स्यान्मण्डितः पण्डितशौण्डको वा ॥

जिस के हाथ या पाँव में खम्भा, घड़ा, वृक्ष, घोड़ा, गदा, मृदंग या दण्ड का चिन्ह हो वह राजा, पण्डित या मद्य बेचने वाला होता है ॥७॥

सुवृत्तमौलिस्तु विशालभालश्चाकर्णनीलोत्पलपत्रनेत्रः ।
आजानुबाहुं पुरुषं तमाहुर्भूमण्डलाखण्डलमार्यवर्याः ॥ ८ ॥

जिस मनुष्य का शिर गोला, माथा बड़ा, कान तक लम्बी आँख, घुटने तक लम्बे हाथ हों वह इन्द्र के समान राजा होता है ॥ ८ ॥

नरस्य नासा सरला च यस्य वक्षःस्थलं चापि शिलातलाभम् ।
नाभिर्गभीरातिमृदू भवेतामारक्तवर्णौ चरणौ स भूपः ॥ ९ ॥

जिस मनुष्य की नाक सीधी, शोला तल के समान छाती, ढोढी (टूडी) गहरी, कोमल और रक्तवर्ण पाँव हों तो वह राजा होता है॥९॥

करतले यदि यस्य तिलो भवेदविरलः किल तस्य धनागमः।
पदतले च तिलेन समन्विते नृपतिवाहनचिह्नसमन्वितः ॥१०॥

जिस के हथेली में तिल का चिन्ह हो उसे सदा धन की प्राप्ति होती है। यदि पाँव में तिल का चिन्ह हो तो वाहन सुख होता है॥१०॥

प्रसन्नमूर्तिः समुदारचेता वंशाभिमानः शुभवाग्विलासः।
अनीतिभीरुर्गुरुसाधुनम्रः साम्राज्यलक्ष्मीं लभते मनुष्यः ॥११॥

जो मनुष्य प्रसन्न वदन, उदारचित्त, कुल का अभिमान रखने वाला, प्रिय बोलने वाला, अन्याय से डरने वाला, गुरु और सज्जनों के सामने नम्र हो वह राजा होता है॥ ११॥

एतत्फलं राजकुलोद्भवानां स्यान्मानवानां मुनयो वदन्ति।
प्रकल्पयेदन्यकुलोद्भवानां नूनं तदूनं स्वकुलानुमानात् ॥१२॥

पूर्वोक्त सब फल राजकुल में उत्पन्न मनुष्य के लिये होता है, ऐसा मुनियों ने कहा है। अन्य कुल में उत्पन्न मनुष्य के लिये अपने कुल के अनुसार तारतम्य से फल कहना चाहिए॥ १२॥

चिह्नानि यानि प्रतिपादितानि व्यक्तानि सम्पूर्णफलप्रदानि।
वामेतरेऽङ्गे च करे नराणां धन्यानि वामे खलु कामिनीनाम्॥१३॥

पूर्वोक्त जितने चिन्ह हैं वे यदि स्पष्ट हों तो पूर्ण फल को देते हैं। पुरुष के दाहिने और स्त्रियों के बायें हाथ पाँव में चिन्ह देखना चाहिये॥ १३॥

इति राजयोगसङ्गतिसामुद्रिकाध्यायः।

अथ राजयोगभंगाध्यायः।

शत्रुक्षेत्रगतैः सर्वैर्वर्गोत्तमयुतैरपि।
राजयोगा विनश्यन्ति बहुभिर्नीचगैर्ग्रहैः ॥ १ ॥

यदि सब ग्रह शत्रु गृह में बैठे हों तो वर्गोत्तम नवांश में होने पर भी राजयोग का नाश करते हैं। यदि बहुत ग्रह अपने नीच स्थान

में स्थित हों तो राजयोग का भंग होता है ॥ १ ॥

चन्द्रं वा यदि वा लग्नं ग्रहो नैकोऽपि वीक्षते ।
तथापि राजयोगानां भङ्गमाह पराशरः ॥ २ ॥

कोई भी ग्रह यदि चन्द्रमा या लग्न को नहीं देखता हो तो राजयोग का नाश होता है, ऐसा पराशर का मत है ॥ २ ॥

स्वांशे रवौ शीतकरे विनष्टे दृष्टं च पापैः शुभदृष्टिहीनैः ।
कृत्वापि राज्यं च्यवते मनुष्यः पश्चात्सुदुःखं लभते हताशः ॥३॥

यदि अपने नवंश में सूर्य हो और चन्द्रमा को पाप ग्रह देखते हों शुभग्रह नहीं तो जातक पूर्व में राज्य करके भी पश्चात् दुखी होता है ॥

उल्काव्यतीपातदिने तथैव नैर्घातिके केतुसमुद्भवे वा ।
चेद्राजयोगेऽपि च यस्य सूतिर्नरो दरिद्रोऽतितरां भवेत्सः ॥४॥

जिस मनुष्य के जन्म काल में उल्का पात हो, व्यतीपात योग हो, भूकम्प हो या केतु का उदय हो तो राज योग में उत्पन्न जातक भी दरिद्र होता है ॥ ४ ॥

तुलायां नलिनीनाथः परमं नीचमाश्रितः ।
निर्दिष्टराजयोगानां दलनोऽथ भवेद्ध्रुवम् ॥ ५ ॥

यदि सूर्य तुला राशि के परमनीचांश में स्थित हो तो पूर्वोक्त सब राजयोगों का नाश होता है ॥ ५ ॥

मृगलग्ने सुराचार्यः परमं नीचमाश्रितः ।
राजयोगोद्भवस्यापि कुरुतेऽतिदरिद्रताम् ॥ ६ ॥

यदि बृहस्पति मकर लग्न में स्थित हो कर परमनीचांश का हो तो राजयोग में उत्पन्न जातक भी अति दरिद्र होता है ॥ ६ ॥

वाचस्पतावस्तगते ग्रहेंद्रास्त्रयोऽपि नीचेषु घटो विलग्ने ।
एकोऽपि नीचे दशमेऽपि पापा भूपालयोगा विलयं प्रयान्ति ॥७॥

यदि बृहस्पति अस्त हो, तीन ग्रह नीच राशि में बैठे हों और

जन्म लग्न कुम्भ हो तो राजयोग का नाश होता है।

यदि एक भी ग्रह नीच राशि में हो और पाप ग्रह दशम स्थान में स्थित हों तो राजयोग का नाश होता है ॥ ७ ॥

प्रसूतौ दानवामात्यः परमं नीचमाश्रितः।
करोति पतनं नूनं मानवानां महापदात् ॥ ८ ॥

जन्म काल में शुक्र अपने परम नीचांश में स्थित हो तो जातक उत्तम स्थान पाकर भी भ्रष्ट हो जाता है ॥ ८ ॥

यदि तनुभवनस्थो राहुरिन्दुप्रदृष्टः
सहजरिपुभवस्था भानुमन्दावनेयाः।
शुभविरहितकेन्द्रैरस्तगैर्वापि सौम्यै-
र्भवति नृपतियोगो व्यर्थ एवेति चिन्त्यम् ॥ ९ ॥

लग्न में स्थित हो कर राहु यदि चन्द्रमा से देखा जाता हो, तृतीय, षष्ठ, एकादश में क्रम से सूर्य, शनि, मङ्गल स्थित हों और शुभ ग्रह केन्द्र रहित या सप्तम में स्थित हों तो जातक का राजयोग निष्फल जाता है॥

केन्द्रेषु शून्येषु शुभैर्नभोगैरस्तं गतैर्नीचगृहस्थितैर्वा।
चतुर्ग्रहैर्वाप्यरिमन्दिरस्थैर्नृपालयोगाः प्रलयं प्रयान्ति ॥ १० ॥

यदि शुभ ग्रह केन्द्र में न हों, अस्त हों, नीच राशि में हों या चार ग्रह शत्रु राशि में बैठे हों तो राजयोग का नाश होता है ॥ १० ॥

सर्वेपि पापा यदि कण्टकेषु नीचारिगा नो शुभदृष्टियुक्ताः।
नीचारिरिःफेषु च सौम्यसंज्ञा राज्ञां हि योगो विलयं प्रयांति॥११॥

यदि सब पाप ग्रह केन्द्र में स्थित हो कर नीच या शत्रु राशि के हों, शुभ ग्रह से न देखे जाते हों और नीच, शत्रु राशि, द्वादश इन स्थानों में शुभ ग्रह हों तो राजयोग का नाश होता है ॥ ११ ॥

इति राजयोगभङ्गाध्यायः।

अथ पंचमहापुरुषयोगाध्यायः

ये महापुरुषसंज्ञका नृपाः पञ्च पूर्वमुनिभिः प्रकीर्तिताः ।
वच्मि तान्सुसरलान्महोक्तिभी राजयोगविधिदर्शनेच्छया ॥ १ ॥

प्राचीन मुनियों से राजयोगात्मक पांच महापुरुष योग जो प्रतिपादित किये गये हैं। राजयोग देखने की इच्छा से उन को विस्तार कर के कहता हूं ॥ १ ॥

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वावनिसूनुमुख्यैः ।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः ॥ २ ॥

यदि मङ्गल आदि पांच ग्रह अपने गृह या उच्च में स्थित हो कर केन्द्र में हों तो रुचक आदि योग होते हैं, अर्थात् मङ्गल से रुचक, बुध से भद्र, बृहस्पति से हंस, शुक्र से मालव्य और शनि से शशक योग होता है ॥ २ ॥

रुचकयोगफलम्—

दीर्घायुः स्वच्छकान्तिर्बहुरुधिरबलः साहसाच्चाप्तसिद्धि-
श्चारुभ्रूनीलकेशः समकरचरणो मन्त्रविच्चारुकीर्तिः ।
रक्तश्यामोऽतिशूरो रिपुबलमथनः कम्बुकण्ठो महौजाः
क्रूरो भक्तः सुराणां द्विजगुरुविनतः क्षामजानूरुजङ्घः ॥ ३ ॥
खट्वाङ्गपाशवृषकार्मुकचक्रवीणा
वज्राङ्कहस्तचरणःसरलाङ्गुलःस्यात् ।
मन्त्राभिचारकुशलस्तुलयेत्सहस्रं
मध्यं च तस्य गदितं मुखदैर्घ्यतुल्यम् ॥ ४ ॥
सह्यस्य विन्ध्यस्य तथोज्जयिन्याः प्रभुः शरत्सप्ततिजीवितोऽसौ ।
शस्त्राग्निचिह्नो रुचकाभिधाने देवालये तन्निधनं प्रयाति ॥ ५ ॥

रुचक योग में उत्पन्न जातक दीर्घायु, निर्मल कान्ति वाला, अधिक रुधिर बल वाला, साहस से सिद्धि को प्राप्त करने वाला, सुन्दर भौंह वाला, काले केश वाला, समान हाथ पांव वाला, मन्त्र

शास्त्र को जानने वाला, सुन्दर यश वाला, लालो लिये श्याम वर्ण, शूर, शत्रुओं को मारने वाला, शंख के समान कण्ठ वाला, बड़ा पराक्रमी, क्रूर स्वभाव वाला, देवताओं का भक्त, ब्राह्मण और गुरु के सामने नम्र, दुर्बल टेहुन और जंघा वाला, शय्या, फाँसी, बैल, धनुष, चक्र, वीणा, वज्र इन के चिन्हों से युक्त हाथ पाँव वाला, सीधी अंगली वाला, मन्त्रों के अभिचार में कुशल, एक हजार पल देह का भार वाला, लम्बा मुख वाला, सह्य विन्ध्य और उज्जैन देश का राजा होता है। तथा शस्त्र और अग्नि के चिह्न से युक्त हो कर देवालय में मरण होता है ॥ ३-५ ॥

भद्रयोगफलम्—

शार्दूलप्रतिमाननो द्विपगतिः पीनोरुवक्षस्थलो
लम्बापीनसुवृत्तबाहुयुगलस्तत्तुल्यमानोच्छ्रयः।
कामी कोमलसूक्ष्मरोमनिचयैः संरुद्धगण्डस्थलः
प्राज्ञः पङ्कजगर्भपाणिचरणः सत्त्वाऽधिको योगवित् ॥ ६ ॥
शङ्खासिकुञ्जरगदाकुसुमेषुकेतुचक्राब्जलाङ्गलविचिह्नितपाणिपादः।
यात्रागजेन्द्रमदवारिकृतार्द्रभूमिः सत्कुङ्कुमप्रतिमगन्धतनुः सुघोषः ॥७॥
सद्रूपगोऽतिमतिमान्खलु शास्त्रवेत्ता मानोपभोगसहितोऽतिविगूढगुह्यः।
सत्कुक्षिधर्मनिरतो सुललाटपट्टो धीरो भवेदसितकुञ्चितकेशपाशः ॥८॥
स्वतन्त्रः सर्वकार्येषु स्वजनं प्रति न क्षमा।
युज्यते विभवस्तस्य नित्यमर्थिजनैः परैः ॥ ९ ॥
भालं तुलायां तु भवेत्सुरत्ने श्रीकान्यकुब्जाधिपतिर्भवेत्सः।
भद्रोद्भवः पुत्रकलत्रसौख्यो जीवन्नृपालः शरदामशीतिम् ॥ १० ॥

भद्र योग में उत्पन्न जातक देखने में सिंह के समान, हाथी की सी चाल वाला, मोटे जंघा वाला, पुष्ट छाती वाला, लम्बे मोटे और गोल बाहों वाला, भुजाओं के बराबर ऊँचा, कामी, नरम और सूक्ष्म

रोमों से युक्त गाल वाला, पण्डित, कमल के समान हाथ-पाँव वाला, अति बली, योग क्रिया को जानने वाला, शंख, तलवार, हाथी, गदा, कमल, बाण, पताका, चक्र, चन्द्रमा, हल, इनके चिन्हों से युक्त हाथ पाँव वाला, यात्रा काल में हाथियों के मदजल से भूमि को गीली करने वाला, कुंकुम के समान सुगन्धि युक्त शरीर वाला, सुन्दर वाणी वाला, रूपवान्, बुद्धिमान्, शास्त्र को जानने वाला, मान और भोग से युक्त, गोपनीय वस्तु को अत्यन्त गुप्त रखने वाला, अच्छा पेट वाला, धर्म में निरत, सुन्दर मस्तक वाला, धीर, काले केश वाला, सब कार्यों में स्वतन्त्र, अपने बन्धुओं के लिए कुशल न करने वाला, अतिथि सत्कार के लिए धन देने वाला, कान्यकुब्ज देश का राजा, पुत्र स्त्री के सुख से युक्त, ८० वर्ष जीने वाला होता है ॥ ९-१० ॥

हंसमहापुरुषलक्षणम्—

रक्तास्योन्नतनासिकः सुचरणो हंसो प्रसन्नेन्द्रियो
गौरः पीनकपोलरक्तकरजो हंसस्वनः श्लेष्मलः ।
शङ्खाब्जाङ्कुशमत्स्यदामयुगलैः खट्वाङ्गमाला घटे
चञ्चत्पादकरस्थले मधुनिभे नेत्रे सुवृत्तं शिरः ॥ ११ ॥

जलाशयप्रीतिरतीव कामी न याति तृप्तिं वनितासु नूनम् ।
उच्चाङ्गुलैर्वै षडशीतितुल्यैरायुर्भवेत्षण्णवतिः समानाम् ॥ १२ ॥
वाह्लीकदेशान्तरशूरसेनगान्धर्वगङ्गायमुनान्तरालान् ।
भुक्त्वा वनान्ते निधनं प्रयाति हंसोऽयमुक्तो मुनिभिः पुराणैः ॥१३॥

हंस योग में उत्पन्न जातक लाल मुख वाला, ऊँची नाक वाला, प्रसन्न इन्द्रियों वाला, गोरा, पुष्ट गाल वाला, लाल नख वाला, हंस के समान शब्द करने वाला, कफ प्रकृति, शंख, कमल, अंकुश, मछली, माला युगल, खाट, और घड़ा इन के चिन्हों से युक्त हाथ पाँव वाला, मधु के समान नेत्र वाला, गोल मस्तक वाला, जलाशय में प्रेम रखने वाला, अति कामी, स्त्रीयों से तृप्त न होने वाला, ८६ अङ्गुल लम्बा शरीर वाला, ९६ वर्ष जीने वाला, वाल्हीक, सूरसेन

और गंगा यमुना के बीच की भूमि को भोगने वाला, वन मध्य में मृत्यु पाने वाला होता है। ऐसे प्राचीन मुनियों ने कहा है ॥११-१३॥

मालव्यनृपतिलक्षणमाह—

अस्थूलोष्ठोऽति विषमवपुर्नैव रिक्ताङ्गसन्धि-
मध्ये क्षामः शशधररुचिर्हस्तिनासः सुगण्डः।
सदीप्ताक्षिः समसितरदो जानुदेशाप्तपाणि-
र्मालव्योऽयं विलसति नृपः सप्ततिर्वत्सराणाम् ॥१४॥

वक्त्रं त्रयोदशमिताङ्गुलमस्य दीर्घं
तिर्यग्दशाङ्गुलमितं श्रवणान्तरालम्।
मालव्यसंज्ञनृपतिः स भुनक्ति नूनं
लाटांश्च मालवकसिन्धुसुपारियात्रान् ॥ १५ ॥

मालव्य योग में उत्पन्न जातक पतला होठ वाला, विषम शरीर वाला, पुष्ट अङ्गों की सन्धि वाला, पतली कमर वाला, चन्द्रमा के समान कान्ति वाला, लम्बी नाक वाला, सुन्दर कपोल वाला, तेज युक्त आँख और सफेद दाँत वाला, जंघा पर्य्यन्त लम्बे हाथ वाला, ७० वर्ष जीने वाला, १३ अङ्गुल लम्बा और १० अङ्गुल चौड़ा मुख वाला, लाट, मालव, सिन्ध और पारिजात देश का राजा होता है१४-१५

शशकपुरुषलक्षणमाह—

लघुद्विजेभ्यो द्रुतगः सकोपः शठोऽतिशूरो विजनप्रचारः।
वनाद्रिदुर्गेषु नदीषु सक्तः प्रियातिथिर्नातिलघुः प्रसिद्धः ॥ १६ ॥

नानासेनानिचयनिरतो दन्तुरश्चापि किञ्चि-
द्धातोर्वादे भवति कुशलश्चञ्चलः कोलनेत्रः।
स्त्रीसंयुक्तः परधनहरो मातृभक्तः सुजङ्घो
मध्ये क्षामः सुललितमती रन्ध्रवेदी परेषाम् ॥ १७ ॥

पर्यङ्कशङ्खशरशस्त्रमृदङ्गमाला-
वीणोपमाः खलु करे चरणे च रेखाः।

वर्षाणि सप्ततिमितानि करोति राज्यं
सस्यकशशाख्यनृपतिः कथितो मुनीन्द्रैः ॥१८॥

केन्द्रोच्चगा यद्यपि भूसुताद्या मार्तण्डशीतांशुयुता भवन्ति।
कुर्वन्ति नोर्वीपतिमात्मपाके यच्छन्ति ते केवलसत्फलानि ॥१९॥

शशक योग में उत्पन्न जातक छोटे दाँत वाला, छोटा मुख वाला, जल्दी चलने वाला, क्रोधी, शठ, अति शूर, निर्जन स्थान में घूमने वाला, वन, पर्वत, दुर्ग, नदी इन में प्रेम रखने वाला, अतिथि में प्रेम रखने वाला, अधिक छोटा नहीं, प्रसिद्ध, बहुत सेना वाला, ऊँचे दाँत वाला, धातु क्रिया में कुशल, चञ्चल, शूकर की तरह नेत्र वाला, स्त्रियों से युक्त, दूसरे का धन हरने वाला, माता का भक्त, अच्छे जांघो वाला, पतली कमर वाला, सुन्दर बुद्धि वाला, दूसरे का छिद्र देखने वाला, शय्या, शंख, मृदंग, माला, वीणा इन के चिन्हों से युक्त हाथ पाँव वाला, ७० वर्ष तक राज्य करने वाला होता है, यह मुनियों ने कहा है। केन्द्र में स्थित मङ्गल आदि पाँच ग्रह यदि उच्च में बैठे हों और सूर्य चन्द्र से युक्त हों तो राजयोग नहीं देकर केवल उत्तम फल देते हैं ॥ १८-१९ ॥

इति पञ्चमहापुरुषलक्षणाध्यायः।

अथ कारकयोगाध्यायः।

मूलत्रिकोणस्वगृहोच्चसंस्था नभश्चराः केन्द्रगता मिथः स्युः।
ते कारकाख्या मुनिभिः प्रणीता विशेष आज्ञाभवने विशेषः ॥१॥

प्रालेयरश्मिर्यदि सूतिवर्ती स्वमन्दिरस्थो यदि तुङ्गयातः।
सूर्यार्किजारामरराजपूज्याः परस्परं कारकसंज्ञकाः स्युः ॥ २ ॥

जो ग्रह अपने मूल त्रिकोण, अपने गृह, अपने उच्च या केन्द्र स्थान में बैठे हों वे परस्पर कारक ग्रह होते हैं। ऐसा मुनियों ने कहा है। दशम स्थान में स्थित ग्रह विशेष कारक होता है। यदि चन्द्रमा, जन्म-

लग्न, कर्क या वृष राशि में स्थित हो तो सूर्य, शनि, गुरु ये तीनों परस्पर कारक होते हैं ॥ १-२ ॥

शुभग्रहे लग्नगते च खाम्बुस्थितो ग्रहः कारकसंज्ञकः स्यात् ।
तुङ्गत्रिकोणे स्वगृहांशयातास्तेपीह माने तपने विशेषात् ॥ ३ ॥

यदि लग्न में शुभ ग्रह हों तो दशम और चतुर्थ स्थान में स्थित ग्रह कारक होते हैं। उच्च, मूल त्रिकोण, अपने गृह या अपने नवांश में स्थित हो कर ग्रह दशम स्थान में स्थित हों तो विशेष कारक होते हैं ॥ २-३ ॥

वेशिस्थितो यस्य शुभो नभोगो लग्ने विलग्ने च लवे स्वकीये ।
केन्द्राणि सर्वाणि शुभान्वितानि तस्यालये श्रीः कुरुते निवासम् ॥४॥

जिस के जन्म काल में सूर्य से द्वितीय स्थान में शुभ ग्रह हों, जन्म लग्न अपने नवांश में हो और शुभ ग्रह केन्द्र में हों तो उस के घर में लक्ष्मी निवास करती है ॥ ४ ॥

केन्द्रस्थिता गुरुविलग्नपजन्मनाथा मध्ये वयस्यतितरां वितरन्ति भाग्यम्।
शीर्षोदयाङ्घ्र्युभयभेषु गता भवेयुरारम्भमध्यमविरामफलप्रदास्ते॥५॥

जिस के जन्म काल में बृहस्पति, लग्नेश और जन्म राशीश केन्द्र में बैठे हो तो युवा अवस्था में उस का भाग्योदय होता है। यदि शीर्षोदय, पृष्ठोदय या उभयोदय राशि में बैठे हों तो क्रम से बाल्य, युवा और वृद्धावस्था में फल देते है ॥ ५ ॥

नीचान्वये यद्यपि जातजन्मा मन्त्री भवेत्कारकखेचरेन्द्रैः ।
राजान्वये यस्य भवेत्प्रसूतिर्भूमीपतित्वं स कथं न याति ॥ ६ ॥

यदि जन्म काल में कारक योग हो तो नीच वंश में उत्पन्न होने वाला मन्त्री और राजा के कुल में जन्म लेने वाला निश्चय राजा होता है ॥ ६ ॥

इति कारकयोगाध्यायः।
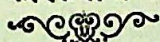
अथ नाभसयोगाध्यायः

रज्जुमुसलनलयोगानाह—

सर्वे चरस्था अपि वा स्थिरस्था द्विदेहसंस्था यदि वा भवन्ति।
क्रमेण रज्जुर्मुसलं नलश्च योगत्रयं स्यादिदमाश्रयाख्यम् ॥ १ ॥

सब ग्रह चर राशि में हों तो रज्जु, स्थिर में हों तो मुसल, द्विस्वभाव में हों तो नल नाम के योग होते हैं। ये तीनों आश्रय योग हैं॥१॥

मालाव्यालयोगद्वयम्—

केन्द्रत्रये सौम्यखगैस्तु माला खलग्रहैर्व्यालसमाह्वयः स्यात्।
इदं तु योगद्वितयं दलाख्यं पराशरेण प्रतिपादितं हि ॥ २ ॥

तीनों केन्द्रों में शुभ ग्रह हों तो माला और पाप ग्रह हों तो व्याल नामक योग होता है। ये दोनों दल योग पराशरने कहा है ॥ २ ॥

गदाशकटविहङ्गश्रृङ्गाटकयोगानाह—

आसन्नकेन्द्रद्वयगैर्गदाख्यो लग्नास्तसंस्थः शकटः समेतैः।
खबन्धुवातैर्विहगः प्रदिष्टः श्रृङ्गाटकं लग्ननवात्मजस्थैः ॥३॥

सब ग्रह प्रथम, चतुर्थ में हों तो (१), चतुर्थ, सप्तम में हों तो (२), सप्तम, दशम में हों तो (३), दशम, प्रथम में हों तो (४)। ये चार गदा योग होते हैं। यदि सब ग्रह प्रथम, सप्तम में हों तो शकट; चतुर्थ, दशम में हों तो विहग और प्रथम, नवम, पञ्चम में हों तो श्रृङ्गाटक नामक योग होता है ॥ ३ ॥

हलनामयोगः—

धनारिखस्थैस्त्रिमदायगैर्वा चतुर्थरन्ध्रव्ययसंस्थितैर्वा।
नभस्तलस्थैर्हलनामयोगः किलोदितोऽयं निखिलागमज्ञैः ॥ ४ ॥

यदि सब ग्रह २, ६, १० में, ३, ७, ११ में या ४, ८, १२ में स्थित हों तो तीन तरह का हल योग होता है ॥ ४ ॥

वज्रयवकमलयोगानाह—

लग्नस्मरस्थानगतैः शुभाख्यैः पापैश्च मेषूरणबन्धुयातैः।

वज्राभिधस्तद्विपरीतसंस्थैर्यवश्च मिश्रैः कमलाभिधानः ॥ ५ ॥

लग्न, सप्तम में शुभ ग्रह, और चतुर्थ, दशम में पाप ग्रह हों तो वज्र योग। लग्न, सप्तम में पाप ग्रह और चतुर्थ, दशम में शुभ ग्रह हों तो यव योग होता है। यदि सब शुभ ग्रह और पाप ग्रह चारों केन्द्रों में स्थित हों तो कमल योग होता है ॥ ५ ॥

सूर्याच्चतुर्थे कविचन्द्रसूनू कथं भवेतामिति नैव युक्तौ।
यवाख्यवज्रौ त्विदमामनंति तत्रोपपत्तिं परिदर्शयामि ॥ ६ ॥

पूर्वोक्त वज्र और यव योग में सूर्य (पाप ग्रह) से चतुर्थ स्थान में बुध, शुक्र (शुभ ग्रह) का होना असम्भव है। क्यों कि तीनों का मध्यम बराबर है, फल के वश एक राशि से ज्यादा अन्तर है। इस की उपपत्ति कहता हूं ॥ ६ ॥

विलग्नपार्श्वद्वयवर्तिनौ चेज्ज्ञशुक्रजीवान्यतमो विलग्ने।
कुजार्कचंद्राः खजलस्मरस्था वज्रं विलोमाच्च यवो निरुक्तः ॥७॥

जन्म लग्न से द्वितीय, द्वादश में बुध, शुक्र, गुरु इन में से दो हों और इन्हीं में से शेष कोई एक लग्न में हो, दशम स्थान में मङ्गल, चतुर्थ स्थान में शनि, सप्तम में चन्द्रमा हो तो वज्र योग इस से विपरीत हो तो यव योग होता है ॥ ७ ॥

सर्वैर्नभोगैर्यदि नाभसाख्यो व्यालाख्यमाले त्रिभिरेव खेटैः।
कथं भवेतामिति चिंतयंति मुनिप्रणीतं कथमन्यथा स्यात् ॥ ८ ॥

यदि सब ग्रहों के स्थिति वश नाभस योग हो तो व्याल और माला योग तीन २ ग्रहों के स्थिति वश क्यों कहे गये। परन्तु मुनियों का कहना ठीक ही है अन्यथा नहीं हो सकता है ॥ ८ ॥

वापीयोगः—

त्यक्त्वा केंद्राणि चेत्खेटाः शेषस्थानेषु संस्थिताः।
वापीयोगो भवेदेवं गदितः पूर्वसूरिभिः ॥ ९ ॥

केन्द्र स्थानों को छोड़ कर शेष स्थानों में सब ग्रह स्थित हों तो पूर्वाचार्य के मत से वापी योग होता है ॥ ९ ॥

यूपशरशक्तिदण्डयोगानाह—

लग्नाच्चतुर्थात्स्मरतः खमध्याच्चतुर्गृहस्थैर्गगनेचरेन्द्रैः ।
क्रमेण यूपश्च शरश्च शक्तिर्दण्डः प्रदिष्टः खलु जातकज्ञैः ॥ १० ॥

लग्न से चतुर्थ भाव पर्य्यन्त सब ग्रह हों तो यूप, चतुर्थ से सप्तम तक सब ग्रह हों तो शर, सप्तम से दशम तक सब ग्रह हों तो शक्ति और दशम से लग्न तक सब ग्रह हों तो दण्ड योग होता है ॥ १० ॥

नौकूटछत्रधनुरर्द्धचन्द्रयोगानाह—

लग्नाच्चतुर्थात्स्मरतः खमध्यात्सप्तर्क्षगैर्नौरथ कूटसंज्ञः ।
छत्रं धनुश्चान्यगृहप्रवृत्तैर्नौपूर्वकैर्योग इहार्धचन्द्रः ॥ ११ ॥

लग्न से सप्तम भाव पर्य्यन्त प्रत्येक भावों में एक २ ग्रह स्थित हो तो नौका योग, चतुर्थ से दशम भाव पर्य्यन्त सातों स्थानों में सातों ग्रह हों तो कूट योग, सप्तम से लेकर लग्न पर्य्यन्त सातों स्थानों में सातों ग्रह हों तो छत्र योग और दशम से लेकर चतुर्थ भाव पर्य्यन्त सातों भावों में सातों ग्रह हों तो धनुष योग होता है। इस से (केन्द्र से) भिन्न सात स्थानों में सातों ग्रह हों तो आठ प्रकार का अर्धचन्द्र योग होता है ॥ ११ ॥

चक्रसमुद्रयोगावाह—

तनोर्धनाच्चैकगृहान्तरेण स्युः स्थानषट्के गगनेचरेंद्राः ।
चक्राभिधानश्च समुद्रनामा योगा इतोहाकृतिजाश्च विंशत् ॥ १२ ॥

लग्न से लेकर बीच में एक २ स्थान छोड़ कर अन्य स्थानों में (१, ३, ५, ७, ९, ११ इन स्थानों में) सूर्य आदि सातों ग्रह स्थित हों तो चक्र योग होता है। द्वितीय स्थान से लेकर बीच २ एक २ स्थान छोड़ कर अन्य छै स्थानों (२, ४, ६, ८, १०, १२ स्थानों) में सूर्य आदि सातों ग्रह हों तो समुद्र योग होता है। इस प्रकार आकृति योग २० होते है ॥ १२ ॥

गोलादिसप्तयोगानाह—

ये योगाः कथिताः पुरा बहुतरास्तेषामभावे भवेद्
गोलश्चैकगतैर्युगं द्विगृहगैः शूलस्त्रिगेहोपगैः ।

केदारश्च चतुर्षु सर्वखचरैः पाशस्तु पञ्चस्थितैः
षट्स्थैर्दामिनिका च सप्तगृहगैर्वीणेति संख्या इमे ॥ १३ ॥

पूर्व कथित योगों के अभाव में किसी एक भाव में सब ग्रह स्थित हों तो गोल योग, दो भावों में सब ग्रह स्थित हों तो युग योग, तीन भावों में सब ग्रह हों तो शूल योग, चार भावों में सब ग्रह हों तो केदार योग, पांच भावों में सब ग्रह हों तो पाश योग, छै भावों में सब ग्रह हों तो दामिनिका योग और सात भावां में सब ग्रह हों तो वीणा योग होता है। इस तरह सात प्रकार के योग होते हैं ॥ १३ ॥

नानाप्रकारैः किल कालविद्भिर्योगा महद्भिः परिकीर्तिता ये।
तत्कर्तृपाको हि फलं तदीयं बलानुमानेन विचिन्तनीयम् ॥ १४ ॥

कालज्ञ महर्षियों से प्रतिपादित पूर्वोक्त योगों का फल योगकारक ग्रहों की दशा अन्तर्दशा में उन के बल के अनुसार तारतम्य से विचार करना चाहिये ॥ १४ ॥

रज्जुयोगफलम्—

चञ्चद्रूपेणान्विताः क्रौर्यभाजो जातोत्साहाः क्रूरकार्ये नितान्तम्।
रज्जूयोगोत्पन्नमर्त्याः स्वदेशे ह्यन्यस्मिन्वै सञ्चरन्त्यर्थलब्ध्यै ॥१५॥

रज्जु योग में उत्पन्न जातक अत्यन्त रूपवान्, दुखी, दुष्टकार्यों में अति उत्साही, धन प्राप्ति के लिये स्वदेश और परदेश में भ्रमण करने वाला होता है ॥ १५ ॥

मुसलयोगफलम्—

नानामानैर्ज्ञानधान्योपपन्नः पुत्रैर्लक्ष्म्या राजते राजतेजाः।
पृथ्वीपालस्याश्रितः स्यात्सहर्षो हर्षोत्कर्षाद्वित्तकृन्मौसलेयः ॥१६॥

मुसल योग में उत्पन्न जातक बहुत मान, ज्ञान, धान्य, पुत्र, लक्ष्मी इन से युक्त, राजा के समान बल शाली, राजा के आश्रय में रहने वाला, हर्ष से युक्त और हर्ष के उत्कर्ष से धन प्राप्ति करने वाला होता है ॥१६॥

नलयोगफलम्—

शश्वत्पूर्णापूर्णरत्नैः स्वगेहा राजस्नेहाः पुण्यदेहाश्च मर्त्याः।

कीर्त्या युक्ताः सर्वदा तेन देवा दैवाद्येषां जन्मकाले नलश्चेत् ॥१७॥

नलयोग में उत्पन्न जातक निरन्तर थोड़े बहुत रत्न को अपने गृह में रखने वाला, राजा का प्रिय, पुण्यवान् और कीर्तियुक्त होता है॥१७॥

मालायोगफलम्—

पुत्रैर्मित्रैश्चारुभूषाविशेषैर्नानायानैरन्वितास्ते भवन्ति।

येषां पुंसां सूतिकाले हि माला मालादोलाकामिनीकेलिशीला ॥१८॥

माला योग में उत्पन्न जातक पुत्र, मित्र, सुन्दर भूषण, अनेक वाहन इन से युक्त, माला, दोला और स्त्री के साथ क्रीड़ा विलास करने वाला होता है ॥ १८ ॥

सर्पयोगफलम्—

भोक्तान्यस्यान्नस्य रौद्रो दरिद्रो निद्रोत्साहो रुट्समुद्रोऽप्यभद्रः।

दुर्दर्पः स्याच्चापकाराय सार्पः सर्पः सूतौ यस्य मर्त्यस्य योगः॥१९॥

सर्प योग में उत्पन्न जातक दूसरे का अन्न खाने वाला, भयानक, दरिद्र, बहुत सोने वाला, रोषी, अभद्र स्वरूप वाला और दूसरे के अपकार के लिये व्यर्थ अहङ्कार करने वाला होता है ॥ १९ ॥

गदायोगफलम्—

नानाशास्त्रानेकमन्त्रानुरक्तो गीते वाद्ये कोविदश्चापि यज्वा।

रौद्रो द्वेषी द्वेषिवर्गैर्वियुक्तो युक्तो योषाभूषणाद्यैर्गदायाम् ॥२०॥

गदा योग में उत्पन्न जातक अनेक शास्त्र और मन्त्र शास्त्र में निरत, गीत वाद्य में कुशल, यज्ञ करने वाला, भयानक स्वरूप वाला, द्वेष करने वाला, शत्रुओं से रहित, स्त्री और भूषणों से युक्त होता है ॥२०॥

शकटयोगफलम्—

दीनो हीनो वैभवेनार्थमित्रैर्यस्योत्पत्यावाप्तकार्श्योऽप्यवश्यम्।

याति प्रीतिं प्राप्य मर्त्यः कुयोषां त्यक्त्वा योगे शाकटे यस्य जन्म ।२१॥

शकट योग में उत्पन्न जातक दीन, विभव, धन और मित्रों से हीन, कृश शरीर वाला, दुष्ट स्त्री को प्राप्त कर के उसे छोड़ कर प्रसन्न होने वाला होता है ॥ २१ ॥

विहंगयोगफलम्—

येषां सूतौ मानवानां विहंगो योगो भोगोत्पन्नसौख्यं न तेषाम् ।
याने प्रीतिर्नित्यमेव प्रवासः सर्वार्थानामल्पता जल्पतार्थैः ॥ २२ ॥

विहंग योग में उत्पन्न जातक भोगसुख से रहित, भ्रमण का प्रेमी, सदा परदेश में रहने वाला और थोड़ा सामान रहने पर भी बहुत कहने वाला होता है ॥ २२ ॥

शृंगाटकयोगफलम्—

भूयोत्कर्षः साहसी संगरेच्छुः सौख्यैर्युक्तोऽत्यंतबुद्धिर्नरः स्यात् ।
प्रीतिर्गच्छेत्पूर्वपत्न्याः सपत्न्या द्रोहं चैवं शृङ्गपूर्वे शृङ्गाटे ॥ २३ ॥

शृङ्गाटक योग में उत्पन्न जातक बार २ उत्साह करने वाला, साहसी, युद्ध की इच्छा वाला, सुख से युक्त, अति बुद्धिमान्, पहली स्त्री से प्रीति और दूसरी से द्वेष रखने वाला होता है ॥ २३ ॥

हलनामयोगफलम्—

प्रेष्यो युक्तः साधुभिर्मित्रवर्गैः कृष्याजीवी दुःखितोऽत्यंतभुक्स्यात् ।
उत्पत्तिं यो लाङ्गलाख्ये प्रयाति याति क्लेशं निर्धनत्वात्प्रकामम् ॥ २४ ॥

हल योग में उत्पन्न जातक दूतकर्म करने वाला, सज्जन और मित्रों से युक्त, खेती से जीवन चलाने वाला, दुखी, अति भोजन करने वाला और दरिद्रता से अत्यन्त क्लेश पाने वाला होता है ॥ २४ ॥

वज्रयोगजातफलम्—

आद्ये भागे जीवितस्यांतिमे च
सौख्योपेतो भाग्यवान्मानवः स्यात् ।
मध्ये भागे भाग्यहीनः प्रकामं
कामक्रोधैरन्वितो वज्रयोगे ॥ २५ ॥

वज्र योग में उत्पन्न जातक बाल्यावस्था और वृद्धावस्था में सुखी, भाग्यवान् होता है। किन्तु मध्य अवस्था में काम क्रोध से युक्त और भाग्य रहित होता है ॥ २५ ॥

यवयोगफलम्—

मध्ये भागे धर्मकामार्थसंपत्सौख्यैर्युक्तः स्याद्विनीतो वदान्यः ।
नित्योत्साहः सद्व्रते तु प्रशांतः शांतक्रोधो यः प्रसूतो यवाख्ये ॥२६॥

यव योग में उत्पन्न जातक मध्य अवस्था में धर्म, काम, धन, सम्पत्ति और सुख से युक्त, नम्र, दाता, सुन्दर, व्रत में सदा उत्साही, शान्त तथा क्रोध रहित होता है ॥ २६ ॥

कमलयोगफलम्—

नित्यं हर्षोत्कर्षशाली बलीयांश्चश्चत्कांतिर्गीतिकीर्तिर्मनुष्यः ।
योगे सूतिश्चेत्सरोजे स राजा राज्ञां वंशे वा भवेद्दीर्घजीवी ॥२७॥

कमल योग में उत्पन्न जातक सदा प्रसन्न, उत्साही, बली, अति सुन्दर, गाने में यशस्वी, राजा के वंश में उत्पन्न हो तो राजा और दीर्घायु होता है ॥ २७ ॥

वापीयोगफलम्—

दीर्घायुः स्यादात्मवंशावतंसः सौख्योपेतोऽत्यंतधीरो मनीषी ।
चंचद्वाक्यः सन्मनाः पुष्पवापी वापीयोगे यः प्रसूतः प्रतापी ॥२८॥

वापी योग में उत्पन्न जातक दीर्घायु, अपने कुल में श्रेष्ठ, सुखी, अत्यन्त धीर, पण्डित, सुन्दर बोलने वाला, सुन्दर मन वाला, पुष्प और वापी बनवाने वाला तथा प्रतापी होता है ॥ २८ ॥

यूपयोगजातफलम्—

धीरोदारो यज्ञकर्मानुसारो नानाविद्यासद्विचारो नरो वै ।
यस्योत्पत्तौ वर्तते यूपयोगो योगो लक्ष्म्या जायते तस्य नूनम् ॥२९॥

यूप योग में उत्पन्न जातक धीर, उदार, यज्ञ कर्म करने वाला, अनेक विद्याओं को विचारने वाला, विवेकी और धनी होता है ॥ २६ ॥

शरयोगफलम्—

हिंस्रोऽत्यंतं शिल्पदुःखैः प्रतप्तः प्राप्तानन्दः काननांते शरज्ञः ।
मर्त्यो योगे यः शरे जातजन्मा जन्मारंभात्तस्य न क्वापि सौख्यम् ॥३०॥

शर योग में उत्पन्न जातक हिंसक, शिल्प कर्म जन्य दुःखों से तप्त, वन मध्य में आनन्द पाने वाला, वाण चलाना जानने वाला और जन्म से ही कभी सुख न पाने वाला होता है ॥ ३० ॥

शक्तियोगजातफलम्—

नीचैरुच्चैः प्रीतिकृत्सालसश्च सौख्यैरर्थैर्वर्जितो निर्बलश्च ।
वादे युद्धे तस्य बुद्धिर्विशाला शालासौख्यस्याल्पता शक्तियोगे॥३१॥

शक्ति योग में उत्पन्न जातक छोटे, बड़े सभी से प्रेम करने वाला, आलसी, सुख धन से रहित, निर्बल, युद्ध और वाद विवाद में बुद्धिमान् तथा गृहसुखको अल्प भोगने वाला होता है ॥ ३१ ॥

दण्डयोगजातफलम्—

दीनो हीनोन्मत्तसंजातसख्यः प्रेष्यद्वेषी गोत्रजैर्जातवैरः ।
कांतापुत्रैरर्थमित्रैर्विहीनो हीनो बुद्ध्या दण्डयोगाप्तजन्मा ॥ ३२ ॥

दण्ड योग में उत्पन्न जातक दीन, दुखी, दुर्जनों से मित्रता करने वाला, दूतकर्म करने वालों का शत्रु, अपने कुलजनों का द्वेषी, स्त्री, पुत्र, धन, मित्र और बुद्धि से रहित होता है ॥ ३२ ॥

नौकायोगजातफलम्—

ख्यातो लुब्धो भोगसौख्यैर्विहीनो यो नौर्योगे लब्धजन्मा मनुष्यः ।
क्लेशी शश्वच्चंचलस्वांतवृत्तिर्वृत्तिस्तेयोद्भूतधान्येन तस्य ॥ ३३ ॥

नौका योग में उत्पन्न जातक प्रसिद्ध लोभी, भोगसुख से रहित, दुखी, सदा चञ्चल चित्तवाला और चोरी का धन खाने वाला होता है॥

कूटयोगजातफलम्—

दुर्गारण्यावासशीलश्च मल्लो भिल्लप्रीतिर्निर्धनो निंद्यकर्मा ।
धर्माधर्मज्ञानहीनश्च कूटः कूटप्राप्तोत्पत्तिरेवं मनुष्यः ॥ ३४ ॥

कूट योग में उत्पन्न जातक दुर्ग और वन में रहने वाला, योद्धा, भिल्लों का स्नेही, निर्धन, निंद्य कर्म करने वाला, धर्माधर्म के ज्ञान से रहित और चुगल-खोर होता है ॥ ३४ ॥

छत्रयोगजातफलम्—

प्राज्ञो राज्ञां कार्यकर्ता दयालुः पूर्वं पश्चात्सर्वसौख्यैरुपेतः ।
यस्योत्पत्तौ छत्रयोगोपलब्धिर्लब्धिस्तस्य च्छत्रसच्चामरादौ ॥३५॥

छत्र योग में उत्पन्न जातक चतुर, राजकार्य करने वाला, दयालु, बाल्यावस्था और वृद्धावस्था में सब सुखों से युक्त, तथा छत्र, चामर आदि को प्राप्त करने वाला होता है ॥ ३५ ॥

कार्मुकयोगजातफलम्—

आद्ये भागे चांतिमे जीवितस्य सौख्योपेतः काननाद्रिप्रचारः ।
योगे जातः कार्मुके सोऽतिगर्वी गर्वोन्मत्तापत्तिकृत्कार्मुकास्त्रः ॥३६॥

धनुष योग में उत्पन्न जातक बाल्यावस्था और वृद्धावस्था में सुख से युक्त, वन पर्वत पर भ्रमण करने वाला, अत्यन्त गौरवी, गौरव से आपत्ति में फँसने वाला और धनुर्धारी होता है ॥ ३६ ॥

अर्धचन्द्रयोगजातफलम्—

भूमीपालप्राप्तचंचत्प्रतिष्ठः श्रेष्ठः सेनाभूषणार्थाम्बराद्यैः ।
चेदुत्पत्तौ यस्य योगोऽर्द्धचंद्रश्चंद्रः साक्षादुत्सवार्थं जनानाम् ॥३७॥

अर्धचन्द्र योग में उत्पन्न जातक राजाओं से प्रतिष्ठा पाने वाला, सेना, भूषण, वस्त्र आदि से श्रेष्ठ और चन्द्र की तरह मनुष्यों को आनन्द देने वाला होता है ॥ ३७ ॥

चक्रयोगजातफलम्—

श्रीमद्रूपोऽत्यंतजातप्रतापो भूयो भूयोपायनैरन्वितः स्यात् ।
योगे जातः पूरुषो यस्तु चक्रे चक्रे पृथ्व्याः शालिनी तस्य कीर्तिः ३८

चक्र योग में उत्पन्न जातक लक्ष्मीवान्, बहुत प्रतापी, बार बार लोगों से नजर लेने वाला और सम्पूर्ण संसार में यशस्वी होता है ३८

समुद्रयोगजातफलम्—

दानी धीरश्चारुशीलो दयालुः पृथ्वीपालप्राप्तसौख्यः प्रकामम् ।
योगे जातो यः समुद्रे स धन्यो धन्यो वंशस्तेन नूनं नरेण ॥३९॥

समुद्र योग में उत्पन्न जातक दानी, धीर, सुन्दर स्वभाव वाला, दयालु, राजा के द्वारा सुख पाने वाला, और अपने कुल को बढ़ाने वाला होता है ॥ ३९ ॥

गोलयोगजातफलम्—

विद्यासत्त्वौदार्यसामर्थ्यहीना नानायासा नित्यजातप्रवासाः ।
येषां योगः संभवे गोलनामा नानासत्यप्रीतयोऽनीतयस्ते ॥ ४० ॥

गोल योग में उत्पन्न जातक विद्या, सत्त्वगुण, उदारता और सामर्थ्य से हीन, अनेक प्रयत्न करने वाला, परदेश में रहने वाला, मिथ्या और अन्याय से प्रेम करने वाला होता है ॥ ४० ॥

युगयोगजातफलम्—

पाखंडेनाखण्डितप्रीतिभाजो निर्लज्जाः स्युर्धर्मकर्मांप्रयुक्ताः ।
पुत्रैरर्थैः सर्वथा ते वियुक्ता युक्तायुक्तज्ञानशून्या युगाख्ये ॥ ४१ ॥

युग योग में उत्पन्न जातक अपने पाखण्डपना से जनों के साथ अखण्डित प्रेम रखने वाला, निर्लज्ज, धर्म कर्म से रहित, पुत्र धन से रहित और युक्तायुक्त के ज्ञान से रहित होता है ॥ ४१ ॥

शूलयोगजातफलम्—

युद्धे वादे तत्पराश्चातिशूराः क्रूराः स्वांते निष्ठुरा निर्धनाश्च ।
योगो येषां सूतिकाले हि शूलः शूलप्रायास्ते जनानां भवंति ॥४२॥

शूल योग में उत्पन्न जातक युद्ध और वादविवाद में कुशल, शूर, क्रूर, निष्ठुर हृदय वाला, निर्धन तथा जनों में शूल के समान होता है४२

केदारयोगजातफलम्—

सत्योपेताश्चार्थवंतो विनीताः कृष्यौत्सुक्याश्चोपकाराद्राश्च ।
योगे केदारे ये नरास्तेऽपि धीरा धीराचारश्चापि तेषां विशेषात् ॥४३॥

केदार योग में उत्पन्न जातक सत्य बोलने वाला, धनवान्, नम्र, खेती करने वाला, उपकारी, पण्डित और विशेष करके पण्डितों की तरह आचरण वाला होता है ॥ ४३ ॥

पाशयोगजातफलम्—

दीनाकारास्तत्पराश्चापकारे बन्धेनार्ता भूरितल्पाः सदम्भाः ।

नानानर्थाः पाशयोगे प्रजाता जातारण्यप्रीतयः स्युर्मनुष्याः ॥४४॥

पाश योग में उत्पन्न जातक दीन, दूसरों का अपकार करने में निरत, बन्धन से पीड़ित, बहुत शय्या वाला, अहंकारी, अनेक अनर्थ करने वाला और वन में प्रेम रखने वाला होता है ॥ ४४ ॥

दामिनीयोगजातफलम्—

जातानन्दो नन्दनाद्यैः सुधीरो विद्वान्भूषाकोशसंजाततोषः ।
चंचच्छीलोदारबुद्धिप्रशस्तः शस्तः सूतौ दामिनी यस्य योगः ॥४५॥

दामिनी योग में उत्पन्न जातक पुत्र आदि से आनन्द पाने वाला, धीर, पण्डित, अपने खजाने को देख कर सुखी होने वाला, चञ्चल, उदार और प्रसिद्ध होता है ॥ ४५ ॥

वीणायोगजातफलम्—

अर्थोपेताः शास्त्रपारंगताश्च सङ्गीतज्ञाः पोषकाः स्युर्बहूनाम् ।
नानासौख्यैरन्वितास्तु प्रवीणा वीणायोगे प्राणिनां जन्म येषाम् ॥४६॥

वीणा योग में उत्पन्न जातक धनी, शास्त्र को जानने वाला, सङ्गीत को जानने वाला, बहुतों का पालक, अनेक सुखों से युक्त और चतुर होता है ॥ ४६ ॥

प्रोक्तैरेतैर्नाभसाख्यैश्च योगैः स्यात्सर्वेषां प्राणिनां जन्म कामम् ।
तस्मादेतेऽत्यंतयत्नादपूर्वाः पूर्वाचार्यैर्जातके संप्रदिष्टाः ॥ ४७ ॥

सभी मनुष्यों के जन्म काल में पूर्वोक्त नाभस योगों का यथेष्ट विचार करना चाहिये । इसलिये प्राचीन आचार्यों ने यत्नपूर्वक इन योगों को जातक शास्त्र में कहा है ॥ ४७ ॥

एवं योगानां फलं शालिनीसद्वृत्तैर्व्यक्तं युक्तियुक्तं निरुक्तम् ।
तस्मात्प्राज्ञैः सत्कवीनामनूनं सौख्यं चैवं जातके कोमलोक्त्या ।४८।

इस प्रकार पूर्वोक्त नाभस योगों का फल शालिनी छन्दों के द्वारा स्पष्ट और युक्तियुक्त कहा गया है । सुकवि के इन कोमल उक्तियों से जातक शास्त्र में पण्डितों को सुख होवे ॥ ४८ ॥

इति नाभसयोगाध्यायः ।
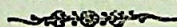
अथ रश्मिजातकाध्यायः

अथैकादिपंचरश्मिफलम्—

येषां नराणां किरणाः प्रसूतावेकादितः पञ्च भवन्ति यावत् ।
ते सर्वथा दुःखदरिद्रभाजो नीचप्रिया नीचकुलाः खलाश्च॥ १ ॥

जिस के जन्म काल में ग्रह के किरणों का योग १ से ५ तक हो वह सदा दुखी, दरिद्र, नीचों का प्रिय, नीच कुल वाला और दुष्ट होता है ॥ १ ॥

दशरश्मिफलम्—

पंचादितः खेंदुमिताश्च यावन्मरीचयस्ते जनयंत्यवश्यम् ।
नरान्विदेशेऽभिरतान्सुदीनान्भाग्येन हीनान्प्रतिपालितांश्च ॥ २ ॥

जिस के जन्म काल में ग्रह के किरणों का योग ५ से १० तक हो वह विदेश में रहने वाला, दीन, भाग्यहीन और दूसरों से पालित होता है ॥ २ ॥

पञ्चदशरश्मिफलम्—

परं दशभ्यस्तिथयस्तु यावत्ते भानवो मानवमल्पकार्थम् ।
धर्मप्रियं संजनयंति नूनं कुलानुरूपं सुखिनं सुवेषम् ॥ ३ ॥

जिस के जन्म काल में ग्रह के किरणों का योग १० से १५ तक हो वह मनुष्य थोड़े धन वाला, धर्म में प्रेम रखने वाला, अपने कुल के अनुसार सुखी और सुन्दर होता है ॥ ३ ॥

विंशतिरश्मिफलम्—

पंचेंदुतो विंशतिरेव यावद्गभस्तयस्ते मनुजं सुशीलम् ।
कुर्वंति सत्कीर्तिकरं सुधीरं वंशावतंसं कुशलं कलासु ॥ ४ ॥

जिस के जन्म समय ग्रह के किरणों के योग १५ से २० तक हो वह मनुष्य सुशील, सुकीर्ति करने वाला, धीर, अपने वंशों में भूषण स्व रूप और कलाओं में चतुर होता है ॥ ४ ॥

पञ्चविंशतिरश्मिफलम्—

यस्य प्रसूतौ च नखा मयूखास्तद्भाग्यरेखा सुहृदां सुखाय ।

पञ्चाधिका विंशतिरत्र यावत्तावत्फलाधिक्यमनुक्रमेण ॥ ५ ॥

जिस के जन्म समय ग्रह के किरणों का योग २० से २५ तक हो वह मनुष्य भाग्यवान् और मित्रों को सुख देने वाला होता है। जिस प्रकार किरणों की वृद्धि हो उसी तरह फल में भी वृद्धि होती है ॥५॥

त्रिंशद्रश्मिफलम्—

यावत्त्रिंशत्संमिता पंचवर्गाद्येषां सूतौ चेन्मयूखा नराणाम् ।
भूमीपालात्प्राप्तसौख्याः प्रधाना नानासंपत्संयुतास्ते भवंति ॥ ६ ॥

जिस के जन्म समय ग्रह किरणों का योग २५ से ३० तक हो वह मनुष्य राजा से सुख लाभ करने वाला, राजा का मन्त्री और अनेक सम्पत्तियों से युक्त होता है ॥ ६ ॥

एकत्रिंशद्रश्मिफलम्—

येषां नूनं मानवानां प्रसूतावेकत्रिंशत्संख्यकाश्चेन्मयूखाः ।
विख्यातास्ते राजतुल्याः प्रधाना नानासेनास्वामिनः संभवन्ति॥७॥

जिस के जन्म समय ग्रह किरणों का योग ३१ हो तो वह मनुष्य प्रसिद्ध, राजा के समान, राजा का मन्त्री और अनेक सेनाओं का नायक होता है ॥ ७ ॥

द्वात्रिंशद्रश्मिफलम्—

प्रसूतिकाले किरणा नराणां द्वित्रिप्रमाणा यदि संभवन्ति ।
नानापुराणामथवा गिरीणां ते स्वामिनो ग्रामशताधिपा वा ॥८॥

जिस के जन्म समय ग्रह किरणों का योग ३२ हो वह मनुष्य अनेक पुरों का, पर्वतों का या १०० गावों का अधिपति होता है ॥८॥

त्रयस्त्रिंशद्रश्मिफलम्—

रामाग्निभिश्चापि युगाग्निभिर्वा करैर्नरस्य प्रसवो यदि स्यात् ।
क्रमात्सहस्रं त्रिसहस्रकं च ग्रामान्स पातीति वदंति केचित् ॥ ९ ॥

जिस के जन्म समय ग्रह किरणों का योग ३३ या ३४ हो वह मनुष्य तीन हजार या एक हजार गांव का स्वामी होता है ॥ ९ ॥

पञ्चत्रिंशद्रश्मिफलम्—

पञ्चत्रिसंख्यैः खलु यो मयूखैर्जातो भवेन्मण्डलनायकश्च।
विलाससत्त्वामलशीलशाली यशोविशेषाधिककोशयुक्तः॥ १०॥

जिस के जन्म समय ग्रह किरणों का योग ३५ हो। वह मनुष्य जिला का मालिक, विलास करने वाला, बली, निर्मल प्रकृति वाला, यशस्वी और अनेक खजाने से युक्त होता है ॥ १० ॥

षट्त्रिंशद्रश्मिफलम्—

रसाग्निसंख्यश्च नगाग्निसंख्यैर्जातो मयूखैः खलु यः क्रमेण।
ग्रामान्मनुष्यः स तु सार्धलक्षं लक्षत्रयं पाति महाप्रतापात्॥११॥

जिस के जन्म समय ग्रह किरणों का योग ३६ या ३७ हो वह मनुष्य तीन लाख या डेढ लाख गांव का मालिक होता है॥ ११॥

अष्टत्रिंशद्रश्मिफलम्—

यस्य प्रसूतौ किरणप्रमाणमष्टत्रिसङ्ख्यैः स भवेन्महौजाः।
भूमीपतिर्लक्षचतुष्टयं हि ग्रामान्प्रशास्तींद्रसमानसम्पत्॥ १२॥

जिस के जन्म समय ग्रह किरणों का योग ३८ हो वह मनुष्य पराक्रमी राजा, ४ लाख गाँवों का शासन करने वाला और इन्द्र की तरह सम्पत्ति वाला होता है॥ १२॥

एकोनचत्वारिंशद्रश्मिफलम्—

नवत्रिसङ्ख्या जनने मयूखा विख्यातकीर्तिर्नृपतिर्भवेत्सः।
प्रौढप्रतापाद्गरुडस्वरूपो गर्वोद्धतारातिभुजङ्गमेषु॥ १३॥

जिस के जन्म समय ग्रह किरणों का योग ३९ हो वह मनुष्य प्रसिद्ध यश वाला, राजा और अपने शत्रु रूपी सर्पों को मारने के लिए गरुड़ के समान होता है॥ १३॥

चत्वारिंशद्रश्मिफलम्—

खाब्धिप्रमाणैः किरणैः प्रसूतः क्षोणीपतिस्तद्विजयप्रयाणे।
भवन्ति सेनागजगर्जितानां प्रतिस्वनाः खे घनगर्जितानि॥ १४॥

जिस के जन्म समय ग्रह किरणों का योग ४० हो वह मनुष्य राजा होता है और उस के दिग्विजय यात्रा के समय सेना और हाथियों का गर्जन का शब्द आकाश में जाकर मेघों के गर्जन की तरह होता है ॥ १४ ॥

एकचत्वारिंशद्रश्मिफलम्—

मयूखजालं परिसूतिकाले यस्यैकवेदाह्वयकं नरस्य ।
द्व्यम्भोधिवेलामलमेखलाया भवेदिलायाः परिपालकः सः ॥१५॥

जिस के जन्म समय ग्रह किरणों का योग ४१ हो वह मनुष्य समुद्र पर्य्यन्त पृथ्वी का अधिपति होता है ॥ १५ ॥

द्विचत्वारिंशद्रश्मिफलम्—

यमलजलधितुल्यो वा गुणाब्धिप्रमाणो
भवति किरणयोगश्चेन्नराणां प्रसूतौ ।
अतुलवलविलासत्रासिताराति वर्गाः
त्रिजलधिवलयायाः पालकास्ते पृथिव्याः ॥१६॥

जिस के जन्म समय ग्रह किरणों का योग ४२ वा ४३ हो वह मनुष्य बड़ा बली, विलास करने वाला, शत्रुओं को कष्ट देने वाला और तीन समुद्रों से घिरे हुए भूमि का स्वामी होता है ॥ १६ ॥

चतुश्चत्वारिंशद्रश्मिफलम्—

सूतौ वेदयुगप्रमाणकिरणाश्चेत्सार्वभौमः स ना
यत्सेनाजलधौ गलन्मदजला दंतावलाः शैलताम् ।
यांति च्छत्रविचित्रिताः कमठता मीनध्वजा मीनता
नौकात्वं च रथास्तथायुधरुचिः कल्लोलमालातुलात् ।१७।

जिस के जन्म समय ग्रह किरणों का योग ४४ हो वह मनुष्य चक्रवर्ती राजा होता है। उस के सेना रूपी समुद्र में पर्वतों के समान मतवाली हाथी, कछुओं के समान नाना प्रकार के छत्र, मछली के समान ध्वजाओं की मछली, नौका के समान रथ, तरङ्ग के समान शस्त्रों की कान्ति होती है ॥ १७ ॥

पञ्चचत्वारिंशद्रश्मियोगफलम्—

पञ्चाब्धितश्चेत्परतो भवन्ति गभस्तयो जन्मनि मानवानाम् ।
ते देवतानामपि दुर्जयाः स्युर्द्वीपान्तरोद्गीतयशोविशेषाः ॥१८॥

जिस के जन्म समय ग्रह किरणों का योग ४५ या इन से अधिक हो वह मनुष्य देवताओं से न जीता जा सकता है और उस का यश द्वीपान्तर तक फैलता है ॥ १८ ॥

इति रश्मिजातकाध्यायः।
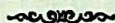
अथ ग्रहाणां दीप्ताद्यवस्थाध्यायः

दीप्तस्तुङ्गगतः खगो निजगृहे स्वस्थो हिते हर्षितः
शांतः शोभनवर्गगश्च खचरः शक्तः स्फुरद्रश्मिभाक् ।
लुप्तः स्याद्विकलः स्वनीचगृहगो हीनः खलः पापयुक्
खेटो यः परिपीडितश्च खचरैः स प्रोच्यते पीडितः ॥ १ ॥

अपने उच्च स्थान में स्थित ग्रह दीप्त, अपनी राशि में स्वस्थ, मित्र की राशि में हर्षित और शुभ वर्ग में शान्त होता है। जिस ग्रह का किरण पुष्ट हो वह शक्त, जो अस्त हो वह विकल, जो नीच में हो वह हीन, जो पाप ग्रह से युक्त हो वह खल और जो पराजित हो वह पीड़ित होता है ॥ १ ॥

दीप्तग्रहफलम्—

दीप्ते प्रतापादतितापितारिर्गलन्मदालंकृतकुंजरेशः ।
नरो भवेत्तन्निलये सलीलं पद्मालयालंकुरुते विलासम् ॥ २ ॥

यदि ग्रह दीप्त हो तो जातक अपने प्रताप से शत्रुओं को पीड़ित करने वाला, मतवाले हाथियों वाला होता है, और उस के घर में सदा लक्ष्मी निवास करती है ॥ २ ॥

स्वस्थग्रहफलम्—

स्वस्थे महावाहनधान्यरत्नविशालशालाबहुलत्वयुक्तः ।
सेनापतिः स्यान्मनुजो महौजा वैरिव्रजावाप्तजयाधिशाली ॥ ३

यदि ग्रह स्वस्थ हो तो जातक अनेक वाहन, धान्य, रत्न, बड़े २ गृहों से युक्त, सेनापति, बहुत बली और शत्रुओं को जीतने वाला होता है ॥ ३॥

हर्षितग्रहफलम्—

हर्षितं भवति कामिनीजनोऽत्यन्तभूषणचयव्रजवित्तः ।
धर्मकर्मकरणैकमानसो मानसोद्भवचयो हतशत्रुः ॥ ४ ॥

यदि ग्रह हर्षित हो तो जातक स्त्रियों का प्रेमी, अनेक भूषणों से युक्त, धर्म कर्म करने वाला और शत्रुओं को मारने वाला होता है ॥४॥

शांतग्रहफलम्—

शांतोऽतिशांतो हि महीपतीनां मंत्री स्वतंत्रो बहुपुत्रमित्रः ।
शास्त्राधिकारी सुतरां नरः स्यात्परोपकारी सुकृतैकचित्तः ॥ ५ ॥

यदि ग्रह शान्त हो तो जातक अत्यन्त शान्त, राजा का मन्त्री, स्वतन्त्र, बहुत पुत्र मित्रों वाला, शास्त्र जानने वाला, परोपकारी और धर्मात्मा होता है ॥ ५ ॥

शक्तग्रहफलम्—

शक्तोऽतिशक्तः पुरुषो विशेषात्सुगन्धमाल्याभिरुचिः शुचिश्च ।
विख्यातकीर्तिः सुजनः प्रसन्नो जनोपकर्तारिजनप्रहन्ता ॥ ६ ॥

यदि ग्रह शक्त हो तो जातक बली, सुगन्ध मालाओं के प्रेमी, पवित्र, प्रसिद्ध यश वाला, सज्जन, प्रसन्न, जनों का उपकारी और शत्रुओं को नाश करने वाला होता है ॥ ६ ॥

विकलग्रहफलम्—

हतबलो विकलो मलिनः सदा रिपुकुलप्रबलश्च गलन्मतिः ।
खलसखः स्थलसंचलितो नरः कृशतरः परकार्यगतादरः ॥ ७ ॥

यदि ग्रह विकल हो तो जातक निर्बल, विकल, मलिन, प्रबल शत्रु वाला, बुद्धि रहित, दुष्टों से मित्रता करने वाला, भ्रमणशील, अति दुर्बल और दूसरों के कार्य को देखने वाला होता है ॥ ७ ॥

दीनग्रहफलम्—

दीनेऽतिदीनोऽपचयेन तप्तः सम्प्राप्तभूमीपतिशत्रुभीतिः ।

संत्यक्तनीतिः खलु हीनकांतिः स्वजातिवैरं हि नरः करोति ॥८॥

यदि ग्रह दीन हो तो जातक अति दीनता से पीड़ित, राजा और शत्रुओं से भयभीत, अन्यायी, मलिन तथा अपने जाति से शत्रुता रखने वाला होता है ॥ ८ ॥

खलग्रहफलम्—

खलाभिधाने हि खलैः कलिः स्यात्कांतातिचिंतापरितप्तचित्तः ।
विदेशयानं धनहीनता च प्रकोपता लुप्तमतिप्रकाशः ॥ ९ ॥

यदि ग्रह खल हो तो जातक दुष्टों के साथ कलह करने वाला, स्त्री की चिन्ता से पीड़ित, परदेशी, निर्धन, क्रोधी और बुद्धिरहित होता है ॥ ९ ॥

पीडितग्रहफलम्—

पीडिते भवति पीडितः सदा व्याधिभिर्व्यसनतोपि नितांतम् ।
याति सञ्चलनतां निजस्थलाद् व्याकुलत्वनिजवन्धुचिन्तया ॥१०॥

यदि ग्रह पीड़ित हो तो जातक सदा व्याधि और व्यसनों से पीड़ित, अपने स्थान से दूसरी जगह जाने वाला और अपने बन्धुओं की चिन्ता से व्याकुल होता है ॥ १० ॥

इति दीप्ताद्यवस्थाध्यायः ।

अथ स्थानादियुक्तग्रहफलाध्यायः

तत्रादौ स्थानबलयुक्तग्रहफलम्—

परां विभूतिं जनयत्यवश्यं बलाधिकत्वं महसः प्रवृद्धिम् ।
नानाधनं कौशलगौरवादि कुर्यादलं स्थानबलोपपन्नः ॥ १ ॥

यदि स्थान बली ग्रह हो तो जातक अनेक विभूतिओं से युक्त, बली, तेजस्वी, धनी, कुशल से युक्त और गौरव युक्त होता है ॥ १ ॥

दिग्बलयुक्तग्रहफलम्—

आशाबलं यस्य भवेत्प्रकृष्टं खेटः स्वकाष्ठां नियमेन नीत्वा ।
विशिष्टलाभं कुरुते दशायां पुंसां निजद्रव्यविमिश्रितं हि ॥ २ ॥

यदि दिग्वली ग्रह हो तो जातक को उस ग्रह की दशा में विशिष्ट वस्तुओं का लाभ कराता है। यह लाभ अपने धन के द्वारा ही होता है ॥ २ ॥

कालबलयुक्तग्रहफलम्—

शत्रुक्षयं भूगजवाजिवृद्धिं शौर्यं च रत्नाम्बरसम्पदं च ।
लीलाविलासं विमलां च कीर्तिं कुर्याद् ग्रहः कालबलाधिशाली॥३॥

यदि काल बल से युक्त ग्रह हो तो जातक शत्रुओं का नाश करने वाला, भूमि, हाथी, घोड़ा की वृद्धि करने वाला, शूर, रत्न, वस्त्र, सम्पत्तियों से युक्त, विलासी और निर्मल यश वाला होता है ॥ ३ ॥

बलिसौम्यग्रहफलम्—

आचारशौचशुभसत्ययुताः सुरूपास्तेजस्विनः कृतविदो द्विजदेवभक्ताः।
पुष्पाम्बरोत्तमविभूषणसादराश्च सौम्यग्रहैर्बलयुतैः पुरुषा भवन्ति॥४॥

जिस के शुभ ग्रह बली हो वह जातक आचार पवित्रता, शुभ, सत्य इन से युक्त, सुन्दर, तेजस्वी, पण्डित, ब्राह्मण देवताओं का भक्त, वस्त्र और आभूषणों से युक्त होता है ॥ ४ ॥

बलिपापग्रहफलम्—

लुब्धाः कुकर्मनिरता निजकार्यनिष्ठाः
साधुद्विषः स्वकुलहाश्च तमोगुणाढ्याः ।
क्रूरस्वभावनिरता मलिनाः कृतघ्नाः
पापग्रहे बलयुते पुरुषा भवन्ति ॥ ५ ॥

जिस के जन्म काल में पाप ग्रह बली हों वह जातक लोभी, कुकर्मी, अपने कार्य में निरत, सज्जनों का द्वेषी, अपने कुल का नाश करने वाला, तमो गुण से युक्त, दुष्ट प्रकृति वाला, मलिन और कृतघ्न होता है ॥ ५ ॥

नैसर्गिकबलमाह—

द्वौ वा त्रयो वा बलिनो भवन्ति
फलप्रदानत्वामिति प्रकल्प्यम् ।

मन्दारसौम्येज्यसितेन्दुसूर्या
यथोत्तरं स्युर्बलिनो निसर्गात् ॥ ६ ॥

जन्म काल में दो या तीन ग्रह बली हों तो पूरा पूरा फल देते हैं। शनि से मङ्गल, मङ्गल से बुध, बुध से गुरु, गुरु से शुक्र, शुक्र से चन्द्रमा और चन्द्रमा से सूर्य स्वभाविक बली होते हैं॥ ६ ॥

चेष्टाबलयुक्तग्रहफलम्—

क्वचिद्राज्यं क्वचित्पूजां क्वचिद् द्रव्यं क्वचिद्यशः।
ददाति खेचरश्चित्रं चेष्टावीर्यसमन्वितः ॥ ७ ॥

चेष्टा बल से युक्त ग्रह कभी राज्य, कभी पूजा, कभी धन और कभी यश को देने वाला होता है॥ ७॥

दृष्टिबलिग्रहफलम्—

दुष्टप्रदः सौम्यनिरीक्षितश्चेद् दुष्टं फलं नो सकलं ददाति।
क्रूरेक्षितः सत्फलदोऽपि चैवं विचारणेयं खलु दृग्बलस्य ॥ ८ ॥

दुष्ट फल देने वाला ग्रह यदि शुभ ग्रह से देखा जाता हो तो सम्पूर्ण दुष्ट फल को नहीं देता है। शुभ फल देने वाला ग्रह यदि पाप ग्रह से देखा जाता हो तो सम्पूर्ण शुभ फल को भी नहीं देता है॥ ८॥

इति स्थानादियुक्तग्रहफलाध्यायः।

अथ सूर्ययोगाध्यायः

तत्रादौ वोश्यादियोगाः—

खेचरा दिनमणेर्विधुवर्ज्यं द्वादशे च धनभे शुभये वा।
वोशिवेश्युभयचर्यभिधानाः प्राक्तनैः समुदिता इति योगाः ॥ १ ॥

चन्द्रमा को छोड़ कर अन्य कोई ग्रह द्वादश में हो तो वोशियोग, द्वितीय में हो तो वेशियोग और द्वादस, द्वितीय दोनों में ग्रह हो तो उभयचरी योग पूर्वाचार्यों ने कहा है॥ १॥

वोशियोगफलम्—

स्यान्मन्ददृष्टिर्बहुकर्मकर्ता पश्यत्यधश्चोन्नतपूर्वकायः।

असत्यवादी यदि वोशियोगः प्रसूतिकाले मनुजस्य यस्य ॥ २ ॥

जिस के जन्म काल में वोशि योग हो वह मन्द दृष्टि वाला, बहुत कार्य करने वाला, नीचे देखने वाला, ऊँचे अङ्ग वाला और झूठ बोलने वाला होता है ॥ २ ॥

वेशियोगफलम्—

चेत्सम्भवे यस्य च वेशियोगो भवेद्दयालुः पृथुपूर्वकायः ।
स्याद्वाग्विलास्यालसतासमेतस्तिर्यक्प्रचारः खलु तस्य दृष्टेः ॥ ३ ॥

यदि जन्म काल में वेशि योग हो तो जातक दयालु, पूर्व अवस्था में स्थूल शरीर वाला, वाणियों से विलास करने वाला, आलसी और तिरछी नजर वाला होता है ॥ ३ ॥

उभयचरीयोगफलम्—

सर्वंसहः स्थिरतरोऽतितरां समृद्धः
सत्त्वाधिकः समशरीरविराजमानः ।
नात्युच्चकः सरलदृक् प्रबलामलश्री-
युक्तः किलोभयचरीप्रभवो नरः स्यात् ॥ ४ ॥

यदि जन्म काल में उभयचरी योग हो तो जातक सब बातों को सहने वाला, स्थिर, अधिक धनी, सत्त्व गुणप्रधान, समान शरीर से युक्त, अधिक लम्बा नहीं, सरल दृष्टि वाला और लक्ष्मीवान् होता है ॥ ४ ॥

सूर्यस्य वीर्यात्खचरानुसाराद्राश्यंशयोगात्प्रविचार्य सर्वम् ।
न्यूनं समं वा प्रबलं नराणां फलं सुधीभिः परिकल्पनीयम् ॥ ५ ॥

पूर्वोक्त योगों का फल सूर्य के बल से, योग कारक ग्रह से और राशि अंश के योग से विचार कर तारतम्य से फल में न्यूनाधिक्य कल्पना करनी चाहिये ॥ ५ ॥

इति सूर्ययोगाध्यायः ।

—:o:—

अथ चन्द्रयोगाध्यायः

सुनफाऽनफादुरुधराकेमद्रुमयोगानाह—

द्विजपतेर्धनगैः सुनफा भवेद्व्ययगतैरनफा रविवर्जितैः।
दुरुधराः खचरैरुभयस्थितैर्मुनिवरैरुदिता महदादरात् ॥ १ ॥

सूर्य को छोड़ कर कोई ग्रह चन्द्रमा से द्वितीय में हों तो सुनफा, द्वादश में हों तो अनफा और दोनों में हों तो दुरुधरा नाम योग होता है ॥ १ ॥

केमद्रुमयोगः—

निशाकराज्जन्मनि खेचरेन्द्रा धनव्ययस्थानगता न चेत्स्युः।
वदन्ति केमद्रुमनाम योगं लक्ष्मीवियोगं कुरुते स नूनम् ॥ २ ॥

जिस के जन्म काल में चन्द्रमा से द्वितीय और द्वादश में कोई ग्रह न हो तो केमद्रुम नामक योग होता है। यह जातक को निर्धन बनाता है ॥

सुनफायोगफलम्—

निजभुजार्जितमानसमुन्नतो विशदकीर्तियुतो मतिमान्सुखी।
ननु नरः सुनफाप्रभवो भवेन्नरपतेः सचिवः सुकृतिः कृती ॥ ३ ॥

यदि सुनफा योग में उत्पन्न हो तो जातक अपने भुजाओं से मान प्राप्त करने वाला, यशस्वी, सुखी, राजा का मन्त्री और पण्डित होता है ॥

अनफायोगफलम्—

उदारमूर्तिर्गुणकीर्तिशाली कन्दर्पकालः शुभवाग्विलासः।
सद्वृत्तियुक्तः सततं विनीतः प्रभुर्नरः स्यादनफाभिधाने ॥ ४ ॥

यदि अनफा योग में उत्पन्न हो तो जातक उदार, गुणी, यशस्वी, सुन्दर, सुन्दर बोलने वाला, सुन्दर आजीविका से युक्त, और नम्र होता है ॥ ४ ॥

दुरुधरायोगफलम्—

द्रविणवाहनवाहनवसुन्धरासुखयुतं सततं कुरुते नृपम्।
दुरुधरातितरां जितवैरिणं सुनयनाजयनाञ्चललालसम् ॥ ५ ॥

दुरुधरा योग में उत्पन्न जातक धन, वाहन, घोड़ा, पृथ्वी, सुख से युक्त, राजा, शत्रुओं को जीतने वाला और सुन्दरी के कटाक्ष को चाहने वाला होता है ॥ ५ ॥

केमद्रुमयोगजातफलम्—

विरुद्धवृत्तिर्मलिनः कुवेषः प्रेष्यो मनुष्यो हि विदेशवासी।
कान्तासुहृत्सूनुधनैर्विहीनः केमद्रुमे भूमिपतेः सुतोऽपि ॥ ६ ॥

केमद्रुम योग में उत्पन्न जातक विरुद्ध आचरण करने वाला, मलिन, कुरूप, दूतकर्म करने वाला, परदेशी और स्त्री, मित्र, पुत्र धन से वियुक्त होता है ॥ ६ ॥

केमद्रुमभङ्गमाह—

केन्द्रादिगामी यदि यामिनीशः स्यात्पद्मिनीनायकतः करोति।
विभ्राजमानोन्नतिनैपुणानि कनिष्ठमध्योत्तमतायुतानि ॥ ७ ॥

सूर्य से केन्द्र स्थान में चन्द्रमा हो तो सुन्दर मान, उन्नति और चतुरता न्यून, पणफर में हो तो मध्यम और आपोक्लिम में हो तो उत्तम होता है ॥ ७ ॥

प्रालेयरश्मिः परिसूतिकाले निरीक्ष्यमाणः सकलैर्नभोगैः।
नरं चिरञ्जीवितसार्वभौमं करोति केमद्रुममाशु हत्वा ॥ ८ ॥

जन्म काल में सभी ग्रह यदि चन्द्रमा को देखते हों तो जातक केमद्रुम दोष को नाश कर चिरजीवी सार्वभौम राजा होता है ॥ ८ ॥

चतुर्षु केन्द्रेषु भवन्ति खेटा दुष्टोऽपि केमद्रुमयोग एवः।
विहाय केमद्रुमतां नितान्तं कल्पद्रुमः स्यात्किल सत्फलाप्त्यै ॥ ९ ॥

केमद्रुम योग होने पर भी यदि चारों केन्द्रों में ग्रह स्थित हों तो शुभ फल देने के लिये कल्पद्रुम नामक योग होता है ॥ ९ ॥

क्षितिसुतयुतजीवे सूतिकाले तुलायां
विलसति नलिनीनां नायकः कन्यकायाम्।
विधुरपि यदि शेषैर्नेक्षितो मेषवर्ती
जनपतिनृपतीन्द्रं हन्ति केमद्रुमं च ॥ १० ॥

यदि मङ्गल से युत बृहस्पति तुला राशि में हो, सूर्य कन्या में हो और चन्द्रमा मेष में हो तथा शेष ग्रह चन्द्रमा को न भी देखते हों तो जातक केमद्रुम योग का फल न पाकर राजा होता है ॥ १० ॥

इति चन्द्रयोगाध्यायः ।

अथ प्रव्रज्याध्यायः

येषां सूतौ राजयोगा नराणां प्रव्रज्या चेत्तापसास्ते भवेयुः ।
वक्ष्ये संक्षेपेण तांस्तापसानां योगोत्पन्नान्सन्मतान्प्राक्तनानाम् ॥ १ ॥

यदि जन्म काल में राज योग, प्रव्रज्या योग दोनों हों तो जातक तपस्वी होता है। प्राचीनों के मत से तापस योगों को कहता हूँ ॥१॥

चतुरादिभिर्ग्रहैः प्रव्रज्यायोगः—

ग्रहैश्चतुर्भिर्यदि पञ्चभिर्वा षड्भिस्तथैकालयसंस्थितैश्च ।
नश्यन्ति सर्वे खलु राजयोगाः प्राव्राजिको योग इति प्रदिष्टः ॥२॥

यदि जन्म काल में चार, पाँच या छै ग्रह एक स्थान में स्थित हों तो सब राज योग नष्ट हो कर प्रव्रज्या योग रहता है ॥ २ ॥

अन्यग्रहालोकनवर्जितश्चेज्जन्मेश्वरो नैव शनिं प्रपश्येत् ।
मन्दोऽपि नो जन्मपतिं विरालं दीक्षाविचक्षाप्रचुरो नरः स्यात् ॥३॥

यदि कोई भी ग्रह लग्नेश को न देखता हो, शनि को लग्नेश और लग्नेश को बल रहित शनि देखता हो तो जातक दीक्षित सन्यासी होता है ॥ ३ ॥

जन्माधिराजो रविजत्रिभागे कुजार्कजांशेऽर्कजवीक्षितश्च ।
करोति जातं कुटिलं कुशीलं पाखण्डिकं मण्डनतत्परं च ॥ ४ ॥

यदि जन्म लग्न के स्वामी शनि के द्रेष्काण में हो, मङ्गल शनि के नवांश में हो कर शनि से देखा जाता हो तो जातक कुटिल, खराब स्वभाव वाला और पाखण्डियों के मत को मण्डन करने वाला होता है॥

होराशीतकरामरेन्द्रसचिवाः सौरेण संवीक्षिताः

पुण्यस्थे सुरमन्त्रिणि व्रणयकृत्तीर्थाटनैर्मानवः ।
कोणे पुण्यखगाश्रितेऽघखचरैर्नो वीक्षिते दीक्षितः
स्यान्नूनं तदपि प्रसूतिसमये सद्राजयोगोद्भवः ॥ ५ ॥

जन्म लग्न, चन्द्रमा या बृहस्पति यदि शनि से देखा जाता हो और नवम स्थान में बृहस्पति स्थित हो तो जातक तीर्थाटन का प्रेमी होता है। यदि शुभ ग्रह नवम, पञ्चम में हो कर किसी पाप ग्रह से न देखे जाते हों तो राज योग में उत्पन्न जातक भी संन्यासी होता है॥

प्रव्रज्याभेदमाह—

प्राव्राजिकोऽर्कादिबलक्रमेण वैखानसः खर्परधृक्सलिङ्गी ।
दण्डी यतिश्चक्रधरश्च नग्नस्तत्प्रच्युतो जन्मपतौ जिते स्यात् ॥ ६ ॥

संन्यास योग कारक ग्रहों में यदि सब से बली सूर्य हो तो वैखानस (वन, पर्वत आदि में रह कर अग्नि होत्र और सूर्य का आराधन करने वाला,) होता है। चन्द्रमा बली हो तो खप्पर धारण करने वाला (कपाली संन्यासी) होता है। मङ्गल बली हो तो लिंगी (शिखा रहित हो कर गेरुआ वस्त्र धारण करने वाला) होता है। बुध बली हो तो दण्डी (दण्ड धारण करने वाला) होता है। बृहस्पति बली हो तो यति (गेरुआ वस्त्र धारण कर वानप्रस्थ को धारण करने वाला) होता है। शुक्र बली हो तो चक्रधर (चक्र धारण करने वाला योगी) होता है। शनि बली हो तो नग्न (नङ्गा रहने वाला संन्यासी) होता है। (यदि योग कारक ग्रह या लग्नेश किसी ग्रह से पराजित हो तो जातक भ्रष्टसन्यासी होता है ॥ ६ ॥

एकस्थानस्थितैः खेटैः सर्वैश्च बलसंयुतैः ।
निरम्बरा निराहारा योगमार्गपरायणाः ॥ ७ ॥

सन्यास योग कारक सभी ग्रह बल युत हो कर एक राशि में बैठे हों तो जातक नङ्ग और भोजन रहित हो कर योगाभ्यासी होता है ॥७॥

एकस्थाने खेचराणां चतुर्णां योगश्चेत्स्यान्मानवानां प्रसूतौ ।
ते स्युर्भूमीपालवंशेऽपि जाताः कान्तारान्तर्वासिनः सर्वथैव ॥८॥

यदि जन्म काल में चार ग्रह बली हो कर एक स्थान में स्थित हों तो राजा के वंश में जन्म लेकर भी जातक सदा वन में रहने वाला होता है ॥ ८ ॥

पञ्चखेचरयुतिर्यदि सूतौ भूपतेरपि सुतः स च नित्यम् ।
कन्दमूलफलभक्षणचित्तोऽत्यन्तशान्तिविजितेन्द्रियशत्रुः ॥ ९ ॥

यदि जन्म समय में पाँच ग्रह का योग हो तो राजा के वंश में उत्पन्न हो कर भी जातक कन्द, मूल, फल खाने वाला, अत्यन्त शान्त और जितेन्द्रिय होता है ॥ ९ ॥

एकत्र षण्णां गगनेचराणां प्रसूतिकाले मिलनं यदि स्यात् ।
ते केवलं शैलशिलातलेषु तिष्ठन्ति भूपालकुलेषु जाताः ॥ १० ॥

यदि जन्म काल में छै ग्रह एक स्थान में स्थित हों तो जातक राजा के वंश में उत्पन्न हो कर पर्वत पर रहने वाला होता है ॥ १० ॥

प्रव्राजितानामथ भूपतीनां योगद्वयं चेत्प्रबलं प्रसूतौ ।
फलं विरुद्धं ह्यनुभूय पूर्वं ततो व्रजेद्राज्यपदाधिकारम् ॥ ११ ॥

यदि जन्म समय में प्रव्रज्या योग, राज योग दोनों प्रबल हों तो जातक पहले संन्यास ग्रहण कर बाद में राजा होता है ॥ ११ ॥

इति प्रव्रज्याध्यायः ।

अथारिष्टाध्यायः

रिष्टाध्यायाधीनमायुर्नराणां यस्मात्तस्माद्रिष्टमात्रं प्रवच्मि ।
यस्याभावे साधितायुःप्रमाणे प्रामाण्यं स्यात्सम्भवे सर्वथैव ॥१॥

आयुर्दाय अरिष्ट के अधीन रहता है। इस लिये पहले अरिष्ट योगों को कहता हूं। अरिष्ट रहित जातक को आयु साधित आयु के तुल्य होती है ॥ १ ॥

अथारिष्टयोगः—

भौमालयेर्कारिशनीन्दुदृष्टे गृहेऽष्टमे चित्रशिखण्डिसूनुः ।
अदृष्टमूर्तिर्भृगुणात्र योगे प्राणैर्वियोगं लभते मनुष्यः ॥ २ ॥

यदि मेष या वृश्चिक राशि में स्थित हो कर गुरु अष्टम भाव में स्थित हो और रवि, शनि, चन्द्रमा से देखा जाता हो तथा शुक्र से न देखा जाता हो तो जातक की मृत्यु होती है ॥ २ ॥

त्रिभिर्वर्षैरिष्टयोगः—

षष्ठाष्टमे वापि चतुष्टये वा विलोमगामी कुजमन्दिरस्थः ।
बलान्वितेनावनिजेन दृष्टो वर्षैस्त्रिभी रिष्टकरः शनिः स्यात् ॥ ३ ॥

जिस के जन्म काल में वक्री शनि मेष या वृश्चिक राशि में स्थित हो कर १, ४, ६, ७, ८, या १० वें स्थान में स्थित हो और बली मङ्गल से देखा जाता हो तो तीसरे वर्ष में अरिष्ट होता है ॥ ३ ॥

नवमवर्षे मृत्युयोगः—

चन्द्रार्कयुग्जन्मनि भानुसूनुः करोति नूनं निधनं नवाब्दैः ।

यदि चन्द्रमा, और रवि से युत मङ्गल हो तो नववें वर्ष में जातक का मरण होता है ॥ ३½ ॥

मासेन मृत्युयोगः—

मासेन मन्दावनिसूनुसूर्याश्छिद्रारिगेहाश्रिततासमेताः ॥ ४ ॥

यदि शनि, मङ्गल, सूर्य तीनों का योग षष्ठ या अष्टम स्थान में हो तो एक मास में जातक की मृत्यु होती है ॥ ४ ॥

एकाब्दे मृत्युयोगः—

एकोऽपि पापोऽष्टमगोऽरिगेहे पापेक्षितोऽब्देन शिशुं निहन्यात् ।
सुधारसो यद्यपि येन पीतः किमत्र चित्रं न हि येन पीतः ॥ ५ ॥

यदि एक भी पाप ग्रह षष्ठ या अष्टम में स्थित हो कर अन्य पाप ग्रह से देखा जाता हो तो जातक अमृत पीने पर भी एक वर्ष में मरण को प्राप्त करता है ॥ ५ ॥

षष्ठवर्षे रिष्टयोगः—

सूर्येन्दुगेहे दनुजेन्द्रमन्त्री व्ययाष्टमारिस्थितसौम्यखेटैः ।
सर्वैः प्रदृष्टः खलु षड्भिरब्दैर्जातस्य जन्तोर्वितनोति रिष्टम् ॥ ६ ॥

यदि कर्क या सिंह राशि में स्थित हो कर शुक्र द्वादश, अष्टम या

षष्ठ में स्थित हो और सभी शुभ ग्रहों से देखा जाता हो तो जातक छठे वर्ष में अरिष्ट को प्राप्त करता है ॥ ६ ॥

चतुर्भिर्वर्षैरिष्टयोगः—

सोमस्य सूनुर्यदि कर्कटस्थः षष्ठेऽष्टमे वा भवने विलग्नात्।
चन्द्रेण दृष्टोऽब्दचतुष्टयेन जातस्य जन्तोः प्रकरोति रिष्टम् ॥ ७ ॥

यदि कर्क राशि में स्थित बुध ६ या ८ में स्थित हो और चन्द्रमा से देखा जाता हो तो चौथे वर्ष में अरिष्ट होता है ॥ ७ ॥

मासद्वयेन मृत्युयोगः—

केतूदयो भे प्रभवेच्च यस्मिंस्तस्मिन्प्रसूतिर्यदि यस्य जन्तोः।
स्यात्तस्य मासद्वितयेन नाशो विनिश्चयेनेति वदन्ति पूर्वे ॥ ८ ॥

यदि जन्म समय में धूमकेतु का उदय हो तो जातक दो मास में निश्चय मृत्यु को प्राप्त करता है ॥ ८ ॥

शीघ्रमृत्युयोगः—

मेषूरणेऽर्को धरणीसुतस्य गेहेऽथवार्कात्मजधामसंस्थः।
पापैरनेकैश्च निरीक्ष्यमाणः प्राणैर्वियोगं स तु याति तूर्णम् ॥९॥

यदि मेष, वृश्चिक या मकर राशि का सूर्य दशम स्थान में स्थित हो और पाप ग्रह से देखा जाता हो तो जातक शीघ्र मरण को प्राप्त करता है ॥ ६ ॥

सप्तमवर्षे मृत्युयोगः—

लग्ने भवन्ति द्रेष्काणाः शृङ्खलापाशपक्षिणाम्।
सपापा मरणं कुर्युः सप्तवर्षैर्न संशयः ॥ १० ॥

जन्म लग्न में शृंखला, पाश या पक्षी द्रेष्काण हो और पाप ग्रह से देखा जाता हो तो जातक की ७ वें वर्ष में मृत्यु होती है ॥ १० ॥

दशभिः षोशभिर्वर्षैर्वा मृत्युयोगः—

राहुर्भवेज्जन्मनि केन्द्रवर्ती क्रूरग्रहैश्चापि निरीक्षितश्चेत्।
करोति वर्षैर्दशभिर्विनाशं वदन्ति वा षोडशभिश्च केचित् ॥ ११ ॥

जन्म काल में केन्द्र में स्थित हो कर राहु पाप ग्रह से देखा जाता हो तो जातक की दशवें या सोलहवें वर्ष में मृत्यु होती है ॥ ११ ॥

अष्टमवर्षे मृत्युयोगः —

षष्ठाष्टमस्थाः शुभखेचरेन्द्राः पापास्त्रिकोणे यदि जन्मलग्नात् ।
क्रूरेक्षितास्ते निधनं विदध्युर्वर्षाष्टकेनैव खलप्रदृष्टाः ॥ १२ ॥

यदि जन्म काल में शुभ ग्रह षष्ठ या अष्टम में और पाप ग्रह नवम या पञ्चम में स्थित हो कर पाप ग्रह से देखा जाता हो तो जातक की आठवें वर्ष में मृत्यु होती है ॥ १२ ॥

शीघ्रमृत्युयोगः —

सूतिकाले भवेच्चन्द्रः षष्ठे वाऽष्टमसंस्थितः ।
बालस्य कुरुते सद्यो मृत्युं पापविलोकितः ॥ १३ ॥

जन्म काल में छठें या आठवें स्थान में स्थित हो कर चन्द्रमा यदि पाप ग्रह से देखा जाता हो तो जातक बहुत जल्दी मृत्यु को पाता है१३

चतुर्भिर्वर्षैर्निधनयोगः—

शुभाशुभालोकनतुल्यतायां वर्षैश्चतुर्भिर्निधनं तदानीम् ।
न्यूनाधिकत्वे सुधिया विधेयस्त्रैराशिकेनैव विनिश्चयोऽयम् ॥१४॥

जन्म काल में छठें या आठवें स्थान में स्थित हो कर चन्द्रमा यदि शुभ ग्रह तथा पाप ग्रह दोनों से देखा जाता हो तो जातक का निधन चार वर्ष में होता है । न्यूनाधिक होने पर अरिष्ट त्रैराशिक से विचारना चाहिये ॥ १४ ॥

षष्ठाष्टमे मासि मृत्यु योगः—

धनांतगैर्वाऽरिमृतिस्थितैर्वा धर्माष्टमस्थैर्व्ययशत्रुगैर्वा ।
क्रूरग्रहै यो जननं प्रपन्नः षष्ठेऽष्टमे मासि मृतिं प्रयाति ॥ १५ ॥

यदि पाप ग्रह (२, १२), (६, ८,), (८, ९,) या (६, १२) में स्थित हों तो जातक की छठे या आठवें वर्ष में मृत्यु होती है ॥ १५ ॥

मासेन मृत्युयोगः—

षष्ठाष्टमस्थाः शुभखेचरेंद्रा विलोमगैः पापखगैः प्रदृष्टाः ।

शुभैरदृष्टा यदि ते भवन्ति मासेन नूनं निधनं तदानीम् ॥१६॥

जिस के जन्म काल में षष्ठ या अष्टम में स्थित हो कर शुभ ग्रह यदि वक्री पाप ग्रह से देखे जाते हों और शुभ ग्रह से न देखे जाते हों तो जातक की एक मास में मृत्यु होती है ॥ १६ ॥

राशिसमानवर्षे मृत्युयोगः—

विलग्नजन्माधिपती भवेतामस्तगतावष्टारिपुव्ययस्थौ।
जातस्य जन्तोर्मरणप्रदौ तौ वदन्ति राशिप्रमितैर्हि वर्षैः ॥ १७ ॥

जन्म काल में लग्नेश और राशीश ६, ८, १२ इन स्थानों में स्थित हो कर अस्त हों तो जातक राशि तुल्य वर्ष में मृत्यु को पाता है ॥१७॥

चतुर्थमासे मृत्युयोगः—

होराधिपः पापखगैः प्रदृष्टः चतुर्थमासे मृतिकृन्मृतिस्थः।
जन्मेश्वरस्तन्निधने दिनेशः शुक्रेक्षितो ऽब्दैर्भवनप्रमाणैः ॥ १८ ॥

यदि जन्म लग्नेश ६ या ८ में स्थित हो कर पाप ग्रहों से देखा जाता हो तो चतुर्थ मास में और सूर्य, शुक्र से देखा जाता हो तो राशि तुल्य वर्ष में जातक मृत्यु को पाता है ॥ १८ ॥

अल्पेन कालेन मासेन वा मृत्युयोगः—

होराधिपः पापयुतः स्मरस्थः करोति नाशं खलु जीवितस्य।
मासेन जन्माधिपतिस्तु तद्वत्पापान्वितो रंध्रगृहाश्रितश्च ॥ १९ ॥

पाप ग्रह से युत हो कर जन्म लग्नेश सप्तम में स्थित हो तो शीघ्र ही और अष्टम में स्थित हो तो एक मास में जातक का मरण होता है ॥१६॥

नवमाऽब्दे मृत्युयोगः—

युक्तो भवेदारदिवाकराभ्यां निशाकरश्चान्यखगैर्न दृष्टः।
स्वसूनुगेहोपगतो विनाशं करोति वर्षे नवमेर्भकस्य ॥ २० ॥

मङ्गल और सूर्य से युक्त हो कर चन्द्रमा यदि बुध की राशि (मिथुन, कन्या) में स्थित हो और अन्य ग्रहों से न देखा जाता हो तो जातक नववें वर्ष में मरता है ॥ २० ॥

शीघ्रमृत्युयोगः—

लग्नास्तरंध्रान्त्यगते शशांके पापान्विते सौम्यखगैरदृष्टे।
केन्द्रेषु सौम्यग्रहवर्जितेषु कीनाशदेशं हि शिशुः प्रयाति॥ २१॥

यदि चन्द्रमा १, ४, ७, ८ या १० स्थान में स्थित हो कर पाप ग्रहों से युक्त हो, शुभ ग्रह से न देखा जाता हो और कोई भी शुभ ग्रह केन्द्र में न हो तो जातक की शीघ्र मृत्यु होती है॥ २१॥

शीघ्रमृत्युयोगः—

रन्ध्रालये वाथ चतुष्टयेषु खलग्रहाणां मिलनं यदि स्यात्।
कलानिधौ क्षीणकलाकलापे लग्नस्थिते नश्यति यः प्रसूतः॥२२॥

पाप ग्रहों का अष्टम या केन्द्र स्थान में योग हो और क्षीण चन्द्रमा लग्न में स्थित हो तो जातक का नाश होता है॥ २२॥

वज्रमुष्टियोगः

लग्ने कुलीरेऽप्यथवाऽलिसंज्ञे खलग्रहाः पूर्वदले यदि स्युः।
सौम्यः परार्धे खलु वज्रमुष्टिर्योगोऽयमुक्तः प्रकरोति रिष्टम्॥२३॥

पाप ग्रह लग्न में स्थित हो कर कर्क या वृश्चिक राशि में, लग्न से सप्तम तक पाप ग्रह और सप्तम से लग्न तक शुभ ग्रह स्थित हों तो वज्रमुष्टि नामक योग होता है और यह अरिष्ट कारक है॥ २३॥

शीघ्रमृत्युयोगः—

व्ययारिरन्ध्रेषु शुभाभिधानास्त्रिकोणकेन्द्रेषु भवन्ति पापाः।
सरोजबन्धोरुदये प्रसूतिर्यस्यान्यलोकं त्वरया स याति॥ २४॥

यदि शुभ ग्रह १२, ६, ८ इन स्थानों में, पाप ग्रह त्रिकोण या केन्द्र में और चन्द्रमा लग्न में स्थित हो तो जातक की शीघ्र मृत्यु होती है॥२४॥

एकादशेऽह्नि मृत्युयोगः—

सौरस्यालयसंस्थो देवगुरुर्निधनभावगो लग्नात्।
पापग्रहदृष्टतनुर्निधनायैकादशेऽह्नि तुल्यः स्यात्॥ २५॥

मकर या कुम्भ में स्थित हो कर बृहस्पति लग्न से अष्टम भाव में

स्थित हो और पाप ग्रह से देखा जाता हो तो ग्यारहवें दिन जातक का मरण होता है ॥ २५ ॥

शीघ्रमृत्युयोगः—

रन्ध्रांबुजायाभवनेषु खेटा विधौ च पापाद्वयमध्ययाते।
यस्य प्रसूतिः स तु याति कामं यमस्य धाम प्रवदन्ति पूर्वे ॥२६॥

यदि सब ग्रह अष्टम, चतुर्थ, सप्तम इन स्थानों में स्थित हों और दो पाप ग्रह के मध्य में चन्द्रमा बैठा हो तो जातक शीघ्र मर जाता है ॥२६॥

शीघ्रमृत्युयोगः—

सन्ध्याद्वये भांत्यगताश्च पापाश्चन्द्रस्य होरा यदि जन्मकाले।
चतुर्षु केन्द्रेषु शशाङ्कपापाः स याति बालः किल कालगेहम् ॥२७॥

यदि जन्म काल में चन्द्रमा की होरा हो, दोनों संध्या काल में जन्म हो, पाप ग्रह राश्यन्त में हो और पाप ग्रह से युक्त हो कर चन्द्रमा केन्द्र में स्थित हो तो जातक अवश्य मृत्यु पाता है ॥ २७ ॥

मात्रा सह शीघ्रमृत्युयोगः—

स्मराष्टमस्था यदि पापखेटाः पापेक्षिताः साधुखगैर्न दृष्टाः।
करोति रिष्टं त्वरयार्भकस्य साकं जनन्याभिमतं बहूनाम् ॥ २८ ॥

सप्तम और अष्टम स्थान में स्थित पाप ग्रह यदि पापग्रह से देखा जाता हो और उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो जातक माता के साथ अरिष्ट पाता है। यह बहुतों का मत है ॥ २८ ॥

मात्रा सह शस्त्रेण मृत्युयोगः—

निजोपरागे त्वशुभान्वितेन्दुर्लग्नस्थितो भूमिसुतोऽष्टमस्थः।
ततो जनन्या सह बालकस्य मृत्युस्तथाऽर्के सति शस्त्रघातः ॥२९॥

अपने ग्रहण समय में पाप ग्रह से युक्त चन्द्रमा लग्न में हो, मङ्गल अष्टम में हो तो माता सहित जातक का मरण होता है। तथा अपने ग्रहण काल में पाप ग्रह से युक्त रवि लग्न में हो और मङ्गल अष्टम में हो तो माता के साथ जातक शस्त्र से मरता है ॥ २९ ॥

शीघ्रमृत्युयोगः—

भूमीसुते वार्कसुते विलग्ने भानौ स्मरस्थानगतेऽन्यथा वा ।
युक्ते तयोरन्यतमेन चन्द्रेऽचिरेण मृत्युः परिवेदितव्यः ॥ ३० ॥

यदि मङ्गल या शनि लग्न में हो, सूर्य सप्तम में स्थित हो और चन्द्रमा लग्न, सप्तम को छोड़ कर अन्य स्थानों में हो तो शीघ्र जातक की मृत्यु होती है ॥ ३० ॥

शीघ्रमृत्युयोगः—

पापैर्विलग्नाष्टमधामसंस्थैः क्षीणे विधौ द्वादशभावयाते ।
केन्द्रेषु सौम्या न भवन्ति नूनं शिशोस्तदानीं निधनं प्रकल्प्यम् ॥३१॥

पाप ग्रह लग्न या अष्टम स्थान में स्थित हो, क्षीण चन्द्रमा द्वादश स्थान में स्थित हो और कोई शुभ ग्रह केन्द्र स्थान में न हो तो जातक की मृत्यु होती है ॥ ३१ ॥

अरिष्टयोगः—

त्रिकोणकेन्द्रेषु भवन्ति पापाः शुभग्रहालोकनवर्जिताश्चेत् ।
लग्नोपयाते सति भास्करे वा निशाकरे रिष्टसमुद्भवः स्यात् ॥३२॥

पाप ग्रह त्रिकोण या केन्द्र में हो कर शुभ ग्रह से न देखे जाते हों और सूर्य या चन्द्रमा लग्न में स्थित हो तो जातक को अरिष्ट होता है॥

नवमेऽब्दे मरणयोगः—

भानुभानुतनयोशनसः स्युश्चेत्प्रसूतिसमये खलयुक्ताः ।
यद्यपीन्द्रगुरुणा परिदृष्टा रिष्टदास्तनुभृतां नवमेऽब्दे ॥ ३३ ॥

पाप ग्रह से युक्त हो कर सूर्य, शनि और शुक्र यदि बृहस्पति से देखा जाता हो तो भी नववें वर्ष में जातक को अरिष्ट होता है ॥३३॥

कामिनीभवनगस्तु हिमांशुर्लग्नगो मृतिपतिः शनिदृष्टः ।
रिष्टदो नवसमाभिरीडितो जातकज्ञमुनिभिः पुरातनैः ॥ ३४ ॥

चन्द्रमा सप्तम में, अष्टमेश लग्न में स्थित हो कर शनि से देखा जाता हो तो जातक नववें वर्ष में अरिष्ट पाता है, यह प्राचीन मुनियों का मत है ॥ ३४ ॥

वर्षमध्ये मरणयोगः—

दृष्टेऽरिष्टे नात्र दृष्टेऽस्य काले प्रालेयांशौ स्वालये वा विलग्नम्।
वीर्योपेते सङ्गते शक्तियुक्तैः पापैर्दृष्टे मृत्युकालोऽब्दमध्ये ॥३५॥

पूर्व कथित अरिष्ट योगों में जहां काल का निश्चय नहीं कहा गया है वहाँ एक वर्ष के भीतर ही जब वली चन्द्रमा कर्क या लग्न में हो कर वली पाप ग्रह से देखा जाता हो तब जातक की मृत्यु होती है ॥३५॥

अरिष्टयोगः—

लग्नत्रिकोणान्तिमसप्तरन्ध्रे चन्द्रे सपापेऽपचयं प्रयाते।
शुभैर्न युक्ते यदि न प्रदृष्टे रिष्टं भवेदत्र किमत्र चित्रम् ॥३६॥

यदि शुभ ग्रह से युक्त, दृष्ट न हो कर चन्द्रमा १, ५, ६, १०, ७ या ८ स्थान में स्थित हो तो जातक को अरिष्ट होता है ॥ ३६ ॥

पञ्चमाब्दे मृत्युयोगः—

सूर्यज्ञजीवाः शनिभौमशुक्राः सूर्यारमन्दाश्च यदीन्दुयुक्ताः।
प्रसूतिकाले मिलिता यदि स्युर्नाशः शिशोरब्दकपञ्चकेन ॥३७॥

जन्म काल में चन्द्रमा के सहित सूर्य, वुध, वृहस्पति वा शनि, मङ्गल, शुक्र वा सूर्य, मङ्गल, शनि एक राशि में स्थित हों तो जातक पाँचवें वर्ष में मृत्यु पाता है ३७ ॥

राश्यादिसमवर्षादौ मृत्युयोगः—

विलग्ननाथो भवनप्रमाणैर्वर्षैर्विनाशं कुरुते रिपुस्थः।
मासैर्दृकाणाधिपतिर्लवेशो दिनैर्मुनीन्द्राः प्रवदन्ति सर्वे ॥३८॥

यदि लग्नेश षष्ठ स्थान में स्थित हो तो राशि तुल्य वर्ष में, द्रेष्काणेश यदि षष्ठ स्थान में स्थित हो तो राशि तुल्य मास में, नवमांशेश यदि षष्ठ स्थान में स्थित हो तो राशि तुल्य दिन में जातक की मृत्यु होती है ॥ ३८ ॥

मासेन षोडशेऽह्नि वर्षेण वा मृत्युयोगः—

लग्ने शनिः क्रूरनिरीक्षितश्चेच्छिशोर्विनाशः खलु षोडशाहात्।
करोति मासेन च पापयुक्तैः पापैर्विनाशं खलु वत्सरेण ॥३९॥

लग्न में स्थित हो कर शनि यदि पाप ग्रह से देखा जाता हो तो १६ दिनों में, १ पाप ग्रह से युक्त हो तो एक मास में और दो आदि पाप ग्रहों से युक्त हो तो एक वर्ष में जातक का मरण होता है॥३६॥

एकादशादिवर्षे मृत्युयोगः—

रवीन्दुयुक्पापनिरीक्षितो ज्ञश्चैकादशाब्दैः कुरुते विनाशम् ।
लग्नेऽर्कमन्दावनिजाः कृशेन्दुः स्मरे षडब्दैरथ सप्तभिर्वा ॥४०॥

सूर्य तथा चन्द्रमा से युत बुध यदि पाप ग्रह से देखा जाता हो तो ११ वें वर्ष में, या रवि, शनि, मङ्गल तीनों लग्न में, क्षीण चन्द्रमा सप्तम में स्थित हो तो ६ ठे वा ७ वें वर्ष में जातक का मरण होता है ॥४०॥

सप्तमवर्षे मृत्युयोगः—

कृशः शशाङ्कः स्मरगो विलग्ने मन्दारशुक्रा गुरुदृष्टिहीनाः ।
विनाशनं तेऽब्दकसप्तकेन कुर्वन्ति जातस्य विनिश्चयेन ॥ ४१ ॥

क्षीण चन्द्रमा सप्तम में, लग्न गत शनि मङ्गल और शुक्र के ऊपर बृहस्पति की दृष्टि न हो तो जातक सप्तम वर्ष में मरता है ॥ ४१ ॥

वर्षद्वयेन मृत्युयोगः—

चन्द्रः सचान्द्रिर्यदि केन्द्रसंस्थः सूर्यांशुलुप्तः कुजमन्ददृष्टः ।
वर्षद्वयेन प्रकरोति रिष्टं स्पष्टं वसिष्ठादय एवमूचुः ॥ ४२ ॥

अस्त बुध, चन्द्रमा दोनों केन्द्र में स्थित हों और मङ्गल, शनि से देखे जाते हों तो जातक दो वर्ष में मृत्यु पाता है। ऐसा वशिष्ठ आदि का कहना है ॥ ४२ ॥

पुनर्वर्षद्वयेन मृत्युयोगः—

निशापतिर्लग्नपतेः सकाशाच्चेदष्टमस्थः कृशतां प्रयातः ।
क्रूरैश्च दृष्टश्च शुभैर्न दृष्टो वर्षद्वयान्ते स करोति रिष्टम् ॥ ४३ ॥

लग्नेश से अष्टम स्थान में क्षीण चन्द्र स्थित हो कर पाप ग्रह से देखा जाता हो और शुभ ग्रह से न देखा जाता हो तो जातक दो वर्ष में मृत्यु पाता है ॥ ४३ ॥

नवमवर्षे मृत्युयोगः—

लग्नाधिपः पापखगो नवांशे चन्द्रस्य च द्वादशगः शशाङ्कात्।
पापेक्षितो मारयति प्रसूतौ शिशुं नवाब्दैः खलु कीर्तयन्ति ॥४४॥

जन्म समय में लग्नेश पापी हो, चन्द्रमा के नवांश में स्थित हो कर चन्द्रमा से द्वादश स्थान में गत हो और पाप ग्रह से देखा जाता हो तो जातक नववें वर्ष में मृत्यु को पाता है ॥ ४४ ॥

राशिसमानवर्षे मृत्युयोगः—

लग्नेश्वरः सूर्यमयूखलुप्तोऽष्टमेश्वरेण प्रविलोक्यमानः।
रिष्टङ्करो राशिसमानवर्षैः प्राज्ञैरुदाहारि नरस्य जन्म ॥ ४५ ॥

अस्त हो कर लग्नेश यदि अष्टमेश से देखा जाता हो तो लग्नेश जिस राशि में वैठा हो उस के समान वर्ष में जातक की मृत्यु होती है॥

सप्तमवर्षे मृत्युयोगः—

अदृश्यभागे यदि पापखेटा दृश्ये विभागे शुभदा भवन्ति।
स्वर्भानुनामा तनुभावगामी जीवेत्प्रसूतोऽब्दकसप्तकं हि ॥ ४६ ॥

यदि पाप ग्रह लग्न से सप्तम तक, शुभ ग्रह सप्तम से लग्न तक स्थित हों और लग्न में राहु हो तो सप्तम वर्ष में जातक मृत्यु पाता है ४६

द्वादशाब्दे मृत्युयोगः—

सिंहीसुतः सप्तमभावसंस्थः शनैश्चरादित्यनिरीक्षितश्चेत्।
नालोकितः सौम्यखगैस्तु जीवेद्वर्षाणि हि द्वादश यः प्रसूतः ॥४७॥

सप्तम स्थान में स्थित हो कर राहु यदि सूर्य और शनि से देखा जाता हो और शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो जातक वारह वर्ष पर्य्यन्त जीता है ॥ ४७ ॥

सप्तमवर्षे मृत्युयोगः—

सिंहालिकुम्भस्थितसैंहिकेयो विलोकितः क्रूरखगैर्यदि स्यात्।
वर्षाणि सप्तैव तदोयमायुः प्रकीर्तितं जातकशास्त्रविद्भिः ॥ ४८ ॥

सिंह, वृश्चिक या कुम्भ राशि में स्थित हो कर राहु यदि पाप

ग्रहों से देखा जाता हो तो जातक की आयु सात वर्ष होती है। ऐसा जातक शास्त्र के जानने वालों का मत है ॥ ४८ ॥

मृत्युयोगः—

केतूदयः स्यात्प्रथमं ततश्चेन्निर्घातवाताशनयो भवन्ति ।
यो रौद्रसार्पाख्यमुहूर्तजन्मा प्राप्नोति कामं यममन्दिरं सः ॥४९॥

यदि जन्म काल में धूमकेतु का उदय हो, जन्म से पहिले या पीछे निर्घात शब्द हो या प्रचण्ड वायु चले या वज्रपात हो या जन्म समय में रौद्र, सार्प मुहूर्त हो तो जातक यमगृह पाता है ॥ ४९ ॥

शीघ्रमृत्युयोगः—

चन्द्रं क्रूरयुतं क्षीणं पश्येद्राहुर्यदा तदा ।
दिनैः स्वल्पतरैर्बालः कालस्यालयमाव्रजेत् ॥ ५० ॥

यदि पाप युक्त चन्द्रमा को राहु देखता हो तो जातक शीघ्र यमलोक जाता है ॥ ५० ॥

अंशसमवर्षे मृत्युयोगः—

मातङ्गै८र्नभभिश्च९रामनयनै२३र्नेत्राश्विभिः२२सायकै५-
रेकेनां१बुधिभि४स्त्रिलोचनमितै२३र्धृत्या१८च विंशो२०न्मितैः ।
भूनेत्रै२१र्दशभि१०र्लवैर्यदि भवेन्मेषादिसंस्थो विधु-
र्वर्षैर्भागसमैः करोति निधनं कालोऽयमत्रोदितः ॥ ५१ ॥

जिस का जन्म मेष के आठवें अंश में, वृष के ९ वें अंश में, मिथुन के २३ वें अंश में, कर्क के १२ वें अंश में, सिंह के ५ वें अंश में, कन्या के १ अंश में, तुला के ४ थे अंश में, वृश्चिक के २३ वें अंश में, धनु के १८ वें अंश में, मकर के २० वें अंश में, कुम्भ के २१ वें अंश में या मीन के १० वें अंश में हो वह जातक अंशतुल्य वर्ष में मृत्यु पाता है५१

इत्यरिष्टाध्यायः ।

अथ रिष्टभङ्गाध्यायः

होरागमज्ञैर्बहुविस्तरेण रिष्टाख्ययोगा यदपि प्रदिष्टाः ।
ते रिष्टभङ्गे यदि नो समर्थाः स रिष्टभङ्गोप्यभिधीयतेऽतः ॥ १ ॥

होरा शास्त्र जानने वालों से विस्तार पूर्वक अरिष्ट योग कहे गये हैं। जो स्वय भङ्ग (नाश) होने में असमर्थ हैं, उन के नाश करने का प्रकार कहते हैं ॥ १ ॥

पूर्णः कैरविणीपतिर्दिविचरैः सर्वैः प्रदृष्टस्तदा
रिष्टं हन्त्यथवा सुहृल्लवगतः सद्वीक्षितोऽतिप्रभः ।
क्षीणो वापि निजोच्चगः शुभखगैः शुक्रेण दृष्टस्तदा
रिष्टं यत् समुपागतं स तु हरेत्सिंहो यथा सिन्धुरम् ॥ २ ॥

जिस मनुष्य के जन्म काल में चन्द्रमा यदि सूर्य आदि आठों ग्रह से देखा जाता हो तो अरिष्टों का नाश करता है। अथवा बली चन्द्रमा यदि मित्र के नवांश में स्थित हो कर शुभ ग्रह से देखा जाता हो तो अरिष्टों का नाश करता है। अथवा क्षीण चन्द्रमा भी मित्र के नवांश में स्थित हो कर शुभ ग्रह से देखा जाता हो तो भी अरिष्टों का नाश करता है। वा चन्द्रमा उच्च स्थान में स्थित हो कर शुक्र से देखा जाता हो तो अरिष्टों का नाश होता है ॥ २ ॥

रिष्टं निहन्युः शुभदाः शशङ्कात्पापैर्विनास्ताष्टमशत्रुसंस्थाः ।
शुभान्वितः साधुदृक्काणवर्ती पीयूषमूर्तिः शमयत्यरिष्टम् ॥ ३ ॥

जिस के जन्म काल में पाप ग्रह को छोड़ कर सब शुभ ग्रह यदि चन्द्रमा से ६, ७, ८ इन स्थानों में स्थित हो या शुभ ग्रह से युत हो कर चन्द्रमा यदि शुभ ग्रह के द्रेष्काण में स्थित हो तो अरिष्टों का नाश होता है ॥ ३ ॥

शुभग्रहा द्वादशभावसंस्थाः पूर्णः शशी रिष्टहरः प्रदिष्टः ।
लग्नेशदृष्टः शुभराशियातो नान्येक्षितो रक्षति रिष्टयोगात् ॥ ४ ॥

यदि शुभ ग्रह द्वादश भाव में स्थित हों या पूर्ण बली चन्द्रमा

शुभ ग्रह की राशि में स्थित हो कर लग्नेश से देखा जाता हो और अन्य ग्रह से न देखा जाता हो तो अरिष्टों का नाश होता है ॥ ४ ॥

वलक्षपक्षे यदि जन्म रात्रौ कृष्णे दिवाष्टारिगतोऽपि चन्द्रः ।
क्रमेण दृष्टः शुभपापखेटैः पितेव बालं परिपालयेत्सः ॥ ५ ॥

शुक्ल पक्ष की रात्रि में जन्म हो और चन्द्रमा शुभ ग्रह से देखा जाता हो अथवा कृष्ण पक्ष की रात्रि में जन्म हो तथा चन्द्रमा पाप ग्रह से देखा जाता हो तो पिता के समान वह चन्द्रमा बालक की रक्षा करता है ॥ ५ ॥

स्थितः शशी क्रूरखगस्य राशौ राशीश्वरेणापि विलोकितश्च ।
तद्वर्गगो वा यदि तेन युक्तः कुर्यादलं मङ्गलमेव नान्यत् ॥ ६ ॥

चन्द्रमा यदि पाप ग्रह की राशि में स्थित हो कर राशीश से देखा जाता हो अथवा राशीश के षड् वर्ग में स्थित हो अथवा राशीश से युक्त हो तो वह पर्य्याप्त मङ्गल करने वाला होता है ॥ ६ ॥

जन्माधिपालो बलवान्किल स्यात्सौम्यैः सुहृद्भिश्च निरीक्ष्यमाणः ।
यद्वा तनुस्थः सकलैः प्रदृष्टो रिष्टं हि चन्द्रेण कृतं निहन्ति ॥ ७ ॥

बलवान् लग्नेश यदि शुभ ग्रह और मित्र ग्रह से देखा जाता हो या लग्नेश लग्न में स्थित हो कर सब ग्रहों से देखा जाता हो तो चन्द्र कृत अरिष्टों का नाश होता है ॥ ७ ॥

स्वोच्चे स्वभे वा यदि चात्मवर्गे स्थितो हितानां च सतां प्रदृष्टः ।
शुभैर्न पापारियुतेक्षितश्च रिष्टं हरेत्पूर्णकलः कलावान् ॥ ८ ॥

बलवान् चन्द्रमा यदि अपने उच्च, अपनी राशि या अपने षडवर्ग में स्थित हो कर मित्र ग्रह या शुभ ग्रह से देखा जाता हो और पाप ग्रह या शत्रु ग्रह से युक्त दृष्ट न हो तो अरिष्ट का नाश होता है ॥ ८ ॥

वाचामधीशो दशमे शशाङ्काद्व्यये ज्ञशुक्रौ च खलः किलाये ।
विलग्नपात्त्र्यम्बुदशान्त्यलाभे शुभेक्षितेन्दुश्च हरेत्स रिष्टम् ॥ ९ ॥

बृहस्पति यदि चन्द्रमा से दशम स्थान में, बुध, शुक्र दोनों द्वादश में, पाप ग्रह एकादश में, लग्नेश ३, ४, १०, ११, या १२ में स्थित हो और चन्द्रमा के ऊपर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो निश्चय अरिष्ट का नाश होता है ॥ ९ ॥

प्रसूतिकाले यदि जन्मपालः किलेक्षितो निर्मलखेचरैश्च।
बलाधिशाली प्रलयं करोति रिष्टस्य शीतांशुसमुद्भवस्य ॥ १० ॥

जन्म काल में बलवान् लग्नेश यदि शुभ ग्रह से देखा जाता हो तो चन्द्रकृत अरिष्टों का नाश होता है ॥ १० ॥

भवेन्निशा जन्मनि पद्मिनीशः परोच्चगामी निजवेश्मगो वा।
तदंशगो वापि शुभेक्षितश्च पूर्णः शशाङ्को निधनं निहन्ति ॥११॥

रात्रि के समय जन्म हो, पूर्ण चन्द्रमा वृष या कर्क राशि में वा उस राशि के नवांश में स्थित हो और शुभ ग्रह से देखा जाता हो तो अरिष्टों का नाश होता है ॥ ११ ॥

दास्रेऽग्निभे वा गुरुभे शशाङ्के वर्गोत्तमे पूर्णकलाकलापे।
त्रिपुष्करं शीतकरे हि रिष्टं प्रकृष्टमप्याशु लयं प्रयाति ॥१२॥

चन्द्रमा यदि अश्विनी, कृत्तिका या पुष्य नक्षत्र में वा वर्गोत्तम में हो तो त्रिपुष्कर नामक अरिष्ट का नाश होता है ॥ १२ ॥

पादे द्वितीये यदि वा तृतीये तिष्यस्य ताराधिपतिर्यदि स्यात्।
वा रोहिणीनां चरणे द्वितीये सौम्येक्षितो रक्षति मृत्युदोषात् ॥१३॥

चन्द्रमा यदि पुष्य नक्षत्र के द्वितीय वा तृतीय चरण में हो अथवा रोहिणी नक्षत्र के द्वीतीय चरण में हो और शुभ ग्रह से देखा जाता हो तो जातक मृत्यु से बचता है ॥ १३ ॥

कुलीरमेषगश्चन्द्रः केन्द्रस्थः शुभवीक्षितः।
ग्रस्तोऽपि रिष्टभङ्गाय भवेदत्र न संशयः ॥ १४ ॥

चन्द्रमा यदि कर्क या मेष राशि में स्थित हो कर केन्द्र में स्थित हो और शुभ ग्रह से देखा जाता हो तो निश्चय अरिष्टों का नाश होता है॥

केन्द्रेषु चेदम्बरमार्गगानां द्वयं द्वयं सौम्यखगो विलग्ने।
क्षीणोऽपि चन्द्रः स्मरभावसंस्थः सम्प्राप्तरिष्टं शमयेदवश्यम् ॥१५॥

यदि केन्द्र स्थानों में दो दो ग्रह स्थित हों, शुभग्रह लग्न में और क्षीण चन्द्रमा सप्तम में स्थित हो तो निश्चय अरिष्टों का नाश होता है॥

इति रिष्टभङ्गाध्यायः।

अथ सर्वग्रहारिष्टभङ्गाध्यायः

मरीचिमालामलकान्तिशाली प्रसूतिकाले प्रबलो यदि स्यात्।
बृहस्पतिर्मूर्तिगतो निहन्ति रिष्टानि नूनं मुनयो वदन्ति ॥ १ ॥

यदि उदित बृहस्पति बलवान् हो कर लग्न में बैठा हो तो सब अरिष्टों का नाश होता है, ऐसा मुनियों ने कहा है ॥ १ ॥

पापैरवीर्यैश्च शुभैः सवीर्यैः शुभस्य राशौ तनुभावयाते।
निरीक्षिते व्योमचरैः शुभाख्यैः संक्षीयते रिष्टमुपागतं वै ॥ २ ॥

जिस के जन्म काल में पाप ग्रह निर्बल हो, शुभ ग्रह बली हो, शुभ ग्रह की राशि का लग्न हो और लग्न को शुभ ग्रह देखता हो तो उस के अरिष्टों का नाश होता है ॥ २ ॥

सौम्यवर्गाश्रिताः पापाः सौम्यवर्गाश्रितैः शुभैः।
दृष्टा अपि प्रकृष्टं ते रिष्टं नाशयितुं क्षमाः ॥ ३ ॥

शुभ ग्रह के वर्ग में स्थित पाप ग्रह को शुभ ग्रह के वर्ग में स्थित शुभ ग्रह देखते हों तो अरिष्ट का नाश होता है ॥ ३ ॥

मूर्तेस्तु राहुस्त्रिषडायवर्ती रिष्टं हरत्येव शुभैः प्रदृष्टः।
शीर्षोदयस्थैर्विकृतिं न यातैरशेषखेटैः किल रिष्टभङ्गः ॥ ४ ॥

लग्न से तृतीय, षष्ठ और एकादश भाव में स्थित राहु को शुभ ग्रह देखता हो अथवा सब ग्रह शीर्षोदय राशि में स्थित हों तो सब अरिष्टों का नाश होता है ॥ ४ ॥

प्रसूतिकाले विजयाधिशाली शुभो हरेद्रिष्टमपापदृष्टः।

कश्चिद्ग्रहश्चेत्परिवेषगामी क्रूरैः प्रदृष्टः किल रिष्टभङ्गः ॥ ५ ॥

जन्म समय में विजयी शुभ ग्रह को अन्य शुभ ग्रह देखते हों अथवा अस्त गत किसी ग्रह को पाप ग्रह देखते हों तो अरिष्टों का नाश होता है ॥ ५ ॥

रजोविहीनं गगनं च खस्थाः स्वस्था भवेयुर्जलदाः सुनीलाः ।
मन्दानिलाश्चेद्विमला मुहूर्ताः प्रसूतिकाले किल रिष्टभङ्गः ॥ ६ ॥

जन्म काल में आकाश स्वस्थ हो, सब ग्रह स्वस्थ हों, नील वर्ण का मेघ हो, धीरे २ हवा चलती हो और सुन्दर मुहूर्त हो तो सब अरिष्टों का नाश होता है ॥ ६ ॥

कुम्भयोनिमुनीनां चेदुद्गमे जननं भवेत् ।
विलीयते तदा रिष्टं नूनं लाक्षेव वह्निना ॥ ७ ॥

यदि जन्म काल में अगस्त्य तारा का उदय हो तो आग से लाह की तरह सब अरिष्टों का नाश होता है ॥ ७ ॥

वृषाजकर्काख्यविलग्नसंस्थो राहुर्भवेद्रिष्टविनाशकर्ता ।
शुभाश्च योगा बहवो यदि स्युस्तथापि रिष्टं विलयं प्रयाति ॥ ८ ॥

वृष, मेष या कर्क लग्न हो उस में राहु बैठा हो अनेक शुभ योग हों तो अरिष्टों का नाश होता है ॥ ८ ॥

नक्रत्रये लाभरिपुत्रिसंस्थः केतुस्तु हेतुर्निधनोपशान्त्यै ।
परस्परं भार्गवजीवसौम्यास्त्रिकोणगास्तेऽपि हरन्त्यरिष्टम् ॥ ९ ॥

यदि मकर, कुम्भ या मीन राशि का केतु ११, ६ या ३ स्थान में हो अथवा शुक्र, गुरु और बुध ये तीनों नवम, पञ्चम में स्थित हों तो अरिष्टों का नाश होता है ॥ ९ ॥

सन्ध्याभवा वैधृतिपातभद्रागण्डान्तयुक्ता अपि जन्मकाले ।
भवन्ति रिष्टस्य विनाशनार्थं निरन्तरा दृश्यदलेऽथ सर्वे ॥ १० ॥

जन्म काल में सब ग्रह लग्न से सप्तम भाव पर्यन्त में स्थित हों तो दोनों सन्ध्या, वैधृति, गण्डान्त इन में जन्म लेने वालों के भी अरिष्टों का नाश होता है ॥ १० ॥

त्र्यायारितुङ्गेषु गतः पतङ्गो नोपप्लुतो रिष्टविनाशकर्ता ।
एकर्क्षगाः षट्त्रिदशायसंस्थाः सर्वेऽपि रिष्टं शमयन्ति खेटाः ॥११॥

अपने उच्च राशि में स्थित हो कर सूर्य ३, ११ या ६ में स्थित हो पाप ग्रह से ग्रसित न हो अथवा एक राशि में स्थित हो कर सब ग्रह ६, ३, १० या ११ में स्थित हों तो अरिष्टों का नाश होता है ॥ ११ ॥

शीतभानोस्तनोर्वापि द्वौ त्रयो वाप्यनेकशः ।
एकान्तस्थास्तदा रिष्टभङ्गो भवति निश्चयात् ॥ १२ ॥

चन्द्रमा या लग्न से भिन्न स्थान में स्थित हो कर दो आदि ग्रह यदि एक राशि में स्थित हों तो निश्चय अरिष्टों का नाश होता है॥१२॥

पातालयातः प्रबलेन्दुदृष्टो निजालयस्थो यदि जन्मकाले ।
देवेन्द्रमन्त्री दलयत्यवश्यममङ्गलं रिष्टभवं क्षणेन ॥ १३ ॥

जन्म काल में धनु या मीन का बृहस्पति यदि लग्न से चतुर्थ में स्थित हो और पूर्ण बली चन्द्रमा से देखा जाता हो तो अरिष्टों का नाश होता है ॥ १३ ॥

लग्नस्थितस्य खेटस्य व्यये वित्ते त्रयस्त्रयः ।
तत्कालमुद्भवाः खेटा रिष्टदारणकारिणः ॥ १४ ॥

यदि द्वादश और द्वितीय में तीन २ ग्रह स्थित हों तो लग्न में स्थित ग्रह का अरिष्ट जन्य दोष नहीं होता है ॥ १४ ॥

केन्द्रेष्वापोक्लिमेष्वेव यद्वा पणफरेषु च ।
शुभांशस्था ग्रहाः सर्वे रिष्टभङ्गकराः स्मृताः ॥ १५ ॥

यदि जन्म काल में सब ग्रह केन्द्र या पणफर वा आपोक्लिम में स्थित हों तो अरिष्टों का नाश होता है ॥ १५ ॥

अन्योन्यं हि चतुर्थस्था युग्मभावमुपागताः ।
स्वर्भानुसंयुताः खेटा रिष्टदोषापहारकाः ॥ १६ ॥

द्विस्वभाव राशि में स्थित हो कर सब ग्रह यदि परस्पर चतुर्थ स्थान में स्थित हों तो अरिष्टों का नाश होता है ॥ १६ ॥

चतुष्टये श्रेष्ठबलाधिशाली शुभो नभोगोऽष्टमगो न कश्चित् ।
त्रिंशन्मितायुः प्रकरोति नूनं दशान्वितं तच्छुभखेटदृष्टः ॥ १७ ॥

यदि बलवान् शुभ ग्रह केन्द्र में स्थित हों और अष्टम स्थान में कोई ग्रह न हो तो तीस वर्ष की आयु होती है। तथा पूर्वोक्त योग में योग कारक शुभ ग्रह के अन्य शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो चालिस वर्ष की आयु होती है ॥ १७ ॥

निजत्रिभागस्य गृहे गुरुश्चेदायुर्मितिः स्यात्खलु सप्तविंशत् ।
बृहस्पतिस्तुङ्गगतो विलग्ने भृगोः सुतः केन्द्रगतः शतायुः ॥ १८ ॥

यदि बृहस्पति अपने द्रेष्काण में स्थित हो तो २७ वर्ष की आयु होती है। यदि गुरु, शुक्र दोनों केन्द्र में बैठे हों तो १०० वर्ष की आयु होती है ॥ १८ ॥

लग्ने स्वतुङ्गे बलशालिनीन्दौ सौम्याः स्वभस्थाः खलु षष्टिरायुः ।
मूलत्रिकोणेषु शुभेषु तुङ्गे लग्ने गुरावायुरशीतिरेव ॥ १९ ॥

लग्न या उच्च स्थान में चन्द्रमा स्थित हो तो ६० वर्ष की आयु होती है और यदि शुभ ग्रह मूल त्रिकोण में बृहस्पति स्वोच्च या लग्न में हो तो ८० वर्ष की आयु होती है ॥ १९ ॥

लग्नाष्टमारीन्दुयुता न चेत्स्युः क्रूराः स्वभस्था यदि खेचरौ द्वौ ।
बलान्वितावम्बरगौ भवेतां जातः शतायुः कथितो मुनीन्द्रैः ॥२०॥

चन्द्रमा यदि १, ६, ८ इन स्थानों में न रह कर अन्य स्थान में हो, पाप ग्रह अपने घर में हों और दशम स्थान में दो बलवान् ग्रह स्थित हों तो जातक १०० वर्ष जीता है ॥ २० ॥

शून्ये रन्ध्रे केन्द्रगैः सौम्यखेटैः लग्ने जीवे त्र्यायषष्ठे शुभाश्चेत् ।
नो संदृष्टाः पापखेटैस्तदा स्यादायुर्मानं सप्ततिर्वत्सराणाम् ॥२१॥

यदि अष्टम स्थान में कोई ग्रह न हो, शुभ ग्रह केन्द्र में हों, लग्न में बृहस्पति हो, शुभ ग्रह ३, ६, ११ इन स्थानों में स्थित हो कर पाप ग्रह से देखा जाता हो तो जातक की आयु ७० वर्ष की होती है ॥ २१ ॥

इति सर्वग्रहरिष्टभङ्गाध्यायः।

अथ सदसद्दशाविचारणाध्यायः

राजयोगगृहभावसम्भवं रिष्टयोगजनितं च यत्फलम् ।
तद्दशाफलगतं यतो भवेत्तेन तत्फलमलं ब्रुवेऽधुना ॥ १ ॥

राजयोग, राशि, भाव, अरिष्ट इन सबों का फल योगकारक ग्रह के दशा काल में होता है। अतः दशा फल का वर्णन करता हूँ ॥ १ ॥

देवस्तुतिः—

सर्वदेववरदो वरदो वः शारदापि वरदा वदनाब्जे ।
इन्दिरा च खलु मन्दिरसंस्था प्रस्थिता जलनिधीन्प्रति कीर्तिः ॥२॥

सब देवों को वर देने वाले गणेश जी आप को वरदान दें, सरस्वती आपके मुख में निवास करें, लक्ष्मी जी आप के घर में निवास करें और समुद्र पर्य्यन्त आप की कीर्ति फैले ॥ २ ॥

स्वोच्चे स्वगेहे यदि वा त्रिकोणे वर्गे स्वकीयेऽथ चतुष्टये वा ।
नास्तंगतो नोऽशुभदृष्टियुक्तो जन्माधिपः स्याच्छुभदः स्वपाके ॥३॥

अपने उच्च, राशि, मूल त्रिकोण या षड्वर्ग में स्थित हो कर लग्नेश यदि अस्त गत ग्रह या पाप ग्रह से न देखा जाता हो तो अपनी दशा में शुभ फल देता है ॥ ३ ॥

त्रिषष्ठलाभेषु गतैः समस्तैः सौम्यैः सुखार्थाश्च भवंति बाल्ये।
तत्रैव पापैर्वयसोऽन्त्यभागे जायार्थपुत्रादिसुखानि सम्यक् ॥ ४ ॥

यदि ३, ६, ११ इन स्थानों में सब शुभ ग्रह स्थित हों तो बाल्य काल में और पाप ग्रह स्थित हों तो वृद्ध काल में स्त्री, धन, पुत्र आदि का सुख मिलता है ॥ ४ ॥

तुंगे स्वगेहे स्वसुहृद्गृहांशे नीचारिभस्थेऽपि च खेचरेंद्रे ।
मिश्रं फलं स्यात्खलु तस्य पाके होरागमज्ञैः परिकल्पनीयम् ॥ ५ ॥

यदि ग्रह अपने उच्च स्थान, राशि, मित्र के गृह या नवांश में स्थित हो कर नीच, शत्रु गृह या नवांश में स्थित हो तो उस की दशा में मिश्र फल होता है ॥ ५ ॥

वाचांपतिर्लग्नगते स्वतुंगे स्वर्क्षे दशायत्रिगतश्च सूतौ।
करोति राज्यं स्वकुलानुमानं नानाविधोत्कर्षविशेषयुक्तम् ॥ ६ ॥

यदि वृहस्पति लग्न, उच्च, अपनी राशि, १०, ११ या ३ स्थान में स्थित हो तो अपने कुल के अनुसार विशिष्ट फल और राज्य को देता है॥

आरोहिणी दशा यस्य खेचरः सत्फलप्रदः।
सत्फलापचयं कुर्याद्दशा चेदवरोहिणी ॥ ७ ॥

जिस ग्रह की आरोहिणी दशा (अपने नीच स्थान से पांच राशि तक में स्थित ग्रह की दशा) हो तो शुभ फल देने वाली होती है। अवरोहिणी (उच्च से पाँच राशि तक में स्थित ग्रह की दशा) हो तो अशुभ फल देने वाली होती है ॥ ७ ॥

कर्कराशिगतचंद्रदशाफलम्—

स्त्रीपुत्रमित्रद्रविणोपलब्धिं कर्के हिमांशुः कुरुते दशायाम्।

कर्क राशि गत चन्द्र की दशा में स्त्री, पुत्र, मित्र और धन की प्राप्ति होती है ॥ ७½ ॥

भौमराशिगतचंद्रदशाफलम्—

जायापशूनां हनने प्रवृत्तिं करोति पृथ्वीतनुजस्य गेहे ॥ ८ ॥

मङ्गल की राशि में स्थित चन्द्र की दशा में स्त्री और पशु का वध होता है ॥ ८ ॥

बुधगुरुराशिगतचंद्रदशाफलम्—

सच्छास्त्रमित्राधिगमं करोति बुधस्य राशौ गुरुधामसंस्थः।

बुध की राशि में स्थित चन्द्र की दशा में सुन्दर शास्त्र और मित्र का लाभ होता है ॥ ८½ ॥

शुक्रराशिगतचंद्रदशाफलम्—

नृपप्रसादं विपुलां च लक्ष्मीं शुक्रस्य गेहे फलमेतदेव ॥ ९ ॥

शुक्र की राशि में स्थित चन्द्र की दशा में राजा की प्रसन्नता से धन की प्राप्ति होती है ॥ ९ ॥

शनिराशिगतचंद्रदशाफलम्—

तुषाररश्मिः शनिवेश्मसंस्थः प्रेष्यं मनुष्यं कुरुते दशायाम् ।
अरण्यदुर्गस्थितिमाददाति प्रीतिं मरुद्गोगृहनिर्मितौ च ॥ १० ॥

शनि के गृह में स्थित चन्द्र की दशा हो तो जातक दूत कर्म करने वाला, वन, दुर्ग में रहने वाला और गोपालन गृहनिर्माण करने वाला होता है ॥ १० ॥

मित्रे चोपचयस्थाने त्रिकोणे सप्तमेऽपि वा ।
पाकेश्वरात्स्थितश्चंद्रः कुरुते सत्फलां दशाम् ॥११॥

चन्द्रमा मित्र के गृह में, दशापति से ३, ६, १०, ११ में या ५, ९, ७ में स्थित हो तो अपने दशा काल में शुभ फल देता है ॥ ११ ॥

इति सदसद्दशाविचाराध्यायः ।

रविदशाफलाध्यायः

भानोर्दशायां हि विदेशवासो भवेत्कदाचिन्ननु मानवानाम् ।
भूवह्निभूपद्विजवर्यशस्त्रभैषज्यतोऽतीव धनागमः स्यात् ॥ १ ॥
मन्त्राभिचारेऽभिरुचिर्विचित्रा धात्रीपतेः सख्यविधिर्विशेषात् ।
विख्यातकर्माभिरतिर्मतिः स्यादनल्पजल्पे चरणेन चिंता ॥ २ ॥
व्ययश्च दंतोदरनेत्रबाधा कांतासुताभ्यां वियुतिश्च चिंता ।
नृपाग्निचौराहितबंधुवर्गैः स्वगोत्रजैर्वा प्रबलः कलिः स्यात् ॥ ३ ॥

सूर्य की दशा में परदेश वास, भूमि, अग्नि, राजा, ब्राह्मण, औषधि इन सबों से धन का लाभ, मन्त्र के विचार में स्नेह, राजा से मैत्री, प्रसिद्ध कार्य में रुचि, कम बोलने वाली मति, युद्ध से चिन्ता, खर्च, दाँत, पेट, आंख इन में,पीड़ा; स्त्री, पुत्र का विरह, राजा, अग्नि, चोर, परिवार इन से चिन्ता और भाइयों से कलह होता है॥ १-३ ॥

मेषस्थरविदशाफलम्—

दशा दिनेशस्य निजोच्चगस्य स्वाधर्मकर्माभिरुचिं करोति ।

तातार्जितद्रव्यगृहादिलाभं नानासुखानि प्रमदासुतेभ्यः ॥ ४ ॥
उच्चच्युतस्यातितरामरिष्टं कष्टं च रोगान्स्वजनैर्विरोधम् ।
रवेर्दशातीव चतुष्पदानां करोति हानिं ननु मानवानाम् ॥ ५ ॥

अपने उच्च राशि में स्थित सूर्य की दशा में धर्म कर्म में अभिरुचि, अपने पिता के उपार्जित गृह, द्रव्य आदि का लाभ, और स्त्री, पुत्रों से अनेक सुख मिलता है। उच्च स्थान से भ्रष्ट सूर्य की दशा में अनेक तरह के क्लेश, रोग, बन्धुओं से विरोध चतुष्पद और मनुष्यों की हानि होती है ॥ ४-५ ॥

वृषराशिस्थितरविदशाफलम्—

कांतासुतानां कृषिवाहनानां प्रपीडनं स्यान्नयनाननेषु ।
हृद्रोगबाधा बहुधा नराणां वृषाधिरूढस्य रवेर्दशायाम् ॥ ६ ॥

वृष राशि में स्थित सूर्य की दशा में स्त्री, पुत्र, खेती, वाहन, अपने नेत्र और मुख में पीड़ा और हृदय में रोग होता है ॥ ६ ॥

मिथुनराशिगतरविदशाफलम्—

स्यान्मंत्रशास्त्रोत्तमकाव्यकर्ता प्रीतिः पुराणे च भवेन्नराणाम् ।
कृषिक्रियाधान्यधनैः सुखानि नृयुग्मसंस्थस्य रवेर्दशायाम् ॥ ७ ॥

मिथुन राशि में स्थित सूर्य की दशा में मन्त्र शास्त्र और उत्तम काव्य को बनाने वाला, पुराण कथा का स्नेही और खेती से धन धान्य का सुख पाने वाला होता है ॥ ७ ॥

कर्कराशिगतरविदशाफलम्—

ख्यातिर्नृपप्रीतिरतीव नित्यं स्त्रीनिर्जितत्वं च महान्प्रकोपः ।
सुहृज्जने नूनमनूनपीडा कर्काधिरूढस्य रवेर्दशायाम् ॥ ८ ॥

कर्क राशि में स्थित सूर्य की दशा में प्रतिष्ठा, राजा से प्रीति, स्त्री से पराजय, क्रोध और मित्रों में अत्यन्त क्लेश होता है ॥ ८ ॥

सिंहराशिगतरविदशाफलम्—

दुर्गादरण्ये च कृषिक्रियायां धनान्यनेकानि भवंति नूनम् ।

स्यात्ख्यातिरुच्चैर्नृपगौरवं च कण्ठीरवस्थार्कदशाप्रवेशे ॥ ९ ॥

सिंह राशि में स्थित सूर्य की दशा में दुर्ग और वन में खेती के द्वारा अनेक प्रकार से धन धान्य, प्रतिष्ठा, राज दरबार में गौरव प्राप्त होता है ॥ ९ ॥

कन्याराशिगतरविदशाफलम्—

स्यात्कन्यकानां जननं समानं देवद्विजानामनुपूजनं च ।
लब्धिः पशूनां च भवेद्दशायां कन्यागतस्याम्बुजबांधवस्य ॥ १० ॥

कन्या राशि में स्थित सूर्य की दशा में कन्या का जन्म, आदर पूर्वक ब्राह्मण देवताओं का पूजन और गौ आदि चतुष्पदों का लाभ होता है ॥ १० ॥

तुलाराशिगतरविदशाफलम्—

क्षेत्रात्मजार्थप्रमदासु पीडा चोराग्निभीतिश्च विदेशयानम् ।
नीचत्वमुच्चैः खलु मानवानां तुलाधरस्थस्य रवेर्दशायाम् ॥ ११ ॥

तुला राशि में स्थित सूर्य की दशा में खेती, पुत्र, स्त्री को पीड़ा, चोर अग्नि का भय, विदेश में भ्रमण, और अनादर होता है ॥ ११ ॥

नीचांशयुक्तस्य रवेर्दशायां सुखेन लभ्यं परवञ्चनञ्च ।
जायानिमित्तोद्यतदुःखलब्धिर्नीचैर्भवेत्सख्यविधिर्नितांतम् ॥ १२ ॥

नीच राशि में स्थित सूर्य की दशा में अनायास दूसरों से ठग जाना, स्त्री के कारण दुःख और नीच जनों से मैत्री होती है ॥ १२ ॥

नीचाष्टमस्थस्य रवेर्दशायामुद्विग्नता दोषसमुद्भवः स्यात् ।
षष्ठाश्रितस्य व्रणजन्यपीडा शत्रोश्च बाधा बहुधावगम्या ॥ १३ ॥

तुला राशि में स्थित होकर अष्टम भाव में स्थित सूर्य की दशामें चित्त में उद्वेग, षष्ठ भाव में स्थित सूर्य की दशा में व्रण और शत्रुओं से पीड़ा होती है ॥ १३ ॥

वृश्चिकराशिगतरविदशाफलम्—

तेजोविशेषाभियुतो नितांतं विषाग्निशस्त्रैः परिपीडितश्च ।

पित्रा जनन्यागतचित्तशुद्धिः स्याद् वृश्चिकस्थस्य रवेर्दशायाम्॥१४॥

वृश्चिक राशि में स्थित सूर्य की दशा में विशेष तेज से युक्त, विष, अग्नि, शास्त्र इन से पीड़ा; माता और पिता में आदर होता है ॥ १४ ॥

धनूराशिगतरविदशाफलम्—

कलत्रपुत्रद्रविणादिसौख्यं स्याद्गौरवं राजकुलाद्द्विजेभ्यः।

सङ्गीतशास्त्रागमसौख्यमुच्चैश्चापोपयातस्य रवेर्दशायाम् ॥ १५ ॥

धनु राशि में स्थित सूर्य की दशा में स्त्री, पुत्र, धन इन से सुख, राजा के कुल और ब्राह्मणों से गौरव, संगीत शास्त्र के सम्बन्ध से विशेष सुख होता है ॥ १५ ॥

मकरराशिगतरविदशाफलम्—

जायात्मजद्रव्यसुखाल्पता स्यादनल्पपीडा भयतो नितांतम् ।

भवेत्पराधीनतयातिचिंता नक्रोपयातस्य रवेर्दशायाम् ॥ १६ ॥

मकर राशि में स्थित सूर्य की दशा में स्त्री, पुत्र, धन इन के द्वारा थोड़ा सुख, भय से अत्यन्त पीड़ा और पराधीन होने के कारण अति चिन्ता होती है ॥ १६ ॥

कुंभराशिगतरविदशाफलम्—

हृद्रोगबाधासुतवित्तकांताचिंताः परान्नादिसुखं न किंचित् ।

शत्रूद्गमश्चाप्यतिदीनता स्याद्घटाधिरूढस्य दशाप्रवेशे ॥ १७ ॥

कुम्भ राशि में स्थित सूर्य की दशा में हृदय रोग से पीड़ा, पुत्र, स्त्री, धन इन की चिन्ता. परान्न भोजन से हानि, शत्रु की वृद्धि और दीनता होती है ॥ १७ ॥

मीनराशिस्थितरविदशाफलम्—

स्त्रीवित्तसौख्योपचयः प्रतिष्ठा ज्वरादिपीडा च सुतादिकानाम् ।

वृथाटनत्वं ननु मानवानां मीने दिनेशस्य दशाप्रवेशे ॥ १८ ॥

मीन राशि में स्थित सूर्य की दशा में स्त्री धन से सुख की वृद्धि, प्रतिष्ठा, पुत्र आदि को ज्वर आदि की पीड़ा और व्यर्थ भ्रमण होता है॥

उच्चराशिस्थिताष्टमभावस्थितरविदशाफलम्—

स्वोच्चस्थितस्याष्टमभावगस्य दशा दिनेशस्य च दोषदा स्यात् ।
षष्ठस्थितस्य व्रणजातपीडां करोति बाधां च पितुर्जनन्याः ॥१९॥

मेष का हो कर अष्टम भाव में स्थित सूर्य की दशा में कष्ट, षष्ठ भाव में स्थित सूर्य की दशा में माता पिता को व्रण से पीड़ा होती है ॥

पूर्वं भवेत्सूर्यदशाप्रवेशः पित्रोश्च बाधा विविधा तदानीम् ।
लग्नादशा क्लेशविशेषदात्री नक्षत्रनाथस्य दशातिशस्ता ॥ २० ॥

सूर्य की प्रथम दशा हो तो माता पिता को कष्ट, लग्न की प्रथम दशा हो तो विशेष क्लेश और चन्द्रमा की प्रथम दशा हो तो शुभ फल होता है ॥ २० ॥

इति रविदशाफलाध्यायः ।

चन्द्रदशाफलाध्यायः

आरोहिणी चन्द्रदशा नराणां सर्वार्थसिद्ध्यै कथिता विशेषात् ।
तथावरोहात्कुरुते विलम्बं सर्वेषु कार्येषु च बुद्धिमान्द्यम् ॥ १ ॥

यदि चन्द्रमा की आरोहिणी दशा हो तो विशेष कर सब कार्यों की सिद्धि होती है । अवरोहिणी दशा हो तो सब कार्यों में मन्द बुद्धि होती है ॥ १ ॥

नक्षत्रनाथस्य दशाप्रवेशे भवेन्नराणां महती प्रतिष्ठा ।
मन्त्रित्वमुच्चैर्नृपतेः प्रसादो भूदेवदेवार्चनताप्रवृत्तिः ॥ २ ॥
सन्मन्त्रविद्या विविधा धनाप्तिर्नानाकलाकौशलशालिता च ।
गन्धैस्तिलैश्चापि फलैः प्रसूनैर्वृक्षैरलं वा द्रविणोपलब्धिः ॥ ३ ॥
ख्यातिः सुकीर्तिर्विनयाधिकत्वं परोपकाराय मतिर्यशश्च ।
इतस्ततः सञ्चलनप्रियत्वं कन्याप्रजासञ्जननं मृदुत्वम् ॥ ४ ॥
जलस्य कर्मण्यतिसादरत्वमालस्यनिद्राकुलता क्षमा च ।

कृष्यादिकर्माभिरुचिः शुचित्वं कफानिलाधिक्यमतीव सत्त्वम् ॥५॥
भवेद्विरोधः स्वजनेन नूनं कलिप्रसङ्गो बहुजल्पता च।
चित्तस्थितिर्नैव च साधुकार्ये सामान्यतः कीर्तितमेतदत्र ॥ ६ ॥

चन्द्रमा की दशा के प्रवेश काल में बहुत प्रतिष्ठा, मन्त्री के पद का लाभ, राजा की कृपा, देवता ब्राह्मणों में भक्ति, सुन्दर मन्त्र विद्या, अनेक तरह धन की प्राप्ति, अनेक कलाओं में कुशलता, सुगन्ध, तिल फल, पुष्प, वृक्ष इन सबों से धन की प्राप्ति, प्रसिद्ध कीर्ति, नम्रता, परोपकार की बुद्धि से यश, इधर उधर घूमने में प्रेम, कन्या का जन्म और कोमलता, जल के कार्य में अति प्रीति, आलस्य, निद्रा, व्याकुलता क्षमा, खेती में अभिरुचि, पवित्रता, कफ वायु का अधिक प्रकोप, अत्यन्त बल, बन्धुओं से विरोध, कलह का प्रसङ्ग, व्यर्थ बोलना, चित्त में चञ्चलता होती है और अच्छे काम में मन नहीं लगता है ॥२-६॥

मेषराशिगतचन्द्रदशाफलम्—

मेषे शशांकस्य दशाप्रवेशे योषात्मजानन्दभरो जनानाम्।
विदेशकर्माभिरतिर्व्ययः स्यात् क्रौर्यं शिरोरुक्सहजारिबाधा ॥ ७ ॥

मेष राशि में स्थित चन्द्रमा की दशा में स्त्री-पुत्र से आनन्द, परदेश के कार्य में रुचि, अधिक खर्च, क्रूरता, शिर में रोग, भाई और शत्रुओं की बाधा होती है ॥ ७ ॥

वृषराशिगतचन्द्रदशाफलम्—

उच्चाधिरूढस्य दशा जडांशोः कुलानुसारं हि ददाति राज्यम्।
योषाविभूषात्मजगोतुरङ्गगजाप्तिसौख्योपचयं जयं च ॥ ८ ॥

वृष राशि में स्थित चन्द्र की दशा में वंश के अनुसार राज्य का लाभ, स्त्री, भूषण, पुत्र, गौ, घोड़ा, हाथी आदि के द्वारा सुख और विजय होती है ॥ ८ ॥

मूलत्रिकोणराशिस्थितचन्द्रदशाफलम्—

मूलत्रिकोणाश्रितशीतरश्मेर्दशा विदेशाभिगमं करोति।
कृषेः क्रयाद्विक्रयतो धनाप्तिं कफानिलार्तिं स्वजनैर्विरोधम् ॥ ९ ॥

अपने मूल त्रिकोण में स्थित चन्द्र की दशा में परदेश में यात्रा खेती के क्रय विक्रय से धन का लाभ, कफ और वात से पीड़ा तथा, अपने जनों से शत्रुता होती है ॥ ९ ॥

वृषपूर्वार्द्धपरार्द्धगतचन्द्रदशाफलम्—

वृषस्य पूर्वार्धगतो हिमांशुः पापान्वितः सञ्जनयेज्जनन्याः ।
मृत्युं, परार्धे जनकस्य सौख्यभङ्गं क्षणान्मृत्युसमानरोगम् ॥ १० ॥

वृष राशि के पूर्वार्ध में स्थित पापयुत चन्द्र की दशा में माता की मृत्यु होती है। वृष राशि के उत्तरार्ध में स्थित पापयुत चन्द्रमा की दशा में पिता की मृत्यु या मरण तुल्य कष्ट और सुख का नाश होता है॥

मिथुनराशिगतचन्द्रदशाफलम्—

द्वन्द्वाधिसंस्थेन्दुदशाप्रवेशे देवद्विजार्चाधनभोगसंस्थम् ।
स्थलांतरे सञ्चलनं किल स्यात्सुखेन सम्यङ्मतिवैभवं च ॥११॥

मिथुन राशि में स्थित चन्द्र की दशा में देवता ब्राह्मण का पूजन, भोग के लिए स्थानान्तर गमन, सुख पूर्वक बुद्धि और विभव की वृद्धि होती है ॥ ११ ॥

कर्कराशिगतचन्द्रदशाफलम्—

कुलीरसंस्थस्य कलानिधेः स्यात्पाके पशुद्रव्यकृषिप्रवृद्धिः ।
कलाकलापाकलनं च शैले वने रुचिर्गुह्यगदप्रकोपः ॥ १२ ॥

कर्क राशि में स्थित चन्द्र की दशा में पशु, द्रव्य,खेती इन की वृद्धि, कलाओं में कुशलता, पर्वत और वन में अभिरुचि तथा गुह्य स्थान में रोग का भय होता है ॥ १२ ॥

सिंहराशिगतचन्द्रदशाफलम्—

कण्ठीरवस्थस्य निशाकरस्य पाके नरोऽर्थं लभते च नित्यम् ।
श्रेष्ठां प्रतिष्ठां विकलत्वमङ्गेऽनङ्गेऽपि हीनत्वमनुप्रयाति ॥१३॥

सिंह राशि में स्थित चन्द्र की दशा में सदा धन का लाभ, उत्तम प्रतिष्ठा, शरीर में पीड़ा और काम हीनता होती है ॥ १३ ॥

कन्याराशिगतचन्द्रदशाफलम्—

कन्याश्रितेन्दोश्च दशाप्रवेशे विदेशयानं वनितोपलब्धिः।
कलाकलापामलबुद्धिवृद्धिः स्वल्पार्थसिद्धिश्च भवेन्नराणाम् ॥१४॥

कन्या राशि में स्थित चन्द्र की दशा में परदेश में यात्रा, स्त्री का लाभ, कलाओं में बुद्धि की वृद्धि और थोड़ी अर्थ की सिद्धि होती है॥

तुलाराशिगतचन्द्रदशाफलम्—

कलानिधेस्तौलिगतस्य पाके लोलं मनः स्याद्वनिताविषादः।
वादश्च कैश्चिद्धनहीनता च प्रोत्साहभङ्गः खलु नीचसङ्गः॥ १५॥

तुला राशि में स्थित चन्द्र की दशा में चञ्चलता, स्त्री के सम्बन्ध से कष्ट, दूसरों से विवाद, धन की हानि उत्साह का नाश, और नीचों की सङ्गति होती है॥ १५॥

वृश्चिकराशिगतचन्द्रदशाफलम्—

नीचोपयातस्य विधोर्दशायां स्याद्व्याधिवृद्धिर्बहुधा नराणाम्।
वियोजनं वै स्वजनेन नूनं मानाल्पतानल्पविकल्पचिन्ता॥ १६॥

वृश्चिक राशि में स्थित चन्द्र की दशा में रोगों की वृद्धि, बन्धुओं से वियोग, मान की हानि और अनेक तरह की चिन्ता होती है॥१६॥

नीचच्युतचन्द्रदशाफलम्—

विमुक्तनीचोडुपतेर्दशायां भवेद्धनाप्तिः क्रयविक्रयाभ्याम्।
धर्मेऽन्यथाधर्मविधानमल्पमल्पं च सख्यं जनमित्रवर्गैः॥ १७॥

वृश्चिक राशि में नीचांश (३) से अधिक अंश पर स्थित चन्द्रमा की दशा में क्रय-विक्रय से लाभ, धर्म करने में क्लेश, अधर्म में प्रेम और मित्रों से थोड़ी मैत्री होती है॥ १७॥

धनूराशिगतचन्द्रदशाफलम्—

चापोपयातस्य च शीतरश्मेर्दशाप्रवेशे गजवाजिवृद्धिः।
पूर्वार्जितार्थापहतिर्नितांतमन्यत्र सौभाग्यसुखानि नूनम्॥ १८॥

धनु राशि में स्थित चन्द्रमा की दशा में हाथी, घोड़े की वृद्धि, पूर्वार्जित धन की हानि और सुभगता से सुख होता है॥ १८॥

मकरराशिगतचन्द्रदशाफलम्—

हिमकरश्च सदा मकरस्थितः सुतसुखानि धनागमनानि च ।
वितनुते तनुतामनिलात्तनोरनुदिनं गमनागमनानि वै ॥ १९ ॥

मकर राशि में स्थित चन्द्र की दशा में पुत्र से सुख, धन का लाभ, वायु प्रकोप से शरीर में दुर्बलता, सदा गमन और आगमन होता है ॥

कुम्भराशिगतचन्द्रदशाफलम्—

क्रोडे च पीडा व्यसनानि नूनं स्युर्मानवानां तनुता शरीरे ।
ऋणोपलब्धिश्चलता नितांतं दशाप्रवेशे कलशस्थितेन्दोः ॥ २० ॥

कुम्भ राशि में स्थित चन्द्र की दशा में पेट में पीड़ा, व्यसन, शरीर में दुर्बलता, ऋण और अस्थिरता होती है ॥ २० ॥

कुम्भराशिगतवर्गोत्तमस्थचन्द्रदशाफलम्—

वर्गोत्तमस्थस्य घटे हिमांशोर्दशा प्रवेशे बलिभिर्विरोधः ।
कलत्रमित्रद्रविणात्मजाद्यैर्भवेद्वियोगो दशनास्यपीडा ॥ २१ ॥

कुम्भ राशि का हो कर कुम्भ राशि के नवांश में स्थित चन्द्र की दशा में बड़ों से विरोध; स्त्री, मित्र, धन, पुत्र आदि से वियोग और मुख दाँत में पीड़ा होती है ॥ २१ ॥

मीनराशिस्थितचन्द्रदशाफलम्—

मीनोपयातस्य च शीतभानोर्दशाप्रवेशे हि जलोद्भवार्थः ।
कलत्रपुत्रादिसुखानि नूनं शत्रुक्षयो बुद्धिविवृद्धिरुच्चैः ॥ २२ ॥

मीन राशि में स्थित चन्द्र की दशा में जल से धन का लाभ, स्त्री, पुत्र का सुख, शत्रुओं का नाश और बुद्धि की वृद्धि होती है ॥ २२ ॥

मीनराशिगतवर्गोत्तमस्थचन्द्रदशाफलम्—

वर्गोत्तमस्थस्य झषे हिमांशोर्दशाप्रवेशे महिषीगजाश्वान् ।
पुत्रादितोषं रिपुनाशमुच्चैर्लभेन्मनुष्यो हि यशो मनीषाम् ॥२३॥

मीन राशि में मीन के नवांश में स्थित चन्द्र की दशा में भैंस, घोड़ा, हाथी का लाभ, पुत्रों से सन्तोष, शत्रुओं का नाश, यश और बुद्धि की वृद्धि होती है ॥ २३ ॥

व्ययभावस्थितचन्द्रदशाफलम्—

दशाप्रवेशे व्ययभावगेन्दोः पापार्जितद्रव्यसमुद्गमः स्यात्।
क्षीणे रिपुस्थानगते हिमांशौ सर्व्यक्फलं प्राग्गादितं तथैव ॥२४॥

द्वादश भाव में स्थित चन्द्र की दशा में पाप से धन का लाभ, क्षीण चन्द्रमा षष्ठ भाव में स्थित हो तो उसी तरह पाप से धन का लाभ होता है॥ २४ ॥

नीचराशिगताष्टमभावस्थचन्द्रदशाफलम्—

नीचस्थितस्याष्टमभावगेन्दोर्दशाप्रवेशे हि गदोद्गमः स्यात्।
चेत्पापयुक्तो निधनं तदानीं जातिच्युतिं वा लभते मनुष्यः ॥२५॥

नीच राशि का चन्द्रमा अष्टम भाव में स्थित हो तो उस की दशा में रोग का आगम, पूर्व स्थिति में पाप युत चन्द्रमा हो तो मनुष्य मरण पाता या अपनी जाति से भ्रष्ट होता है ॥ २५ ॥

इति चन्द्रदशाफलाध्यायः।

भौमदशाफलाध्यायः

ताराग्रहाः स्वोच्चगृहादिसंस्था वक्रास्तमानानुगता यदि स्युः।
मिश्रं फलं ते निजपाककाले यच्छन्ति नूनं सुधिया विचिन्त्यम् ॥१॥

तारा ग्रह (मङ्गल आदि पाँच ग्रह) यदि उच्च राशि में स्थित हो कर अस्त या वक्री हो तो अपनी दशाकाल में मिश्रित फल देता है॥

स्यात्पाके क्षितिनन्दस्य च धनं शस्त्राच्च धात्रीपते-
र्भैषज्याच्च चतुष्पदादपि तथा नानाविधैरुद्यमैः।
पित्तास्रग्ज्वरपीडनं क्षितिपतेर्भीतिं च नीतिच्युतिं
मूर्च्छाद्यं च निजालये कलिरिति प्रोक्तं फलं सूरिभिः ॥२॥

शुभ स्थान में स्थित मङ्गल की दशा में शस्त्र, राजा, औषध, पशु और अनेक प्रकार के उद्यम से धन का लाभ होता है। अशुभ स्थान

में स्थित मङ्गल की दशा में पित्त, रुधिर, ज्वर इन से पीड़ा, राजा का भय, नीति से भ्रष्टता, मूर्च्छा और अपने घर में कलह होता है ॥२॥

सूलत्रिकोणोपगतस्य पाके क्षोणीसुतस्यात्मजदारसौख्यम् ।
अर्थोपलब्धिः खलु साहसेन रणाङ्गणे चारुयशो विशेषात् ॥ ३ ॥

मेष राशि में मूल त्रिकोण के अंश पर मङ्गल स्थित हो तो उस का दशा में पुत्र, स्त्री का सुख, धन का लाभ, रण में विजय और विशेष यश होता है ॥ ३ ॥

मेषराशिगतभौमदशाफलम्—

मेषोपयातस्य च भूसुतस्य स्युः पाककाले किल मङ्गलानि ।
स्यात्सन्ततिः साहसमग्निबाधा नानाविधारातिसमुद्भवः स्यात् ॥४॥

मेष राशि में स्थित मङ्गल की दशा में मङ्गल, सन्तान का लाभ, साहस, अग्नि का भय और शत्रुओं से पीड़ा होती है ॥ ४ ॥

वृषराशिस्थितभौमदशाफलम्—

वृषस्थितस्यावनिनन्दनस्य पाकप्रवेशे पुरुषः सहर्षः ।
अनल्पजल्पो गुरुदेवभक्तः परोपकारादरतासमेतः ॥ ५ ॥

वृष राशि में स्थित मङ्गल को दशा में आनन्द, अधिक बोलना, गुरु देव में भक्ति और परोपकार में आदर होता है ॥ ५ ॥

मिथुनराशिस्थितभौमदशाफलम्—

युग्मस्थितोर्वीतनयस्य पाके प्रवासशीलोऽनिलपित्तकोपः ।
बहुव्ययः स्यात्स्वजनैर्विरोधी नरः कलाज्ञो नितरां विधिज्ञः ॥ ६ ॥

मिथुन राशि में स्थित मङ्गल की दशा में परदेश गमन, वायु और पित्त का कोप, अधिक खर्च, अपने जनों से विरोध, कलाओं का ज्ञान और विशेष कर यज्ञ को जानने वाला होता है ॥ ६ ॥

कर्कराशिस्थितभौमदशाफलम्—

कर्कस्थभौमस्य भवेद्दशायामुद्यानवह्निप्रभवार्थयुक्तः ।
नरो हि दारासुतदूरवर्ती क्लेशोपलब्धेर्बलहीनमूर्तिः ॥ ७ ॥

कर्क राशि में स्थित मङ्गल की दशा में बगीचा और अग्नि के द्वारा उत्पन्न धन का लाभ, स्त्री पुत्र से दूर रहना, क्लेश से शरीर क्षीण होता है॥

नीचांशच्युतभौमदशाफलम्—

सन्त्यक्तनीचांशकुजस्य पाके ख्यातः पुमान्सर्वगुणोपपन्नः ।
चतुष्पदाढ्यो बलवानकस्मात्प्रजायते गुह्यरुजाभिभूतः ॥ ८ ॥

कर्क राशि में नीच के अंश से अधिक अंशादि पर मङ्गल रहे तो उस की दशा में प्रसिद्धि, सब गुणों से युक्त, पशुओं की प्राप्ति, बल का लाभ और गुप्त रोग होता है ॥ ८ ॥

सिंहराशिगतभौमदशाफलम्—

सिंहाश्रितक्ष्मातनयस्य पाके नूनं भवेन्नायकता बहूनाम् ।
कान्तासुताद्यैश्च वियोगिता च बाधा तथा हेतिहुताशजाता ॥ ९ ॥

सिंह राशि में स्थित कुज की दशा में पुरुष बहुतों का अधिप, स्त्री, पुत्र आदि से वियोग पाने वाला, शस्त्र और अग्नि से पीड़ा पाने वाला होता है ॥ ९ ॥

कन्याराशिगतभौमदशाफलम्—

कन्यानुयाताऽवनिनन्दनस्य पाके सदाचारपरो नरः स्यात् ।
यज्ञक्रियायामपि सादरश्च दारात्मजोर्वीधनधान्यसौख्यम् ॥ १० ॥

कन्या राशिस्थ मङ्गल की दशा में पुरुष सदाचारी यज्ञ आदि धर्म कार्य में आदर युक्त और स्त्री, पुत्र, भूमि, धन, धान्य आदि से सुखी होता है ॥ १० ॥

तुलाराशिस्थितभौमदशाफलम्—

तुलागतेलासुतपाककाले स्याद्द्रव्यभार्याविनियुतो हि मर्त्यः ।
चतुष्पदाभावकलिप्रसङ्गैर्हतोत्सवो वै विकलाङ्गयष्टिः ॥ ११

तुला राशिस्थ मङ्गल की दशा में पुरुष द्रव्य, स्त्री से वियोग, पशुओं की हानि, कलह से उत्साह का नाश और दुर्बलता होता है ११

वृश्चिकराशिस्थितभौमदशाफलम्—

पुमान्भवेद्वृश्चिकराशिगस्य भौमस्य पाके कृषिकर्मकर्ता ॥

स्वसङ्ग्रहे जातमनःप्रवृत्तिर्द्वेषी बहूनामतिजल्पकश्च ॥ १२ ॥

वृश्चिक राशिस्थ मङ्गल की दशा में पुरुष खेती करने वाला, धन के संग्रह में मन लगाने वाला बहुतों का द्वेषी और बहुत बोलने वाला होता है ॥ १२ ॥

धनराशिस्थितभौमदशाफलम्—

धनुर्द्धरस्थस्य धरासुतस्य पाकप्रवेशे द्विजदेवभक्तः ।
नरो नरेन्द्राप्तमनोरथः स्यात्कलिप्रसङ्गोपहतोत्सवश्च ॥ १३ ॥

धनु राशिस्थ मङ्गल की दशा में देवता, ब्राह्मणों का भक्त, राजा से मनोरथ पाने वाला और कलह से उत्सव को नाश करने वाला होता है ॥ १३ ॥

मकरराशिस्थितभौमदशाफलम्—

वक्रस्य नक्रोपगतस्य पाके राज्योपलब्धिः स्वकुलानुमानात् ।
युद्धे विवादे विजयो नितान्तं सद्रत्नचामीकरवाजिसौख्यम् ॥ १४ ॥

मकर राशिस्थ मङ्गल की दशा में पुरुष अपने वंश के अनुसार राज्य लाभ करने वाला, युद्ध और विवाद में विजय पाने वाला, रत्न, सुवर्ण, घोड़ा आदि से सुखी होता है ॥ १४ ॥

उच्चांशमुक्तस्य महीसुतस्य पाके प्रयत्नात्खलु कार्यसिद्धिः ।
शस्त्राद्भवेच्छ्वापदतोऽपि भीतिः संतोषजल्पत्वमहाप्रयासाः ॥ १५ ॥

मकर राशि में उच्च के अंश (२८) से आगे मङ्गल हो तो उस की दशा में प्रयत्न से कार्य की सिद्धि, शस्त्र-व्याघ्र आदि से भय, सन्तोष, विवाद और प्रयास करने का मौका होता है ॥ १५ ॥

कुम्भराशिस्थितभौमदशाफलम्—

आचारहीनश्च सुतादिचिंता बहुव्ययोद्वेगसमाकुलत्वम् ।
कुंभोपयातस्य च मङ्गलस्य स्यात्पाककाले फलमेतदेव ॥ १६ ॥

कुम्भ राशिस्थ मङ्गल की दशा में आचार में हानि, पुत्र आदि की चिन्ता, अधिक खर्च, उद्वेग और व्याकुलता होती है ॥ १६ ॥

मीनराशिस्थितभौमदशाफलम्—

मीनोपयातावनिनन्दनस्य दशाप्रवेशे हि सुतादिचिन्ता ।
व्ययामयत्वं च क्रमोपलब्धिर्विचर्चिकादद्रुविदेशवासाः ॥ १७ ॥

मीन राशिस्थ मङ्गल की दशा में पुत्र आदि की चिन्ता, व्यय, रोग, धन का लाभ, खुजली, दाद और विदेश वास होता है ॥ १७ ॥

वर्गोत्तमभौमदशाफलम्—

संग्रामसंप्राप्तजयाधिशाली बलान्वितोत्यंतगुणाभिरामः ।
वर्गोत्तमांशस्थितभूसुतस्य पाके च नानाविधवस्तुलब्धिः ॥ १८ ॥

वर्गोत्तम नवांश स्थित मङ्गल की दशा में संग्राम में विजय, बल, गुण से सुन्दरता और अनेक वस्तुओं का लाभ होता है ॥ १८ ॥

नीचांशस्थितभौमदशाफलम्—

नीचांशसंस्थस्य कुजस्य पाके वृथाटनत्वं मनसो विषादः ।
फलोन्मुखं कार्यमतीव दूरे नीचत्वगुचैर्विगताधिकत्वम् ॥ १९ ॥

नीच राशि के नवांश में स्थित मङ्गल की दशा में व्यर्थ भ्रमण, मानसिक खेद, कार्यों में बाधा, नीचों की सङ्गति और प्रतिष्ठा की हानि होती है ॥ १९ ॥

मूलत्रिकोणराशिस्थितभौमदशाफलम्—

मूलत्रिकोणोच्चगृहस्थितस्य कुजस्य कर्माधिगतस्य पाके ।
राज्योपलब्धिर्विजयो रिपुभ्यः सद्वाहनालङ्करणानि नूनम् ॥ २० ॥

यदि अपने मूल त्रिकोण का मङ्गल दशम भाव में बैठा हो तो उस की दशा में राज्य की प्राप्ति, शत्रुओं से विजय और वाहन भूषण आदि का लाभ होता है ॥ २० ॥

बुधदशाफलाध्यायः

तत्रादौ बुधदशाफलम्—

विद्याविवेकप्रभुतासमेतः कृषिक्रियायज्ञविधानचित्तः ।
महोद्यमावाप्तधनश्च नूनं भवेन्मनुष्यो शशिजस्य पाके ॥ १ ॥

शिल्पादिकर्मण्यतिकौशलं स्यान्नित्योत्सवोत्कर्षविशेष एव ।
सद्वाद्यगीताभिरुचिर्नवीनसद्भांडभूषागृहनिर्मितत्वम् ॥ २ ॥
कुतूहलैर्भाषणहास्यहर्षैः कालक्रमत्वं विनयोपलब्धिः ।
आचार्यविद्वद्गुरुसम्मतत्वं कलत्रपुत्रादिसुखोपलब्धिः ॥ ३ ॥
पीडापि गाढा कफवातपित्तैरसद्व्ययोर्थस्य च सौम्यपाके ।
बलाबलत्वं प्रविचार्य सर्वं शुभाशुभत्वं सुधिया विचिन्त्यम् ॥४॥

शुभ बुध की दशा में मनुष्य विद्या, विवेक, प्रभुत्व इन सबों से युक्त, खेती और यज्ञ करने में चित्त लगाने वाला, बड़े २ उद्यमों से धन की प्राप्ति, शिल्प विद्या में कुशल, नित्य उत्सव से उत्कर्ष विशेष पाने वाला, बाजा और गीत में रुचि रखने वाला, नवीन सुन्दर वर्तन, आभूषण, मकान बनवाने वाला, कुतुहल, भाषण, हास्य, आनन्द से समय यापन करने वाला, नम्रता की प्राप्ति, आचार्य, पण्डित, गुरु जनों में स्नेह, स्त्री, पुत्र आदि के द्वारा सुख की प्राप्ति करने वाला होता है ॥

पाप युक्त बुध की दशा में कफ वात, पित्त इन से पीड़ा पाने वाला, धन का व्यय करने वाला होता है। बलाबल और शुभाशुभ का विचार कर तारतम्य से फल कहना चाहिये ॥ १-४ ॥

मेषराशिस्थितबुधदशाफलम्—

मेषस्थशीतद्युतिजातपाके नैकत्र संस्थानकरो नरःस्यात् ।
स्तेयानृतद्यूतशठत्वयुक्तो विमुक्तसौजन्यविधिस्तु निःस्वः ॥ ५ ॥

मेष राशिस्थ बुध की दशा में पुरुष अनेक जगह ठहरने वाला, चोरी करने वाला, मिथ्या भाषण करने वाला, जुआरी, शठ, बन्धु रहित और धन हीन होता है ॥ ५ ॥

वृषराशिस्थितबुधदशाफलम्—

वृषाधिरूढस्य जडांशुसूनोर्दशाप्रवेशे व्ययकृन्मनुष्यः ।
मातुस्त्वनिष्टश्च कलत्रपुत्रमित्रादिचिन्ता गलरुग्भयार्तः ॥ ६ ॥

वृष राशिस्थ बुध की दशा में मनुष्य खर्च करने वाला, माता का

अनिष्ट, स्त्री पुत्र मित्र आदि की चिन्ता करने वाला, गले का रोग और भय युक्त होता है ॥ ६ ॥

मिथुनराशिस्थितबुधदशाफलम्—

द्वंद्वाधिसंस्थस्य बुधस्य पाके त्वनेकवार्ता बहुजल्पकर्ता ।
दारात्मजज्ञातिसुखोपपन्नो नूनं जनन्याश्च सुखेन हीनः ॥ ७ ॥

मिथुन राशिस्थ बुध की दशा में मनुष्य अधिक बोलने वाला, विवादी, स्त्री, पुत्र, बन्धुओं के सुख से युक्त और मातृसुख से हीन होता है ॥ ७ ॥

कर्कराशिस्थितबुधदशाफलम्—

कर्काश्रितस्येंदुसुतस्य पाके विदेशवासाल्पसुखो विरोधी ।
मित्रैश्च सत्काव्यकलार्जितार्थोऽत्यर्थं मनुष्यो व्यवसाययुक्तः ॥ ८ ॥

कर्क राशि में स्थित बुध की दशा में मनुष्य परदेशी, थोड़ा सुखी, मित्रों का विरोधी, सुन्दर काव्य और कलाओं के द्वारा धन उपार्जन करने वाला तथा व्यवसायी होता है ॥ ८ ॥

सिंहराशिस्थितबुधदशाफलम्—

सिंहस्थितस्येन्दुसुतस्य पाके लोलं भवेद्धनमेव धैर्यम् ।
स्वमित्रदारात्मजसौख्यहानिः स्यान्मानवानां मतिहीनता च ॥ ९ ॥

सिंह राशिस्थ बुध की दशा में अस्थिर धन, धैर्य, मि[illegible] स्त्री, पुत्र से सुख की हानि और बुद्धि की हानि होती है ॥ ९ ॥

परमोच्चराशिस्थितबुधदशाफलम्—

उच्चाश्रितस्येन्दुसुतस्य पाके स्यान्मानवो वै बहुवैभवाढ्यः ।
लेखक्रियाकाव्यकलानुरक्तो जितारिपक्षश्च सुनीतियुक्तः ॥ १० ॥

उच्च राशिगत बुध की दशा में मनुष्य अति धनी, लेख और काव्य में अनुरक्त, शत्रुओं का नाश करने वाला और न्याय से युक्त होता है ॥ १० ॥

मूलत्रिकोणांशस्थितबुधदशाफलम्—

मूलत्रिकोणोपगतस्य पाके विवेकविद्यादिगुणैः प्रपूर्णः ।

विदेशयानानुरतो नरः स्यात्पराक्रमादाप्तधनो विधिज्ञः ॥ ११ ॥

अपने मूल त्रिकोण राशि गत बुध की दशा में मनुष्य विवेक विद्या आदि गुणों से युक्त, परदेश गमन में रत, पराक्रम से धन की प्राप्ति और कार्य को जानने वाला होता है ॥ ११ ॥

कन्याराशिस्थबुधदशाफलम्—

तुङ्गत्रिकोणाक्रमणप्रकर्तुर्बुधस्य पाके पशुसौख्यहानिः ।
स्वबन्धुवैरं विकलत्वमङ्गे कलिप्रसङ्गेऽतिविहीनता स्यात् ॥ १२ ॥

कन्या राशिस्थ बुध की दशा में पशु सुख की हानि, अपने बन्धुओं से वैर, शरीर में पीड़ा और कलह से अनादर को प्राप्त करता है ॥ १२ ॥

तुलाराशिस्थितबुधदशाफलम्—

तुलागतस्येन्दुसुतस्य पाके स्यात्क्षीणता दृङ्मतिवाग्विलासे ।
शिल्पादिकर्मण्यतिनैपुणं च वाणिज्यतोऽर्थः पशुपीडनं च ॥ १३ ॥

तुला राशिस्थ बुध की दशा में दृष्टि, बुद्धि, वाणी, विलास इन में दुर्बलता, शिल्प आदि कार्य में निपुणता, वाणिज्य से धन का लाभ और पशुओं में पीड़ा होती है ॥ १३ ॥

वृश्चिकराशिस्थितबुधदशाफलम्—

पाके भवेद्वृश्चिकसंस्थितस्य मृगांकसूनोर्मनुजोऽल्पतुष्टः ।
आचारकर्मक्रमणानुरक्तो व्ययेन युक्तः स्वजनैर्वियुक्तः ॥ १४ ॥

वृश्चिक राशिस्थ बुध की दशा में मनुष्य थोड़ा सन्तुष्ट, आचार में तत्पर, व्यय से युक्त और अपने जनों से वियुक्त होता है ॥ १४ ॥

धनूराशिस्थितबुधदशाफलम्—

शरासनाध्यासनतां गतस्य बुधस्य पाके बहुनायकः स्यात् ।
मंत्री च नामद्वयतासमेतः कृषिक्रियावित्तयुतो मनुष्यः ॥ १५ ॥

धनु राशिस्थ बुध की दशा में मनुष्य बहुतों का मालिक, मन्त्री, दो नामों से युक्त और खेती से धनी होता है ॥ १५ ॥

मकरराशिस्थितबुधदशाफलम्—

मृगांकसूनोर्हि मृगस्थितस्य पाके भवेद्भूरि ऋणं नराणाम् ।

बह्वाटनं वै कपटत्वमुच्चैर्नीचैश्च सख्यं मतिहीनता च ॥ १६ ॥

मकर राशि में स्थित बुध की दशा में मनुष्य कर्जदार, भ्रमण करने वाला, अधिक कपटी, नीचों के साथ मित्रता करने वाला और बुद्धि हीन होता है ॥ १६ ॥

कुम्भराशिस्थितबुधदशाफलम्—

सोमस्य कुम्भोपयुतस्य पाके विहीनतेजा मनुजोतिनिःस्वः ।
मित्रादिपीडापरिपीडितात्मा विदेशयानव्यसनानुरक्तः ॥ १७ ॥

कुम्भ राशि गत बुध की दशा में मनुष्य तेज हीन, निर्धन, मित्र सम्बन्धी कष्ट से युक्त, अति पीड़ित आत्मा वाला और परदेश गमन में निरत होता है ॥ १७ ॥

मीनराशिस्थितबुधदशाफलम्—

नीचांशसंस्थस्य बुधस्य पाके विवेकसत्योपहतिर्हि मर्त्यः ।
स्थानान्तरस्थो व्यवसायशीलः स्यादल्पलाभः कृशकायकान्तिः ॥१८॥

मीन के परम नीचांश में स्थित बुध की दशा में मनुष्य विवेक रहित, सत्यहीन, परदेशी, व्यवसायी, अल्प लाभ करने वाला और दुर्बल शरीर वाला होता है ॥ १८ ॥

गुरुदशाफलाध्यायः

तत्रादौ गुरुदशाफलम्—

दशाप्रवेशे त्रिदशार्चितस्य भूपप्रधानाप्तमनोरथः स्यात् ।
सत्कर्मधर्मागमशास्त्रवेत्ता भवेन्मनुष्यः सततं विनीतः ॥ १ ॥
यज्ञादिकर्मण्यतिसादरत्वं भवेत्प्रवृत्तिर्द्विजदेवभक्तौ ।
अत्यर्थमर्थो विभुताविशेषः पुत्रादितोषः पुरुषस्य नूनम् ॥ २ ॥
भूम्यम्बराश्वादिसुखोपलब्धिर्बलोपपन्नः कुलधुर्यता च ।
गतागतागामिविचारणोच्चैः सत्सङ्गतिश्चारुमतिर्धृतिश्च ॥ ३ ॥
दाहादिपीडापि गले कदाचिद्विरुद्धभावस्थितितो विचिन्त्यम् ।
सामान्यमेतत्फलमुक्तमार्यैर्वक्ष्येऽधुना यत्प्रतिराशियुक्तम् ॥ ४ ॥

बृहस्पति की दशा में पुरुष राजा का मन्त्री, मनोरथ का लाभ,

सत्कर्म, धर्म, आगम शास्त्र इन का ज्ञाता, सदा नम्र, यज्ञ आदि कर्म में आदर वाला, ब्राह्मण देवताओं का भक्त, अति धनी, प्रभुता वाला, पुत्र आदि से सन्तोष पाने वाला, भूमि वस्त्र घोड़ा आदि से सुख कर ने वाला, बलवान् , कुल में प्रसिद्ध, भूत भविष्य को जानने वाला, सत्सङ्ग करने वाला, बुद्धिमान् और धीर होता है ॥ अशुभ बृहस्पति की दशा में गले आदि स्थान में कभी कष्ट का भी विचार करना चाहिये। आचार्यों ने सामान्य रूप से यह फल कहा है। अब प्रत्येक राशि में स्थित गुरु दशा फल को कहते हैं ॥ १-४ ॥

मेषराशिगतगुरुदशाफलम्—

दशाप्रवेशे त्रिदशार्चितस्य मेषोपयातस्य भवेन्नराणाम् ॥
धनं धनेशाद्बहुनायकत्वं कलत्रपुत्रादिसुखोपलब्धिः ॥ ५ ॥

मेष राशि में गत बृहस्पति की दशा में मनुष्य राजा से धन लाभ करने वाला, बहुतों का नायक और स्त्री पुत्र आदि से सुख की प्राप्ति करने वाला होता है ॥ ५ ॥

वृषराशिगतगुरुदशाफलम्—

वृषोपयातस्य च गोष्पतेः स्याद्दशाप्रवेशे पुरुषोऽतिदुःखी ।
विदेशवासी बहुसाहसश्च विचाल्पता वित्तगतोत्सवश्च ॥ ६ ॥

वृष राशि गत गुरु की दशा में मनुष्य दुखी, परदेशी, बहुत साहस करने वाला, थोड़ा धनी, और उत्सव हीन होता है ॥ ६ ॥

मिथुनराशिगतगुरुदशाफलम्—

युग्मोपयातस्य बृहस्पतेश्च दशाप्रवेशे पुरुषः शुचिः स्यात् ।
मात्रा च गोत्रप्रभवैर्विरोधी कलत्रवादातिविषादतप्तः ॥ ७ ॥

मिथुन राशि गत बृहस्पति की दशा में पुरुष पवित्र, माता और बन्धुओं का विरोधी तथा स्त्री से विवाद करने से विषाद युक्त होता है।

परमोच्चगतगुरुदशाफलम्—

वाचस्पतेरुच्चसमाश्रितस्य स्यात्पाककाले कुलराज्यलब्धिः ।
विशिष्टनाम्ना प्रथितत्वमुच्चैरुच्चैश्च सख्यं बहुवैभवं च ॥ ८ ॥

कर्क राशि (उच्च) गत गुरु की दशा में मनुष्य अपने कुल के राज्य की लब्धि, उच्च पदवी पाकर प्रसिद्ध, श्रेष्ठों के साथ मित्रता करने वाला और बहुत धनी होता है ॥ ८ ॥

उच्चच्युतगुरुदशाफलम्—

वाचास्पतेरुच्चसमुत्थितस्य पाकप्रवेशे पितृमातृदुःखी ।
पूर्वार्जितद्रव्यपरिक्षयेण तप्तश्च नानाव्यसनाभिभूतः ॥ ९ ॥

कर्क राशि में उच्चांश से अधिक अंश पर स्थित बृहस्पति की दशा में मनुष्य पिता माता के द्वारा दुखी, पूर्वोपार्जित धन के नाश से तप्त और अनेक व्यसनों से युक्त होता है ॥ ९ ॥

सिंहराशिगतगुरुदशाफलम्—

सिंहस्थितस्यामरपूजितस्य पाकप्रवेशे धनवान्वदान्यः ।
नृपाप्तमानो ननु मानवः स्याज्जायातनूजानुजजातहर्षः ॥ १० ॥

सिंह राशि गत गुरु की दशा में पुरुष धनी, दाता, राजा से आदर पाने वाला, स्त्री, पुत्र और भाई से प्रसन्नता को पाने वाला होता है ॥

कन्याराशिगतगुरुदशाफलम्—

कन्याधिरूढस्य गुरोर्दशायां भवेन्मनुष्यो नृपमानलब्धः ।
कान्तासुतावाप्तसुखः कदाचिच्छूद्रादिनीचैः कलहप्रसक्तः ॥ ११ ॥

कन्या राशि गत गुरु की दशा में मनुष्य राजा से आदर पाने वाला, स्त्री पुत्र से सुखी, कदाचित् नीच जनों के साथ कलह करने वाला होता है ॥ ११ ॥

तुलाराशिगतगुरुदशाफलम्—

तुलास्थदम्भोलिभिदिज्यपाके विवेकहीनः प्रमिताम्नभोक्ता ।
कलत्रपुत्रैः कृतशत्रुभावश्चोत्साहहीनो ननु मानवः स्यात् ॥ १२ ॥

तुला राशि गत गुरु की दशा में मनुष्य विचार हीन, थोड़ा भोजन करने वाला, स्त्री पुत्रों से झगड़ा करने वाला और उत्साह हीन होता है ॥ १२ ॥

वृश्चिकराशिगतगुरुदशाफलम्—

बृहस्पतेर्वृश्चिकराशिगस्य दशाप्रवेशे मतिमान्समर्थः ।

प्राज्ञः सुतोत्साहयुतो विनीतोऽनृणी भवेन्ना नियमेन हीनः ॥ १३ ॥

वृश्चिक राशि गत गुरु की दशा में मनुष्य बुद्धिमान्, समर्थ, पण्डित, पुत्र और उत्साह से युक्त, नम्र, ऋण तथा नियम से रहित होता है ॥ १३ ॥

मूलत्रिकोणांशराशिगतगुरुदशाफलम्—

मूलत्रिकोणांशगतस्य पाके गुरोर्दशायां मतिमान्मनुष्यः ।

स्यान्माण्डलीको यदि वा प्रधानः पित्रान्वितः स्त्रीवचनाऽनुषक्तः॥१४॥

अपने मूल त्रिकोण गत गुरु की दशा में बुद्धिमान्, मण्डलाधीश या मन्त्री, पिता की आज्ञा से युक्त और स्त्री के वचन में आसक्त होता है॥

स्वक्षेत्रांशगतगुरुदशाफलम्—

नखांशकेभ्यः परतश्च चापे संस्थस्य देवेन्द्रगुरोर्दशायाम् ।

कृषिक्रियायज्ञचतुष्पदेषु भवेन्मनुष्यस्य मनःप्रवृत्तिः ॥ १५ ॥

मूल त्रिकोणांश से रहित स्वक्षेत्रांश गत गुरु की दशा में खेती, यज्ञ, पशु इन में मनुष्य की प्रवृत्ति होती है ॥ १५ ॥

नीचांशगतगुरुदशाफलम्—

नीचांशसंस्थस्य मृगान्वितस्य गुरोर्दशायां परकर्मकर्ता ।

मर्त्यो भवेज्जाठरगुह्यरोगी सार्द्धं वियोगी धनबन्धुभिश्च ॥१६॥

मकर राशि के नीचांश गत गुरु की दशा में मनुष्य दूसरे का काम रने वाला, पेट में गुप्त रोग से युक्त, धन और बन्धुओं से युक्त होता है॥

नीचांशच्युतगुरुदशाफलम्—

वाचस्पतेर्नीचलवोज्झितस्य पाके निषादात्कृषितो धनाप्तिः ।

भूमीरुहेभ्यो धनवञ्चनाद्वा क्लेशोपलब्धिर्ननु मानवस्य ॥ १७ ॥

नीचांश से रहित गुरु की दशा में मनुष्य केवट के कार्य, खेती, या वृक्ष से धन लाभ करने वाला और ठगों से क्लेश पाने वाला होता है॥

कुम्भराशिगतगुरुदशाफलम्—

पाकप्रवेशे कलशस्थितस्य वाचामधीशस्य नरः कलाज्ञः ।
विद्याप्रसिद्ध्यर्थमहामतिः स्यात्कान्ताविलासानुरतो नितान्तम् ॥१८॥

कुम्भ राशि गत गुरुकी दशा में मनुष्य कलाओं को जानने वाला, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनी, बुद्धिमान् और स्त्री के विलास में आसक्त होता है ॥ १८ ॥

मीनराशिगतगुरुदशाफलम्—

झषोपयातस्य च गीष्पतेः स्याद्दशाप्रवेशे पुरुषो मनीषी ।
सन्मानसूनुप्रमदादिसम्पद्राजान्वये यातमहासुखश्च ॥ १९ ॥

मीन राशि गत गुरु की दशा में मनुष्य विचार शील, पुत्र स्त्री आदि सम्पत्ति से युक्त और राजा के कुल में रह कर सुख लाभ करने वाला होता है ॥ १९ ॥

शुक्रदशाफलाध्यायः

तत्रादौ भृगुदशाफलम्—

दैत्यामात्यः स्वीयपाकप्रवेशे योषाभूषारत्नवस्त्रोपलब्धिम् ।
नानामानं मानवानां प्रकुर्यात्कन्दर्पस्याभ्युद्गमात्सौख्यमुच्चैः ॥१॥
गीते नृत्येऽत्यन्तसंजातहर्षो विद्याभ्यासप्रीतिकृच्चारुशीलः ।
बुद्ध्याधिक्यश्चान्नदानप्रवृत्तिर्दक्षो मर्त्यो विक्रये वा क्रये वा ॥२॥
गोवाहनेभ्यो ननु नन्दनेभ्यः सौख्यं भवेन्नंदननन्दनेभ्यः ।
पूर्वार्जितस्य द्रविणस्य लब्धिः कीर्तिः कुले स्याच्चलनात्स्थलाच्च ॥३॥
कफानिलाभ्यां किल निर्बलं स्यात्कलेवरं नीचतरैश्च वैरम् ।
विप्रादिचिन्तापरितप्तमेव चित्तं च सख्यं कुजनैः कदाचित् ॥४॥

शुक्र की दशा में मनुष्य स्त्री, भूषण, रत्न, वस्त्र इन का लाभ करने वाला, अनेक तरह के मान से युक्त, कामी, सुखी, गीत नृत्य से प्रसन्न होने वाला, विद्याभ्यास से प्रसन्न करने वाला, सुन्दर स्वभाव वाला, बुद्धिमान्, अन्न दान करने वाला, क्रय विक्रय में चतुर, गौ, वाहन, पुत्र

पौत्र इन से सुखी, पूर्वार्जित धन का लाभ करने वाला, कुल के लोगों से कलह करने वाला, कफ वायु के कोप से निर्बल, नीचों के साथ शत्रुता रखने वाला, ब्राह्मण आदि की चिन्ता से चिन्तित और कभी दुर्जनों के साथ मैत्री होती है ॥ १-४ ॥

सामान्यतः प्रोक्तमिदं सितस्य दशाफलं पूर्वमुनिप्रणीतम् ।
अथोच्यतेऽत्र प्रतिराशिजातं फलं प्रयोज्यं बलतारतम्यात् ॥ ५ ॥

इस प्रकार सामान्य रूप से मुनियों ने शुक्र का दशा फल कहा है। अब प्रत्येक राशि गत शुक्र दशा फल कहता हूं। जिस को बलाबल देख तारतम्य से विचारना चाहिये ॥ ५ ॥

मेषराशिगतभृगुदशाफलम्—

शुक्रस्य पाके क्रियसंस्थितस्य स्त्रीवित्तसौख्यापचयो नराणाम् ।
सदाटनत्वं व्यसनानि नूनमुद्वेगता चञ्चलचित्तवृत्तिः ॥ ६ ॥

मेष राशि गत शुक्र की दशा में मनुष्य स्त्री, धन और सुख की हानि पाने वाला, सदा भ्रमण करने वाला, व्यसनी, उद्वेग से युक्त और चञ्चल होता है ॥ ६ ॥

वृषराशिस्थितभृगुदशाफलम्—

वृषोपयातोशनसो दशायां कृषिक्रियासत्पशुसौख्यवृद्धिः ।
शास्त्रे मतिः स्यात्सुतरां विचित्रा दातृत्वकन्याजननप्रसादाः ॥ ७ ॥

वृष राशि गत शुक्र की दशा में मनुष्य खेती और पशुओं के द्वारा सुखी, शास्त्र जानने की बुद्धि, दानी, कन्या का उत्पन्न करने वाला तथा प्रसन्न होता है ॥ ७ ॥

मिथुनराशिस्थितभृगुदशाफलम्—

युग्मगामिभृगुजस्य दशायां मानुषो भवति काव्यकलाज्ञः ।
हास्यविस्मयकथारुचिरुच्चैरन्यदेशगमनोत्सुकचित्तः ॥ ८ ॥

मिथुन राशि गत शुक्र की दशा में मनुष्य काव्य और कलाओं का ज्ञाता, हास्य, विस्मय, कथा इन में रुचि रखने वाला तथा परदेश जाने की इच्छा रखने वाला होता है ॥ ८ ॥

कर्कराशिगतभृगुदशाफलम्—

कर्कोपयातस्य सितस्य पाके भवेन्मनुष्यो निजकार्यदक्षः।
भार्यान्तरावाप्तिसमुत्सुकोऽपि नानाप्रकारोद्यमकृत्कृतज्ञः ॥ ९ ॥

कर्क राशि गत शुक्र की दशा में मनुष्य अपने कार्य में कुशल, दूसरी स्त्री करने वाला, अनेक उद्योग करने वाला और कृतज्ञ होता है॥

सिंहराशिस्थभृगुदशाफलम्—

दैत्येन्द्रवन्द्यस्य मृगेन्द्रगस्य पाकप्रवेशे वनिताप्तवित्तः।
नूनं भवेदन्यधनोपजीवी पश्वादिपुत्राल्पसुखो मनुष्यः ॥ १० ॥

सिंह राशि गत शुक्र की दशा में मनुष्य स्त्री और धन की प्राप्ति करने वाला, दूसरे के धन से निर्वाह करने वाला, पशु और पुत्र से थोड़ा सुख पाने वाला होता है ॥ १० ॥

कन्याराशिगतभृगुदशाफलम्—

पाके भवेद्दानववन्दितस्य कन्यास्थितस्यापचयः सुखानाम्।
वित्ताल्पता भग्नमनोरथत्वं लोलं मनः स्वस्थलतश्चलत्वम् ॥ ११ ॥

कन्या राशि गत शुक्र की दशा में मनुष्य थोड़ा सुख पाने वाला, थोड़ा धन वाला, नष्ट मनः कामना वाला, चञ्चल और अपने स्थान से गमन करने वाला होता है ॥ ११ ॥

तुलाराशिगतभृगुदशाफलम्—

तुलाधरस्थाऽसुरपूजितस्य दशाप्रवेशे कृषिकृन्मनुष्यः।
विशिष्टमानो धनवाहनाढ्यः स्वजातिसम्प्राप्तमहासुखः स्यात् ॥ १२ ॥

तुला राशि गत शुक्र की दशा में मनुष्य खेती करने वाला, बड़े मानी, धन वाहनों से युक्त और बन्धुओं से सुख पाने वाला होता है ॥

वृश्चिकराशिगतभृगुदशाफलम्—

भवेद्भृगोर्वृश्चिकराशिगस्य दशाप्रवेशे पुरुषः प्रवासी।
परस्य कार्ये निरतः प्रतापी ऋणार्थयुक्तः कलहानुरक्तः ॥ १३ ॥

वृश्चिक राशि गत शुक्र की दशा में मनुष्य परदेशी दूसरों के कार्य करने वाला, प्रतापी, ऋणी और झगड़ालू होता है ॥ १३ ॥

धनूराशिगतभृगुदशाफलम्—

चापोपयातासुरपूजितस्य पाके प्रकामं नृपतेः प्रतिष्ठा ।
कलाकलापाकलनं किल स्यात्क्लेशाधिकत्वं द्विषतां प्रवृद्धिः ॥१४॥

धनु राशि गत शुक्र की दशा में मनुष्य राजा से अधिक प्रतिष्ठा पाने वाला, कलाओं का ज्ञाता, अधिक क्लेश से युक्त और शत्रुओं को वृद्धि वाला होती है ॥ १४ ॥

मकरराशिगतभृगुदशाफलम्—

नक्रस्थशुक्रस्य दशाप्रवेशे स्यात्पूरुषः शत्रुविनाशदक्षः ।
श्लेष्मानिलाभ्यां विबलः कदाचित्कुटुम्बचिन्तासहितः सहिष्णुः ॥

मकर राशि गत शुक्र की दशा में मनुष्य शत्रुओं को नाश करने में कुशल, कफ और वायु से दुर्बल, कभी बन्धुओं की चिन्ता से युक्त और सहिष्णु होता है ॥ १५ ॥

कुम्भराशिगतभृगुदशाफलम्—

उशनसः कलशस्थितिकारिणो यदि दशा पुरुषो व्यसनाकुलः ।
गदयुतो वियुतः शुभकर्मणा व्रतहतोप्यनृतोक्तिरतो भवेत् ॥ १६ ॥

कुम्भ राशि गत शुक्र की दशा में मनुष्य व्यसन के अनुकूल रहने वाला, रोगी, शुभ कार्य से रहित, व्रत से हीन और मिथ्या बोलने में निरत होता है ॥ १६ ॥

मीनराशिगतभृगुदशाफलम्—

दशाप्रवेशे भृगुनन्दनस्य मीनाधिसंस्थस्य नृपप्रधानः ।
स्यान्मानवोऽत्यन्तधनप्रसन्नः कृषिक्रियाभोगभरोपपन्नः ॥ १७ ॥

मीन राशि गत शुक्र की दशा में मनुष्य राजा का मन्त्री, अधिक धन से प्रसन्न, खेती करने वाला और भोगों से युक्त होता है ॥१७॥

उच्चांशगतभृगुदशाफलम्—

स्वोच्चांशभाजो भृगुजस्य पाके विलग्नकर्मोपगतस्य मर्त्यः ।
क्षोणीहिरण्योत्तमवारणाद्यैर्युतो भवेद्वै निजवंशनाथः ॥ १८ ॥

उच्चांश गत शुक्र की दशा में मनुष्य भूमि, सोना, हाथी, घोड़ा आदि से युक्त और अपने कुल में प्रधान होता है ॥ १८ ॥

अथ शनिमहादशाफलम्—

भवेद्दशायां हि शनैश्चरस्य नरः पुरग्रामकृताधिकारः।
धीमाँश्च दानाधिकृतातिशाली नानाकलाकौशलसंयुतश्च ॥ १ ॥
तुरङ्गहेमाम्बरकुञ्जराद्यैः सम्पन्नतां याति विनीततां च।
देवद्विजार्चाभिरतो विशेषात्पुरातनस्थानलब्धसौख्यः ॥ २ ॥
देवद्विजेन्द्रालयकृत्सुशीलो विशालकीर्तिः स्वकुलावतंसः।
आलस्यनिद्राकफवातपित्तजनाङ्गनादद्रुविचर्चिकार्तः ॥ ३ ॥

यह शनि की दशा में मनुष्य पुर और गाँव का अधिकारी, बुद्धिमान्, दान करने वाला, अनेक कला कौशल से युक्त, घोड़ा, सोना, वस्त्र, हाथी इन से युक्त, नम्र, देवता, ब्राह्मण का पूजक, प्राचीन स्थान पाकर सुखी, देवता ब्राह्मणों का घर बनाने वाला, सुन्दर स्वभाव वाला, बहुत यशस्वी, अपने कुल में श्रेष्ठ, आलस, नींद, कफ, वायु, पित्त इन से युक्त तथा दाद रोग से पीड़ित होता है ॥ १-३ ॥

सामान्यमेतत्फलमुक्तमत्र शनेर्दशायां गदितं हि पूर्वैः।
अथाभिधास्ये प्रतिराशिजाते फलं सुधीभिर्बलतोविचिन्त्यम् ॥४॥

यह शनि का दशाफल मुनियों ने कहा है, अब प्रति राशि गत दशा फल कहता हूँ। जो बलाबल देख कर विचार करना चाहिये ॥४॥

मेषराशिगतशनिदशाफलम्—

मेषोपयातस्य शनैश्चरस्य दशाप्रवेशे पुरुषो विशेषात्।
क्लेशाभिभूतः पतनाप्तदुःखो विचर्चिकाद्यामयतः कृशाङ्गः ॥ ५ ॥

मेष राशि गत शनि की दशा में मनुष्य कष्ट युक्त गिर कर दुःख पाने वाला, फोड़ा फुन्सी से युक्त और दुर्बल होता है ॥ ५ ॥

वृषराशिगतशनिदशाफलम्—

वृषोपयातस्य दिनेशसूनोः पाकप्रवेशे मतिमान्मनुष्यः।

नरेन्द्रसन्मानविराजमानः सङ्ग्रामसम्प्राप्तयशोविशेषः ॥ ६ ॥

वृष राशि गत शनि की दशा में मनुष्य बुद्धिमान्, राजा से आदर पाने वाला और लड़ाई में विशेष यश पाने वाला होता है ॥ ६ ॥

मिथुनराशिगतशनिदशाफलम्—

शनेर्दशायां मिथुनाश्रितस्य नरो भवेच्चारुविलासशीलः ।

चोरोग्रदारादिजनाद्धनाप्ती रणप्रसङ्गाच्च परोपकारी ॥ ७ ॥

मिथुन राशि गत शनि की दशा में मनुष्य विलास करने वाला, चोर, बड़ों की स्त्री या युद्ध से धन लाभ करने वाला और परोपकारी होता है ॥ ७ ॥

कर्कराशिगतशनिदशाफलम्—

कर्कस्थितार्कात्मजपाककाले लोलं मनः पुत्रकलत्रमित्रैः ।

श्रोत्रे च नेत्रे परिपीडनं स्यात्कलेवरं निर्बलतां प्रयाति ॥ ८ ॥

कर्क राशि गत शनि की दशा में मनुष्य स्त्री पुत्र मित्र आदि से चञ्चल मन, कान आँखों में पीड़ा वाला और दुर्बल होता है ॥ ८ ॥

सिंहराशिगतशनिदशाफलम्—

पञ्चाननस्थस्य शनेर्दशायां बाधा भवेद्धै त्रिविधा नराणाम् ।

दारात्मजाद्यैः कलहप्रसङ्गस्तुरङ्गगोदासजनेष्वसौख्यम् ॥ ९ ॥

सिंह राशिगत शनि की दशा में मनुष्य अनेक बाधा पाने वाला, स्त्री, पुत्र आदि के साथ कलह, घोड़ा गौ नौकर के द्वारा दुख होता है ९

कन्याराशिगतशनिदशाफलम्—

कन्योपयातस्य शनेर्दशायां भवेत्क्रमेण द्रविणोपलब्धिः ।

जलाच्च भूमीरुहतस्तथोच्चप्रदेशतश्चापि महाप्रमोदः ॥ १० ॥

कन्या राशि गत शनि की दशा में मनुष्य धन लाभ करने वाला, जल वृक्ष और उच्च स्थानों से आनन्द पाने वाला होता है ॥ १० ॥

तुलाराशिगतशनिदशाफलम्—

काले दशायां नलिनीशसूनोस्तुलागतस्योत्तमराज्यलक्ष्मीः ।

गजाश्वहेमाम्बररत्नपूर्णा भवेन्नराणां करुणाधिकत्वम् ॥ ११ ॥

तुलाराशि गत शनि की दशा में मनुष्य श्रेष्ठ राज्यलक्ष्मी पाने वाला, हाथी, घोड़ा, सोना, वस्त्र, रत्न इन से युक्त और दयालु होता है॥

वृश्चिकराशिगतशनिदशाफलम्—

सरीसृपस्थस्य शनैश्चरस्य पाके नरः साहसकर्मयुक्तः।

वृथाऽटनो वै कृपणोऽनृतश्च नीचानुरक्तश्च दयाविहीनः ॥ १२ ॥

वृश्चिक राशि गत शनि की दशा में मनुष्य साहस से कार्य करने वाला, व्यर्थ भ्रमण करने वाला, कृपण, असत्य बोलने वाला, नीच जनों के साथ रहने वाला और दयाहीन होता है ॥ १२ ॥

धनराशिगतशनिदशाफलम्—

धनुर्धरस्थस्य शनैश्चरस्य पाके नरः स्यात्सचिवो नृपाणाम्।

सङ्ग्रामधीरश्चतुरङ्ग्रियुक्तः कान्तासुतानन्दविनोदयुक्तः ॥१३॥

धनुराशि गत शनि की दशा में मनुष्य राजा का मन्त्री, संग्राम में चतुर, पशुओं से युक्त, स्त्री, पुत्र और आनन्द विनोद से युक्त होता है १३

मकरराशिगतशनिदशाफलम्—

शनेर्दशायां मकराश्रितस्य बहुश्रमोत्पन्नधनं नराणाम्।

नपुंसकस्त्रीजनसेवनत्वं विश्वासघातेन धनक्षतिश्च ॥ १४ ॥

मकर राशि गत शनि की दशा में मनुष्य परिश्रम से धन एकट्ठा करने वाला, नपुंसक, स्त्रियों का सेवक और विश्वास घात से धन नाश करने वाला होता है ॥ १४ ॥

कुम्भराशिगतशनिदशाफलम्—

शनेर्दशायां कलशाश्रितस्य सुखानि नूनं महती प्रतिष्ठा।

श्रेष्ठत्वमुच्चैः स्वकुले नरस्य कृषिक्रियापुत्रधनादिलब्धिः ॥१५॥

कुम्भ राशि गत शनि की दशा में मनुष्य सुखी, अधिक प्रतिष्ठा पाने वाला, अपने कुल में श्रेष्ठ, कृषि और पुत्र के द्वारा धन प्राप्ति करने वाला होता है ॥ १५ ॥

मीनराशिगतशनिदशाफलम्—

भवेद्दशायां ननु भानुसूनोर्मीनोपयातस्य च मानवस्य ।
नानापुरग्रामधनाङ्गनाभ्यः सुखं तथोत्साहविहीनता च ॥ १६ ॥

मीन राशि गत शनि की दशा में मनुष्य अनेक नगर, गाँव, धन, स्त्री इन से सुखी और उत्साह हीन होता है ॥ १६ ॥

इति दशाफलाध्यायः ।

अथ स्थानविशेषस्थदशाफलाध्यायः ।

दशाद्दकाणैश्चरभे तनोः क्रमात् स्यादुत्तमा मध्यतमाधमा च ।
स्थिरे च कष्टा शुभदा च मध्या मिश्रेऽधमामध्यतमोत्तमा च ॥१॥

चर राशि के प्रथम द्रेष्काण में स्थित लग्न की दशा उत्तम, द्वितीय द्रेष्काण में मध्यम, तृतीय द्रेष्काण में अधम होती है। स्थिर राशि के प्रथम द्रेष्काण में स्थित लग्न की दशा अधम, द्वितीय द्रेष्काण में शुभ, तृतीय द्रेष्काण में मध्यम होती है। द्विस्वभाव राशि के प्रथम द्रेष्काण में स्थित लग्न की दशा अधम, द्वितीय द्रेष्काण में मध्यम और तृतीय द्रेष्काण में शुभ दशा होती है ॥ १ ॥

शुभानि मध्यानि च निन्दितानि फलानि लग्नेशदशोदितानि ।
तान्येव कल्प्यानि सुधीभिरत्र बलानुमानात्तनुनायकस्य ॥ २ ॥

शुभ, मध्यम, अधम ये लग्नेश के दशाफल जो कहे गये हैं, वे लग्नेश के बल देख कर तारतम्य से विचार करना चाहिये ॥ २ ॥

सशालते यः किल दिग्बलेन खेटः स्वकाष्ठां पुरुषं च नीत्वा ।
महाप्रतिष्ठां कुरुते दशायां नानाधनाभ्यागमनानि नूनम् ॥ ३ ॥

दिग्बल से शोभित ग्रह की दशा में मनुष्य को अपनी दिशा में ले जाकर बहुत प्रतिष्ठा और अनेक प्रकार से धन लाभ कराता है ॥३॥

विलोमगामिग्रहपाककाले स्थानार्थसौख्यान्यति चञ्चलानि ।
प्रवासशीलत्वमतीव जन्तोर्लोके महत्वापचयत्वमेव ॥ ४ ॥

वक्र गति ग्रह की दशा में पुरुष स्थान, धन और सुख में चञ्चल, परदेश वासी तथा लोगों में प्रतिष्ठा की हानि वाला होता है ॥ ४ ॥

ऋजुप्रयातद्युचरस्य पाके सन्मानसौख्यार्थयशःप्रवृद्धिः ।
षष्ठाष्टमद्वादशवर्जितस्य ग्रहस्य पाकेऽभिमतार्थसिद्धिः ॥ ५ ॥

मार्गी ग्रह की दशा में मान, धन और सुख की वृद्धि होती है । लग्न से ६, ८, १२ स्थानों से भिन्न स्थान में स्थित ग्रह की दशा में अभीष्ट विषय की सिद्धि होती है ॥ ५ ॥

नीचारिभस्थस्य च वक्रिणो वा पाके कुकर्माभिरतिर्मनुष्यः ।
विदेशवासी निजबन्धुवर्गैस्त्यक्तो भवेदाग्रहताभियुक्तः ॥ ६ ॥

नीच स्थान या शत्रुराशि में स्थित ग्रह की दशा में मनुष्य कुकर्म करने वाला, विदेश में रहने वाला, बन्धुओं का वियोग पाने वाला और आग्रही होता है ॥ ६ ॥

स्वर्भानुयुक्तस्य च खेचरस्य दशा वरिष्ठाप्यतिरिष्टदा स्यात् ।
पाकावसाने ननु मानवानां दुःखानि हानिश्च विदेशयानम् ॥ ७ ॥

राहु युक्त ग्रह की शुभ दशा भी अरिष्ट देने वाली होती है। अन्त समय में अनेक कष्ट, धन की हानि और विदेश गमन कराने वाली होती है ॥ ७ ॥

जननराशिजनुस्तनुनाथयो रिपुदशासमये मतिविभ्रमः ।
भयमरेरपि राज्यपरिच्युतः खलजनैः कलहो बलहीनता ॥ ८ ॥

जन्म राशीश, लग्नेश दोनों का जो शत्रु हो उस की दशा में मति विभ्रम, शत्रु से भय, राज्य च्युत, दुष्टों के साथ कलह और निर्बलता होती है ॥ ८ ॥

लग्नेश्वरस्याष्टमभावगस्य भवेद्दशायामतिपीडनं हि ।
दशावसानेऽपि च मानवानां भवेत्समाप्तिः खलु जीवितस्य ॥ ९ ॥

अष्टम भाव गत लग्नेश की दशा में अत्यन्त पीड़ा और अन्त समय में मरण होता है ॥ ९ ॥

क्रूराख्यखेटस्य दशान्तराले क्रूरग्रहस्यान्तरजा दशा चेत् ।
शत्रूद्गमोर्थस्य परिक्षयः स्यादायुःक्षयो वेति वदेन्नराणाम् ॥ १० ॥

पापग्रह की दशा में पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो शत्रुओं का उदय, धन और आयुर्दाय का नाश होता है ॥ १० ॥

दशाप्रवेशेऽपि खगाः सलग्नाः कार्याः स्फुटास्तत्र दशापतिश्चेत् ।
लग्नत्रिखायारिगतोथ लग्ने तन्मित्रवर्गः शुभदा दशा सा ॥११॥

दशा प्रवेश काल में लग्न सहित ग्रहों का स्पष्ट करने से दशा पति यदि लग्न, तृतीय, दशम, एकादश या षष्ठ स्थान में स्थित हो या लग्न में दशा पति के मित्रवर्ग हों तो दशाफल शुभ होता है ॥११॥

श्रेष्ठा प्रदिष्टेष्टफलाधिकस्य दुष्टा दशा कष्टफलाधिकस्य ।
यस्येष्टकष्टे भवतः समाने फलं विमिश्रं किल तस्य पाके ॥ १२ ॥

जिस ग्रह का इष्ट बल ज्यादा हो उस की दशा में शुभ, जिस ग्रह का कष्ट बल अधिक हो उस की दशा में कष्ट, यदि इष्ट बल, कष्ट बल दोनों समान हो तो उस की दशा में मिश्र फल होता है ॥ १२ ॥

दशाप्रवेशे खचरः स्वतुङ्गे मूलत्रिकोणे यदि वा स्वगेहे ।
शुभेष्टवर्गस्थितिकृच्छुभैर्दृष्टे दशारिष्टहरो भवेत्सः ॥ १३ ॥

दशा के आरम्भ काल में यदि ग्रह उच्च, मूलत्रिकोण, अपनी राशि, शुभ ग्रह के अष्ट वर्ग में स्थित हो कर शुभ ग्रह से देखा जाता हो तो अशुभ दशा फल का नाश होता है ॥ १३ ॥

इति महादशाफलाध्यायः

अथान्तर्दशाफलाध्यायः ।

अथ प्रवेशे खलु खेचराणामन्तर्दशासूक्ष्मफलप्रसिद्ध्यै ।
विचारपूर्वं सदसत्प्रकल्प्यं फलं सुधीभिर्विधिनोदितेन ॥ १ ॥

अन्तर्दशा सम्बन्धी सूक्ष्म फल के लिये ग्रहों के दशा प्रवेश काल

में कथित प्रकार से शुभाशुभ फल विचार पूर्वक विद्वानों को कल्पना करना चाहिये ॥ १ ॥

अन्तर्दशा चेदशुभग्रहाणामेकर्क्षगानां कुरुते सदैव ।
गदं विवादं रिपुभूपभीतिं दैन्यं धनस्यापचयं विशेषात् ॥ २ ॥

एक राशि गत पाप ग्रहों की अन्तर्दशा में सदा रोग, विवाद, शत्रु और राजा का भय, दीनता और धन हानि होती है ॥ २ ॥

अन्तर्दशायां मदनस्थितस्य खेचारिणः स्यान्मरणं गृहिण्याः ।
रोगः कुभोगः कलहादिभङ्गः सङ्गश्च निम्नैर्हरणं धनस्य ॥ ३ ॥

सप्तम भाव स्थित ग्रह की अन्तर्दशा में स्त्री का मरण, रोग, खराब वस्तुओं का भोग, झगड़ा, नीचों का सङ्ग और धन की क्षति होती है॥

खेचारिणामष्टमभावगानामन्तर्दशा सञ्जनयेदरिष्टम् ।
धनस्य नाशं व्यसनानि पुंसां षष्ठोपगस्यापि गदप्रवृद्धिम् ॥ ४ ॥

षष्ठ या अष्टम भाव गत ग्रह की अन्तर्दशा में अरिष्ट की उत्पत्ति, धन नाश, व्यसन और रोगों की वृद्धि होती है ॥ ४ ॥

त्रिकोणमेषूरणवेश्मगानामन्तर्दशा सौख्यमतीव नित्यम् ।
करोति लाभं विविधं नराणामारोग्यतां मानसमुन्नतिं च ॥ ५ ॥

पञ्चम, नवम, दशम भावों में स्थित ग्रह की अन्तर्दशा में नित्य सुख, अनेक प्रकार के लाभ, आरोग्यता और मान की वृद्धि होती है ॥

सूर्यमहादशामध्ये चन्द्रान्तर्दशाफलम्—

करोति चन्द्रस्तरणेर्दशायां सुवर्णभूषाम्बरविद्रुमाप्तिम् ।
समुन्नतिं मानसुखाभिवृद्धिं विरोधिवर्गापचयं जयं च ॥ १ ॥

सूर्य की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो तो सुवर्ण, वस्त्र, मुङ्गा का लाभ, उन्नति, मान और सुख की वृद्धि, शत्रुओं का नाश और जय होती है ॥ १ ॥

पङ्केरुहेशस्य चरन्विपाके कुर्यान्मृगाङ्को यदि लाभमुच्चैः ।
प्रमादमग्न्यो ग्रहणीं च पाण्डुं केषांचिदेतन्मतमत्र चोक्तम् ॥ २ ॥

किसी का मत है कि सूर्य की महादशा में क्षीण चन्द्रमा का अन्तर्दशा हो तो जल का भय, ग्रहणी और पाण्डुरोग होता है ॥ २ ॥

सूर्यमहादशामध्ये भौमान्तर्दशाफलम्—

सत्प्रवालकलधौतसुचैलं मङ्गलानि विजयं च विधत्ते ।

मङ्गलः कमलिनीशदशायां भूमिपालकृलतः किल पुंसः ॥ ३ ॥

सूर्य की दशा में मङ्गल की अन्तर्दशा आवे तो मूङ्गा, सुवर्ण, वस्त्र इन का लाभ, मङ्गल, विजय और राजा की कृपा होती है ॥ ३ ॥

सूर्यमहादशामध्ये बुधान्तर्दशाफलम्—

विचर्चिकादद्रुविकारपूर्वैः पामामयैर्देहनिपीडनं स्यात् ।

धनव्ययश्चापि हतोत्सवश्च विधोः सुते भानुदशां प्रयाते ॥ ४ ॥

सूर्य की दशा में बुध की अन्तर्दशा हो तो जातक खुजली, दाद आदि रोग से पीड़ित, धन का व्यय करने वाला और उत्साह रहित होता है ॥ ४ ॥

सूर्यमहादशामध्ये गुरोरन्तर्दशाफलम्—

सद्वस्त्रधान्यादिषु संग्रहेच्छा स्वच्छा मतिर्विप्रसुरार्चनेषु ।

भूषाप्तिसन्मानधनानि नूनं भानोर्दशायां चरतीन्द्रवन्द्ये ॥ ५ ॥

सूर्य की दशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा हो तो सुन्दर वस्त्र, धान्य आदि संग्रह करने की इच्छा वाला, ब्राह्मण देवताओं का भक्त, भूषण की प्राप्ति करने वाला, मान और धन का लाभ करने वाला होता है ॥

सूर्यमहादशामध्ये भृगोरन्तर्दशाफलम्—

विदेशयानं कलहाकुलत्वं शूलं च मौलिस्थलकर्णपीडाम् ।

गाढज्वरं चापि करोति नित्यं दैत्यार्चितो भानुदशां प्रयातः ॥ ६ ॥

सूर्य की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तो मनुष्य परदेशी, लोगों से कलह करने वाला, शूल रोग से युक्त शिर और कान में पीड़ा वाला तथा अत्यन्त ज्वरी होता है ॥ ६ ॥

सूर्यदशामध्ये शनेरन्तर्दशाफलम्—

नीचारिभूमीपतिभीतिरुच्चैः कण्डूयनाद्यामयसम्भवः स्यात् ।

मित्राण्यमित्राणि भवन्ति नूनं शनैश्चरे भानुदशान्तरस्थे ॥ ७ ॥

सूर्य की महादशा में शनि की अन्तर्दशा हो तो नीच जन, शत्रु और राजा से भय, खुजली आदि रोग और मित्र भी शत्रु के समान होता है॥

चन्द्रदशामध्येरवेरन्तर्दशाफलम्--

नरेश्वराद् गौरवमर्थलाभं क्षयामयार्ति प्रकृतेर्विकारम्।
चोराग्निवैरिप्रभवां च भीतिं शीतांशुपाके कुरुते दिनेशः ॥ १ ॥

चन्द्रमा की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा हो तो राजा से आदर, धन लाभ, क्षय रोग से पीड़ा, प्रकृति का विकार, चोर और अग्नि का भय तथा चित्त में विभ्रम होता है ॥ १ ॥

चन्द्रदशामध्ये भौमान्तर्दशाफलम्--

कोशभ्रंशं रक्तपित्तादिदोषं रोषोत्पत्तिं स्थानतः प्रच्युतिं च।
कुर्य्यात्पीडां मातृपित्रादिवर्गैर्भूमीसूनुर्यामिनीनाथपाके ॥ २ ॥

चन्द्रमा की दशा में मङ्गल की अन्तर्दशा हो तो कोष का नाश, रक्त, पित्त आदि दोष से रोग, रोष, स्थान च्युत, और माता पिता के द्वारा क्लेश होता है ॥ २ ॥

चन्द्रदशामध्ये बुधान्तर्दशाफलम्--

उदारनामान्तरलब्धमुच्चैर्ललामगोभूमिगजाश्ववृद्धिम्।
विद्याधनैश्वर्यसमुन्नतत्वं कुर्याद् बुधश्चन्द्रदशान्तराले ॥ ३ ॥

चन्द्रमा की दशा में बुध की अन्तर्दशा हो तो उदारता से सुयश, सुन्दर गौ, भूमि, हाथी, घोड़ा की वृद्धि, विद्या और धन की उन्नति होती है ॥ ३ ॥

चन्द्रदशामध्ये गुरोरन्तर्दशाफलम्--

विशिष्टधर्मो धनधान्यभोगानन्दाभिवृद्धिर्गजवाजिसम्पत्।
पुत्रोत्सवश्चापि भवेन्नराणां गुरौ सुराणां शशिपाकसंस्थे ॥ ४ ॥

चन्द्रमा की दशा में गुरु की अन्तर्दशा हो तो विशेष धर्म, धन, धान्य, भोग और आनन्द की वृद्धि, हाथी घोड़ा आदि सम्पत्ति से युक्त तथा पुत्र की उत्पत्ति होती है ॥ ४ ॥

चन्द्रदशामध्ये शुक्रान्तर्दशाफलम्—

नानाङ्गनाकेलिविलासशीलो जलोद्भवैर्धान्यधनैश्च युक्तः ।
मुक्ताफलाद्याभरणैरपि स्यादिन्दोर्दशायां हि सिते मनुष्यः ॥ ५॥

चन्द्रमा की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तो मनुष्य अनेक स्त्रियों के साथ क्रीड़ा विलास करने वाला, जल से उत्पन्न धन धान्य से युक्त और मोती आदि आभूषणों से युक्त होता है ॥ ५ ॥

चन्द्रदशामध्ये शनेरन्तर्दशाफलम्—

नरेन्द्रचौराहितवह्निभीतिं कलत्रपुत्रासुखरुक्प्रवृद्धिम् ।
करोति नानाव्यसनानि नूनं शनिर्निशानाथदशां प्रविष्टः ॥ ६ ॥

चन्द्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा हो तो राजा, चोर, शत्रु, अग्नि इन का भय, स्त्रीपुत्र से दुखी, रोग की वृद्धि और अनेक तरह के व्यसन होते हैं ॥ ६ ॥

भौमदशामध्ये सूर्यान्तर्दशाफलम्—

नानाधनाभ्यागमनानि नूनं सन्मानवृद्धिं मनुजाधिराजात् ।
चण्डत्वभाजो विजयं विदध्याद्भानुर्धरासूनुदशान्तरस्थः ॥ १ ॥
दुर्गशैलवनसञ्चलनेच्छा बन्धुतातजनितातिविरोधः ।
मानवो भवति भूतनयान्तर्भास्करे चरति केऽपि वदन्ति ॥ २ ॥

मङ्गल की महादशा में रवि की अन्तर्दशा हो तो अनेक तरह से धन की प्राप्ति, राजा से आदर, संग्राम में क्रोध और विजय होती है ॥

किसी आचार्य का मत है कि दुर्ग, पर्वत, वन में जाने की अभिलाषा पिता, तथा भाई से विरोध होता है ॥ १-२ ॥

भौमदशामध्ये चन्द्रान्तर्दशाफलम्—

नित्योत्सवानन्दमहापदानि मुक्ताफलद्रव्यविभूषणानि ।
मित्रोद्गमं श्लेष्मविकारमिन्दुर्भौमस्य पाके विचरन्करोति ॥ ३ ॥

मङ्गल की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो तो नित्य उत्सव आनन्द से युक्त, मोती, द्रव्य, भूषण का लाभ, मित्रों का उदय और कफ का विकार होता है ॥ ३ ॥

भौमदशामध्ये बुधान्तर्दशाफलम्—

अरातिभूपामयतस्करेभ्यः पीडां वियोगं सुतदारमित्रैः।
स्वल्पोत्सवो यच्छति चन्द्रसूनुर्भौमस्य पाके यदि सम्प्रविष्टः ॥४॥

मङ्गल की महादशा में बुध की अन्तर्दशा हो तो शत्रु, राजा, रोग, चोर इन का भय, पुत्र, स्त्री, मित्र के साथ वियोग और थोड़ा उत्सव होता है ॥ ४ ॥

भौमदशामध्ये गुरोरन्तर्दशाफलम्—

बलाधिकत्वं नृपतेर्धनाप्तिं कलत्रमित्रात्मजवाहसौख्यम्।
सत्कर्मधर्मानुरतत्वमुच्चैर्बृहस्पतिर्भौमदशां प्रविष्टः ॥ ५ ॥

मङ्गल की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा हो तो बल की अधिकता, राजा से धन की प्राप्ति, स्त्री, पुत्र, वाहन इन से सुख और कर्म धर्म में प्रीति होती है ॥ ५ ॥

भौमदशामध्ये भृगोरन्तर्दशाफलम्—

विदेशयानव्यसनामयाद्यैः कुटुम्बवाहद्रविणव्ययश्च।
नानाप्रयासैश्चलचित्तवृत्तिर्भौमान्तरे दानवराजपूज्ये ॥ ६ ॥

मङ्गल की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तो परदेश गमन, व्यसन, रोग इन के द्वारा कुटुम्ब, वाहन और धन का व्यय तथा अनेक प्रयत्नों से चित्त में चञ्चलता होती है ॥ ६ ॥

भौमदशामध्ये शनेरन्तर्दशाफलम्—

कलत्रपुत्रात्मजनेषु बाधा प्राणप्रयाणान्तशरीरपीडा।
स्वस्थानयानं यदि भानुसूनोरन्तर्दशा भौमदशान्तराले ॥ ७ ॥

मङ्गल की दशा में शनि की अन्तर्दशा हो तो स्त्री, पुत्र और बन्धुओं में पीड़ा, मृत्यु के समान कष्ट और अपने स्थान से दूसरी जगह जाना होता है ॥ ७ ॥

बुधमहादशामध्ये रवेरन्तर्दशाफलम्—

तुरङ्गहेम्नां च सुविद्रुमाणां सदम्बराणामपि वारणानाम्।

भवेदवाप्तिर्बहुवैभवानां सौम्यस्य पाके तपने प्रपन्ने ॥ १ ॥
स्वस्थानतः सञ्चलनं कदाचिद्रुगद्भकोपात्मजजन्मवित्तम् ।
धर्मे प्रवृत्तिं कुरुते ज्ञपाके पङ्केरुहेशः प्रवदन्ति केचित् ॥ २ ॥

बुध की महादशा में रवि की अन्तर्दशा हो तो घोड़ा, सुवर्ण, सुन्दर मूँगा, सुन्दर वस्त्र, हाथी और बहुत विभव की प्राप्ति होती है। किसी आचार्य का मत है कि अपने स्थान से यात्रा, कभी २ रोग का प्रकोप, पुत्र का जन्म, धन और धर्म में प्रवृत्ति होती है ॥ १-२ ॥

बुधदशामध्ये चन्द्रान्तर्दशाफलम्—

पामादिनानामयसम्भवः स्यान्मृतप्रजानां जननं विवादः ।
पित्तप्रकोपः खलु यानपीडा यदा जडांशुर्ज्ञदशां प्रपन्नः ॥ ३ ॥

बुध की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो तो खुजली आदि अनेक रोग, सन्तान का नाश, विवाद, पित्त का प्रकोप और यात्रा से पीड़ा होती है ॥ ३ ॥

बुधदशामध्ये भौमान्तर्दशाफलम्—

गुह्यामयार्थव्यसनैर्युतः स्यात्कान्तासुतप्रीतिविमुक्तचित्तः ॥
विलुप्तधर्मो मनुजः प्रविष्टे बुधस्य मध्ये वसुधातनूजे ॥ ४ ॥

बुध की महादशा में मङ्गल की अन्तर्दशा हो तो मनुष्य को गुप्त रोग, धन की हानि, स्त्री पुत्र से विरह और धर्म की हानि होती है ॥४॥

बुधदशामध्ये गुरोरन्तर्दशाफलम्—

कान्तासुतानन्दयुतोऽरिहन्ता सत्कर्मकृच्चारुमतिविनीतः ।
मन्त्री नरः स्यात्पितृमातृदुःखी बृहस्पतौ सौम्यदशां प्रयाते ॥५॥

बुध की महादशा में गुरु की अन्तर्दशा हो तो स्त्री पुत्र से आनन्द युक्त, शत्रु को मारने वाला, सत्कर्म करने वाला, नम्र, मन्त्री और माता पिता से दुखी होता है ॥ ५ ॥

बुधदशामध्ये भृगोरन्तर्दशाफलम्—

विबुधसाधुजनातिथिसादरः सुकृतकर्मसमुत्सुकमानसः ।

विविधवस्त्रविभूषणभाङ्नरो बुधदशान्तरगे सति भार्गवे ॥ ६ ॥

बुध की महादशा में शुक्र की अन्तदशा हो तो देवता, साधु जन, अतिथियों में आदर बुद्धि, सत्कर्म में प्रवृत्ति और नाना प्रकार के वस्त्र आभूषणों का लाभ होता है ॥ ६ ॥

नानाप्रयासश्च निरोधनैर्वा शिरोरुजा वापि शरीरभाजाम् ।
करोति बाधां विबुधान्तराले सितः प्रयातः प्रवदन्ति केचित् ॥७॥

किसी का मत है कि बुध की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा आवे तो अनेक प्रयत्नों से, लोगों के निरोध से, शिरोरोग से शरीर में पीड़ा होती है ॥ ७ ॥

बुधदशामध्ये शनेरन्तर्दशाफलम्—

सत्कर्मधर्मद्रविणानुकम्पाकन्दर्पहीनो मनुजः प्रलापी ।
वातामयार्त्तोऽतिमृदुस्वभावः सौम्यान्तराले नलिनीशसूनौ । ८ ॥

बुध की महादशा में शनि की अन्तर्दशा हो तो मनुष्य सुन्दर कर्म धर्म, धन, दया, कान्ति से हीन, अनर्थ करने वाली वाणी बोलने वाला, वात रोग से पीड़ित और कोमल स्वभाव वाला होता है ॥ ८ ॥

गुरुदशामध्ये रव्यन्तर्दशाफलम्—

सुतीर्थनानाविधवस्तुलाभं विशिष्टनामान्तरमाधिपत्यम् ।
मानं नरेशात्कुरुते दिनेशो वाचामधीशस्य दशां प्रपन्नः ॥१॥

बृहस्पति की दशा में रवि की अन्तर्दशा हो तो मनुष्य तीर्थ करने वाला, अनेक वस्तुओं का लाभ करने वाला, विशेष प्रतिष्ठा पाने वाला, बहुतों का स्वामी और राजा से मान प्राप्त करने वाला होता है ॥ १ ॥

गुरुदशामध्ये चन्द्रान्तर्दशाफलम्—

नानाङ्गनाक्रीडनजातचित्तः श्रीराजचिह्नैश्च विराजमानः ।
विद्यानवद्यार्थयुतो नरः स्याज्जीवान्तरे शीतकरप्रचारे ॥ २ ॥

गुरु की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो तो मनुष्य अनेक स्त्रियों के साथ क्रीडा करने वाला, राजचिह्न से शोभित, विद्या और धन से युक्त होता है ॥ २ ॥

गुरुदशामध्ये भौमान्तर्दशाफलम्—

रणाङ्गणप्राप्तयशोविशेषः सद्भोगसौख्यार्थसमन्वितश्च ।
प्रौढप्रतापोऽतितरां नरः स्याद्धरासुते जीवदशां प्रयाते ॥ ३ ॥
शीर्षे गुदे वापि भवेत्कदाचित्पीडा नराणामरिभीतियुक्ता ।
बलक्षयः सञ्चलनं कुजस्य जीवान्तराले प्रवदन्ति केचित् ॥ ४ ॥

गुरु की महादशा में मङ्गल की अन्तर्दशा हो तो मनुष्य रण में विजयी, सुन्दर भोग सुख से युक्त और अधिक प्रतापी होता है। किसी का मत है कि गुरु की दशा में मङ्गल का अन्तर हो तो मस्तक या गुदा में पीड़ा, शत्रु का भय, बल की हानि और विदेश यात्रा होती है॥ ३-४॥

गुरुदशामध्ये बुधान्तर्दशाफलम्—

सद्बुद्धिकौशल्यसुरार्चनानि सदिन्दिरामन्दिरवाहनानि ।
कलत्रपुत्रादिसुखानि नूनं कुर्याद् बुधो जीवदशां प्रपन्नः ॥ ५ ॥
विदेशयानं चलचित्तवृत्तिर्जलात्प्रमादः शिरसि प्रपीडा ।
गुरोर्दशायां चरतीन्दुपुत्रे केषां चिदेवात्र मतं निरुक्तम् ॥ ६ ॥

गुरु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा हो तो सुन्दर बुद्धि वाला, कुशल, देवताओं का पूजक, उत्तम लक्ष्मी घर वाहनों से युक्त और स्त्री पुत्रों से सुखी होता है। किसी का मत है कि उक्त समय में विदेश यात्रा, चाञ्चल्य, जल से भय और शिर में पीड़ा होती है ५-६

गुरुदशामध्ये शुक्रान्तर्दशाफलम्—

निजैर्वियोगोऽर्थविनाशनं च श्लेष्मानिलश्चापि कलिप्रसङ्गः ।
स्यान्मानवानां व्यसनोपलब्धिर्भृगोः सुते जीवदशां प्रयाते ॥ ७ ॥

गुरु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तो अपने जनों से वियोग, धन की हानि, कफ वायु से पीड़ा, झगड़ा और दुखों का लाभ होता है ॥ ७ ॥

धर्मक्रियायां निरतत्वमुच्चैर्विद्याम्बराश्वादिकसङ्ग्रहश्च ।
द्विजाश्रयः स्याद्गुरुपाकयाते सिते वदन्तीज्यफलं तु केचित् ॥८॥

किसी का मत है कि उक्त समय में धर्म कार्य में निरत, विद्या वस्त्र अन्न का संग्रह करने वाला और ब्राह्मणों का आश्रयी होता है ॥ ८ ॥

गुरुदशामध्ये शनेरन्तर्दशाफलम्—

वेश्यासवद्यूतकृषिक्रियाद्यैर्विलुप्तधर्मार्थयशाः कृशाङ्गः।
खरक्रमेलादियुतो नरः स्याद्गुरोर्दशायां चलितेऽर्कसूनौ ॥ ९ ॥

बृहस्पति की महादशा में शनि की अन्तर्दशा हो तो वेश्या, मद्य, जुआ, खेती के द्वारा धर्म, धन, यशों का नाश, दुर्बल शरीर और ऊँट खच्चर का लाभ करने वाला होता है ॥ ९ ॥

शुक्रदशामध्ये सूर्यान्तर्दशाफलम्—

भूपभीतिरपि बन्धुनिमित्तं वित्तनाशनमरात्युदयः स्यात्।
क्रोडगण्डनयनेष्वपि पीडा भार्गवे यदि रवेर्विनिवेशः ॥ १ ॥

शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा हो तो राजा का भय, बन्धुओं के निमित्त धन नाश, शत्रु का उदय, पेट और आँख में पीड़ा होती है ॥ १ ॥

शुक्रदशामध्ये चन्द्रान्तर्दशाफलम्—

शीर्षदन्तनखपीडनमुच्चैः कामला च भवता किल पित्तम्।
श्वापदादपि भयं च नराणां भार्गवान्तरगते हिमरश्मौ ॥ २ ॥
भूदेवदेवाग्निमनःप्रवृत्ती रणाङ्गणे स्याद्विजयो नराणाम्।
मातङ्गकार्याद्वनिताश्रयाद्वा लाभः सिते चन्द्रदशेति केचित् ॥ ३ ॥

शुक्र की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो तो मनुष्य शिर, दाँत, नख में पीड़ा युक्त, कामला और पित्त रोग से पीड़ित और हिंसक जीव का भय होता है। किसी का मत है कि उक्त समय में ब्राह्मण देवताओं में भक्ति, रण में विजय, हाथी के व्यापार या स्त्री के आश्रय से धन का लाभ होता है ॥ २-३ ॥

शुक्रदशामध्ये भौमान्तर्दशाफलम्—

पित्तात्क्षताद्रक्तविकारतो वा वैकल्यमङ्गे प्रभवेन्नराणाम्।

उत्साहहीनत्वमतीव याते भूमीसुते दैत्यगुरोर्दशायाम् ॥ ४ ॥
सन्माननानाविधवस्तुसौख्यं भूमीपतेः स्यात्खलु भूमिलाभः ।
अङ्गारके भार्गवपाकसंस्थे केषां चिदेवं मतमस्ति शस्तम् ॥ ५ ॥

शुक्र की महादशा में मङ्गल की अन्तर्दशा हो तो पित्त, आघात, रक्त विकार से शरीर में पीड़ा और उत्साह की हानि होती है। किसी का मत है कि सन्मान, अनेक वस्तुओं से सुख और राजा से भूमि लाभ होती है ॥ ४-५ ॥

शुक्रदशामध्ये बुधान्तर्दशाफलम्—

वृक्षैः फलैश्चापि चतुष्पदाद्यैर्वित्तं भवेत्सख्यविधिर्नृपेण ।
दुरन्तकार्याभिरतिर्नितान्तं भृगोर्दशायां चरतीन्दुसूनौ ॥ ६ ॥

शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा हो तो जातक वृक्ष, फल और चतुष्पद के द्वारा धन लाभ, राजा से मित्रता तथा कठोर काम करने की इच्छा होती है ॥ ६ ॥

शुक्रदशामध्ये जीवान्तर्दशाफलम्—

यज्ञादिसत्कर्मणि सादरत्वं गतार्थसिद्धिः सुतदारसौख्यम् ।
महापदानेकविभूषणाप्तिर्भृगोर्दशायां चरतीन्द्रवन्द्ये ॥ ७ ॥

शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा हो तो यज्ञ आदि शुभ कार्य करने की इच्छा, नष्ट धन का लाभ, पुत्र स्त्री का सुख, उत्तम पद और भूषण का लाभ होता है ॥ ७ ॥

शुक्रदशामध्ये शनेरन्तर्दशाफलम्—

मित्रोन्नतिर्ग्रामपुराधिपत्वं वृद्धाङ्गनाकेलिरतीव नित्यम् ।
स्याद्वैरिनाशो ह्युशनोदशायां शनैश्चरस्यान्तरजा दशा चेत् ॥ ८ ॥

शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा हो तो मित्र की उन्नति, ग्राम पुर का आधिपत्य, सदा वृद्ध स्त्री के साथ क्रीड़ा और शत्रुओं का नाश होता है ॥ ८ ॥

शनिदशामध्ये सूर्यान्तर्दशाफलम्—

धनाङ्गनानन्दनबन्धुपीडा गाढापि बाधात्मकलेवरे स्यात् ।

रिपूद्गमः संचलनं नलिन्याः पत्यौ स्थिते मन्ददशान्तराले ॥ १ ॥

शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा हो तो धन, स्त्री, पुत्र और बन्धुओं के द्वारा पीड़ा, अपने शरीर में नितान्त पीड़ा, शत्रु का उदय तथा भ्रमण होता है ॥ १ ॥

शनिदशामध्ये चन्द्रान्तर्दशाफलम्—

नित्यं कलिर्बंधुजनैर्वियोगो हृतिर्मृतिर्वापि भवेद्गृहिण्याः।

उत्साहसौख्योपहतिर्नितान्तं शीतद्युतौ मन्ददशांतरस्थे ॥ २ ॥

शनि की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो तो बन्धुओं के साथ कलह, स्त्री का अपहरण या मरण, उत्साह और सुख की हानि होती है ॥ २ ॥

शनिदशामध्ये भौमान्तर्दशाफलम्—

स्वस्थानयानं विकलत्वमङ्गे धनाङ्गनानां च वियोजनं स्यात्।

सन्मानहानिर्ननु सूर्यसूनोर्दशान्तरे भूमिसुतप्रचारे ॥ ३ ॥

शनि की महादशा में मङ्गल की अन्तर्दशा हो तो अपने स्थान से यात्रा, शरीर में पीड़ा, धन और स्त्री का वियोग और मानभङ्ग होता है ॥३॥

शनिदशामध्ये बुधान्तर्दशाफलम्—

धनाङ्गनासूनुसुखोपपन्नः सद्राजमानेन विराजमानः।

विद्वज्जनानन्दकरः कफार्तो मर्त्यो भवेज्ज्ञे शनिपाकसंस्थे ॥ ४ ॥

शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा हो तो धन, स्त्री, पुत्रों से सुख, राजा से सन्मान, विद्वानों को आनन्द करने वाला और कफ का उपद्रव होता है ॥ ४ ॥

शनिदशामध्ये जीवान्तर्दशाफलम्—

कलाकलापे कुशलो विलासी पद्मालयालंकृतचारुशीलः।

भूपालभूलाभयुतो नरः स्याद् बृहस्पतौ मन्ददशां प्रयाते ॥ ५ ॥

शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा हो तो मनुष्य कलाओं में कुशल, विलास करने वाला लक्ष्मी से शोभित, सुन्दर स्वभाव वाला और राजा से भूमि लाभ करने वाला होता है ॥ ५ ॥

शनिदशामध्ये शुक्रान्तर्दशाफलम्—

योषाविभूषासुतसौख्यलब्धिः श्रीग्रामदेशाधिकृतित्त्वमुच्चैः ।

यशःप्रकाशोऽरिकुलस्य हन्ता शनेर्दशायामुशनःप्रवेशः ॥ ६ ॥

शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तो मनुष्य स्त्री, भूषण, पुत्र से सुख लाभ करने वाला, लक्ष्मी, ग्राम, देश का स्वामी, यश का विकाश वाला और शत्रुओं का नाश करने वाला होता है ॥ ६ ॥

विशेषफलम्—

अन्तर्दशा चेन्नलिनीशसूनोर्दशान्तराले किल मङ्गलस्य ।

भवेत्तदानीं निधनं नराणां यद्यप्यहो दीर्घमवाप्तमायुः ॥ ७ ॥

शनि की महादशा में मङ्गल की अन्तर्दशा हो तो मनुष्य दीर्घायु रहने पर भी शीघ्र मरण को प्राप्त करता है ॥ ७ ॥

लग्ननाथरिपुर्लग्नदशायां प्रविशेद्यदि ।

अकस्मान्मरणं कुर्यात्प्राणिनां सत्यसम्मतम् ॥ ८ ॥

यदि लग्न की महादशा में लग्नेश के शत्रु की अन्तर्दशा हो तो अकस्मात् मृत्यु होता है। ऐसा सत्याचार्य का मत है ॥ ८ ॥

इत्यन्तर्दशाफलाध्यायः

अथ दानाध्यायः

ये खेचरा गोचरतोऽष्टवर्गाद्दशाक्रमाद्वाप्यशुभा भवन्ति ।

दानादिना ते सुतरां प्रसन्नास्तेनाधुना दानविधिं प्रवच्मि ॥ १ ॥

जो ग्रह गोचर, अष्टक वर्ग या दशा क्रम से अशुभ फल दायक होते हैं, वे ग्रह दान आदि से प्रसन्न हो कर शुभ फल दायक होते हैं। अतः सम्प्रति दान विधि को कहता हूँ ॥ १ ॥

सूर्यदानम्—

माणिक्यगोधूमसवत्सधेनुकौसुम्भवासो गुडहेमताम्रम् ।

आरक्तकं चन्दनमम्बुजं च वदन्ति दानं हि विरोचनाय ॥ २ ॥

सूर्य के लिये माणिक्य, गेहूँ, सवत्सा गौ, रक्त वस्त्र, गुड़, सोना, ताँबा, रक्त चन्दन और कमल पुष्प दान करना चाहिये ॥ २ ॥

चन्द्रदानम्—

सद्वंशपात्रस्थिततण्डुलांश्च कर्पूरमुक्ताफलशुभ्रवस्त्रम्।
युगोपयुक्तं वृषभं च रौप्यं चन्द्राय दद्याद्घृतपूर्णकुम्भम् ॥ ३ ॥

चन्द्रमा के लिये बाँस के पात्र में चावल, कपूर, मोती, श्वेत वस्त्र, हल से युक्त बैल और चाँन्दी दान करना चाहिये ॥ ३ ॥

भौमदानम्—

प्रवालगोधूममसूरिकाश्च वृषोऽरुणश्चापि गुडः सुवर्णम्।
आरक्तवस्त्रं करवीरपुष्पं ताम्रं हि भौमाय वदन्ति दानम् ॥ ४ ॥

मङ्गल के लिये मूँगा, गेहूँ, मसूर, रक्तवर्ण बैल, गुड़, सोना, रक्त वस्त्र, करवीर पुष्प या ताँबा दान करना चाहिये ॥ ४ ॥

बुधदानम्—

चैलं च नीलं कलधौतकांस्यं मुद्गाज्यगारुत्मतसर्वपुष्पम्।
दासी च दन्तो द्विरदस्य नूनं वदन्ति दानं विधुनन्दनाय ॥ ५ ॥

बुध के लिये नील वस्त्र, सोना, काँसा, मूंग, घृत, पन्ना, सब फूल, दासी और हाथी का दाँत दान करना चाहिये ॥ ५ ॥

गुरुदानम्—

शर्करा च रजनी तुरङ्गमः पीतधान्यमपि पीतमम्बरम्।
पुष्परागलवणौ च काञ्चनं प्रीतये सुरगुरोः प्रदीयताम् ॥ ६ ॥

गुरु के लिये शक्कर, हलदी, घोड़ा, पीतधान्य, पीत वस्त्र, पोखराज, नोमक और सोना दान करना चाहिए ॥ ६ ॥

भृगुदानम्—

चित्राम्बरं शुभ्रतरस्तुरङ्गो धेनुश्च वज्रं रजतं सुवर्णम्।
सुतण्डुलाज्योत्तमगन्धयुक्तं वदन्ति दानं भृगुनन्दनाय ॥ ७ ॥

शुक्र के लिये चित्र वस्त्र, श्वेत घोड़ा, गौ, वज्रमणि, चाँदी, सोना, सुन्दर चावल, घी और उत्तम गन्ध दान करना चाहिये ॥ ७ ॥

शनिदानम्—

माषाश्च तैलं विमलेंद्रनीलस्तिलाः कुलित्था महिषी च लोहम् ।
सदक्षिणं चेति वदन्ति नूनं दुष्टाय दानं रविनन्दनाय ॥ ८ ॥

शनि के लिये उड़द, तेल, स्वच्छ नीलम, तिल, कुल्थी, भैंस, लोहा ये सब दक्षिणा सहित दान करना चाहिये ॥ ८ ॥

राहुदानम्—

गोमेदरत्नं च तुरङ्गमश्च सुनीलचैलानि च कम्बलानि ।
तिलाश्च तैलं खलु लोहमिश्रं स्वर्भानवे दानमिदं वदन्ति ॥ ९ ॥

राहु के लिये गोमेद मणि, घोड़ा, नील वस्त्र, कम्बल, तिल, तेल और लोहा दान करना चाहिये ॥ ९ ॥

केतुदानम्—

वैडूर्यरत्नं सतिलं च तैलं सुकम्बलश्चापि मदो मृगस्य ।
शस्त्रं च केतोः परितोषहेतोरुदीरितं दानमिदं मुनीन्द्रैः ॥ १० ॥

केतु के लिये वैदूर्य मणि, तिल, कम्बल, कस्तूरी और तलवार दान करना चाहिये ॥ १० ॥

इति दानाध्यायः

अथ नष्टजातकाध्यायः ।

आधानकालोऽप्यथ जन्मकालो न ज्ञायते यस्य नरस्य नूनम् ।
प्रसूतिकालं प्रवदन्ति तस्य नष्टाभिधानादपि जातकाच्च ॥ १ ॥
तज्जातकं येन शुभाशुभाप्तिर्जातस्य जन्तोर्जननोपकालात् ।
तस्मिन्प्रनष्टे सति जन्मकालो येनोच्यते नष्टकजातकं तत् ॥ २ ॥

जिस मनुष्य का गर्भाधान काल और जन्मकाल का निश्चय करके ज्ञान न हो उस का जन्मकाल नष्ट जातक से कहते हैं ।

जन्मकाल का ज्ञान होने से प्राणियों के शुभाशुभ फल का ज्ञान होता है । जन्मकाल अज्ञात होने पर जिस प्रकार से उस का ज्ञान होता है उस को "नष्ट जातक" कहते हैं ॥ १-२ ॥

लग्नराशिगुणकविधिमाह—

मेषादितः प्रश्नविलग्नलिप्ताः कार्याः क्रमात्ता मुनिभिः खचन्द्रैः।
गजैश्च वेदैर्दशभिश्च बाणैः शैलैर्भुजङ्गैः खचरैः शरैश्च ॥ ३ ॥
शिवैः पतङ्गैर्निहताः पुनस्ताः विलग्नगाश्चेद्भृगुभौमजीवाः।
तदा तुरङ्गैः करिभिः खचन्द्रैर्गुण्याः शरैरन्यखगा यदि स्युः ॥ ४ ॥

प्रश्नकालिक मेष आदि लग्न को कलात्मक बना कर क्रम से ७, १०, ८, ४, १०, ५, ७, ८, ९, ५, ११, १२ गुणा करने से गुणन फल जो हो उसको फिर लग्न में शुक्र हो तो ७ से, मङ्गल हो तो ८ से, गुरु हो तो १० से, शेषग्रह हों तो ५ से गुणा करना चाहिये ॥ ३-४ ॥

ग्रहगुणकांके विशेषमाह—

ग्रहद्वयं वा बहवो विलग्ने तदा तदीयैर्गुणकैश्च गुण्याः।
एवं कृते कर्मविधानयोग्यो राशिः पृथक्स्थः परिरक्षणीयः ॥ ५ ॥

यदि लग्न में दो या बहुत ग्रह बैठे हों तो प्रत्येक के गुणकाङ्क से गुणा कर कर्म के योग्य संख्या (पिण्ड) समझना चाहिये ॥ ५ ॥

प्रश्नलग्नकुण्डली—
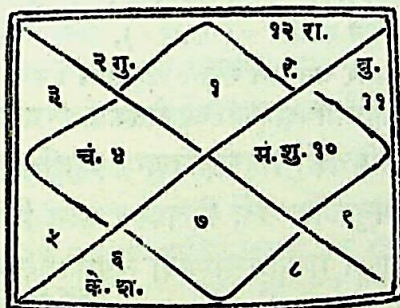
सम्वत् १९५० शाके १८१५ फाल्गुन शुक्ल दशमी घट्यादि मान ३२। ३४, पुनर्वसु नक्षत्र घट्यादि मान १४।५८, शोभनयोग घट्यादि मान २१। ४८, वणिज करण घट्यादि मान ४।४८, शुक्र दिन इष्ट घट्यादि मान ४।२०, मिश्र मान ४६।२, मिश्रेष्टान्तर धन ०।१४।१७, ततत्कालिक रवि ११।८।

५२।५५, दिनमान ३४।४, रात्रि मान २७।५६, अयनांश २२।५८।१५, प्रथम लग्न राश्यादि ०।११।१६।२०, दिन में पूर्वनत १५।४३ उन्नत १४।१७ दशम लग्न राश्यादि ६।०।१२।४६,

यहाँ लग्न ०।११।१६।२० की कला ६७६।२० को मेष के गुणाङ्क १० से गुणा करने से (६७६०।२००) = (६७६३।२०) इतना हुआ। यहाँ लग्न में कोई ग्रह नहीं है अतः यही (६७६३।२०) कर्म योग्य राशि पिण्ड हुआ ॥ ५ ॥

ततो नक्षत्रज्ञानमाह—

पृथक्स्थराशिर्मुनिभिर्विनिघ्नस्त्वाद्ये दृकाणे नव ९युक् द्वितीये ।
यथास्थितोऽयं नव ९ वर्जितोंत्ये भसंज्ञयाप्तो हि विशेषसूक्ष्मम् ॥६॥

पूर्वानीत राशि पिण्ड को सात से गुणा कर गुणन फल को लग्न में प्रथम द्रेष्काण हो तो ९, द्वितीय द्रेष्काण हो तो शून्य जोड़ देना चाहिये, और तृतीय द्रेष्काण हो तो ९ घटा देना चाहिये। उस में २७ का भाग देकर जो शेष बचे, वह अश्विन्यादि कर के प्रश्न कर्ता का जन्म नक्षत्र जानना चाहिये।

उदाहरण—पूर्वोक्त कर्मयोग्य राशि (६७६३।२०) को सात से गुणा किया तो (४७३४१।१४०) = (४७३४३।२०) गुणन फल हुआ, इस में २७ का भाग देने से शेष = (१६।२०), अतः प्रश्न कर्ता का गत नक्षत्र विशाखा और वर्तमान नक्षत्र अनुराधा सिद्ध हुआ ॥ ६ ॥

स्त्रीपुत्रमित्रशत्रूणां नष्टजातकप्रकारमाह—

स्त्रीपुत्रमित्रारिनिमित्तकं चेत्पृच्छाविलग्नं ऋतुभिश्च वेदैः ।
त्रिभिः शरैर्युक्तमनुक्रमेण ततो विलग्नस्य कला विधेयाः ॥ ७ ॥
लग्नस्य राशेर्गुणकेन गुण्याश्चेत्सम्भवो लग्नगतग्रहस्य ।
पुनस्तदीयेन गुणेन गुण्याः प्रागुक्तवद्धं परिवेदितव्यम् ॥ ८ ॥

यदि स्त्री पुत्र आदि का प्रश्न करे तो प्रश्न लग्न में ६ राशि जोड़ कर पूर्वोक्त रीति से राशिपिण्ड बनावे। पुत्र के लिये ४ राशि, मित्र के लिये ३ राशि, शत्रु के लिये ५ राशि जोड़ कर राशि पिण्ड बनावे। उस पर से नक्षत्र का ज्ञान करना चाहिये ॥ ७-८ ॥

वर्षज्ञानम्—

दशाहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेऽप्यथवाऽधिकेऽस्मिन् ।
खार्कैर्हृते शेषमिताब्दसङ्ख्यमायुर्गतं तत्खलु पृच्छकस्य ॥ ९ ॥

पूर्वानीत कर्म योग्य राशि पिण्ड में पूर्ववत् नव घटा या जोड़ कर जो हो उस को १० से गुणा कर १२० का भाग देने से जो शेष बचे उतने वर्ष की उमर प्रश्न कर्ता की होती है ॥ ६ ॥

उदाहरण—कर्म योग्य राशि पिण्ड (६७६३।२०) को १० से गुणा कर (६७६३०।२००)=(६७६३३।२०) हुआ, इस में १२० का भाग देने से शेष=(७३।२०) प्रश्न कर्ता की आयु सिद्ध हुई । इस को वर्तमान संवत् १६५० में घटाने से शेष १८७७ प्रश्न कर्ता का जन्म संवत् सिद्ध हुआ, यदि प्रश्न कर्ता को आयु अन्दाज दश वर्ष की ही हो तो नव को सप्त गुणित कर के ६३ शेष ७३ में घटाने से शेष १० प्रश्न कर्ता की आयु वर्ष सिद्ध हुई । इस को वर्तमान संवत् १६५० में घटाने से शेष १६४० उस का जन्म संवत् सिद्ध हुआ ।

यदि प्रश्न कर्ता की आयु अन्दाज २० वर्ष की हो तो नव को षड् गुणित करके ५४ शेष ७३ में घटाने से शेष १६ प्रश्न कर्ता की आयु सिद्ध हुई । इस को वर्तमान संवत् में घटाने से शेष जन्म संवत् होगा ······ ॥ ६ ॥

ऋतुज्ञानं मासज्ञानं चाह—

षड्भिर्विभक्ते ऋतवो भवन्ति शेषांकतुल्या शिशिरादयः स्युः ।
द्विभाजिते शेषकमेकमभ्रं पूर्वापरौ तदृतुजौ तु मासौ ॥ १० ॥

उसी दश गुणित कर्म योग्य राशि में ६ का भाग देने से शेष शिशिर आदि ऋतु समझना चाहिये । तथा उस शेष में २ का भाग देने से शेष १ होने से ऋतु का पहला मास, २ शेष होने से दूसरा मास समझना चाहिये ॥ १ ॥

उदाहरण—जैसे पूर्वानीत दश गुणित कर्म योग्य राशि (६७६३३।२०) में ६ का भाग देने से शेष १ होने के कारण शिशिर ऋतु सिद्ध हुआ । इस शेष १ में दो का भाग देने से शेष १ ही बचा, इस लिये शिशिरऋतु

का पहला मास माघ प्रश्न कर्ता का जन्म मास सिद्ध हुआ ॥ १० ॥

पक्षज्ञानम्—

अष्टाहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेऽप्यथवाऽधिकेऽस्मिन् ।
द्विभाजिते शेषकमेकमत्रं तुल्येऽस्ति पूर्वापरपक्षकौ स्तः ॥ ११ ॥

पूर्व सिद्ध कर्म योग्य राशि को आठ से गुणा कर द्रेष्काण वश नव जोड़ या घटा कर जो सिद्ध अङ्क हो उस में २ का भाग देने से शेष १ बचे तो शुक्ल पक्ष, दो बचे तो कृष्ण पक्ष समझना चाहिये ॥

उदाहरण—कर्मयोग्य राशि (६७६३ । २०) को ८ से गुणा कर (५४१०४।१६०=(५४१०६ । ४०), इस में २ का भाग देने से शेष ० रहा, इस लिये प्रश्न कर्ता का कृष्ण पक्ष में जन्म सिद्ध हुआ ॥ ११ ॥

तिथिज्ञानम्—

पञ्चेन्दुभक्ते सति शेषतुल्याः पक्षे च तस्मिंस्तिथयो भवन्ति ।
नक्षत्रतिथ्यानयनाय योग्यादहर्गणाद्वारविचारणात्र ॥ १२ ॥

अष्टगुणित कर्म योग्य राशि में १५ का भाग देने से शेष तुल्य तिथि समझना चाहिये ।

नक्षत्र, तिथि के ज्ञान हो जाने पर अहंगण से वार का ज्ञान करना चाहिये ॥

उदाहरण—जैसे अष्टगुणित कर्म योग्य राशि (५४१०६) में पन्द्रह का भाग देने से शेष १ बचा, इस लिये कृष्ण पक्ष की प्रतिपत् प्रश्न कर्ता की तिथि सिद्ध हुई ॥ १२ ॥

दिवारात्रिजन्मज्ञानम्—

सप्ताहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेऽप्यथवाधिकेऽस्मिन् ।
द्विभाजिते शेषकमेकमत्रं दिवा च रात्रौ जननं तदानीम् ॥ १३ ॥

सप्तगुणित कर्मयोग्य राशि में नव जोड़, घटा या यथास्थित रख कर जो हो उस में दो का भाग देने से शेष १ रहे तो दिन में और दो शेष रहे तो रात्रि में प्रश्न कर्ता का जन्म समझना चाहिये ।

उदाहरण—सप्त गुणित कर्म योग्य राशि ४७३४३ को लग्न

में द्वितीय द्रेष्काण होने के कारण यथास्थित रहने दिया तो ४७३४३ वैसा ही रहा । इस में दो का भाग देने से शेष १ बचा इस लिये प्रश्नकर्त्ता का जन्म दिन में सिद्ध हुआ ॥ १३ ॥

जन्मसमये-इष्टकालज्ञानम्—

पञ्चाहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेप्यथवाधिकेऽस्मिन् ।
दिनस्य रात्रेरथवा प्रमित्या भक्तेऽवशिष्टं दिनरात्रिनाड्यः ॥ १४ ॥

कर्म योग्य राशि को ५ से गुणा कर गुणन फल में नव जोड़, घटा कर या यथास्थित रख कर उस में दिन में जन्म काल सिद्ध हो तो दिन मान घटी से, रात्रि में जन्म काल सिद्ध हो तो रात्रि मान घटी से भाग दे कर जो शेष हो तत्तुल्य प्रश्नकर्ता के जन्मेष्टकाल कहना चाहिये ॥

उदाहरण—कर्मयोग्य राशि (६७६३।२०) को ५ से गुणा कर ने से (३३८१५।१००)=(३३८१६।४०) इतना हुआ । इस को लग्न में द्वितीय द्रेष्काण होने के कारण यथास्थित रहने दिया । इस में दिनमाव घटी ३४ से भाग देने से शेष = (२०।४०) जन्मेष्ट काल सिद्ध हुआ । इस तरह प्रश्न कर्ता का ठीक २ जन्म समय का ज्ञान कर के फला देश करना चाहिये ॥ १४ ॥

इति नष्टजातकाध्यायः

अथ निर्य्याणाध्यायः ।

दिनकरप्रमुखैर्निधनस्थितैर्भवति मृत्युरिति प्रवदेत्क्रमात् ।
अनलतो जलतो करवालतो ज्वरभवो गदतः क्षुधया तृषा ॥ १ ॥

अष्टम भाव से मरण कालिक रोग का ज्ञान करते हैं । यदि अष्टम भाव में रवि हो तो अग्नि से, चन्द्रमा हो तो जल से, मङ्गल हो तो शस्त्र से, बुध हो तो ज्वर से, बृहस्पति हो तो रोग से, शुक्र हो तो क्षुधा से और शनि अष्टम भाव में हो तो तृषा से दुखी हो कर मृत्यु होती है ॥ १ ॥

मरणदेशज्ञानम्—

स्थिरश्चरो द्व्यङ्गसमह्वयश्च राशिर्यदा जन्मनि चाष्टमस्थः ।

स्वकीयदेशे विषयांतरे च मार्गे प्रकुर्य्यान्मरणं क्रमेण ॥ २ ॥

यदि अष्टम भाव में स्थिर राशि हो तो अपने निवास स्थान में, चर राशि हो तो देशान्तर में और द्विस्वभाव राशि हो तो रास्ता में मृत्यु होती है ॥ २ ॥

आयुर्गृहं खेटविवर्जितं च विलोकयेद्वा बलवान्ग्रहेन्द्रः ।
तद्धेतुजातं प्रवदन्ति मृत्युं बहुप्रकारं बहवो बलिष्ठाः ॥ ३ ॥

यदि अष्टम स्थान ग्रह रहित हो तो उस पर जिस ग्रह की दृष्टि हो उस के कारण से मृत्यु होती है। यदि अष्टम स्थान बहुत ग्रह से युत दृष्ट हो तो अनेक प्रकार के रोग से मनुष्य की मृत्यु होती है ॥३॥

मरणहेतुज्ञानम्—

पित्तं कफः पित्तमथ त्रिदोषः श्लेष्मानिलौ वाप्यनिलः क्रमेण ।
सूर्यादिकेभ्यो मरणस्य हेतुः प्रकल्पितः प्राक्तनजातकज्ञैः ॥ ४ ॥

अब किस दोष से मृत्यु होगी इस का ज्ञान करते हैं। अष्टम भाव में सूर्य हो तो पित्त से, चन्द्रमा हो तो कफ से, मङ्गल हो तो पित्त से, बुध हो तो त्रिदोष से, गुरु हो तो कफ से, शुक्र हो तो वात से और शनि हो तो भी वात से मृत्यु होती है ॥ ४ ॥

युक्तं नैवालोकितं खेचरेन्द्रैर्मृत्युस्थानं यो विलग्ने दृकाणः ।
द्वाविंशोऽस्मात्सोऽपि तस्यापि भर्ता कुर्य्यान्मृत्युं हेतुना स्वेन नूनम् ।५।
अनलतो जलतो यदुदीरितं भवति तत् त्रिलवाधिपहेतुकम् ।
अथ दृकाणफलानि सविस्तरं मुनिवरैरुदितानि वदाम्यहम् ॥ ६ ॥

यदि अष्टम स्थान किसी भी ग्रह से युत दृष्ट न हो तो लग्न में जो द्रेष्काण हो उस से २२ वाँ द्रेष्काण का जो स्वामी हो उस ग्रह के कारण से (अनलतो जलत इत्यादि हेतु से) मृत्यु होती है। इस के बाद मुनि कथित द्रेष्काण फल को सविस्तर कहता हूँ ॥ ५-६ ॥

मेषस्य द्रेष्काणफलम्—

मेषस्य पूर्वत्रिलवे न दृष्टे शुभग्रहैः पापनिरीक्ष्यमाणे ।

प्लीहोद्भवो वा विषपित्तजो वा मृत्युस्तदानीं परिवेदितव्यः ॥ ७ ॥
मेषे द्वितीये जलजो वनांते तृतीयके कूपतडागजातः।

यदि जन्म काल में मेष राशि का प्रथम द्रेष्काण हो उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि न हो और पाप ग्रह की दृष्टि हो तो प्लीहा, विष या पित्त से, द्वितीय द्रेष्काण हो तो जल से और तृतीय द्रेष्काण हो तो कूप या तालाव से मृत्यु होती है ॥ ७ ॥

वृषद्रेष्काणफलम्—

वृषस्य पूर्वे त्रिलवे खराश्वक्रमेलकादिप्रभवो हि मृत्युः ॥ ८ ॥
द्वितीयके पित्तहुताशचौरैरुच्चस्थलाश्वादिभवस्तृतीये।

वृष का प्रथम द्रेष्काण हो तो गदहे, घोड़े, ऊँट के सम्बन्ध से, द्वितीय द्रेष्काण हो तो पित्त, अग्नि, चोर से और तृतीय द्रेष्काण हो तो उच्च स्थान से या घोड़े से मृत्यु होती है ॥ ८½ ॥

मिथुनद्रेष्काणफलम्—

आद्ये दृकाणे मिथुने च वातश्वासैर्द्वितीये मिथुने त्रिदोषैः ॥ ९ ॥
गजादितः पर्वतपाततो वा भवेदरण्ये मिथुनांतदृक्के।

मिथुन का प्रथम द्रेष्काण हो तो वात, श्वास से, द्वितीय द्रेष्काण हो तो त्रिदोष से और तृतीय द्रेष्काण हो तो वन में हाथी या पर्वत से मृत्यु होती है ॥ ९½ ॥

कर्कद्रेष्काणफलम्—

अपेयपानादपि कण्टकाच्च स्वप्नाच्च कर्कप्रथमे दृकाणे ॥ १० ॥
विषादिदोषादतिसारतो वा कर्कस्य मध्यत्रिलवे मृतिः स्यात्।
महाभ्रमप्लीहकगुल्मदोषैः कर्कांशदृक्के निधनं निरुक्तम् ॥ ११ ॥

कर्क राशि का प्रथम द्रेष्काण हो तो विष आदि के पीने से, काँटे से या स्वप्न से, द्वितीय द्रेष्काण हो तो विष या अतिसार से और तृतीय द्रेष्काण हो तो भ्रम, प्लीहा या गुल्म रोग से मृत्यु होती है ॥

सिंहद्रेष्काणफलम्—

विषाम्बुरोगैः श्वसनाम्बुरोगैरपानपीडाविषशस्त्रकैश्च।

क्रमेण सिंहस्थदृकाणकेषु नूनं मुनीन्द्रैर्मरणं प्रदिष्टम् ॥ १२ ॥

सिंह का प्रथम द्रेष्काण हो तो विष या जल रोग से, द्वितीय द्रेष्काण हो तो श्वास या जल रोग से और तृतीय द्रेष्काण हो तो गुद-मार्ग के पीड़ा, विष या शस्त्र से मृत्यु होती है ॥ १२ ॥

कन्याद्रेष्काणफलम्—

कन्याद्यदृक्केऽनिलमौलिरुग्जो दुर्गाद्रिपाताच्च नृपैर्द्वितीये ।
खरोष्ट्रशस्त्राम्बुनिपातकान्तानिमित्तजातं निधनं तृतीये ॥ १३ ॥

कन्या का प्रथम द्रेष्काण हो तो वात या मस्तक के पीड़ा से, द्वितीय द्रेष्काण हो तो दुर्ग, पर्वत या राजा से और तृतीय द्रेष्काण हो तो गदहा, ऊंट, अस्त्र, जल में गिरने या स्त्री के कारण मृत्यु होती है ॥

तुलाद्रेष्काणफलम्—

तुलादृकाणे प्रथमे निपातात्कलत्रतो वा पशुतोऽपि मृत्युः ।
नूनं द्वितीये जठरामयैश्च व्यालाज्जलाच्चापि भवेत्तृतीये ॥ १४ ॥

तुला राशि का प्रथम द्रेष्काण हो तो पतन स्त्री या पशु से, द्वितीय द्रेष्काण हो तो पेट के रोग से और तृतीय द्रेष्काण हो तो सर्प या जल से मृत्यु होती है ॥ १४ ॥

वृश्चिकद्रेष्काणफलम्—

पूर्वे दृकाणे खलु वृश्चिकस्य मृत्युर्विषान्नास्त्रभवोऽन्यगम्यः ।
भारश्रमाद्वा कटिवस्तिरोगैर्भवेद्द्वितीये त्रिलवे तु मार्गे ॥ १५ ॥
जङ्घास्थिभङ्गाश्मकलोष्टकाष्ठैर्भवेत्तृतीये त्रिलवेऽलिराशेः ।

वृश्चिक राशि का प्रथम द्रेष्काण हो तो विष, अन्न या अस्त्र से, द्वितीय द्रेष्काण हो तो रास्ते में कमर या वस्ति के पीड़ा से और तृतीय द्रेष्काण हो तो जाँघ के हड्डी टूटने से या पत्थल, ढेला, काष्ठ के आघात से मृत्यु होती है ॥ १५½ ॥

धनुर्द्रेष्काणफलम्—

आद्ये दृकाणे धनुषो मृतिः स्याद् गुदामयैश्चापि मरुद्विकारैः ॥१६॥

विदाहतो वा विषतः शराद्वा नाशो दृकाणे धनुषो द्वितीये ।
भवेज्जलाद्वा जलचारिणो वा क्रोडामयाद्वा धनुषस्तृतीये ॥ १७ ॥

धनु का प्रथम द्रेष्काण हो तो गुदा के रोग या वात से, द्वितीय द्रेष्काण हो तो ताप, विष या शर से और तृतीय द्रेष्काण हो तो जल, जलजन्तु या उदर रोग से मृत्यु होती है ॥ १६-१७ ॥

मकरद्रेष्काणफलम्—

पूर्वे दृकाणे मकरस्य सिंहाद्व्याघ्राद्वराहाद्वृकतो द्वितीये ।
पादैर्भुजङ्गैश्च तथा तृतीये चोराग्निशस्त्रज्वरतो हि मृत्युः ॥ १८ ॥

मकर का प्रथम द्रेष्काण हो तो बाघ, सिंह या सूकर से, द्वितीय द्रेष्काण हो तो पैरों में पीड़ा या सर्प से और तृतीय द्रेष्काण हो तो चोर, अग्नि, शस्त्र या ज्वर से मृत्यु होती है ॥ १८ ॥

कुम्भद्रेष्काणफलम्—

कुम्भस्य पूर्वे त्रिलवे तु पत्नीसुतोदरव्याधिकृतो द्वितीये ।
गुह्यामयात्पर्वतपातनाद्वा विपात्तृतीये मुखरुक्पशुभ्यः ॥ १९ ॥

कुम्भ राशि का प्रथम द्रेष्काण हो तो स्त्री, पुत्र या पेट के रोग से, द्वितीय द्रेष्काण हो तो गुप्त रोग या पहाड़ से गिरने से और तृतीय हो तो मुख के रोग या पशुओं से मृत्यु होती है ॥ १९ ॥

मीनद्रेष्काणफलम्—

मीनाद्यदृक्के ग्रहणीप्रमेहगुल्माङ्गनाभ्यश्च भवेद्द्वितीये ।
जलोदराद्यैश्च गजग्रहैर्वा जलस्य मध्येऽपि च नौप्रभेदात् ॥ २० ॥
प्रान्त्ये दृकाणे पृथुरोमसंस्थे मृत्युः कुरोगैः परिवेदितव्यः ।
एवं तदानीं निधनं न युक्तं नैव प्रदृष्टं गगनेचरेन्द्रैः ॥ २१ ॥

मीन राशि का प्रथम द्रेष्काण हो तो ग्रहणी, प्रमेह, गुल्म या स्त्री के कारण, द्वितीय द्रेष्काण हो तो जलोदर आदि रोग, हाथी, जल, या नौका से और तृतीय द्रेष्काण हो तो खराब रोग से मृत्यु होती है ॥

यदि अष्टम स्थान किसी ग्रह से युक्त दृष्ट न हो तो पूर्वोक्त फल समझना चाहिए ॥ २०-२१ ॥

शोषान्मृत्युयोगः—

पापान्तरे शीतकरे कुमार्यां शोषान्मृतिर्वा रुधिरप्रकोपात् ।

कन्या राशि में स्थित हो कर चन्द्रमा दो पाप ग्रह के मध्य में हो तो शोष या रक्त विकार से मृत्यु होती है ॥ २१½ ॥

पाशहुताशनाभ्यां मृत्युयोगः—

शुभान्तरे शीतकरेऽष्टमस्थे पातेन पाशेन हुताशनेन ॥ २२ ॥

अष्टम भाव में स्थित हो कर चन्द्रमा यदि दो शुभ ग्रह के मध्य में हो तो गिरने से, फाँसी या अग्नि से मृत्यु होती है ॥ २२ ॥

भुजङ्गपाशान्मृत्युयोगः—

पापेक्षितौ पापखगौ त्रिकोणे यद्वाष्टमे बन्धभुजङ्गपाशात् ।
दृक्काणकाः स्युर्जनने हि यस्य कारागृहे स्यान्मरणं हि तस्य ॥२३॥

नवम, पञ्चम या अष्टम भाव में दो पाप ग्रह बैठे हों और उन पर अन्य पाप ग्रह की दृष्टि हो तो बन्धन, सर्प या फाँसी से मृत्यु होती है। अष्टम भाव में पाश, निगड़ या सर्प द्रेष्काण हो उस में पाप ग्रह बैठा हो तो द्रेष्काण के समान बन्धन से मृत्यु होती है। पाश द्रेष्काण हो तो फाँसी से, निगड़ द्रेष्काण हो तो बेड़ी से और सर्प द्रेष्काण हो तो सर्प से मृत्यु होती है ॥ २३ ॥

भार्याकृतमरणयोगः—

मीनोदयेऽर्केऽस्तगते मृगाङ्के सपापके चास्फुजिति क्रियस्थे ।
भार्याकृतं स्यान्मरणं स्वगेहे वदन्ति सर्वे मुनयः पुराणाः ॥ २४ ॥

जिस के जन्म काल में मीन लग्न में सूर्य, सप्तम भाव में चन्द्रमा, पाप ग्रह से युत शुक्र मेष में हो तो स्त्री के सम्बन्ध से मनुष्य की मृत्यु होती है ॥ २४ ॥

शूलेन मृत्युयोगः—

क्षीणेन्दुमन्दौ गगने चतुर्थे दिनाधिराजोऽवनिजोऽथवा स्यात् ।
मूर्तित्रिकोणायगताः खलाख्याः शूलस्य मौलौ प्रलयं प्रयान्ति ॥२५॥

क्षीण चन्द्रमा, शनि या रवि, मङ्गल क्रम से दशम, चतुर्थ भाव

में हों अथवा लग्न, नवम, पञ्चम, एकादश इन भावों में पाप ग्रह हों तो मस्तक में शूल रोग से मरण होता है ॥ २५ ॥

काष्ठेन मृत्युयोगः—

मेषूरणस्थे धरणीतनूजे दिवामणौ भूतलभावसंस्थे।
क्षीणेन्दुमन्दप्रविलोक्यमाने काष्ठाभिघातेन वदन्ति मृत्युम् ॥२६॥

यदि दशम भाव में मङ्गल, चतुर्थ भाव में सूर्य हो उन पर क्षीण चन्द्रमा और शनि की दृष्टि हो तो काष्ठ के आघात से मृत्यु होती है॥

अनेकरोगान्मृत्युयोगः—

क्षीणेन्दुभौमार्किदिवाकरैः स्यादायुःखलग्नाम्बुगतैर्गदाद्यैः।
मृत्युः खपुण्योदयपञ्चमस्थैस्तैरेव नानाविधिकुट्टनेन ॥ २७ ॥

जिस मनुष्य के जन्म काल में क्षीण चन्द्रमा, मङ्गल, शनि, सूर्य क्रम से अष्टम, दशम, लग्न, चतुर्थ में बैठे हों तो अनेक रोग से मृत्यु होती है।

यदि पूर्वोक्त ग्रह क्रम से दशम, नवम, लग्न, पञ्चम में स्थित हों तो अनेक प्रकार के रोग से मृत्यु होती है ॥ २७ ॥

शस्त्रहुताशनभूपप्रकोपेन मृत्युयोगः—

भूसूनुसूर्य्यार्कसुता यदि स्युश्चतुर्थजामित्रनभोगृहस्थाः।
कुर्वन्ति ते शस्त्रहुताशभूपप्रकोपजातं नियमेन मृत्युम् ॥ २८ ॥

यदि मङ्गल, सूर्य, शनि क्रम से चतुर्थ, सप्तम, दशम में हो तो शस्त्र, अग्नि, और राजा के कोप से मृत्यु होती है ॥ २८ ॥

प्रवासेऽग्निवाहनेन मृत्युयोगः—

कुजेन्दुमन्दाः खजलाद्रिसंस्थाः कृमिक्षतैस्ते मरणं प्रकुर्युः।
मेषूरणस्थै रविभौमसोमैर्भवेत्प्रवासेऽनलवाहनाद्यैः ॥ २९ ॥

मङ्गल, चन्द्रमा, शनि क्रम से दशम, चतुर्थ, द्वितीय में स्थित हों तो कीड़े के घाव से मृत्यु होती है।

रवि, मङ्गल, चन्द्रमा ये तीनों दशम भाव में स्थित हों तो विदेश में अग्नि या वाहन से मृत्यु होती है ॥ २९

यन्त्रोत्पीडनेन मृत्युयोगः—

क्षीणेंदुमन्दार्कयुते विलग्ने भूमीसुते सप्तमभावयाते ।
विनाशनं यन्त्रनिपीडनेन भवेदवश्यं परिवेदितव्यम् ॥ ३० ॥

यदि क्षीण चन्द्रमा, शनि, सूर्य ये तीनों लग्न में और मङ्गल सप्तम भाव में स्थित हो तो मशीन से पीड़ा पाकर मृत्यु होती है ॥ ३० ॥

विण्मूत्रप्रदेशे मृत्युयोगः—

भौमे तुलायां च यमे च कर्के प्रालेयरश्मौ रविजालयस्थे ।
विण्मूत्रितासंकुलितप्रदेशेऽवश्यं विनाशः परिवेदितव्यः ॥ ३१ ॥

मङ्गल तुला में, कर्क में शनि, और मकर या कुम्भ में चन्द्रमा हो तो विष्ठा मूत्र से भड़ी हुई भूमि में मृत्यु होती है ॥ ३१ ॥

वनांतराले मृत्युयोगः—

मेषूरणास्ताम्बुगृहैः क्रमेण क्षीणेंदुमन्दाऽवनिपुत्रयुक्तैः ।
दुर्गांतराले च शिलोच्चये वा वनांतराले प्रलयः किल स्यात् ॥३२॥

क्षीण चन्द्रमा, शनि, मङ्गल ये क्रम से दशम, सप्तम, चतुर्थ में स्थित हो तो दुर्ग स्थान पर्वत या जङ्गल में मृत्यु होती है ॥ ३२ ॥

गुह्यरोगान्मृत्युयोगः—

बलोपपन्नावनिसूनुदृष्टे क्षीणे विधौ रन्ध्रगतेऽर्कपुत्रे ।
गुह्यामयाद्वा कृमिहेतुतो वा भवेदवश्यं मरणं रणाद्वा ॥ ३३ ॥

क्षीण चन्द्रमा, शनि दोनों अष्टम में स्थित हो कर बली मङ्गल से देखे जाते हों तो गुप्त रोग, कीड़ा के कारण या युद्ध से मरण होता है ॥ ३३ ॥

विहंगेनाश्वपदकारणेन च मृत्युयोगः—

मित्रे कलत्रोपगते स भौमे मन्देऽष्टमस्थे च विधौ चतुर्थे ।
विहङ्गमश्वापदकारणेन निर्याणमाहुर्मुनयः पुराणाः ॥ ३४ ॥

मङ्गल और रवि सप्तम भाव में, शनि अष्टम में और चन्द्रमा चतुर्थ में हो तो पक्षी या बाघ आदि हिंसक प्राणियों से मृत्यु होती है ॥३४॥

पर्वतादिपतनेन मृत्युयोगः—

लग्नाष्टमत्रिकोणेषु भानुभौमार्कजेन्दुभिः।
पार्वतीयो भवेन्मृत्युर्भित्तिपातभवोऽथवा ॥ ३५ ॥

सूर्य, मङ्गल, शनि, चन्द्रमा ये क्रम से लग्न, अष्टम, पञ्चम, नवम में स्थित हों तो पर्वत या दीवाल के गिरने से मृत्यु होती है ॥ ३५ ॥

तीर्थमरणयोगः—

सौम्येऽष्टमस्थे शुभदृष्टियुक्ते धर्मेश्वरे वा शुभखेचरेन्द्रे।
तीर्थे मृतिः स्याद्यदि योगयुग्मं तीर्थे हि विष्णुस्मरणेन मृत्युः ॥३६॥

अष्टम भाव में स्थित हो कर बुध यदि शुभ ग्रह से दृष्ट युक्त हो अथवा नवम भाव का स्वामी शुभ ग्रह हो तो तीर्थ में मृत्यु होती है। दोनों योग यदि हो तो विष्णु भगवान् के स्मरण पूर्वक मृत्यु होती है ३६

स्त्रियाः सतीत्वयोगः—

धर्मस्वामी धर्मगो धर्मसंस्थौ सूर्यक्ष्माजौ चेत्तदाग्निप्रवेशम्।
कुर्यात्पत्नी लग्नजामित्रनाथौ मित्रे स्यातां नान्यथा सद्भिरुक्तम् ॥३७॥

नवमेश, सूर्य, मङ्गल तीनों नवम, भाव में हों और लग्नेश, सप्तमेश दोनों में मित्रता हों तो मृत्यु होने पर उस की स्त्री अग्नि प्रवेश करती है। लग्नेश, सप्तमेश दोनों में मित्रता न हो तो अग्नि में प्रवेश नहीं करती है ॥ ३७ ॥

इति निर्याणाध्यायः

अथ चन्द्रकृतनिर्याणाध्यायः

इति प्रणीतं निर्य्याणं प्राचीनमुनिसंमतम्।
यवनैरुदितं यत्र सविस्तरमथोच्यते ॥ १ ॥

इस प्रकार प्राचीन मुनियों के कथनानुसार निर्याण कहा है, अब यवनाचार्योक्त निर्याण कहता हूँ। ॥ १ ॥

फलसहितमेषराशिस्थितचन्द्रनिर्याणम्—

धनवान्पुत्रवानुग्रः परोपकरणे रतः।

सर्वकर्मसमायुक्तः सुशीलो राजवल्लभः ॥ २ ॥
गुणाभिरामः सततं देवब्राह्मणपूजकः ।
कोष्णशाकाल्पभोक्ता च ताम्रविस्तृतलोचनः ॥ ३ ॥
शूरः शीघ्रप्रमादी च कामी दुर्बलजानुकः ।
शिरोव्रणयुतो दाता कुनखी सेवकप्रियः ॥ ४ ॥
द्विभार्यः सङ्गरे भीरुश्चपलो नितरां भवेत् ।
प्रथमे सप्तमे वर्षे त्रयोदशमिते ज्वरः ॥ ५ ॥
षोडशे वा सप्तदशे वर्षे स्यात्तु विषूचिका ।
तृतीये द्वादशे वापि जलाद्भीतिः प्रजायते ॥ ६ ॥
पञ्चविंशन्मिते वर्षे सन्तानं च निशान्धता ।
द्वात्रिंशत्प्रमिते वर्षे शस्त्रघातः प्रजायते ॥ ७ ॥
कार्यारम्भप्रलापी च विदेशगमने रतः ।
कृशांगः शीघ्रगो मानी शुभलक्षणसंयुतः ॥ ८ ॥
वाताधिक्यः शुभैर्दृष्टे चन्द्रे नवतिसंमिते ।
आयुस्तस्य विनिर्देश्यं कार्तिकस्य सितेतरे ॥ ९ ॥
पक्षे बुधे नवम्यां च निशीथे च शिरोरुजा ।
निधनं जायते नूनं जन्मनीन्दावजस्थिते ॥ १० ॥

जिस के जन्म काल में मेष राशि का चन्द्रमा हो वह धनवान्, पुत्रवान्, उग्र, परोपकार करने में निरत, सब कार्य करने वाला, सुशील, राजा का प्रिय, गुणी, देवता ब्राह्मण का भक्त, उष्ण शाक और थोड़ा भोजन करने वाला, ताम्रवर्ण के बड़े २ नेत्र वाला, शूर, शीघ्र प्रमाद में पड़ने वाला; कामी, दुर्बल जानुवाला, शिर व्रण वाला, दानी, कुनखी, सेवकों का स्नेही, दो स्त्री वाला, संग्राम में डरने वाला, सदा चञ्चल, जन्म से १, ७, १३ वर्ष में ज्वर, १६, १७ वर्ष में विसूचिका ३, १२ वर्ष में जल में डूबने का भय, २५ वर्ष में सन्तान को उत्पत्ति

और रक्तोन्ध, ३२ वर्ष में शस्त्रघात, कार्यों के आरम्भ में प्रलाप करने वाला, विदेश यात्रा में निरत, दुर्बल शरीर वाला, शीघ्र गमन करने वाला, मानी, शुभ लक्षण से युक्त तथा वात व्याधी मनुष्य होता है।

यदि चन्द्रमा के ऊपर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो ६० वर्ष का आयुर्दाय होता है। कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, बुधवार, नवमी तिथि, मध्य रात्रि के समय में शिर के रोग से मृत्यु होती है॥ २-१० ॥

वृषराशिस्थितचन्द्रनिर्याणम्—

अल्पतेजा नरः स्तब्धः कर्मशुद्धिविवर्जितः।
सत्यवागर्थवान्कामी कामिनीवचनानुगः॥ १ ॥
चिरायुरल्पकेशश्च परोपकरणे रतः।
पितुर्मातुर्गुरूणां च भक्तो भूपतिवल्लभः॥ २ ॥
सभायां चतुरो नित्यं सन्तुष्टो येन केनचित्।
पीडास्यात्प्रथमे वर्षे तृतीयेऽग्निभयं दिशेत्॥ ३ ॥
विसूचिकाभयं विद्यात्सप्तमे नवमे व्यथा।
दशमे रुधिरोद्गारो द्वादशे पतनं तरोः॥ ४ ॥
सर्पाच्च षोडशे भीतिः पीडा चैकोनविंशके।
पञ्चविंशन्मिते तोयाद्भयं भवति निश्चितम्॥ ५ ॥
त्रिंशन्मिते तथा पीडा द्वात्रिंशत्प्रमितेऽपि च।
श्लेष्मलः शान्तिभाक्छूरः सहिष्णुर्बुद्धिमान्नरः॥ ६ ॥
सौम्यग्रहेक्षिते चन्द्रे षण्णवत्यब्दसंख्यया।
आयुर्जन्तोर्विनिर्देश्यमवश्यं वचनात्सताम्॥ ७ ॥
माघमासे नवम्यां च शुक्ले पक्षे भृगोर्दिने।
रोहिण्यां निधनं विद्याज्जन्मनीन्दौ वृषस्थिते॥ ८ ॥

जिस के जन्म काल में वृष राशि का चन्द्रमा हो तो मनुष्य अल्प तेज वाला, स्तब्ध, कर्म शुद्धि से हीन, सत्य बोलने वाला, धनी कामी,

स्त्री के वचन में रहने वाला, दीर्घ जीवी, थोड़े केश वाला, परोपकारी, पिता, माता और गुरु का भक्त, राजा का प्रिय, सभा में चतुर, थोड़े से भी सन्तुष्ट होता है।

१ वर्ष में पीड़ा, ३ वर्ष में अग्निभय, ७ वर्ष में विसूचिका, ६ वर्ष में पीड़ा, १० वर्ष में रक्त विकार, १२ वर्ष में पेड़ से गिरना, १६ वर्ष में सर्प का भय, २१ वर्ष में पीड़ा, २५ वर्ष में जल भय, ३०, ३२ वर्ष में पीड़ा, कफी, शान्त, शूर, क्षमाशील तथा बुद्धिमान् होता है। यदि चन्द्र के ऊपर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो ६६ वर्ष का आयुर्दाय होता है।

माघ मास, शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि, रोहिणी नक्षत्र में मनुष्य का मरण होता है ॥ १-८ ॥

मिथुनराशिस्थितचन्द्रनिर्याणम्—

ग्रामण्यां चतुरः प्राज्ञो दृढसौहृदकारकः ।
मिष्टान्नाशी सुशीलश्च छिन्नवाक्चललोचनः ॥ १ ॥
कुटुम्बवत्सलः कामी कुतूहलरतिप्रियः ।
वयसः पूर्वभागे तु सुखी मध्ये तु मध्यमः ॥ २ ॥
चरमेऽतितरां दुःखी द्विभार्यो गुरुवत्सलः ।
स्वल्पापत्यो गुणैर्युक्तो नरो भवति निश्चितम् ॥ ३ ॥
वृक्षाद्धीः पञ्चमे वर्षे षोडशेऽरिकृतं भयम् ।
अष्टादशप्रमाणे तु कर्णरुक्परिपीडनम् ॥ ४ ॥
विंशत्या प्रमिते वर्षे पीडात्यंतं प्रजायते ।
अष्टत्रिंशन्मिते नूनं पीडा स्यान्मृतुना समा ॥ ५ ॥
भोगी दानरतो नित्यं सत्यधर्मपरायणः ।
सुभगो विषयासक्तो गीतनृत्यप्रियः सुधीः ॥ ६ ॥
शास्त्रज्ञः शुभवाग्जीवेदशीतिः शरदां नरः ।
वैशाखे शुक्लपक्षे च द्वादश्यां बुधवासरे ॥ ७ ॥

मध्याह्ने हस्तनक्षत्रे निर्याणं खलु निर्दिशेत्।
इत्युक्तं मिथुनस्थे तु जन्मकाले कलानिधौ ॥ ८ ॥

जिसके जन्म काल में मिथुन का चन्द्रमा हो वह चतुर, पण्डित, दृढ मैत्री करने वाला, मिष्टान्न भोजन करने वाला, सुशील, थोड़ा वाक्य बोलने वाला, चञ्चल नेत्र वाला, बन्धुओं का पालक, कामी, उत्कण्ठा युक्त, रति का प्रेमी, पूर्व अवस्था में सुखी, मध्य में मध्यम सुख, अन्त में दुखी, दो स्त्री वाला, गुरु का भक्त, थोड़ी सन्तान वाला और गुणवान् होता है। ५ वर्ष में वृक्ष का भय, १६ वें वर्ष में शत्रु का भय, १८ वें वर्ष में कर्ण रोग, २० वें वर्ष में विशेष पीड़ा, ३८ वें वर्ष में मरण तुल्य कष्ट, भोगी, दाता, सत्य धर्म में निरत, सुन्दर, विषयी, गान नाच का स्नेही, बुद्धिमान्, शास्त्र को जानने वाला, प्रिय बोलने वाला और ८० वर्ष की आयु होती है।

वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, द्वादशी तिथि, बुध दिन, हस्त नक्षत्र, मध्यान्ह समय में उस की मृत्यु होती है ॥ १-८ ॥

कर्कराशिस्थितचन्द्रनिर्य्याणमाह—

परोपकृतिकर्ता च सर्वसंग्रहतत्परः।
पुत्रवान्गुणवान्साधुर्भक्तः पित्रोः स्त्रिया जितः ॥ १ ॥
अल्पायुः प्रथमे भागे निःस्वो मध्ये सुखी भवेत्।
तृतीये धर्मसंसक्तस्तीर्थयात्रापरायणः ॥ २ ॥
रेखा तस्य भवेन्नूनं ललाटे मध्यगामिनी।
वामाङ्गेऽग्निभयं विद्याच्छीर्षरुक्परिपीडितः ॥ ३ ॥
बान्धवैर्बहुभिर्युक्तो बहुभार्यः प्रजायते।
भग्रहस्थितिवेत्ता च बहुमित्रः प्रियंवदः ॥ ४ ॥
रोगी स्यात्प्रथमे वर्षे तृतीये लिंगपीडनम्।
एकत्रिंशन्मिते वर्षे सर्पतो भयमादिशेत् ॥ ५ ॥

द्वात्रिंशत्प्रमिते वर्षे बहुपीडोद्भवो भवेत् ।
पंचाशीतिमितं ब्रूयादायुः षण्णवतिश्च वा ॥ ६ ॥
माघे मासि सिते पक्षे नवम्यां भृगुवासरे ।
रोहिणीनामनक्षत्रे व्रजेदायुः प्रपूर्णताम् ॥ ७ ॥
प्रसूतौ कर्कराशिस्थे कुमुदानन्दने सति ।
पुराणैर्मुनिभिः प्रोक्तं निर्याणमिति निश्चितम् ॥ ८ ॥

जिस के जन्म काल में कर्क का चन्द्रमा हो वह परोपकारी, सब वस्तुओं का संग्रह करने वाला, पुत्रवान्, गुणवान्, सज्जन, पिता माता का भक्त, स्त्री के वश में रहने वाला, अल्पायु, बाल्य काल में निर्धन, मध्य में सुखी, अन्त में धर्म में निरत, तीर्थ यात्रा करने वाला, ललाट के मध्य में रेखा वाला, वाम अङ्ग में अग्नि का भय, मस्तक में रोग से पीड़ित, बहुत बन्धुओं से युक्त, बहुत स्त्री वाला, ज्योतिष शास्त्र को जानने वाला, प्रिय बोलने वाला और बहुत मित्र वाला होता है। १ वर्ष में रोगी, ३ वर्ष में लिङ्ग में रोग, ३१ वें वर्ष में सर्प भय, ३२ वें वर्ष में अधिक पीड़ा और ८५ वर्ष से ९६ वर्ष तक की आयु होती है। माघ मास, शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि, शुक्र वार, रोहिणी नक्षत्र में मनुष्य की मृत्यु होती है॥ १–८ ॥

सिंहराशिगतचंद्रनिर्य्याणमाह—

धनधान्यसमायुक्तः श्रामांश्च समरप्रियः ।
विद्वान्सर्वकलाभिज्ञो विदेशगमने रतः ॥ १ ॥
विशालः पिङ्गलाक्षश्च क्रोधी स्वल्पात्मजो नरः ।
सर्वगः शत्रुहंता च शिरोरुङ्निष्ठुरो महान् ॥ २ ॥
भूताद्बाधादिमे वर्षे पंचमेऽब्देऽग्नितो भयम् ।
सप्तमे ज्वरबाधा च नृणां भवति निश्चितम् ॥ ३ ॥
विषूचिकोद्भवा पीडा नृणां भवति निश्चितम् ।

विंशन्मिते भयं सर्पादेकविंशे भपीडनम् ॥ ४ ॥
अष्टाविंशन्मिते वर्षे चापवादभयान्वितः।
द्वात्रिंशत्समिते नूनं वत्सरे परिपीडनम् ॥ ५ ॥
उदरे सव्यभागे तु वातगुल्मादिसंभवः।
सुशीलः कृपणोत्यंतं सत्यवादी विचक्षणः ॥ ६ ॥
शुभग्रहेक्षिते चंद्रे शतायुर्जायते नरः।
फाल्गुनस्यासिते पक्षे पंचम्यां भौमवासरे ॥ ७ ॥
मध्याह्ने जलमध्ये च मृत्युर्नूनं न संशयः।
सिंहराशिस्थिते चंद्रे निर्याणमिदमीरितम् ॥ ८ ॥

जिस के जन्म काल में सिंह राशि का चन्द्रमा हो वह धन धान्य से युक्त, श्रीमान्, संग्राम का प्रेमी, विद्वान्, सब कलाओं को जानने वाला, विदेश में रहने वाला, विशाल शरीर वाला, पीत वर्ण के नेत्र वाला, क्रोधी, थोड़ी सन्तान वाला, सब जगह जाने वाला, शत्रुओं को मारने वाला, मस्तक रोगी, और निष्ठुर होता है। १ वर्ष में भूत से पीड़ा, ५ वें वर्ष में अग्नि भय, ७ वें वर्ष में ज्वर विषूचिका का भय, २० वें वर्ष में सर्प भय, २१ वें वर्ष में पीड़ा, २८ वें वर्ष में लोकापवाद और ३२ वें वर्ष में उदर की दाहिनी ओर में गुल्म रोग का भय होता है॥ तथा सुशील, अति कृपण, सत्य वक्ता और पण्डित होता है। यदि चन्द्रमा शुभ ग्रह से देखा जाता हो तो मनुष्य की आयु १०० वर्ष की होती है। फाल्गुन मास, कृष्ण पक्ष, पञ्चमी तिथि, मङ्गलवार, मध्याह्न काल, जल मध्य में मृत्यु होती है ॥ १-८ ॥

कन्याराशिस्थितचन्द्रकृतनिर्य्याणम्—

स्वजनानन्दकृन्नित्यं धनवान्बहुसेवकः।
प्रवासी च कलाभिज्ञो गुरुभक्तः प्रियंवदः ॥ १ ॥
देवताद्विजवर्याणां भक्तस्तत्परमानसः।
धर्मकर्मसमायुक्तो जनानामतिदुर्लभः ॥ २ ॥

कन्यकाल्पत्वमापन्नो भूरिपुत्रो भवेन्नरः ।
शिश्ने कण्ठप्रदेशे च लाञ्छनं निश्चितं भवेत् ॥ ३ ॥
वह्निपीडा तृतीयेऽब्दे पंचमे लोचनव्यथा ।
नवमे द्वारबाधा च त्रयोदशमितेपि च ॥ ४ ॥
तथा पञ्चदशे वर्षे सर्पतो भयमादिशेत् ।
एकविंशन्मिते वर्षे पतनं वृक्षभित्तितः ॥ ५ ॥
अरण्ये शस्त्रघातः स्याद्वर्षे त्रिंशन्मिते ध्रुवम् ।
अशीत्यब्दं भवेदायुश्चन्द्रे सौम्यग्रहेक्षिते ॥ ६ ॥
चैत्रकृष्णत्रयोदश्यां निधनं रविवासरे ।
शीतद्युतौ स्थिते सूतौ कन्यायामिति संस्मृतम् ॥ ७ ॥

जिस के जन्म काल में कन्या राशि का चन्द्रमा हो तो वह अपने बन्धुओं को आनन्द देने वाला, धनवान्, बहुत नौकर वाला, विदेश में रहने वाला, कलाओं को जानने वाला, गुरु का भक्त, प्रिय बोलने वाला, देवता ब्राह्मण का भक्त, धर्म कर्म में रत, जनों में श्रेष्ठ, थोड़ी कन्या अधिक पुत्र वाला, लिङ्ग और कण्ठ में चिह्न वाला होता है। ३ वर्ष में अग्नि भय, ५ वर्ष में नेत्र पीड़ा, ९ और १३ वर्ष में गुदमार्ग में पीड़ा, १५ वर्ष में सर्प भय, २१ वें वर्ष में वृक्ष और दीवाल का भय, ३० वें वर्ष में जङ्गल में शस्त्राघात का भय होता है। यदि चन्द्रमा के ऊपर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो ८० वर्ष की आयु होती है। चैत्र मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, रविवार में मरण होता है ॥ १-७ ॥

तुलाराशिस्थितचन्द्रकृतनिर्याणमाह—

मान्यः सर्वजनैर्नूनं वस्तुसंग्रहतत्परः ।
भोगी धर्मपरः श्रीमान्बहुभृत्यो विचक्षणः ॥ १ ॥
वापीकूपतडागादिनिर्मितौ सादरः सदा ।
प्राज्ञः सर्वकलाभिज्ञो नृपाणामतिवल्लभः ॥ २ ॥

मधुरान्नरसप्रीतिर्द्विभार्यः पितृभक्तिकृत् ।
स्वल्पापत्योऽल्पबन्धुश्च कृषिकर्मविचक्षणः ॥ ३ ॥
क्रयविक्रयसम्प्राप्तिर्देवब्राह्मणपूजकः ।
भार्यावचोनुगामी च सप्तमेऽब्देऽग्निजं भयम् ॥ ४ ॥
अष्टमे ज्वरजा पीडा द्वादशे च जलाद्भयम् ।
तरोस्तुरगतः पातः सर्पभीर्वापि विंशके ॥ ५ ॥
एकविंशन्मिते पीडा चन्द्रे सौम्यग्रहेक्षिते ।
पञ्चाशीतिर्भवेदायुर्वैशाखस्याद्यपक्षके ॥ ६ ॥
सार्पेऽष्टम्यां भृगोर्वारे निधनं पूर्वयामके ।
तुलाराशिस्थिते चद्रे निर्य्याणमिति सूचितम् ॥ ७ ॥

जिस के जन्म काल में तुला का चन्द्र हो वह सब जनों का मान्य, वस्तुओं का संग्रह करने वाला, भोगी, धर्म में रत, लक्ष्मीवान्, बहुत नौकरों से युक्त, पण्डित, कुआँ तालाब आदि बनवाने वाला, बुद्धिमान्, कलाओं को जानने वाला, राजप्रिय, मिष्टान्न प्रिय, दो स्त्री वाला, माता पिता का भक्त, थोड़ी सन्तान वाला, थोड़े बन्धु वाला, खेती करने वाला, क्रय विक्रय से आमदनी करने वाला, देवता ब्राह्मणों का भक्त, स्त्री के वाक्य में रहने वाला होता है। ७ वर्ष में अग्निभय, ८ वर्ष में ज्वर, १२ वर्ष में जल भय, २० वें वर्ष में वृक्ष या घोड़ा से गिरने का और सर्प का भय, २१ वें वर्ष में अनेक कष्ट होता है। चन्द्रमा यदि शुभग्रह से देखा जाता हो तो ८५ वर्ष की आयु होती है।

वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, अश्लेषा नक्षत्र, अष्टमी तिथि, सोमवार में मृत्यु होती है ॥ १-७ ॥

वृश्चिकराशिस्थितचन्द्रनिर्य्याणमाह—

परतापपरः क्रोधी विद्वेषी कलहप्रियः ।
विश्वासघातकश्चापि मित्रद्रोही विचक्षणः ॥ १ ॥

असन्तुष्टो नृपैः पूज्यो विघ्नकर्तान्यकर्मणि ।
शुभलक्षणसंयुक्तो गुप्तपापश्च विक्रमी ॥ २ ॥
बहुभृत्यश्चतुर्बंधुर्द्विभार्यो जायते पुमान् ।
प्रथमेऽब्दे ज्वरात्पीडा तृतीये भयमग्नितः ॥ ३ ॥
पंचमेऽब्दे ज्वरात्पीडा तथा पंचदशेऽपि च ।
पंचविंशन्मिते वर्षे पीडा स्यान्महती ध्रुवम् ॥ ४ ॥
चंद्रे सौम्यग्रहैर्दृष्टे नवत्यब्दान्स जीवति ।
ज्येष्ठमासि सिते पक्षे दशम्यां बुधवासरे ॥ ५ ॥
हस्तनक्षत्रसंयुक्ते मध्यरात्रे गते सति ।
चंद्रे वृश्चिकराशिस्थे निर्याणमिति कीर्तितम् ॥ ६ ॥

जिस के जन्म काल में वृश्चिक राशि का चन्द्रमा हो वह दूसरों को पीड़ा देने वाला, क्रोधी, द्वेष करने वाला, झगड़ालू, विश्वासघाती, मित्रद्रोही, पण्डित, असन्तोषी, राजा से आदृत, दूसरे के कार्य में बाधा डालने वाला, शुभ लक्षण से युक्त, गुप्तपापी, पराक्रमी, बहुत नौकर वाला, चार भाई वाला, दो स्त्री वाला होता है। १ वर्ष में ज्वर पीड़ा, ३ वर्ष में अग्निभय, वर्ष में ज्वर पीड़ा, १५ और २५ वर्ष में विशेष पीड़ा होती है। चन्द्रमा के ऊपर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो ९० वर्ष आयु होती है। ज्येष्ठ मास, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, बुधवार, हस्त नक्षत्र, मध्य रात्रि में मृत्यु होती है ॥ १–६ ॥

धनुराशिस्थितचन्द्रकृतनिर्याणमाह—

प्राज्ञो धर्मी सुपुत्रश्च राजमान्यो जनप्रियः ।
द्विजदेवार्चने प्रीतिर्वस्तुसंग्रहतत्परः ॥ १ ॥
सभायां च भवेद्वक्ता सुनखी सुमतिः शुचिः ।
स्थूलदन्ताधरग्रीवः काव्यकर्ता प्रगल्भकः ॥ २ ॥
कुलशाली वदान्यश्च सभाग्यो दृढसौहृदः ।

निम्नपादतलः क्लेशी साहसी विनयान्वितः ॥ ३ ॥
शांतः क्षिप्रप्रकोपी च तापसः स्वल्पभुङ् नरः।
स्वल्पापत्यो सुबंधुश्च पूर्वे वयसि वित्तवान् ॥ ४ ॥
सबाधः प्रथमे वर्षे महापीडा त्रयोदशे।
अष्टषष्टिमितं प्राहुरायुर्वा पंचसप्ततिः ॥ ५ ॥
चंद्रे सर्वशुभैर्दृष्टे शतवर्षाणि जीवति।
आषाढस्यासिते पक्षे पंचम्यां भृगुवासरे ॥ ६ ॥
निशायां हस्तनक्षत्रे निधनं सर्वथा भवेत्।
निर्य्याणमिति संप्रोक्तं चंद्रे सूतौ धनुस्थिते ॥ ७ ॥

जिस के जन्म काल में धनु राशि का चन्द्रमा हो वह पण्डित, धर्मात्मा, पुत्रवान्, राजा का मान्य, लोगों का प्रिय, ब्राह्मण देवताओं में भक्ति, वस्तुओं का संग्रह में तत्पर, सभा में बोलने वाला, सुन्दर नख वाला, सुन्दर बुद्धि वाला, पवित्र, बड़े बड़े दाँत, स्थूल ओठ और स्थूल ग्रीवा वाला, कवि, प्रौढ, कुल में प्रधान, दाता, भाग्यवान्, दृढ मित्र वाला, गहड़ा पाद तल वाला, क्लेशी, साहसी, विनयी, शान्त, जल्दी क्रोध करने वाला, तपस्वी, थोड़ा भोजन करने वला, थोड़ी सन्तान वाला, उत्तम कुटुम्बों से युक्त और पूर्व अवस्था में धनी होता है। १ वर्ष में कष्ट, १३ वर्ष में विशेष कष्ट, ६८ वर्ष से ७५ वर्ष तक की आयु वाला होता है। चन्द्रमा यदि शुभ ग्रह से देखा जाता हो तो १०० वर्ष की आयु होती है। आषाढ मास, कृष्ण पक्ष, पञ्चमी तिथि, शुक्र वार, हस्त नक्षत्र, रात्रि के समय में मृत्यु होती है ॥ १-७ ॥

मकरराशिगतचंद्रनिर्य्याणमाह—

धीरो विचक्षणः क्लेशी पुत्रवान्नृपतिप्रियः।
कृपालुः सत्यसंपन्नो वदान्यो सुभगोऽलसः ॥ १ ॥
कृष्णतालुः पुमान्नूनं विस्तीर्णकटिरुद्भवेत्।
पंचमे वत्सरे पीडा सप्तमे च जलाद्भयम् ॥ २ ॥

दशमे पतनं वृक्षाद्द्वादशे शस्त्रपीडनम् ।
विंशन्मिते ज्वराद्बाधा शाखासु पञ्चविंशके ॥ ३ ॥
पंचत्रिंशत्समाकाले वामाङ्गेऽग्निभयं दिशेत् ।
अब्दानां नवतिर्नूनमायुस्तस्य प्रकीर्तितम् ॥ ४ ॥
श्रावणस्य सिते पक्षे दशम्यां भौमवासरे ।
ज्येष्ठायां निधनं नूनं चंन्द्रे मकरसंस्थिते ॥ ५ ॥

जिस के जन्म काल में मकर राशि का चन्द्रमा हो वह धीर, पण्डित, रोगी, पुत्रवान्, राज प्रिय, दयालु, सत्य बोलने वाला, दाता, सुन्दर, आलसी, कृष्ण वर्ण का तालु वाला और विस्तृत कमर वाला होता है। ५ वर्ष में पीड़ा, ७ वर्ष में जलभय, १० वर्ष में वृक्ष से गिरने का भय, १२ वर्ष में शस्त्र का आघात, २० वें वर्ष में ज्वर, २५ वें वर्ष में कष्ट, ३५ वें वर्ष में वामाङ्ग में अग्नि भय होता है। ९० वर्ष की आयु होती है। श्रावण मास, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, मङ्गल वार, ज्येष्ठा नक्षत्र में उस की मृत्यु होती है ॥ १-५ ॥

कुम्भराशिगतचन्द्रनिर्याणमाह—

दाता मिष्टान्नभोक्ता च धर्मकार्येषु सत्वरः ।
प्रियवक्तृत्वसंयुक्तो नरः क्षीणकलेवरः ॥ १ ॥
स्वल्पापत्यो द्विभार्यश्च कामो द्रव्यविवर्जितः ।
वामहस्ते भवेल्लक्ष्म पीडा प्रथमवत्सरे ॥ २ ॥
पञ्चमेऽग्निभयं विद्यादथ द्वादशवत्सरे ।
व्यालाद्वा जलतो भीतिरष्टाविंशतिमे क्षतिः ॥ ३ ॥
चौरेभ्यश्च भवेदायुर्वर्षाणां नवतिर्ध्रुवम् ।
भाद्रे मास्यसिते पक्षे चतुर्थ्यां शनिवासरे ॥ ४ ॥
भरणीनामनक्षत्रे गृणन्ति मरणं नृणाम् ।
एवमुक्तं मुनिश्रेष्ठैश्चन्द्रे जन्मनि कुम्भगे ॥ ५ ॥

जिस के जन्म काल में कुम्भ का चन्द्रमा हो वह मनुष्य दाता, मिष्टान्न भोजन करने वाला, धर्म कार्य में शीघ्रता करने वाला, प्रिय बोलने वाला, दुर्बल, थोड़ी सन्तान वाला, दो स्त्री वाला, कामी, द्रव्य से रहित और वाम हाथ में चिन्ह वाला होता है। १ वर्ष में कष्ट, ५ वर्ष में अग्निभय, १२ वर्ष में सर्पभय, २८ वर्ष में चोरों से क्षति होती है।

भाद्र मास, कृष्ण पक्ष, चतुर्थी तिथि, शनि वार, भरणी नक्षत्र में मृत्यु होती है ॥ १-५ ॥

मीनराशिगतचन्द्रनिर्य्याणमाह—

धनी मानी विनीतश्च भोगी संहृष्टमानसः।
पितृमातृसुराचार्यगुरुभक्तियुतो नरः ॥ १ ॥
उदारो रूपवाञ्छ्रेष्ठो गन्धमाल्यविभूषणः।
पञ्चमेऽब्दे जलाद्भीतिरष्टमे ज्वरपीडनम् ॥ २ ॥
द्वाविंशे महती पीडा चतुर्विंशन्मितेऽब्दके।
पूर्वाशागमनं चायुरब्दानां नवतिः स्मृता ॥ ३ ॥
आश्विनस्यासिते पक्षे द्वितीयायां गुरोर्दिने।
कृत्तिकानामनक्षत्रे सायं मृत्युर्न संशयः ॥ ४ ॥
इतीरितं तु निर्याणं यवनाचार्यसंमतम्।
मीनस्थे यामिनीनाथे भवेदत्र न संशयः ॥ ५ ॥

जिस के जन्म काल में मीन राशि का चन्द्रमा हो वह धनी, मानी, नम्र, भोगी, हर्षित मन वाला, माता, पिता और गुरु का भक्त, उदार, सुन्दर, श्रेष्ठ, गन्धयुक्त माला और भूषण से युक्त होता है। ५ वें वर्ष में जलभय, ८ वें वर्ष में ज्वर, २२ वें वर्ष में विशेष पीड़ा और २४ वें वर्ष में घर से पूर्व तरफ की यात्रा होती है। ९० वर्ष की आयु होती है। आश्विन मास, कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, बृहस्पति वार, कृत्तिका नक्षत्र सायं काल में मृत्यु होती है। इस तरह मीन राशि में स्थित चन्द्रमा का निर्याण मुनियों ने कहा है ॥ १-५ ॥

इति चन्द्रकृतनिर्याणाध्यायः।

स्त्रीजातकाध्यायः ।

स्त्रीणां फले विशेषतामाह—

यज्जन्मकालाद्गदितं नराणां होराप्रवीणैः फलमेतदेव ।
स्त्रीणां प्रकल्प्यं खलु चेदयोग्यं तन्नायके तत्परिवेदितव्यम् ॥ १ ॥

जन्म काल से ज्यौतिष शास्त्र को जानने वालों ने पुरुष के लिये जो फल कहा है, वही स्त्री को भी कहना चाहिये। किन्तु उन में जो स्त्री के लायक न हो वह उस के स्वामी को कहना चाहिए ॥ १ ॥

स्त्रीणां वैधव्यसौभाग्यसुखसौंदर्यविचारस्थानमाह—

लग्ने शशांके च वपुर्विचिन्त्यं तयोः कलत्रे पतिवैभवानि ।
सुताख्यभावे प्रसवोऽवगम्यो वैधव्यमस्याः किल कालगेहे ॥ २ ॥

स्त्री के जन्म काल में लग्न और चन्द्रमा से शरीर, सप्तम से पति, पञ्चम से सन्तान और अष्टम भाव से वैधव्य का विचार करना चाहिए ॥

स्त्रीणामाकारज्ञानम्—

लग्ने च चंद्रे समराशियाते कांता नितांतं प्रकृतिस्थिता स्यात् ।
सद्रत्नभूपासहिताऽथ सौम्यैर्निरीक्षितौ तौ यदि चारुशीला ॥ ३ ॥

जिस के जन्म काल में लग्न, चन्द्रमा दोनों सम राशि में हों वह स्त्री स्त्रीस्वभाव वाली, सुन्दर रत्न और आभरणों से युक्त होती है। सम राशि में स्थित लग्न चन्द्रमा के ऊपर यदि शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो परम सुशीला होती है ॥ ३ ॥

पुरुषाकृतियोगः—

तयोः स्थितिश्चेद्विषमाख्यराशौ नारी नराकारधरा कुरूपा ।
पापग्रहालोकनयोगयातौ तौ चेत्कुशीला गुणवर्जिताऽलम् ॥ ४ ॥

लग्न, चन्द्रमा दोनों विषम राशि में हों तो स्त्री पुरुषाकार की होती है। यदि पूर्वोक्त लग्न, चन्द्रमा दोनों पाप ग्रह से देखा जाता हो तो स्त्री दुःशीला और गुणहीन होती है ॥ ४ ॥

कुजभवने त्रिंशांशवशात्फलम्—

लग्नेन्द्वोर्बलवान्कुजस्य भवने शुक्रस्य खाग्न्यंशके
कन्या स्यादतिनिंदिता सुरगुरोः साध्वी नितांतं भवेत्।
दुष्टा भूतनयस्य नूनमुदिता सौम्यस्य मायाविनी
दासी तिग्ममरीचिसूनुगगनाग्न्यंशे फलानि क्रमात् ॥ ५ ॥

लग्न, चन्द्रमा दोनों में जो बलवान् हो वह मङ्गल की राशि में स्थित हो कर शुक्र के त्रिंशांश का हो तो निन्दित कर्म करने वाली, गुरु के त्रिंशांश का हो तो पतिव्रता, मङ्गल के त्रिंशांश का हो तो दुःशीला, बुध के त्रिंशांश का हो तो मायाविनी और शनि के त्रिंशांश का हो तो दासी होती है ॥ ५ ॥

बुधभवने लग्ने त्रिंशांशवशात्फलम्—

तारानायकपुत्रभेऽवनिसुतत्रिंशल्लवे कापटी
शौक्रे हीनमनोभवा शशिसुतस्यातीव युक्ता गुणैः।
देवाधीशपुरोहितस्य हि भवेत्साध्वी नितान्तं तथा
खाग्न्यंशेऽर्कसुतस्य सा निगदिता क्लीवस्य भार्या बुधैः ॥ ६ ॥

लग्न, चन्द्रमा दोनों बुध की राशि में स्थित हो कर मङ्गल के त्रिंशांश में हो तो छल करने वाली, शुक्र के त्रिंशांश में हो तो काम से रहित, बुध के त्रिंशांश में हो तो गुणवती, बृहस्पति के त्रिंशांश में हो तो पतिव्रता और शनि के त्रिंशांश में हो तो हिजरा की स्त्री होती है ॥ ६ ॥

गुरुभवने लग्नेन्द्वोस्त्रिंशांशवशात्फलम्—

देवाचार्यगृहेऽमृतांशुरथवा लग्नं खवह्न्यंशके
भूसूनोर्गुणशालिनी सुरगुरोः ख्याता गुणानां गणैः।
तारास्वामिसुतस्य चारुविभवा शुक्रस्य साध्वी भवे-
न्नूनं भानुसुतस्य चाल्पसुरता कान्ता बुधैः कीर्तिता ॥ ७ ॥

लग्न चन्द्रमा दोनों गुरु की राशि में स्थित हो कर मङ्गल के

त्रिशांश में हो तो गुणवती, बृहस्पति के त्रिशांश में हो तो गुणों से प्रसिद्ध, बुध के त्रिशांश में हो तो कलाओं में चतुर, शुक्र के त्रिशांश में हो तो पतिव्रता और शनि के त्रिशांश में हो तो थोड़े काम क्रिया वाली होती है ॥ ७ ॥

भृगुभवने लग्नेन्द्वोस्त्रिशांशवशात्फलम्—

दैत्याचार्यगृहे सुरेन्द्रसचिवस्याकाशवह्न्यंशके
लग्ने वाऽप्युडुनायको गुणवती भौमस्य दौष्ट्याधिका ।
सौम्यस्यातिकलाकलापकुशला शुक्रस्य चञ्चद्गुणै-
र्युक्तार्थैर्निपुणैर्दिवामणिसुतस्यांशे पुनर्भूरिति ॥ ८ ॥

लग्न चन्द्रमा दोनों बृहस्पति के त्रिशांश में हो तो गुणवती, मङ्गल के त्रिशांश में हो तो अति दुष्ट, बुध के त्रिशांश में हो तो कलाओं में कुशल, शुक्र के त्रिशांश में हो तो गुणों से युक्त और शनि के त्रिशांश में हो तो पुनर्भू होती है ॥ ८ ॥

शनिभवने लग्नेन्द्वोस्त्रिशांशवशात्फलम्—

मन्दालये खाग्निलवे कुजस्य दासी च सौम्यस्य खला हि बाला ।
बृहस्पतेः स्यात्पतिदेवता सा वन्ध्या भृगोर्नीचरतार्कसूनोः ॥ ९ ॥

जिस स्त्री के जन्म काल में लग्न या चन्द्रमा शनि के राशि में स्थित हो कर मङ्गल के त्रिशांश में हो वह दासी, बुध के त्रिशांश में हो तो दुष्टा, गुरु के त्रिशांश में हो तो पतिव्रता, शुक्र के त्रिशांश में हो तो वन्ध्या और शनि के त्रिशांश में हो तो नीचों से प्रेम करने वाली होती है ॥ ९ ॥

रविभवने लग्नेन्द्वोस्त्रिशांशवशात्फलम्—

लग्नं वा विधुरर्कमन्दिरगतो भौमस्य खाग्न्यंशके
स्वेच्छासञ्चरणोद्यता शशिसुतस्यातीव दुष्टाशया ।
देवाधीशपुरोधसो निगदिता सा राजपत्नी भृगोः
पौंश्चल्याभिरता शनेरतितरां पुंवत्प्रगल्भाङ्गना ॥ १० ॥

जिस स्त्री के जन्म काल में लग्न या चन्द्रमा सिंह राशि में स्थित हो कर मङ्गल के त्रिंशांश में हो तो वह स्वेच्छाचारिणी, बुध के त्रिंशांश में हो तो दुष्टा, गुरु के त्रिंशांश में हो तो राजपत्नी, शुक्र के त्रिंशांश में हो तो व्यभिचारिणी और शनि के त्रिंशांश में हो तो पुरुष के समान प्रौढ स्त्री होती है ॥ १० ॥

चन्द्रभवने लग्नेन्द्वोस्त्रिंशांशवशात्फलम्—

चन्द्रागारे खाग्निभागे कुजस्य स्वेच्छावृत्तिर्ज्ञस्य शिल्पप्रवीणा।
वाचां पत्युः सद्गुणा भार्गवस्य साध्वी मन्दस्य प्रियप्राणहन्त्री ११

जिस स्त्री के जन्म काल में लग्न या चन्द्रमा कर्क राशि में स्थित हो कर मङ्गल के त्रिंशांश में हो तो वह स्वेच्छाचारिणी, बुध के त्रिंशांश में हो तो शिल्प को जानने वाली, गुरु के त्रिंशांश में हो तो गुण से युक्त, शुक्र के त्रिंशांश में हो तो पतिव्रता और शनि के त्रिंशांश में हो तो पति को मारने वाली होती है ॥ ११ ॥

स्त्रीस्त्रीमैथुनयोगमाह—

अन्योन्यभागेक्षणगौ सितार्की यद्वा सितर्क्षे तनुगे घटांशे।
कन्दर्पशान्तिं कुरुते नितान्तं नारी नराकारकराङ्गनाभिः ॥ १२ ॥

शुक्र के त्रिंशांश में शनि और शनि के त्रिंशांश में शुक्र हो कर परस्पर एक दूसरे को देखता हो अथवा तुला लग्न में कुम्भ का नवांश हो तो स्त्री पुरुष के आकार वाली दूसरी स्त्री से काम शान्ति कराती है ॥ १२ ॥

कापुरुषपत्यादियोगाः—

शून्ये मन्मथमन्दिरे शुभखगैर्नालोकिते निर्बले
बालायाः किल नायको मुनिवरैः कापूरुषः कीर्तितः।
जामित्रं बुधमन्दयोर्यदि गृहं षण्ढो भवेन्निश्चितं
राशौ तत्र चरे विदेशनिरतो द्व्यंगे च मिश्रस्थितिः ॥ १३ ॥

जिस स्त्री के ग्रह रहित निर्बल सप्तम भाव यदि शुभ ग्रह से अदृष्ट हो उस का स्वामी निन्दित होता है। मिथुन, कन्या, मकर या कुम्भ राशि सप्तम भाव में हो तो स्वामी नपुंसक होता है। यदि चर राशि

सप्तम भाव में हो तो उस स्त्री का पति परदेशी होता है। यदि द्विस्वभावराशि में हो तो कभी घर कभी विदेश में रहने वाला होता है १३

पतित्यक्तादियोगाः—

सप्तमे दिनपतौ पतिमुक्ता क्षोणिजं च विधवा खलु बाल्ये।
पापखेचरविलोकनयाते मन्दगे च युवतिर्जरती स्यात् ॥ १४ ॥

सप्तम भाव में सूर्य हो तो पति से त्यक्त और मङ्गल हो तो बाल विधवा होती है। सप्तम भाव में स्थित हो कर शनि पाप ग्रह से देखा जाता हो तो स्त्री अविवाहिता ही वृद्धा हो जाती है ॥ १४ ॥

गतालकादियोगाः—

खलैः कलत्रे च गतालका स्यात् कान्ता विमिश्रैश्च भवेत्पुनर्भूः।
कलत्रसंस्थे विबले खलाख्ये सौम्यैरदृष्टे विभुना विमुक्ता ॥१५॥

यदि सप्तम भाव में दो से ज्यादे पाप ग्रह हों तो शिर में बाल नहीं होते हैं। सप्तम भाव में पाप ग्रह, शुभ ग्रह दोनों हों तो उस का विवाह फिर होता है। सप्तम भाव में निर्बल पाप ग्रह हो कर यदि शुभ ग्रह से नहीं देखा जाता हो तो पति से त्यक्त स्त्री होती है ॥१५॥

परपुरुषगामिनीयोगः—

अन्योन्यांशावस्थितौ भौमशुक्रौ स्यातां कान्ता सङ्गताऽन्येन नूनम्।
चन्द्रोपेतौ शुक्रवक्रौ स्मरस्थावाज्ञैव स्यात्स्वामिनश्चामनन्ति ॥१६॥

जिस स्त्री के जन्म काल में मङ्गल, शुक्र दोनों परस्पर नवांश में हो तो वह पर पुरुष गामिनी होतो है। चन्द्रमा सहित शुक्र, मङ्गल दोनों सप्तम भाव में हों तो स्त्री अपने पति की आज्ञा से ही पर पुरुष गामिनी होती है ॥ १६ ॥

लग्ने सितेन्दू कुजमन्दभस्थौ क्रूरेक्षितौ सान्यरता जघन्या।
स्मरे कुजे सार्कसुते न दृष्टे विनष्टयोनिश्च शुभाशुभाख्यैः ॥ १७ ॥

जन्म काल में शुक्र, चन्द्रमा दोनों वृष, तुला, मकर या कुम्भ लग्न में स्थित हों तो स्त्री पर पुरुष गामिनी होती है। मङ्गल, शनि दोनों सप्तम भाव में हों और उन पर शुभ पाप दोनों में से किसी की भी दृष्टि नहीं हो तो स्त्री नष्ट योनि वाली होती है ॥ १७ ॥

सप्तमभावस्थनवांशफलमाह—

भानोर्भं यदि वा लवः स्मरगृहे सम्भोगमन्दः पति-
श्चन्द्रस्यातिमदो मृदुः क्षितिसुतस्य स्त्रीप्रियः क्रोधयुक् ।
विद्वान् ज्ञस्य गुरोर्वशी गुणयुतः शुक्रस्य भाग्यान्वितो
मन्दस्य प्रवयास्तु मूढमतिरित्युक्तो बुधैर्होरिकैः ॥ १८ ॥

सप्तम भाव में सूर्य की राशि या नवांश हो तो उस स्त्री का पति काम रहित होता है। चन्द्रमा की राशि या नवांश हो तो उस स्त्री का पति अति गौरवी और कोमल प्रकृति वाला होता है। मङ्गल का नवांश या राशि हो तो क्रोधी, बुध की राशि या नवांश हो तो पण्डित, बृहस्पति की राशि या नवांश हो तो गुणी, शुक्र की राशि या नवांश हो तो भाग्यवान् और शनि की राशि या नवांश हो तो उस स्त्री का पति वृद्ध और मूर्ख होता है ॥ १८ ॥

ईर्ष्यान्वितादियोगः—

शुक्रेन्दू स्मरगौ स्त्रियं प्रकुरुतः सेर्ष्यां सुखेनान्वितां
सौम्येन्दू च कलासुखोत्तमगुणां शुक्रेन्दुपुत्रावथ ।
चश्चद्भाग्यकलाज्ञताभिरुचिरां सौम्यग्रहेन्द्रास्तनौ
नानाभूषणसद्गुणाम्बरसुखां पापग्रहैस्त्वन्यथा ॥ १९ ॥

जिस स्त्री के सप्तम भाव में शुक्र और चन्द्रमा हो वह ईर्ष्या युक्त तथा सुख युक्त होती है। बुध और चन्द्रमा हों तो कलाओं को जानने वाली तथा उत्तम गुणों से युक्त होती है। शुक्र और बुध हों तो भाग्यवती, कलाओं को जानने वाली तथा सुन्दरी होती है। यदि लग्न में अधिक शुभ ग्रह हों तो अनेक भूषणों से युक्त, गुणवती तथा वस्त्र सुख से युक्त होती है। लग्न में पाप ग्रह हों तो इस से विपरीत फल जानना चाहिये ॥१९॥

वैधव्ययोगमरणयोगौ—

वैधव्यं स्यात्पापखेटेऽष्टमस्थे रन्ध्रस्वामी संस्थितो यस्य चांशे ।
मृत्युः पाके तस्य वाच्योऽङ्गनायाः सौम्यैरर्थस्थानगैः स्यात्स्वयं हि॥२०

यदि अष्टम स्थान में पाप ग्रह हों तो विधवा होती है। अष्टम स्थान का पति जिस ग्रह के नवांश में हो उस की दशा में स्त्री का मरण होता है। द्वितीय भाव में शुभ ग्रह स्थित हों तो पति से पहिले स्त्री का मरण होता है ॥ २० ॥

अथान्ये मरणयोगाः—

सूर्यारौ खजलाश्रितौ हिमवतः शैलाग्रपातान्मृतिः
भौमेन्द्वर्कसुताः स्वसप्तजलगाः स्यात्कूपवाप्यादितः ।
सूर्याचन्द्रमसौ खलेक्षितयुतौ कन्यास्थितौ बन्धनात्
तौ चेद्द्व्यङ्गविलग्नसंस्थितिकरौ तोये निमग्नात् स्वतः ॥२१॥

जिस स्त्री के सूर्य, मङ्गल क्रम से दशम और चतुर्थ भाव में हों पर्वत से गिर कर उस की मृत्यु होती है। यदि मङ्गल, चन्द्रमा, शनि क्रम से द्वितीय, सप्तम, चतुर्थ भाव में हों तो कूप या तालाव में मृत्यु होती है। यदि सूर्य, चन्द्रमा दोनों कन्या राशि में स्थित होकर पाप ग्रह से दृष्ट हों तो बन्धन से मृत्यु होती है। यदि सूर्य, चन्द्रमा दोनों कन्येतर द्विस्वभाव लग्न में हों तो स्वयं जल में डूब कर मृत्यु पाती है ॥ २१ ॥

रविसुतो यदि कर्कमुपागतो हिमकरो मकरोपगतो भवेत् ।
किल जलोदरसञ्जनिता तदा निधनता वनितासु च कीर्तिता ॥२२॥

यदि कर्क राशि में शनि और मकर में चन्द्रमा हो तो जलोदर रोग से मृत्यु होती है ॥ २२ ॥

निशाकरः पापखगान्तरस्थः शस्त्राग्निमृत्युं कुजभे करोति ॥ २२½ ॥

यदि चन्द्रमा दो पाप ग्रहों के मध्य में स्थित हो कर मेष या वृश्चिक राशि में स्थित हो तो शस्त्राघात या अग्नि से मृत्यु होती है ॥२२½॥

संन्यासिनीयोगः—

पापे स्मरस्थेऽन्यखगे च धर्मे किलाङ्गना प्रव्रजितत्वमेति ॥ २३ ॥

यदि सप्तम भाव में पाप ग्रह और नवम भाव में शुभ ग्रह हों तो स्त्री संन्यास धारण करने वाली होती है ॥ २३ ॥

अथाल्पपुत्रवहुपुत्रयोगौ—

कन्यालिगे सिंहगते शशाङ्के पङ्केरुहाक्षी खलु स्वल्पपुत्रा।

पुत्रालयं चेच्छुभखेचरेन्द्रै दृष्टं युतं वा वहुता च तेषाम्॥ २४॥

कन्या, वृश्चिक या सिंह राशि में चन्द्रमा हो तो थोड़े पुत्र वाली होती है। यदि शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट पञ्चम भाव हो तो स्त्री को वहुत पुत्र होते हैं॥ २४॥

पुरुषस्वभावाप्रगल्भायोगः—

शुक्रेन्दुसौम्या विवला भवेयुः शनैश्चरो मध्यवली यदि स्यात्।

शेषाः सवीर्या विषमे च लग्ने योषा विशेषात्पुरुषप्रगल्भा॥ २५॥

यदि शुक्र, चन्द्रमा, बुध तीनों निर्वल हों, शनि मध्य वली हो, शेष ग्रह वली हों और विषम राशि का लग्न हो तो स्त्री पुरुष के समान प्रगल्भ होती है॥ २५॥

ब्रह्मवादिनीयोगः--

समे विलग्ने यदि संस्थिताः स्युर्वलान्विताः शुक्रवुधेन्दुजीवाः।

स्यात्कामिनी ब्रह्मविचारचर्चापराऽऽगमज्ञानविराजमाना॥ २६॥

यदि सम राशि के लग्न में वली शुक्र, वुध, चन्द्रमा और वृहस्पति हों तो स्त्री ब्रह्म विचार और आगम शास्त्र को जानने वाली होती है

पूर्वैर्यन्मुनिभिः सविस्तरतया स्त्रीजातके कीर्तितं

सम्यग्वाप्यशुभं च यन्मतिमता वाच्यं विदित्वा वलम्।

योगानां च नियोजयेत्फलमिदं पृच्छाविलग्ने तथा

पाणिग्रहणे तथा च वरणे सम्भूतिकालेऽपि च॥ २७॥

इस तरह स्त्री जातक के सम्बन्ध में प्राचीन मुनियों ने विस्तार पूर्वक जो फल कहे हैं, उन में वलावल देख कर तारतम्य से फल कहना चाहिये। और प्रश्न लग्न, विवाह, वरण आदि काल में भी उन योगों के फल कहना चाहिए॥ २७॥

नारीचक्रमाह—

नारीचक्रे मस्तके त्रीणि भानि वक्त्रे भानां सप्तकं स्थापनीयम्।

प्रत्येके स्युर्वेदतारा उरोजे तिस्रस्तारा हृत्प्रदेशे निवेश्याः॥ २८॥

नाभौ देयं भत्रयं त्रीणि गुह्ये भानोर्धिष्ण्याच्चन्द्रधिष्ण्यावधीत्थम् ।
सत्सन्तापः शीर्षभे वक्त्रसंस्थे नित्यं मिष्टान्नानि सौख्योपलब्धिः२९
कामं स्वामिप्रेमवृद्धिः स्तनस्थे वक्षोदेशावस्थितेऽत्यन्तहर्षः ।
पत्युश्चिन्तानन्तवृद्धिश्च नाभौ गुह्यस्थे स्यान्मन्मथाधिक्यमुच्चैः॥ ३०॥

अब यहाँ वक्ष्यमाण रीति से नारी चक्र कहते हैं । सूर्य जिस नक्षत्र में हो उस से ३ नक्षत्र शिर में, ७ नक्षत्र मुख में, ४, ४ नक्षत्र दोनों स्तनों में, ३ नक्षत्र हृदय में, ३ नक्षत्र नाभि में और ३ नक्षत्र गुह्य स्थान में स्थापन करे। इस तरह स्थापित नारी चक्रमें चन्द्र नक्षत्र जिस अङ्ग में पड़े उस के अनुसार जन्म काल या प्रश्न काल में फल कहना चाहिये। जैसे—शिर में पड़े तो सन्ताप, मुख में पड़े तो मिष्टान्न भोजन और सुख का लाभ, स्तन में पड़े तो पति से स्नेह, हृदय में पड़े तो अत्यन्त आनन्द, नाभि में पड़े तो पति की चिन्ता तथा गुह्य स्थान में पड़े तो काम की अधिकता होती है॥ २८-३० ॥

ग्रन्थकारस्य देशवर्णनपूर्वकग्रन्थसमाप्तिसूचनम्—

गोदावरीतीरविराजमानं पार्थाभिधानं पुटभेदनं यत् ।
सद्गोलविद्यामलकीर्तिभाजां मत्पूर्वजानां वसतिस्थले यत् ॥३१॥
तत्रत्यदैवज्ञनृसिंहसूनुर्गजाननाराधनजाभिमानः ।
श्रीढुण्ढिराजो रचयांबभूव होरागमेऽनुक्रमादरेण ॥ ३२ ॥

गोदावरी नदी के किनारे पार्थ नामक नगर में गोल गणित में लब्ध कीर्ति मेरे पूर्वजों का स्थान है । वहाँ नृसिंह दैवज्ञ का पुत्र श्री गणेश जी का पूजक श्री ढुण्ढिराज दैवज्ञ ने फलों के अनुक्रम से युक्त "जातकाभरण" नामक ग्रन्थ को बनाया ॥ ३१-३२ ॥

इति "दरभङ्गा" मण्डलान्तर्गत "जरिसो" ग्रामनिवासि-ज्यौतिषाचार्य-साहित्याचार्य-पोष्टाचार्यादिपदवीक प्राप्त "रीपन्" स्वर्णपदक "खुर्जा"स्थ "श्रीराधाकृष्णसंस्कृत-महाविद्यालय"त्रिस्कन्धज्यौतिषप्रधानाध्यापक पण्डित श्री "अच्युतानन्दझा" शर्मणा विरचितया सोदाहरण "विमला" भाषाटीकया सहितं
जातकाभरणं समाप्तम् ।
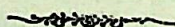
परिशिष्टम्

श्यामां भजे बालशशाङ्कचूडां मुण्डं कृपाणं ह्यभयं वरञ्च ।
हस्तैर्वहन्तीं रिपुसंघहन्त्रीं स्मेराननां कामरिपोः सुकान्ताम् ॥
जातकाभरणसंज्ञपुस्तकं वृंह्यतेऽथ परिशिष्टवस्तुना ।
अच्युतावदनन्दसंज्ञकेनाधुना गणकवृन्दसंमुदे ॥

वराह मिहिरोक्त ग्रहोंके नैसर्गिक मित्रादि—

शत्रू मन्दसितौ समश्च शशिजो मित्राणि शेषा रवे-
स्तीक्ष्णांशुर्हिमरश्मिजश्च सुहृदौ शेषाः समाः शीतगोः ।
जीवेन्दूष्णकराः कुजस्य सुहृदो ज्ञोऽरिः सितार्की समौ
मित्रे सूर्यसितौ बुधस्य हिमगुः शत्रुः समाश्चापरे ॥ १ ॥

सूरेः सौम्यसितावरी रविसुतो मध्योऽपरे त्वन्यथा
सौम्यार्की सुहृदौ समौ कुजगुरू शुक्रस्य शेषावरी ।
शुक्रज्ञौ सुहृदौ समः सुरगुरुः सौरस्य चान्येऽरयो
ये प्रोक्ताः सुहृदस्त्रिकोणभवनात्तेऽमी मया कीर्तिताः ॥ २ ॥

रवि के शुक्र और शनैश्चर शत्रु, बुध सम, शेष ग्रह (चन्द्रमा, मंगल और गुरु) मित्र हैं।

चन्द्रमा के रवि और बुध मित्र हैं, शेष सब ग्रह (मंगल, बृहस्पति, शुक्र और शनि) सम हैं। इस का कोई शत्रु नहीं है।

मङ्गल के गुरु, चन्द्रमा और रवि मित्र हैं। बुध शत्रु है। शुक्र और शनि सम हैं।

बुध के सूर्य और शुक्र मित्र हैं। चन्द्रमा शत्रु है। शेष ग्रह (मंगल, बृहस्पति और शनि) सम हैं।

बृहस्पति के बुध और शुक्र शत्रु हैं। शनि सम है। शेष ग्रह (रवि, चन्द्रमा और मंगल) मित्र हैं।

शुक्र के बुध और शनि मित्र हैं, मंगल और बृहस्पति सम है, शेष ग्रह (रवि और चन्द्रमा) शत्रु हैं।

शनि के शुक्र और बुध मित्र हैं, बृहस्पति सम हैं, शेष ग्रह (रवि, चन्द्र और मंगल) शत्रु हैं। यह स्वाभाविक मित्रादि हैं।

स्पष्टार्थ के लिये चक्र—

ग्रह	रवि	चन्द्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्र	चन्द्रमा. मङ्गल. गुरु	सूर्य. बुध	सूर्य. चन्द्र-मा. गुरु	सूर्य. शुक्र	सूर्य. चन्द्र-मा. मङ्गल	बुध. शनि	बुध. शुक्र
सम	बुध	मङ्गल. शुक्र शनि. गुरु	शुक्र. शनि	मङ्गल. बृह-स्पति. शनि	शनि	मङ्गल गुरु	बृहस्पति
शत्रु	शनि. शुक्र	×	बुध	चन्द्र	बुध. शुक्र	सूर्य चन्द्रमा	सूर्य चन्द्र-मा. मङ्गल

तात्कालिक मित्रादि—

अन्योन्यस्य धनव्ययायसहजव्यापारबन्धुस्थिताः
तत्काले सुहृदः स्वतुङ्गभवनेऽप्येकेऽरयस्त्वन्यथा ।
द्वयेकानुक्तभपान्सुहृत्समरिपून्संचिन्त्य नैसर्गिकां-
स्तत्काले च पुनस्तु तानधिसुहृन्मित्रादिभिः कल्पयेत् ॥ ३ ॥

जिस स्थान में ग्रह हो उस से द्वितीय, द्वादश, एकादश, तृतीय, दशम और चतुर्थ स्थान में स्थित ग्रह परस्पर तात्कालिक मित्र होते हैं ।

किसी आचार्य का मत है कि अपने उच्च स्थान में स्थित ग्रह भी तात्कालिक मित्र होते हैं, और उक्त स्थानों से भिन्न स्थान (१,५,६,७,८,९) में स्थित ग्रह तात्कालिक शत्रु होते हैं ।

नैसर्गिक मित्र, सम, शत्रु जो पूर्व में कहे गये हैं, वे तात्कालिक मित्र हों तो क्रम से अधि मित्र, मित्र, सम, शत्रु और अधिशत्रु जानना चाहिये ।

जैसे—नैसर्गिक मित्र जो ग्रह है वह यदि तात्कालिक मित्र भी हो तो वह अधि-मित्र होता है । तथा एक प्रकार से मित्र और दूसरे प्रकार से सम हो तो वह ग्रह मित्र ही होता है । तथा एक प्रकार से मित्र और दूसरे प्रकार से शत्रु हो तो वह ग्रह सम होता है । इसी तरह एक प्रकार से सम और दूसरे प्रकार से शत्रु हो तो शत्रु होता है । अगर दोनों प्रकार से शत्रु ही हो तो अधिशत्रु होता है ॥ ३ ॥

तात्कालिक मित्रादि जानने के लिये चक्र—

मित्र	२	३	४	१०	११	१२	उच्च	स्थान में ग्रह
शत्रु	५	६	७	८	९	१	×	स्थान में ग्रह

उदाहरण
किसी की जन्म पत्री
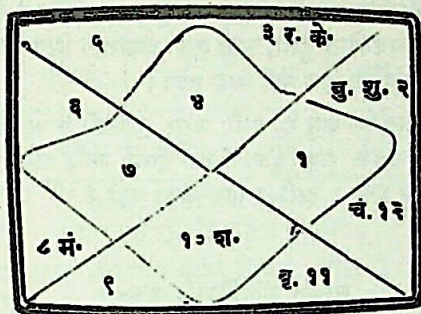
तात्कालिक मैत्री चक्र—

ग्रह	रवि	चन्द्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्र	चन्द्र, बुध, शुक्र	सूर्य, बुध गुरु, शुक्र शनि	गुरु, शनि	सूर्य, चन्द्र गुरु	चन्द्र, मङ्गल बुध, शुक्र शनि	सूर्य, चन्द्र गुरु	चन्द्र मङ्गल गुरु
शत्रु	मङ्गल, गुरु, शनि	मङ्गल	सूर्य, चन्द्र बुध, शुक्र	मङ्गल, शुक्र शनि	सूर्य	मङ्गल, शुक्र शनि	सू. बुध शुक्र

अव तात्कालिक मैत्री के लिये उदाहरण—

यहां पर सूर्य का चन्द्रमा नैसर्गिक मित्र है और जन्म कुण्डलीमें सूर्य से दशम स्थान में चन्द्रमा स्थित है, अतः सूर्य का चन्द्रमा तात्कालिक मित्र भी हुआ। अव दोनों जगह मित्र होने के कारण सूर्य का चन्द्रमा अधिमित्र सिद्ध हुआ।

सूर्य का मंगल नैसर्गिक मित्र है और जन्म कुण्डली में सूर्य से षष्ठ स्थान में स्थित है, अतः तात्कालिक शत्रु हुआ। अव एक प्रकार से मित्र और दूसरे प्रकार से शत्रु होने के कारण सूर्य का मंगल सम सिद्ध हुआ।

सूर्य का बुध नैसर्गिक सम है और जन्म कुण्डली में सूर्य से द्वादश स्थान स्थित है अतः तात्कालिक मित्र हुआ, अव एक प्रकार से सम और दूसरे प्रकार से मित्र होने के कारण सूर्य का बुध मित्र सिद्ध हुआ।

सूर्य का बृहस्पति नैसर्गिक मित्र है और जन्म कुण्डली में सूर्य से नवम में स्थित

होने से तात्कालिक शत्रु हुआ। अब एक प्रकारसे मित्र और दूसरे प्रकार से शत्रु होने के कारण सूर्य का बृहस्पति सम सिद्ध हुआ।

सूर्य का शुक्र नैसर्गिक शत्रु है और जन्म कुण्डली में सूर्य से द्वादश में स्थित होने से तात्कालिक मित्र सिद्ध हुआ, अतः एक प्रकार से मित्र और दूसरे प्रकार से शत्रु होने के कारण सूर्य का शुक्र सम सिद्ध हुआ।

सूर्य का शनि नैसर्गिक शत्रु है और जन्म कुण्डली में सूर्यसे अष्टम स्थान में होने के कारण तात्कालिक शत्रु हुआ। अब दोनों जगह शत्रु होने से सूर्य का शनि अधिशत्रु सिद्ध हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के भी तात्कालिक मित्रादि जानना चाहिये।

संस्कृत अधिमित्रादि चक्र—

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मङ्गल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
अधि मित्र	चन्द्रमा	बुध	×	सूर्य	चन्द्रमा मङ्गल	×	×
मित्र	बुध	शुक्र, बृहस्पति, शनि	शनि	बृहस्पति	शनि	बृहस्पति	बृहस्पति
सम	मङ्गल, बृहस्पति शुक्र	सूर्य	सू. चन्द्रमा बृहस्पति	चन्द्रमा शुक्र	सूर्य	सू. चन्द्रमा बुध, शनि	चन्द्र, मङ्गल बुध, शुक्र
शत्रु	×	मङ्गल	शुक्र	मङ्गल शनि	×	मङ्गल	×
अधि शत्रु	शनि	×	बुध	×	बुध, शुक्र	×	सूर्य

मेषादि राशियों के स्वामी—

क्षितिजसितज्ञचन्द्ररविसौम्यसितावनिजाः।
सुरगुरुमन्दसौरिगुरवश्च गृहांशकपाः॥

मङ्गल, शुक्र, बुध, चन्द्र, रवि, बुध, शुक्र, मंगल, बृहस्पति, शनि, शनि और गुरु मेषादि राशियों के स्वामी हैं।

जैसे मेषका स्वामी मङ्गल, वृषका शुक्र, मिथुन का बुध, कर्क का चन्द्र, सिंह का सूर्य, कन्या का बुध, तुला का शुक्र, वृश्चिक का मङ्गल, धनु का गुरु, मकर का शनि, कुम्भ का शनि और मीन का स्वामी बृहस्पति है॥

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
स्वामी	मङ्गल	शुक्र	बुध	चन्द्रमा	सूर्य	बुध
राशि	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
स्वामी	शुक्र	मङ्गल	गुरु	शनि	शनि	गुरु

मेषादि राशियों में होरा—

राशेरर्धं भवेद्धोरास्ताश्चतुर्विंशतिः स्मृताः ।
मेषादि तासां होराणां परिवृत्तिद्वयं भवेत् ॥
सूर्येन्द्वोर्विषमे राशौ समे तद्विपरीतकम् ।
पितरश्चन्द्रहोरेशा देवाः सूर्यस्य कीर्तिताः ॥

राशि का आधा होरा होती है, अतः वे बारह राशियों में चौबीस होती हैं, उन होराओं की दो परिवृत्ति होती हैं। विषम राशियों में पहले १५ अंश तक सूर्य होरा होती है। उस के बाद ३० अंश तक चन्द्र की होरा होती है।

सम राशि में उस के विपरीत होरा होती है। अर्थात् पहले १५ अंश तक चन्द्र की और उस के बाद ३० अंश तक रवि की होरा होती है। चन्द्र होरा के स्वामी पितर और सूर्य होरा के स्वामी देवता हैं।

विषम राशियों में होरा चक्र—

स्वामी	राशि	मेष	मिथुन	सिंह	तुला	धनु	कुम्भ
देव	१५	सूर्य	सूर्य	सूर्य	सूर्य	सूर्य	सूर्य
पितर	३०	चन्द्रमा	चन्द्रमा	चन्द्रमा	चन्द्रमा	चन्द्रमा	चन्द्रमा

सम राशियों में होरा चक्र—

स्वामी	राशि	वृष	कर्क	कन्या	वृश्चिक	मकर	मीन
पितर	१५	चन्द्रमा	चन्द्रमा	चन्द्रमा	चन्द्रमा	चन्द्रमा	चन्द्रमा
देव	३०	सूर्य	सूर्य	सूर्य	सूर्य	सूर्य	सूर्य

मेषादि राशियों में द्रेष्काण—

राशित्रिभागा द्रेष्काणास्ते च षट्त्रिंशदीरिताः ।
परिवृत्तित्रयं तेषां मेषादिक्रमशो भवेत् ॥
स्वपञ्चनवमानानां विषमेषु समेषु च ।
नारदागस्तिदुर्वासा द्रेष्काणेशाश्चरादयः ॥

एक राशि का तीसरा भाग द्रेष्काण होता है, इसलिये बारह राशियों में ३६ द्रेष्काण होते हैं। मेषादि क्रम से उन की तीन परिवृत्ति होती हैं।

विषम और सम दोनों राशियों में प्रथम द्रेष्काणेश उसी राशि का स्वामी, द्वितीय द्रेष्काणेश उस से पञ्चम स्थान का स्वामी और तृतीय द्रेष्काणेश स्वस्थान से नवम स्थान का स्वामी होता है।

इसी तरह प्रथम द्रेष्काण का स्वामी नारद, द्वितीय का स्वामी अगस्ति और तृतीय द्रेष्काण का स्वामी दुर्वासा है।

स्फुटार्थ चक्र—

स्वामी	राश्यंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
नारद	१०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अगस्त्य	२०	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४
दुर्वासा	३०	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८

मेषादि राशियों मे सप्तांश—

सप्तांशपास्त्वोजगृहे गणनीया निजेशतः ।
युग्मराशौ तु विज्ञेयाः सप्तमर्क्षादिनायकात् ॥
क्षारक्षीरौ च दध्याज्यौ तथेक्षुरससम्भवः ।
मद्यशुद्धजलावोजे समे शुद्धजलादिकाः ॥

विषम राशि में उस राशि के स्वामी से सप्तांश पति होते हैं। सम राशि में उस राशि से सप्तम राशि के स्वामी से सप्तांश पत्ति होते हैं।

प्रथम आदि सप्तांश क्रम से विषम राशि में क्षार, क्षीर, दधि, आज्य, इक्षुरस, मद्य और शुद्ध जल स्वामी होते हैं। सम राशि में शुद्ध जल, मद्य, इक्षुरस, आज्य, दधि, क्षीर, और क्षार प्रथम आदि क्रम से स्वामी होते हैं।

स्फुटार्थ के लिये विषम राशियों में सप्तांश चक्र—

स्वामी	राश्यंश	मेष	मिथुन	सिंह	तुला	धनु	कुम्भ
क्षार	४।१७	१	३	५	७	९	११
क्षीर	८।३४	२	४	६	८	१०	१२
दधि	१२।५१	३	५	७	९	११	१
आज्य	१७।८	४	६	८	१०	१२	२
इक्षुरस	२१।२५	५	७	९	११	१	३
मद्य	२५।४२	६	८	१०	१२	२	४
शुद्ध जल	३०।०	७	९	११	१	३	५

सम राशियों में सप्तांश चक्र—

स्वामी	राश्यंश	वृष	कर्क	कन्या	वृश्चिक	मकर	मीन
शुद्ध जल	४।१७	८	१०	१२	२	४	६
मद्य	८।३४	९	११	१	३	५	७
इक्षुरस	१२।५१	१०	१२	२	४	६	८
आज्य	१७।८	११	१	३	५	७	९
दधि	२१।२५	१२	२	४	६	८	१०
क्षीर	२५।४२	१	३	५	७	९	११
क्षार	३०।०	२	४	६	८	१०	१२

नवांश पति कथन—

नवांशेशाश्चरे तस्मात्स्थिरे नवमराशितः ।
उभये तत्पञ्चमादिरिति चिन्त्यं विचक्षणैः ॥

चर राशि में उसी से, स्थिर में उस के नवम राशि से और द्विस्वभाव में उस से पञ्चम राशि से नवांश पति होते हैं ।

अगर ग्रह चर राशि में हो तो देवता, स्थिर में हो तो मनुष्य और द्विस्वभाव में हो तो राक्षस स्वामी होता है ॥

स्पष्टार्थ के लिये नवांश चक्र—

स्वामी	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
देवता ३।२०	१ कु.	१०श	७शु.	४ चं.	१ मं.	१०श.	७ शु.	४ चं.	१ मं.	१० श.	७शु.	४ चं.
मनुष्य ६।४०	२ शु.	११ श.	८ मं.	५ र.	२ शु.	११श.	८ मं.	५ र.	२ शु.	११ श.	८ मं.	५ र
राक्षस १०।०	३ बु.	१२गु.	९ गु.	६ बु.	३ बु.	१२ गु.	९ गु.	६ बु.	३ बु.	१२ गु.	९ गु.	६ बु.
देवता १३।२०	४ चं.	१ म	१०श.	७शु.	४ चं.	१ मं.	१०श.	७ शु.	४ चं.	१ मं.	१० श.	७ शु.
मनुष्य १६।४०	५ र.	२ शु.	११श	८ मं.	५ र.	२ शु.	११श.	८ मं.	५ र.	२ शु.	११ श.	८ मं.
राक्षस २०।०	६ बु.	३ बु.	१२ गु.	९ गु.	६ बु.	३ बु.	१२ गु.	९ गु.	६ बु.	३ बु.	१२ गु.	९ गु.
देवता २३।२०	७ शु.	४ चं.	१ मं.	१०श.	७ शु.	४ च.	१ मं.	१०श.	७शु.	४ चं.	१ मं.	१० श.
मनुष्य २६।४०	८ मं	५ र.	२ शु.	११श.	८ मं.	५ र.	२ शु.	११श.	८ मं.	५ र.	२ शु.	११ श.
राक्षस ३०।०	९ गु.	६ बु.	३ बु.	१२गु.	९ गु.	६ बु.	३ बु.	१२ गु.	९ गु	६ बु.	३ बु.	१२गु.

त्रिशांश के पति—

कुजरविजगुरुज्ञशुक्रभागाः पवनसमीरणकौर्प्यजूकलेयाः ।
अयुजि युजि भे विपर्य्ययस्थाः शशिभवनालिझषान्तमृक्षसन्धिः ॥

विषम राशियों (मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, कुम्भ) में पांच, पांच, आठ, सात और पांच इन अंशों के क्रम से मंगल, शनैश्चर, बृहस्पति, बुध और शुक्र त्रिशांश पति होते हैं।

तथा सम राशियों (वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन) में विपरीत क्रम से त्रिशांश पति होते हैं।

अर्थात् पांच, सात, आठ, पांच और पांच इन अंशों के क्रम से शुक्र, बुध, बृहस्पति, शनैश्चर और मंगल त्रिशांश पति हैं।

जैसे विषम राशियों में पांच अंश तक मङ्गल, छठे अंश से दश अंश पर्य्यन्त शनैश्चर, ग्यारहवें अंश से ले कर अठारह अंश तक बृहस्पति, उन्नीसवें अंश से ले कर पच्चीसवें अंश तक बुध और छब्बीसवें अंश से ले कर तीस अंश पर्य्यन्त शुक्र त्रिशांश पति होता है।

तथा सम राशियों में आरम्भ से पांच अंश पर्य्यन्त शुक्र, छठे अंश से ले कर बारहवें अंश पर्य्यन्त बुध, तेरहवें अंश से ले कर वीस अंश पर्य्यन्त बृहस्पति, इक्कीसवें अंश से ले कर पचीसवें अंश तक शनि और छब्बीसवें अंश से ले कर तीसवें अंश पर्य्यन्त मङ्गल त्रिशांश पति होता है॥

अंश	मेष	मिथुन	सिंह	तुला	धनु	कुम्भ
५	मङ्गल	मङ्गल	मङ्गल	मङ्गल	मङ्गल	मङ्गल
१०	शनि	शनि	शनि	शनि	शनि	शनि
१८	बृहस्पति	बृहस्पति	बृहस्पति	बृहस्पति	बृहस्पति	बृहस्पति
२५	बुध	बुध	बुध	बुध	बुध	बुध
३०	शुक्र	शुक्र	शुक्र	शुक्र	शुक्र	शुक्र

सम राशियों में त्रिंशांश चक्र—

अंश	वृष	कर्क	कन्या	वृश्चिक	मकर	मीन
५	शुक्र	शुक्र	शुक्र	शुक्र	शुक्र	शुक्र
१२	बुध	बुध	बुध	बुध	बुध	बुध
२०	बृहस्पति	बृहस्पति	बृहस्पति	बृहस्पति	बृहस्पति	बृहस्पति
२५	शनि	शनि	शनि	शनि	शनि	शनि
३०	मङ्गल	मङ्गल	मङ्गल	मङ्गल	मङ्गल	मङ्गल

द्वादशांश पति—

द्वादशांशस्य गणना तत्तत्क्षेत्राद्विनिर्दिशेत् ।
तेषामधीशाः क्रमशो गणेशाश्वियमाह्यः ॥

अपने २ राशि से द्वादशांश की गणना करनी चाहिये। उन के स्वामी क्रम से गणेश, अश्विनी कुमार, यम और अहि होते हैं।

(द्वादशांश चक्र ४०१ पृ० पर देखें)

सप्तवर्गी बल—

स्वभे ग्रहेऽर्धं ०।३० त्वधिमित्रराशौ
त्रयो गजांशा ०।२२।३० हितभे तु पादम् ०।१५।० ।
समेऽष्टमांशाः ०।७।३० खलु वैरिगेहे
कलांशका ०।३।४५ श्चाध्यरिभे रदांशाः ०।१।५२।३० ॥
सप्तवर्गोद्भवं वीर्यं गृहाधिपवशाद्बुधैः ।
तदैक्यं खचरस्यात्र निरुक्तं मिहिरादिभिः ॥

अपनी राशि में ग्रह हो तो ०।३०।०, अधिमित्र की राशि में ०।२२।३०, मित्र राशि में ०।१५।०, सम राशि में ०।७।३०, शत्रुराशि में ०।३।४५ और अधि शत्रु की राशि में ०।१।५२।३० बल होता है। राशीश के वश सप्त वर्गी बल होता है। गृह, होरा आदि सात वर्गों का बल लाकर योग करने से ग्रह का बल होता है। इस में—

शून्य से ०।५२।३० तक हीन बली। ०।५२।३० से १।४५।० तक मध्य बली। १।४५।० से २।३७।३० तक बली। २।३७।३० से ३।३०।० तक पूर्ण बली। इस तरह ग्रह के चार तरह के बल सिद्ध होते हैं।

स्फुटता के लिये द्वादशांश चक्र—

स्वामी	अंश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
गणेश	२।३०	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ र.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ गु.	१० श.	११ श.	१२ गु.
अ. कु.	५।०	२ शु	३ बु.	४ चं.	५ र.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ गु.	१० श.	११ श.	१२ गु.	१ मं.
यम	७।३०	३ बु.	४ चं.	५ र.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ गु.	१० श.	११ श.	१२ गु.	१ मं.	२ शु.
अहि	१०।०	४ चं.	५ र.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ गु.	१० श.	११ श.	१२ गु.	१ मं.	२ शु.	३ बु.
गणेश	१२।३०	५ र.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ गु.	१० श.	११ श.	१२ गु.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.
अ. कु.	१५।०	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ गु.	१० श.	११ श.	१२ गु.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ र.
यम	१७।३.०	७ शु.	८ मं.	९ गु.	१० श.	११ श.	१२ गु.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ र.	६ बु.
अहि	२०।०	८ मं.	९ गु.	१० श.	११ श.	१२ गु.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ र.	६ बु.	७ शु.
गणेश	२२।३०	९ गु.	१० श.	११ श.	१२ गु.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ र.	६ बु.	७ शु.	८ मं.
अ. कु.	२५।०	१० श.	११ श.	१२ गु.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ र.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ गु.
यम	२७।३०	११ श.	१२ गु.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ र.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ गु.	१० श.
अहि	३०।०	१२ गु.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ र.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ गु.	१० श.	११ श.

प्रसंग वश राहु और केतु के उच्च आदि—

कन्या राहुगृहं प्रोक्तमुच्चं तु मिथुनं स्मृतम् ।
मूलत्रिकोणं झषभं केतोस्तत्सप्तमं परे ॥

राहु का अपना घर कन्या है, उच्च स्थान मिथुन है, मूल त्रिकोण मीन है। तथा राहु से सप्तम स्थान केतु का गृह आदि है ॥

किसी का मत यह है—

राहोस्तु वृषभः केतोर्वृश्चिकस्तुङ्गसंज्ञकः ।
मूलत्रिकोणं कुम्भश्च क्रियं मित्रभमुच्यते ।
कन्या च स्वगृहं केतोर्मीनश्च स्वगृहं स्मृतम् ॥

किसी आचार्य का मत है कि राहु का वृष और केतु का वृश्चिक उच्च स्थान है। कुम्भ मूल त्रिकोण और मेष मित्र क्षेत्र है। राहु का घर कन्या और केतु का घर मीन है॥

कोई इस तरह कहता है—

कन्या गृहं कुम्भमथ त्रिकोणमुच्चं नृयुग्मं परमं नखांशम् ।
मनीषिणः केऽपि वदन्ति राहोस्ततस्ततः सप्तमकं च केतोः ॥

किसी आचार्य का मत है कि राहु का घर कन्या, मूल त्रिकोण कुम्भ, उच्च मिथुन के २० अंश तक है। राहु के गृहादि से सप्तम स्थान केतु का गृहादि है ॥

अन्य का मत यह है—

उच्चं नृयुग्मं घटभं त्रिकोणं कन्या गृहं शुक्रशनी च मित्रे ।
सूर्यः शशाङ्को धरणीसुतश्च राहोरिपुर्विंशतिकः परांशः ॥

किसी का मत है कि राहु का उच्च मिथुन, मूल त्रिकोण कुम्भ, कन्या स्वगृह, शुक्र, शनि मित्र, रवि, चन्द्रमा, मङ्गल शत्रु हैं। २० अंश परमोच्च है ॥

एक आचार्य का मत है—

सिंहस्त्रिकोणं धनुरुच्चसंज्ञं मीनो गृहं शुक्रशनी विपक्षौ ।
सूर्यारचन्द्राः सुहृदः समाख्यौ जीवेन्दुजौ षट् शिखिनः परांशः ॥

किसी का मत है कि केतु का मूल त्रिकोण सिंह, उच्च धनु, स्वगृह मीन, शुक्र, शनि शत्रु, सूर्य, मङ्गल, चन्द्र मित्र और बृहस्पति, बुध सम हैं। परमोच्चांश छः है॥

किसी का मत यह है—

तुङ्गं युगं जगुरगो गृहमस्य कन्यां कोदण्डमण्डनमिहोच्चगृहे तु केतोः ।
तुङ्गं क्वचित्त्वलिमगोः शिखिनश्च कुम्भम् ॥

किसी का मत है कि राहु का उच्च मिथुन और स्वगृह कन्या है। तथा केतु का

उच्च धनु और स्वगृह मीन है। किसी का मत है कि राहु का उच्च वृश्चिक और केतु का कुम्भ है ॥

राहु के विषय में वाराही संहिता में—

अमृतास्वादविशेषाच्छिन्नमपि शिरः किलासुरस्येदम् ।
प्राणैरपरित्यक्तं ग्रहतां यातं वदन्त्येके ॥
इन्द्वर्कमण्डलाकृतिरसितत्वात्किल न दृश्यते गगने ।
अन्यत्र पर्वकालाद् वरप्रदानात्कमलयोनेः ।
मुखपुच्छविभक्ताङ्गं भुजङ्गमाकारमुपदिशन्त्यन्ये ॥
कथयन्त्यमूर्तमपरे तमोमयं सैंहिकेयाख्यम् ॥

किसी का मत है कि राहु नामक राक्षस का मस्तक कट जाने पर भी अमृत पीने के कारण प्राण नाश नहीं होकर ग्रहत्व को प्राप्त किया।

चन्द्र और रवि के मण्डल के समान राहु को काला होने के कारण ब्रह्मा जी के वर प्रदान से भिन्न समय में आकाश में नहीं दिखाई देता है।

किसी का मत है कि मुख और पुच्छ से विभक्त है अङ्ग जिसका ऐसा जो सर्प का आकार वही राहु का आकार है ।

किसी का मत है कि राहु का आकार कोई भी नहीं है, केवल अन्धकार मय है। इत्यादि अनेक प्रमाण राहु के विषय में मिलते हैं ।

नक्षत्र के वश दशापति का ज्ञान—

गणयेत्कृत्तिकाभाच्च यावद्वै जन्मभावधि ।
नवभिश्च हरेद्भागं शेषं ग्रहदशा भवेत् ।
आ च कु रा जी श बु के शु पूर्वाः
क्रमाद्भवेयुः स्वदशाधिनाथाः ।

कृत्तिका नक्षत्र से लेकर अपने जन्म नक्षत्र तक गिने, जो संख्या हो उस में नव का भाग देने से एकादि शेष में क्रम से सूर्य, चन्द्र, मङ्गल, राहु, गुरु, शनि, बुध केतु और शुक्र की दशा होती है ॥

ग्रहों के दशा वर्ष प्रमाण—

रसा आशाः शैला वसुविधुमिता भूपतिमिताः ।
नवेलाः शैलेला नगपरिमिता विंशतिमिताः ॥
रवाविन्दावारे तमसि च गुरौ भानुतनये ।
बुधे केतौ शुक्रे क्रमश उदिताः पाकशरदः ॥

सूर्य के ६, चन्द्रमा के १०, मङ्गल के ७, राहु के १८, बृहस्पति के १६, शनि के १९, बुध के १७, केतु के ७ और शुक्र के २० दशा वर्ष होते हैं ॥

दशा ज्ञान के लिये चक्र—

नक्षत्र	कृ. उ. फा. उ. षा	रो. ह. श्र.	मृ. चि. ध.	आ. स्वा. श.	पु. वि. पू. भा.	पु. अनु. उ. भा	अश्ले. ज्ये. रे.	म. मू. अ.	पू. फा. पू. षा. भ.
दशापति	र.	चं	कु.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०

उदाहरण—श्रीमन्नृपतीन्द्र विक्रम संवत्सरे १९६९ शालिवाहन शके १८३० यावनीयसनाब्दे १३१६ तत्राश्विन-शुक्ल-सप्तम्यां घट्यादि-मानम् ३६।१ मूलनक्षत्रे ५०।६ सौभाग्य योगे २४।२४ गड़ करणे ७।४२ आँग्लीयदिनाद्ये ८-१०-१९०८ ई. शुक्रवासरे श्रीसूर्योदयादिष्टघट्यादि मानम् १७।२६ दिनमानम् २९।३० तात्कालिकोऽर्कः ५।१९।४६।३१ अयनांशाः २१।८।३०।५५ प्रथमलग्नं राश्यादि ८।१८।२१।२३ दिवा पश्चिमनतम् २।४१ उन्नतम् २७।१९ दशमलग्नं राश्यादि ६।३।८।५७। भयातम् ५५।२९ भभोगः ५८।९

जन्माङ्गम्
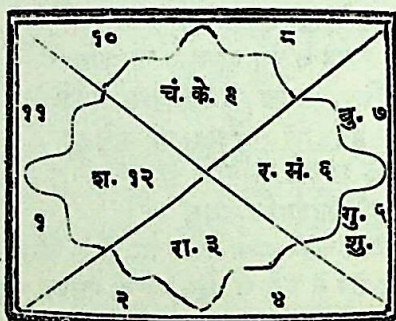
पूर्वोक्त उदाहरण में जन्म नक्षत्र मूल है। कृत्तिका से मूल पर्यन्त गिनने से, १७ आया, इसमें नौ का भाग देने से शेष ८ रहा अतः क्रम गणना से केतु की दशा हुई।

अथ भुक्तभोग्यदशावर्षानयनमाह—

भयातनाडी निहता दशाब्दैर्भभोगनाड्या विहृता फलं यत्।
वर्षादिकं भुक्तमिह प्रवीणैर्भोग्यं दशाब्दान्तरितं निरुक्तम्॥

जिस ग्रह की दशा में जन्म हो उस ग्रह की दशा वर्ष संख्या से भयात को गुणा कर भभोग से भाग देवे लब्धि क्रम से वर्ष, मास, दिन, दण्ड, पल उक्त ग्रह की

भुक्त दशा होती है। इस को ग्रह दशा वर्ष में घटाने से भोग्य दशा होती है।

जन्माङ्ग में जन्म नक्षत्र मूल भयात २५। २९ और भभोग ५८।९ इतना है, यहां दशाधीश केतु है, अतः केतु की दशा वर्ष संख्या ७ को भयात के एक जातीय (२५ × ६० + २९ = १५२९) से गुणा किया तो १५२९ × ७ = १०७०३ हुआ, इस में भभोग के एक जातीय = ५८ × ६० + ९ = ३४८० + ९ = ३४८९ से भाग दिया तो लब्ध वर्ष ३, शेष २३६ को १२ से गुणा किया तो गुणन फल २८३२ हुआ, इस में ३४८९ का भाग नहीं लगता अतः मास ०, शेष २८३२ को ३० से गुणा किया तो इतना ८४९६० हुआ, इस में भभोग का भाग दिया तो लब्धि दिन २४, शेष १२२४ को साठ से गुणा किया तो ७३४४० इतना हुआ, इस में भभोग का भाग दिया तो लब्धि घटी २१ आई। शेष १७१ को फिर साठ से गुणा कर १०२६० हुआ, इसमें भभोग का भाग दिया तो लब्धि पला २, शेष ३२८२ "अर्द्धाधिके रूपं ग्राह्यम्" इस नियम से पला ३ आई।

अतः लब्ध भुक्त दशा वर्षादि = ३।०।२४।२१।३ इस को केतु के महादशा वर्ष ७ में घटाने से भोग्य वर्षादि ३।११।५।३८।३७ ॥

स्फुटार्थ दशा चक्र—

ग्र.	दशा वर्षादि	तारीख से	तारीख तक
के.	३।११।५।३८।३७	८-१०-१९०८	१३-९-१९१२
शु.	२०।०।०	१३-९-१९१२	१३-९-१९३२
र.	६।०।०	१३-९-१९३२	१३-९-१९३८
चं.	१०।०।०	१३-९-१९३८	१३-९-१९४८
मं.	७।०।०	१३-९-१९४८	१३-९-१९५५
रा.	१८।०।०	१३-९-१९५५	१३-९-१९७३
गु.	१६।०।०	१३-९-१९७३	१३-९-१९८९
श.	१९।०।०	१३-९-१९८९	१३-९-२००८
बु.	१७।०।०	१३-९-२००८	१३-९-२०२५

अन्तर्दशा आनयन पद्य—

दशा दशाहता कार्या दशभिर्भागमाहरेत् ।
यल्लब्धं तद्भवेन्मासस्त्रिंशन्निघ्नं दिनं भवेत् ॥

जिस ग्रह की अन्तर्दशा लानी हो उस ग्रह के दशा वर्ष को ग्रह के दशा वर्ष से गुणा कर दश का भाग देवे, लब्धि मास, शेष को तीस से गुणा कर फिर दश का भाग देवे तो लब्ध दिन होगा। इसी तरह घटी पला आदि निकल आते हैं।

उदाहरण—

जैसे रवि की दशा में रवि आदि ग्रहों की अन्तर्दशा लानी है, अतः रवि महादशा वर्ष ६ को रवि की महादशा वर्ष ६ से गुणा किया तो ३६ हुआ, इस में दश का भाग दिया तो लब्ध मास ३, दिन १८, इस तरह रवि की दशा में रवि की अन्तर्दशा मासादि = ३।१८।०।०, इसी तरह रवि की दशा में चन्द्र आदि ग्रहों की अन्तर्दशा लानी चाहिये।

अन्तर्दशा में ध्रुवा लाने के लिये मेरा पद्य—

पाकवर्षप्रमाणं यत्त्रिघ्नं रूपहृतं फलम् ।
अन्तर्दशायां विज्ञेयं दिनाद्यं ध्रुवकं बुधैः ॥
यद्दशावर्षमानेन विनिघ्नं ध्रुवकं भवेत् ।
अन्तर्दशा दिनाद्या तद्दशायां हि ध्रुवापतेः ॥

महादशा वर्ष को तीन से गुणा करने से अन्तर्दशा में दिनादि ध्रुवा होगी। जिस ग्रह का दशा वर्ष मान से ध्रुवा को गुणा करे उस ग्रह की अन्तर्दशा हो जायगी।

उदाहरण—

जैसे रवि महादशा वर्ष ६ को तीन से गुणा करने से सूर्य का ध्रुवक दिन १८ हुये। इस ध्रुवक को सूर्य के दशावर्ष ६ से गुणा किया तो अन्तर्दशा दिन १०८, हुये। इन में ३० तीस का भाग देने से सूर्य की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा मासादि ३।१८ हुआ। इसी तरह ध्रुवा पर से अन्य ग्रहों की भी अन्तर्दशा सूर्य की महादशा में लानी चाहिये॥

ग्रहों के ध्रुवक चक्र—

ग्रह	रवि	चन्द्र	मङ्गल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु
ध्रुवक दिन	१८	३०	२१	५१	४८	६०	५७	५४	२१

सूर्य महादशा में सूर्यादि ग्रहोंकी अन्तर्दशा—

ग्रह	रवि	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मास	३	६	४	१०	९	११	१०	४	०
दिन	१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०

चन्द्र महादशा में चन्द्रादि ग्रहों की अन्तर्दशा—

ग्रह	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	रवि
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०
मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

कुज महादशा में कुजादि ग्रहों की अन्तर्दशा—

ग्रह	मङ्गल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	रवि	चन्द्र
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
मास	४	०	११	१	११	४	२	४	७
दिन	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०

राहु महादशा में राहु आदि की अन्तर्दशा—

ग्रह	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	रवि	चन्द्र	कुज
वर्ष	२	२	२	२	१	३	०	१	१
मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
दिन	१२	२४	५	१८	१८	०	२४	०	१८

गुरु महादशा में गुरु आदि ग्रहों की अन्तर्दशा—

ग्रह	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	रवि	चन्द्र	मङ्गल	राहु
वर्ष	२	२	२	०	२	०	१	०	२
मास	१	६	३	११	८	९	४	११	४
दिन	१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४

शनि महादशा में शनि आदि ग्रहों की अन्तर्दशा—

ग्रह	शनि	बुध	केतु	शुक्र	रवि	चन्द्र	मङ्गल	राहु	गुरु
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिन	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२

बुध महादशा में बुध आदि ग्रहों की अन्तर्दशा—

ग्रह	बुध	केतु	शुक्र	रवि	चन्द्र	मङ्गल	राहु	गुरु	शनि
वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२
मास	४	११	१०	१०	५	११	६	३	८
दिन	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९

केतु महादशा में केतु आदि ग्रहों की अन्तर्दशा—

ग्रह	केतु	शुक्र	रवि	चन्द्र	मङ्गल	राहु	गुरु	शनि	बुध
वर्ष	०	१	०	०	०	१	०	१	०
मास	४	२	४	७	४	०	११	१	११
दिन	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७

शुक्र महादशा में शुक्र आदि ग्रहों की अन्तर्दशा—

ग्रह	शुक्र	रवि	चन्द्र	मङ्गल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु
वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	१
मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

आयु का विचार—

आयुः पितृदिनेशाभ्याम् ॥ १ ॥ प्रथमयोरुत्तरयोर्वा दीर्घम् ॥ २ ॥
प्रथमद्वितीययोरन्त्ययोर्वा मध्यम् ॥३॥ मध्ययोराद्यन्तयोर्वा हीनम् ॥४॥

लग्नेश, अष्टमेश इन दोनों पर से आयुर्दाय का विचार करना चाहिये ।

लग्नेश, अष्टमेश दोनों चर राशि में या स्थिर, द्विस्वभाव इन दोनों में हों तो दीर्घायु योग होता है ।

अर्थात् लग्नेश और अष्टमेश दोनों जहां कहीं भी चर राशि में स्थित हों तो दीर्घायु योग होता है ।

अथवा लग्नेश और अष्टमेश इन दोनों में से कोई एक स्थिर राशि में दूसरा चर राशि में जैसे लग्नेश स्थिर में हो तो अष्टमेश द्विस्वभाव में, अथवा लग्नेश द्विस्वभाव में हो तो अष्टमेश स्थिर में तब भी दीर्घायु योग होता है ।

लग्नेश और अष्टमेश दोनों चर, स्थिर दोनों में स्थित हो अथवा दोनों केवल द्विस्वभाव राशि में स्थित हों तो मध्यायु योग होता है । जैसे लग्नेश चर में और अष्टमेश स्थिर में या अष्टमेश चर में और लग्नेश स्थिर में अथवा लग्नेश और अष्टमेश दोनों जहां कहीं द्विस्वभाव में हों तो मध्यायु योग होता है ।

अगर लग्नेश, अष्टमेश दोनों स्थिर राशि में अथवा दोनों में से कोई एक चर में दूसरा द्विस्वभाव में हो तो हीनायु योग होता है ।

एवं मन्दचन्द्राभ्याम् ॥ ५ ॥ पितृलाभगे चन्द्रे चन्द्रमन्दाभ्याम् ॥ ६ ॥
पितृकालतश्च ॥ ७ ॥

जिस प्रकार लग्नेश, अष्टमेश इन दोनों के वश दीर्घ आदि आयु का विचार किया गया है, उसी तरह शनि, चन्द्र या लग्न, चन्द्र से विचार करना चाहिये ।

अर्थात् यदि लग्न या सप्तम में चन्द्र बैठा हो तो लग्न, चन्द्र से अन्यथा शनि चन्द्र से आयु का विचार करना चाहिये ।

जन्म लग्न और होरा लग्न से तृतीय प्रकार में आयु का विचार करना चाहिये ।

संवादात् प्रामाण्यम् ॥ ८ ॥ विसंवादे पितृकालतः ॥ ९ ॥

अगर तीनों प्रकार से एक ही तरह की आयु आवे तो निर्विवाद वही आयु ग्रहण करनी चाहिये। यदि संवाद हो अर्थात् दो प्रकार से एक तरह की एक प्रकार से भिन्न तरह की आयु आती हो तो दो प्रकार से आई हुई आयु का ग्रहण करना चाहिए।

अगर पूर्वोक्त तीनों प्रकार से भिन्न २ आयु आती हो तो लग्न, होरालग्न इन दोनों के वश सिद्ध आयु का ग्रहण करना चाहिए॥

स्पष्ट के लिये चक्र—

	१ योग	२ योग	३ योग
दीर्घायु	चर में लग्नेश चर में अष्टमेश	स्थिर में लग्नेश द्विस्वभाव में अष्टमेश	द्विस्वभाव में लग्नेश स्थिर में अष्टमेश
मध्यायु	चर में लग्नेश स्थिर में अष्टमेश	स्थिर में लग्नेश चर में अष्टमेश	द्विस्वभाव में लग्नेश द्विस्वभाव में अष्टमेश
हीनायु	चर में लग्नेश द्विस्वभाव में अष्टमेश	द्विस्वभाव में लग्नेश चर में अष्टमेश	स्थिर में लग्नेश स्थिर में अष्टमेश

आयुर्दाय प्रमाण और खण्ड चक्र—

दीर्घायु	१ योग में ९६	२ योग में १०८	३ योग में १२०
मध्यायु	१ योग में ६४	२ योग में ७२	३ योग में ८०
हीनायु	१ योग में ३२	२ योग में ३६	३ योग में ४०
प्रथमादि खण्ड	३२	३६	४०

स्पष्ट आयु साधन प्रकार—प्रहले अभीष्ट कुण्डली में सूर्य आदि सात ग्रह और लग्न को स्पष्ट कर लेना चाहिये। बाद उक्त तीनों योगों के द्वारा लाये हुये आयुर्दायों से दीर्घ आदि आयुर्दाय का निश्चय कर लेना चाहिये। बाद वक्ष्यमाण प्रकार से आयु की स्पष्टता करनी चाहिये।

जैसे योग कारक ग्रह जितने हों उनके अंशादिकों के योग में योग कारक की संख्या से भाग देना (अर्थात् एक योग से आयुर्दाय सिद्ध हो तो दो से, दो योगों से सिद्ध हो तो चार से और तीनों योगों से सिद्ध हो तो छै से योग कारक के

अंशादि योग में भाग देना), इस तरह भाग देने से जो अंशादि लब्ध हों उसको यथा प्राप्त खण्ड से गुणा कर तीस का भाग देने से लब्ध वर्ष आदि जो हो उसको यथा प्राप्त आयुर्दाय में घटाने से स्पष्ट आयुर्दाय हो जाता है॥

उदाहरण—
जन्माङ्गम्।
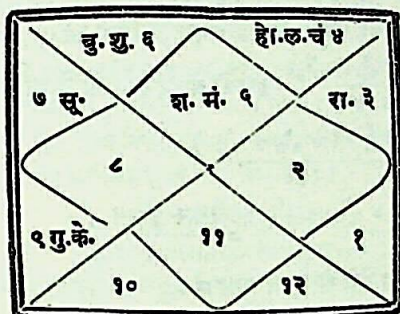
प्रथम प्रकार—लग्नेश और अष्टमेश से विचार करते हैं। यहाँ पर लग्नेश रवि और अष्टमेश गुरु है। रवि चर (तुला) में और गुरु द्विस्वभाव (धनु) में है। अतः "मध्ययोराद्यन्तयोर्वा हीनम्" इस सूत्र से अल्पायु योग सिद्ध हुआ।

द्वितीय प्रकार—लग्न और होरा लग्न से विचार करते हैं। यहाँ लग्न स्थिर राशि (सिंह) में और होरा लग्न चर (कर्क) में है, अतः "प्रथमद्वितीययोरन्तयोर्वा मध्यम्" इस सूत्र से मध्यायु योग सिद्ध हुआ।

तृतीय प्रकार—शनि और चन्द्रमा से विचार—यहां शनि स्थिर (सिंह) में और चन्द्रमा चर (कर्क) में है, अतः पूर्वोक्त सूत्र से मध्यायु योग सिद्ध हुआ।

यहाँ एक प्रकार से अल्पायु और दो प्रकार से मध्यायु योग सिद्ध होने के कारण "संवादात्प्रामाण्यम्" इस सूत्र से मध्यायु योग ही सिद्ध हुआ।

अंशादियोगकारक ग्रह—

लग्न = २९।३३।५३
होरा लग्न = १०।२१।४५
शनि = ११।१।९१९
चन्द्र = १४।१८।२६
योग = ६१।२९।१६

इसमें योग कारक संख्या ४ का भाग दिया तो लब्ध अंशादि = (१९°।१४'३१"९) इतना हुआ। इसको दो प्रकार से मध्यायु योग सिद्ध होने के कारण द्वितीय खण्ड ३६ से गुणा किया तो

$$=(५४०^{\circ}।६६'।०।२८''५)$$
$$=(५५^{\circ}।१४'।१४''५)$$
$$=\left(५५^{\circ}१+\frac{४^{\circ}}{६०}+\frac{४^{\circ}५}{३६००}\right)$$
$$=\left(५५१^{\circ}+\frac{१}{१५}+\frac{१}{८०}\right)$$

इसमें तीस का भाग दिया तो लब्ध वर्ष = १८,

वर्षशेष $=\dfrac{११+\frac{१}{१५}+\frac{१}{८०}}{३०}$, इसको बारह से गुणा किया तो

$$=\frac{१२\left(११+\frac{१}{१५}+\frac{१}{८०}\right)}{३०}$$

$$=\frac{२\left(११+\frac{१}{१५}+\frac{१}{८०}\right)}{५}=\frac{२२+\frac{२}{१५}+\frac{१}{४०}}{५}$$

प्रथम खण्ड में भाग देने से लब्ध मास = ४,

मासशेष $=\dfrac{२+\frac{२}{१५}+\frac{१}{४०}}{५}$,

इसको तीस से गुणा किया तो दिनात्मक—

$$=\frac{३०\left(२+\frac{२}{१५}+\frac{१}{४०}\right)}{५}=६\left(२+\frac{२}{१५}+\frac{१}{४०}\right)$$

$$=१२+\frac{१२}{१५}+\frac{६}{४०}=१२+\frac{४}{५}+\frac{३}{२०}$$

अतः लब्ध दिन = १२,

दिनशेष $=\frac{४}{५}+\frac{३}{२०}$, इसको साठ से गुणा किया तो घट्यात्मक

$=६०\left(\frac{४}{५}+\frac{३}{२०}\right)=१२\times४+९=५७=$ घटी।

अतः लब्ध वर्षादि = १८।४।१२।५७।०,

इस को दो योग सम्बन्धी मध्यायु वर्ष ७२ में घटाया तो

स्पष्टायु वर्षादि = ७२—(१८।४।१२।५७।०) = ५३।७।१७।३०

यहां पर मेरा सुलभ प्रकार—

यदंशादिकं योगकर्तृग्रहाणां भवेद्योगमानं हृतं कर्तृसंख्यैः।
गुणं प्राप्तखण्डैः पुनर्द्वादशघ्नं दिनाद्यं फलं भुक्तमायुःप्रमाणम् ॥
विहीनं सदा तेन वर्षाकृतेन यथा लब्धमायुर्भवेत्प्रस्फुटं तत्।
अकार्षि ह्यहं छात्रव्यूहातिप्रीत्यै प्रकारं नितान्तं क्रियालाघवं वै॥

भाषा—योग कारक जितने ग्रहादि हों उनके अंशादिकों के योग में योग कारक

ग्रहादिकों की संख्या से भाग देकर जो अंशादि लब्ध हो उस को यथा प्राप्त खण्ड से गुणाकर फिर बारह से गुणा करे तो दिनादि आयु हो जायगी। उसको यथा प्राप्त आयुर्दाय में घटाने से स्पष्ट आयुर्दाय हो जायगा ॥

उदाहरण—पूर्वोक्त योग कारक ग्रहादिकों का योग=(६।२९।१६), इस में योग संख्या (४) से भाग देकर लब्ध अंशादि=(१५।४४।५९") इस को यथा प्राप्त खण्ड ३३ से गुणा किया तो (९९°।१४।१९") इतना हुआ। इस को बारह से गुणा किया तो दिनादि फल=(६६।२।४८।५४०)=(६६।२।५७।०), दिन में तीस से भाग देने से मास आदि फल=(२२०।१२।५७।०) मास में बारह का भाग देने से वर्ष आदि फल=(१८।४।१२।५७।०) हुआ। इस को यथा प्राप्त मध्यायु वर्ष ७२ में घटाने से पूर्व तुल्य स्पष्टायु=(५३।७।१७।३०)॥

अब यहां प्रसंगवश लग्नेशादि का फल लिखते हैं।

अथ लग्नेशफलम्।

तत्रादौ लग्नगतलग्नेशफलम्—

लग्नेशे लग्नगे जन्तुः सुदेहः स पराक्रमी।
मनस्वी चातिचाञ्चल्यो द्विभार्यापरिगाम्यसौ ॥ १ ॥

जिसके जन्म काल में लग्नेश लग्न में बैठा हो वह मनुष्य सुन्दर देहवाला, पराक्रमी, मनस्वी, अतिशय चञ्चल और दो स्त्रियों के साथ गमन करने वाला होता है।

ततो द्वितीयैकादशगतलग्नेशफलम्—

लग्नेशे च धने लाभे लाभवान् पण्डितो नरः।
सुशीलो धर्मविन्मानी बहुदारगणैर्युतः ॥ २ ॥

जिसके जन्म काल में द्वितीय या एकादश स्थान में लग्नेश बैठा हो वह मनुष्य आमदनी करने वाला, पण्डित, सुन्दर स्वभाव वाला, धर्म को जानने वाला, मानी और अनेक स्त्रियों से युत होता है ॥ २ ॥

ततस्तृतीयषष्ठगतलग्नेशफलम्—

लग्नेशे सहजे षष्ठे सिंहतुल्यपराक्रमी।
सर्वसम्पद्युतो मानी द्विभार्यो मतिमान् सुखी ॥ ३ ॥

जिसके जन्म काल में तृतीय या षष्ठ स्थान लग्नेश स्थित हो वह मनुष्य सिंह के समान पराक्रमी, सब प्रकार के सम्पत्तियों से युत, मानी, दो स्त्रियों से युत, बुद्धिमान् और सुखी होता है ॥ ३ ॥

ततो दशमचतुर्थगतलग्नेशफलम्—

लग्नेशे दशमे तुर्ये पितृमातृसुखान्वितः।
बहुभ्रातृयुतः कामी गुणसौन्दर्यसंयुतः ॥ ४ ॥

जिसके जन्म काल में दशम या चतुर्थ स्थान में स्थित लग्नेश हो वह मनुष्य माता पिता के सुख से युत, बहुत भाईयों से युत, कामी और गुण तथा सुन्दर स्वरूप से युत होता है ॥ ४ ॥

ततः पञ्चमभावगतलग्नेशफलम्—

लग्नेशे पञ्चमे मानी सुतैः सौख्यं च मध्यमम् ।
प्रथमापत्यनाशः स्यात्क्रोधी राजप्रवेशिकः ॥ ५ ॥

जिसके जन्म काल में पञ्चम भाव में लग्नेश स्थित हो वह मनुष्य मानी, लड़के से साधारण सुख पाने वाला, प्रथम सन्तान से रहित, क्रोधी और राजा के दरबार में प्रवेश करने वाला होता है ॥ ५ ॥

ततः सप्तमभावगतलग्नेशफलम्—

लग्नेशे सप्तमे यस्य भार्या तस्य न जीवति ।
विरक्तो वा प्रवासी च दरिद्रो वा नृपोऽपिवा ॥ ६ ॥

जिसके जन्म काल में सप्तम भाव में लग्नेश स्थित हो उस की स्त्री नहीं जीती है अर्थात् बहुत जल्दी मरण को प्राप्त करती है तथा वह मनुष्य विरक्त पर देश में घूमने वाला दरिद्र या राजा होता है ॥ ६ ॥

ततोऽष्टमद्वादशभावगतलग्नेशफलम्—

लग्नेशे व्ययगे चाष्टे शिल्पविद्याविशारदः ।
द्यूतो चौरो महाक्रोधी परभार्यातिभोगकृत् ॥ ७ ॥

जिसके जन्म काल में अष्टम या द्वादश भाव में लग्नेश स्थित हो वह मनुष्य चित्रकारी, विद्या में पण्डित, जुआरी, चोर, अतिशय क्रोधी और दूसरे की स्त्री में अत्यन्त गमन करने वाला होता है ॥ ७ ॥

ततो नवमभावगतलग्नेशफलम्—

लग्नेशे नवमे जन्तुः भाग्यवान् राजवल्लभः ।
विष्णुभक्तो पटुर्वाग्मी पुत्रदारधनैर्युतः ॥ ८ ॥

जिसके जन्म काल में नवम भाव में लग्नेश स्थित हो वह मनुष्य भाग्यवान् राजाओं का प्रिय, विष्णु भगवान् का भक्त, चतुर, बोलने वाला और पुत्र, स्त्री, धन इन सबों से युत होता है ॥ ८ ॥

अथ धनेशफलम् ।

तत्रादौ धनभावगतधनेशफलम्—

धनेशे धनगे जन्तुर्धनवान् गर्वसंयुतः ।
भार्याद्वयं त्रयं चापि सुतहीनोऽपि जायते ॥ १ ॥

जिसके जन्म काल में द्वितीय भाव में धनेश स्थित हो वह मनुष्य धनवान्, गौरव से युत और दो या तीन स्त्रियों से युत हो कर भी पुत्र रहित होता है ॥ १ ॥

ततस्तृतीयचतुर्थभावगतधनेशफलम्—

धनेशे सहजे तुर्ये विक्रमी मतिमान्गुणी।
परदाराभिगामी च निश्चलो देवभक्तियुक् ॥ २ ॥

जिसके जन्म काल में तृतीय या चतुर्थ भाव में धनेश बैठा हो वह मनुष्य पराक्रमी, बुद्धिमान्, गुणवान्, पर स्त्री में गमन करने वाला, स्थिर प्रकृति वाला और देवताओं के भक्त होता है ॥ २ ॥

ततः पञ्चमषष्ठभावगतधनेशफलम्—

धनेशे पञ्चमे शत्रौ धनप्राप्तिर्भवेद् ध्रुवम्।
शत्रुतो वित्तनाशस्तु गुदे चौराद् भवेद्रुजा ॥ ३ ॥

जिसके जन्म काल में पञ्चम या षष्ठ भाव में द्वितीयेश स्थित हो उस मनुष्य को निश्चय कर के धन प्राप्ति होती है। किन्तु शत्रु या चोर से उस धन का नाश होता है और गुद मार्ग में रोग होता है ॥ ३ ॥

ततः सप्तमभावगतधनेशफलम्—

धनेशे सप्तमे वैद्यः पराजयाभिगाम्यसौ।
जाया तस्य भवेद्वेश्या मातापि व्यभिचारिणी ॥ ४ ॥

जिसके जन्म काल में सप्तम भाव में धनेश स्थित हो वह मनुष्य वैद्य तथा पर स्त्री में गमन करने वाला होता है। उस की स्त्री वेश्या होती है और माता भी व्यभिचारिणी होती है ॥ ४ ॥

ततोऽष्टमभावगतधनेशफलम्—

धनेशे मृत्युगेहस्थे भूमिं द्रव्यमवाप्नुयात्।
जायासौख्यं भवेदल्पं ज्येष्ठभ्रातृसुखं न हि ॥ ५ ॥

जिसके जन्म काल में अष्टमभाव में द्वितीयेश बैठा हो तो वह मनुष्य भूमि तथा द्रव्य का लाभ करने वाला, स्त्री से थोड़ा सुख पाने वाला और ज्येष्ठ भाई के सुख से रहित होता है ॥ ५ ॥

ततो नवमैकादशभावगतधनेशफलम्—

धनेशे नवमे लाभे धनवान् धार्मिकः पटुः।
बाल्ये रोगी सुखी पश्चात् यावदायुः समाप्यते ॥ ६ ॥

जिसके जन्म काल में नवम या एकादश भाव में द्वितीयेश स्थित हो तो वह मनुष्य धनवान्, धार्मिक, पण्डित, बाल्यकाल में रोगयुत, पीछे मरण काल तक सुखी रहता है ॥ ६ ॥

ततो दशमभावगतधनेशफलम्—

धनेशो दशमे यस्य कामी चापि स पण्डितः ।
बहुदारधनैर्युक्तः सुतहीनोऽपि जायते ॥ ७ ॥

जिसके जन्म काल में दशम भाव में धनेश गत हो तो वह मनुष्य कामी, पण्डित, बहुत स्त्री और धन से युत होने पर भी पुत्र से रहित होता है ॥ ७ ॥

ततो व्ययभावगतधनेशफलम्—

धनेशे व्ययगे मानी साहसी धनवर्जितः ।
विक्रमी चातिमेधावी ज्येष्ठपुत्रसुखं न हि ॥ ८ ॥

जिसके जन्म काल में द्वादश भाव में धनेश स्थित हो तो वह मनुष्य मानी, साहसी, धन से रहित, पराक्रमी, अतिशय बुद्धिमान् और ज्येष्ठ पुत्र के सुख से रहित होता है ॥ ८ ॥

ततो लग्नगतधनेशफलम्—

धनेशे च तनौ पुत्री स्वकुटुम्बस्य पोषकः ।
धनवान् निष्ठुरः कामी परकार्येषु तत्परः ॥ ९ ॥

जिसके जन्म काल में लग्न में धनेश बैठा हो तो वह मनुष्य पुत्र युत, अपने कुटुम्बों का पालन करने वाला, धनवान् , निष्ठुर, कामी और दूसरे के काम करने में संलग्न होता है ॥ ९ ॥

अथ तृतीयेशफलम् ।

तत्रादौ तृतीयगततृतीयेशफलम्—

तृतीयेशो तृतीयस्थे विक्रमी भृत्यसंयुतः ।
धनयुक्तो महाहृष्टो भुनक्ति सुखमद्भुतम् ॥ १ ॥

जिस जातक के जन्म काल में तृतीय भाव में तृतीयेश स्थित हो तो वह पराक्रमी, भृत्यों से युत, धन से युत, अतिशय हर्षित और सुख भोगने वाला होता है ॥ १ ॥

ततश्चतुर्थपञ्चमभावगततृतीयेशफलम्—

तृतीयेशे सुखे खे च पञ्चमे वा सुखं सदा ।
अतिक्रूराभवेद्भार्या धनाढ्यो मतिमान्महान् ॥ २ ॥

जिस जातक के जन्म काल में चतुर्थ, पञ्चम या दशम स्थान में तृतीयेश स्थित हो तो वह सदा सुखी, अतिशय दुष्टा स्त्री वाला, धन से युत और अत्यन्त बुद्धिमान् होता है ॥ २ ॥

ततः षष्ठभावगततृतीयेशफलम्—

तृतीयेशे रिपौ यस्य भ्राता शत्रुर्महाधनी ।
मातुलानां सुखं न स्यान्मातुल्यां भोगमिच्छति ॥ ३ ॥

जिस जातक के जन्म काल में तृतीयेश षष्ठ भाव में स्थित हो तो उसका भाई शत्रु होता है तथा खुद वह धनी, मातुल के सुख से रहित और मातुली (मामी) के साथ सम्भोग की इच्छा करने वाला होता है ॥ ३ ॥

ततो द्वादशनवमभावगततृतीयेशफलम्—

तृतीयेशे व्यये भाग्ये स्त्रीभिर्भाग्योदयो भवेत्।
पिता तस्य महाचौरः सुसेवी दुःखदः सताम् ॥ ४ ॥

जिस जातक के जन्म काल में द्वादश या नवम भाव में तृतीयेश बैठा हो तो उसको स्त्रियों से भाग्योदय होता है तथा उसका पिता अत्यन्त चोर, दास-कर्म करने वाला और सज्जनों को दुःख देने वाला होता है ॥ ४ ॥

ततः सप्तमाष्टमभावगततृतीयेशफलम्—

तृतीयेशेऽष्टमे द्यूने राजद्वारे मृतिर्भवेत्।
चौरो वा परगामी वा बाल्ये कष्टं दिने दिने ॥ ५ ॥

जिस जातक के जन्म काल में सप्तम या अष्टम स्थान में तृतीयेश बैठा हो तो वह राजदरबार में मृत्यु पाने वाला होता है तथा चोर या दूसरे कि स्त्री के साथ सम्भोग करने वाला और बाल्य काल में कष्ट भोगने वाला होता है ॥ ५ ॥

ततो लग्नैकादशभावगततृतीयेशफलम्—

तृतीयेशे तनौ लाभे स्वभुजार्जितवित्तवान्।
सुखी कृशो महाक्रोधी साहसी जनसेवकः ॥ ६ ॥

जिस जातक के जन्म काल में लग्न या एकादश भाव में तृतीयेश बैठा हो तो वह अपने भुज बल से धन पैदा करने वाला, सुखी, दुर्बल, अतिशय क्रोधी, साहसी और दूसरे लोगों का सेवक होता है ॥ ६ ॥

ततो धनभावगततृतीयेशफलम्—

गुदाभञ्जनिकः स्थूलो परभार्याधने रुचिः।
स्वल्पारम्भी सखी न स्यात् तृतीयेशे धने गते ॥ ७ ॥

जिस जातक के जन्म काल में द्वितीय भाव में तृतीयेश बैठा हो तो वह गुद मार्ग को भजन करने वाला (लौंडे बाज) मोटे शरीर वाला, पराई स्त्री तथा पराये धन की अभिलाषा करने वाला, थोड़े में काम को प्रारम्भ करने वाला और सुख से रहित होता है ॥ ७ ॥

अथ चतुर्थेशफलम्।

तत्रादौ चतुर्थभावगतचतुर्थेशफलम्—

तुर्येशे तुर्यगे मन्त्री भवेत्सर्वजनाधिपः।
चतुरः शीलवान् मानी धनाढ्यः स्त्रीप्रियः सुखी ॥ १ ॥

जिस जातक के जन्म काल में चतुर्थेश चतुर्थ भाव में बैठा हो वह राजा के मन्त्री, राजा अथवा चतुर, सुन्दर स्वभाव वाला, मानी, धन से युत, स्त्री का प्रिय और सुखी होता है ॥ १ ॥

ततः पञ्चमनवमभावगतचतुर्थेशफलम्—

तुर्येशे पञ्चमे धर्मे सुखी सर्वजनप्रियः।
विष्णुभक्तिरतो मानी स्वभुजार्तिविनाशकृत् ॥ २ ॥

जिस जातक के जन्म काल में पञ्चम या नवम भाव में चतुर्थेश बैठा हो वह सुखी, सब जनों का प्रिय, विष्णु के भक्ति में स्नेही, मानी और अपने भुजाओं के बल से क्लेश हटाने वाला होता है ॥ २ ॥

ततः षष्ठभावगतचतुर्थेशफलम्—

सुखेशे शत्रुगेहस्थे तदा स्याद्बहुमातृकः।
क्रोधी वैरी व्यभिचारी दुष्टचित्तो मनस्व्यपि ॥ ३ ॥

जिस जातक के जन्म काल में चतुर्थेश षष्ठभाव में गत हो तो वह बहुत माताओं से युत, क्रोधी, शत्रुता करने वाला, व्यभिचारी, दुष्ट अन्तःकरण वाला और मनस्वी होता है ॥ ३ ॥

ततः लग्नसप्तमभावद्वयगतचतुर्थेशफलम्—

सुखेशे सप्तमे लग्ने बहुविद्यासमन्वितः।
पित्रार्जितधनत्यागी सभायां मूकवद्भवेत् ॥ ४ ॥

जिस जातक के जन्म काल में चतुर्थेश सप्तम या लग्न में बैठा हो तो वह बहुत विद्याओं से युत, गुरु, पिता के अर्जित धन को त्याग करने वाला और सभा में गूँगे के समान होता है ॥ ४ ॥

ततो दशमभावगतचतुर्थेशफलम्—

सुखेशो दशमे यस्य मातृसौख्येन संयुतः।
धनधान्यसमायुक्तो धर्मे प्रीतिश्च जायते ॥ ५ ॥

जिस जातक के जन्म काल में चतुर्थेश दशम भाव में बैठा हो तो वह माता से युत, धन धान्य से युत और धर्म में प्रीति करने वाला होता है ॥ ५ ॥

ततो द्वादशाष्टमभावगतचतुर्थेशफलम्—

सुखेशे व्ययरन्ध्रस्थे सुखहीनो भवेन्नरः।
पितृसौख्यं भवेदल्पं दीर्घायुर्जायते ध्रुवम् ॥ ६ ॥

जिसके जन्म काल में द्वादश या अष्टम भाव में चतुर्थेश बैठा हो तो वह मनुष्य सुख से रहित, पिता से थोड़ा सुख पाने वाला और दीर्घायु होता है ॥ ६ ॥

ततस्तृतीयैकादशभावगतचतुर्थेशफलम्—

सुखेशे सहजे लाभे नित्यं रोगी धनी भवेत् ।
उदारो गुणवान् दाता स्वभुजार्जितवित्तवान् ॥ ७ ॥

जिसके जन्म समय में चतुर्थेश तृतीय या एकादश भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य सदा रोग युत, धनी, उदार, गुणवान्, दानी और अपने भुजाओं से पैदा किया हुआ धन से धनी होता है ॥ ७ ॥

ततो द्वितीयभावगतचतुर्थेशफलम्—

सर्वसम्पद्युतो मानी साहसी कुसुखान्वितः ।
कुटुम्बैः संयुतो भोगी सुतेशे च द्वितीयगे ॥ ८ ॥

जिस जातक के जन्म काल में चतुर्थेश द्वितीय भाव में बैठा हो तो वह सब सम्पत्तियों से युत, मानी, साहसी, पृथ्वी को लेकर सुखी, कुटुम्बों से युत और भोगी होता है ॥ ८ ॥

अथ पञ्चमेशफलम् ।

तत्रादौ पञ्चमभावगतपञ्चमेशफलम्—

सुतेशः पञ्चमे यस्य तस्य पुत्रो न जीवति
क्षणिकः क्रूरभापी च धार्मिको मतिमान्भवेत् ॥ १ ॥

जिसके जन्म समय में पञ्चमेश पञ्चम भाव में बैठा हो उस मनुष्य का पुत्र नहीं जीता है। तथा क्षण मात्र समय को भी अपने काम में लाने वाला, बुरे वचन बोलने वाला, धर्मात्मा और बुद्धिमान् होता है ॥ १ ॥

ततः षष्ठद्वादशभावगतपञ्चमेशफलम्—

सुतेशे षष्ठरिःफस्थे पुत्रः शत्रुत्वमाप्नुयात् ।
मृत्युतो ग्राह्यपुत्रो वा धनपुत्रोऽथ वा भवेत् ॥ २ ॥

जिसके जन्म समय में पञ्चमेश षष्ठ या द्वादश भाव में बैठा हो उस मनुष्य को पुत्र के साथ शत्रुता या पुत्र की मृत्यु हो जाती है पुत्र मर जाने के बाद दत्तक या धन देकर पुत्र बनाता है ॥ २ ॥

ततः सप्तमभावगतपञ्चमेशफलम्—

सुतेशे कामगे मानी सत्यधर्मसमन्वितः ।
तुङ्गस्थिते जनस्वामी भक्तियुक्तैकतेजसा ॥ ३ ॥

जिस जातक के जन्म समय में पञ्चमेश सप्तम भाव में स्थित हो तो वह मानी, सत्य बोलने वाला और धर्मात्मा होता है। यदि उच्च स्थान गत पञ्चमेश हो तो भक्ति युत प्रताप से जनों का स्वामी (राजा) होता है ॥ ३ ॥

ततोऽष्टमद्वितीयभावगतपञ्चमेशफलम्—

सुतेशे चायुषि वित्ते बहुमित्रो न संशयः।
उदरव्याधिसंयुक्तः क्रोधयुक्तो धनान्वितः॥ ४॥

जिस के जन्म समय में पञ्चमेश अष्टम या द्वितीय भाव में बैठा हो वह मनुष्य बहुत मित्र वाला, पेट की बिमारी से युत, क्रोध युत और धनवान् होता है, इसमें संदेह नहीं॥ ४॥

ततो नवमदशमभावगतपञ्चमेशफलम्—

सुतेशे नवमे खे च पुत्रो भूपसमो भवेत्।
अथवा ग्रन्थकर्ता च विख्यातः कुलदीपकः॥ ५॥

जिसके जन्म समय में पञ्चमेश नवम या दशम भाव में बैठा हो उसका लड़का राजा के समान होता है। अथवा ग्रन्थ बनाने वाला प्रसिद्ध और अपने कुल को उज्ज्वल करने वाला होता है॥ ५॥

तत एकादशभावगतपञ्चमेशफलम्—

सुतेशे लाभभवने पण्डितो जनवल्लभः।
ग्रन्थकर्ता महादक्षो बहुपुत्रो धनान्वितः॥ ६॥

जिस के जन्म काल में पञ्चमेश एकादश भाव में बैठा हो वह मनुष्य पण्डित, जनों का स्नेही, ग्रन्थ बनाने वाला, अतिशय चतुर, बहुत पुत्र वाला और धन से युत होता है॥

ततो लग्नतृतीयभावगतपञ्चमेशफलम्—

सुतेशे लग्नसहजे मायावी पिशुनो महान्।
यशोऽपि दीयते नैव किञ्चिद् द्रव्यस्य का कथा॥ ७॥

जिसके जन्म काल में लग्न या तृतीय भाव में पञ्चमेश बैठा हो वह मनुष्य मायावी, चुगुल खोर, कोई कितना भी उपकार करे उसको यश न देने वाला और द्रव्य तो बिल्कुल ही नहीं देने वाला होता है॥ ७॥

ततश्चतुर्थभवनगतपञ्चमेशफलम्—

सुतेशे मातृभवने चिरं मातृसुखं भवेत्।
लक्ष्मीयुक्तो सुबुद्धिश्च सचिवश्च गुरुस्तथा॥ ८॥

जिसके जन्म काल में पञ्चमेश चतुर्थभाव में बैठा हो वह मनुष्य बहुत काल तक माता से सुख पाने वाला, लक्ष्मी से युत, सुन्दर बुद्धि वाला और राजा के मन्त्री तथा गुरु होता है॥ ८॥

अथ षष्ठेशफलम्।

तत्रादौ रिपुभावगतषष्ठेशफलम्—

षष्ठेशे रिपुभावस्थे स्वज्ञातिः शत्रुवद्भवेत्।

परज्ञातिर्भवेन्मित्रं भूमौ न चलति ध्रुवम् ॥ १ ॥

जिसके जन्म काल में षष्ठेश षष्ठभाव में हो तो उसका अपना बन्धुवर्ग शत्रु के समान, तथा दूसरे का बन्धुवर्ग मित्र के समान होता है और निश्चय करके वह पैदल नहीं चलता है ॥ १ ॥

ततः सप्तमैकादशभावगतषष्ठेशफलम्—

षष्ठेशे सप्तमे लाभे लग्ने वा पशुमान् भवेत्।
धनवान् गुणवान् मानी साहसी पुत्रवर्जितः ॥ २ ॥

जिसके जन्म काल में षष्ठेश सप्तम या एकादश भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य पशुओं से युत, धनवान्, गुणवान्, मानी, साहसी और पुत्र हीन होता है ॥ २ ॥

ततो द्वादशाष्टमभावगतषष्ठेशफलम्—

षष्ठेशेऽष्टमरिःफस्थे रोगी शत्रुर्मनीषिणाम्।
परजायाभिगामी च जीवहिंसासु तत्परः ॥ ३ ॥

जिसके जन्म समय में अष्टम या द्वादश भाव में षष्ठेश बैठा हो तो रोगी, पण्डितों का दुश्मन, परस्त्री गामी और जीवों का वध करने वाला होता है ॥ ३ ॥

ततो नवमभावगतषष्ठेशफलम्—

षष्ठेशो नवमे यस्य काष्ठपाषाणविक्रयी।
व्यवहारे क्वचिद्धानिः क्वचिद्वृद्धिर्भवेत्किल ॥ ४ ॥

जिस जातक के जन्म काल में षष्ठेश नवम भाव में बैठा हो वह लकड़ी और पत्थर बेचने वाला होता है। तथा उसको व्यापार से कहीं हानि कहीं वृद्धि होती है॥

ततो द्वितीयदशमभावगतषष्ठेशफलम्—

षष्ठेशे कर्मवित्तस्थे साहसी कुलविश्रुतः।
परदेशी शुचिर्वक्ता स्वधर्मेष्वेकनिष्ठकः ॥ ५ ॥

जिसके जन्म काल में षष्ठेश द्वितीय या दशम भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य साहसी, अपने कुल में प्रसिद्ध, परदेशी, पवित्र, वक्ता और अपने धर्म में विश्वास करने वाला होता है ॥ ५ ॥

ततस्तृतीयचतुर्थभावगतषष्ठेशफलम्—

षष्ठेशे सहजे तुर्ये क्रोधनो रक्तलोचनः।
मनस्वी पिशुनोऽधर्मी चलचित्तोऽतिवित्तवान् ॥ ६ ॥

जिसके जन्म समय में षष्ठेश तृतीय या चतुर्थ भाव में बैठा हो तो वह जातक क्रोधी, लाल आँख वाला, मनस्वी, चुगुलखोर, अधर्मी, चञ्चल चित्त वाला और अत्यन्त धनी होता है ६ ॥

ततः पञ्चमभावगतषष्ठेशफलम्—

षष्ठेशे पञ्चमे यस्य चलं मित्रधनादिकम् ।
कफयुक्तः सुखी सौम्यः स्वकार्ये चतुरो महान् ॥ ७ ॥

जिसके जन्म काल में षष्ठेश पञ्चम भाव में स्थित हो तो वह मनुष्य चञ्चल मन्त्री और चञ्चल धन वाला, कफी, सुखी, सुन्दर स्वभाव वाला तथा अपने कार्य में अत्यन्त चतुर होता है ॥ ७ ॥

अथ सप्तमेशफलम् ।

तत्रादौ सप्तमभावगतसप्तमेशफलम्—

सप्तमेशे तनौ चारते परजायासु लम्पटः ।
निष्ठुरो वचसा धीरो वार्ता न स्थीयते हृदि ॥ १ ॥

जिसके जन्म काल में सप्तमेश सप्तम भाव में स्थित हो तो वह मनुष्य परस्त्री गामी, बोलने में निष्ठुर, धीर और किसी गुप्त बात को हृदय में न रखने वाला होता है ॥ १ ॥

ततोऽष्टमभावगतसप्तमेशफलम्—

जायेशे चाष्टमे षष्ठे सरोषा कामिनी भवेत् ।
क्रोधयुक्तो भवेद्वापि न सुखं लभते क्वचित् ॥ २ ॥

जिसके जन्म काल में सप्तमेश अष्टम या षष्ठ भाव में बैठा हो तो उसकी स्त्री रोष करने वाली होती है । अथवा स्वयं क्रोधी होता है और सदा सुख हीन रहता है॥

ततो द्वितीयनवमभावगतसप्तमेशफलम्—

द्युनेशे नवमे वित्ते नानास्त्रीभिः समागमः ।
आरम्भी दीर्घसूत्री च स्त्रीषु चित्तं हि केवलम् ॥ ३ ॥

जिसके जन्म काल में सप्तमेश द्वितीय या सप्तम भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य अनेक स्त्रियों के साथ रमण करने वाला, छोटे कार्य को आरम्भ कर देर में समाप्त करने वाला और सदा स्त्रियों के तरफ मन रखने वाला होता है ॥ ३ ॥

ततश्चतुर्थभावगतसप्तमेशफलम्—

द्युनेशे दशमे तुर्ये तस्य जाया पतिव्रता ।
धर्मात्मा सत्यसंयुक्तः केवलं वातरोगवान् ॥ ४ ॥

जिसके जन्म काल में सप्तमेश चतुर्थ या दशम भाव में बैठा हो तो उसकी स्त्री पतिव्रता तथा स्वयं धर्मात्मा, सत्य बोलने वाला और सिर्फ वात रोग से दुखी रहता है ॥ ४ ॥

ततस्तृतीयैकादशभावगतसप्तमेशफलम्—

द्यूनेशे सहजे लाभे मृतपुत्रोऽपि जायते ।

कदाचिज्जीवति कन्या पश्चात्पुत्रोऽपि जीवति ॥ ५ ॥

जिसके जन्म काल में सप्तमेश तृतीय या एकादश भाव में बैठा हो तो उस का लड़का मर जाता है। अगर कहीं कन्या जन्म लेकर जीवे तो बाद में पुत्र भी जीवित रहता है ॥ ५ ॥

ततो द्वादशभावगतसप्तमेशफलम्—

द्वादशे सप्तमेशे तु दरिद्रः कृपणो महान् ।
चौरकन्या भवेद् भार्या वस्त्राजीवी च नीचधीः ॥ ६ ॥

जिसके जन्म काल में सप्तमेश द्वादश भाव में बैठा हो तो मनुष्य दरिद्र, अत्यन्त कृपण, चोर के कन्या से सादी करने वाला, वस्त्र के व्यापार करने वाला और नीच बुद्धि वाला होता है ॥ ६ ॥

तत पञ्चमभावगतपञ्चमेशफलम्—

सर्वैर्गुणैर्युतो मानी भवेत्सर्वगुणाधिपः ।
सदैव हर्षसंयुक्तः सप्तमेशे सुतस्थिते ॥ ७ ॥

जिस जातक के जन्म काल में सप्तमेश पंचम भाव में बैठा हो तो वह सब गुणों से युत, मानी, सब गुणों का स्वामी और सदा आनन्द युत रहता है ॥ ७ ॥

अथाष्टमेशफलम् ।

तत्रादावष्टमभावगताष्टमेशफलम्—

द्यूतश्चौरोऽन्यथावादी गुप्तनिन्दासु तत्परः ।
अष्टमेशेऽष्टमस्थाने भार्या पररता भवेत् ॥ १ ॥

जिसके जन्म काल में अष्टमेश अष्टम भाव में बैठा हो तो वह जातक जुआ खेलने वाला, चोर, असत्य बोलने वाला और चुगुल खोरी में तत्पर होता है ॥ १ ॥

ततश्चतुर्थदशमभावगताष्टमेशफलम्—

अष्टमेशे तपस्थाने महापापी च नास्तिकः ।
सुताढया त्वथवा वन्ध्या भार्या परधनं हृदि ॥ २ ॥

जिसके जन्म काल में अष्टमेश नवम भाव में स्थित हो तो वह मनुष्य महापापी और नास्तिक होता है। उसकी स्त्री कन्या जनने वाली या वन्ध्या और दूसरे के धन की अभिलाषा करने वाली होती है ॥ २ ॥

ततश्चतुर्थदशमभावगताष्टमेशफलम्—

अष्टमेशे सुखे खे वा पिशुनो बन्धुवर्जितः ।
मातापित्रोर्भवेन्मृत्युः स्वल्पकालेन भीतियुक् ॥ ३ ॥

जिसके जन्म काल में अष्टमेश चतुर्थ या दशम भाव में बैठा हो तो वह

मनुष्य चुगुल खोर, बन्धुओं से रहित, बाल्य काल में माता पिता दोनों की मृत्यु पाने वाला और भय से युत होता है ॥ ३ ॥

ततः सप्तमैकादशभावगताष्टमेशफलम्—

अष्टेशे सप्तमे लाभे कृतौ वृद्धिः प्रजायते ।
द्रव्यं न स्थीयते गेहे स्थिरवृद्धिर्भवेच्च न ॥ ४ ॥

जिस जातक के जन्म काल में अष्टमेश सप्तम या एकादश भाव में स्थित हो तो वह मनुष्य कोई व्यापार करने से वृद्धि को पाता है, किन्तु द्रव्य उस के घर में नहीं ठहरता अतएव उस की वृद्धि स्थिर पूर्वक कभी नहीं होती है ॥ ४ ॥

ततो द्वादशषष्ठभावगताष्टमेशफलम्—

अष्टमेशे व्यये षष्ठे नित्यं रोगी प्रजायते ।
जलसर्पादिकाद् घातो भवेत्तस्यैव शैशवे ॥ ५ ॥

जिसके जन्म काल में अष्टमेश षष्ठ या द्वादश भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य सदा रोग युत और बाल्य काल में उस के ऊपर जल, सर्प आदि जीवों का आघात होता है ॥ ५ ॥

ततो लग्नतृतीयभावगताष्टमेशफलम्—

अष्टमेशे तनौ सोत्थे भार्याद्वयं समादिशेत् ।
विष्णुद्रोहरतो नित्यं व्रणरोगः प्रजायते ॥ ६ ॥

जिसके जन्म समय में अष्टमेश लग्न या तृतीय भाव में बैठा हो वह मनुष्य दो स्त्री वाला, विष्णु का द्रोही और घाव सम्बन्धी रोग से युत होता है ॥ ६ ॥

ततो द्वितीयपञ्चमभावगताष्टमेशफलम्—

अष्टमेशे धने ज्ञाने बलहीनः प्रजायते ।
धनं तस्य भवेत्स्वल्पं गतं वित्तं न लभ्यते ॥ ७ ॥

जिसके जन्म काल में अष्टमेश तृतीय या पञ्चम भाव में बैठा हो वह मनुष्य निर्बल होता है। तथा उसके पास में थोड़ा धन रहता है और गया हुआ धन फिर लौटता नहीं है ॥ ७ ॥

अथ नवमेशफलम् ।

तत्रादौ नवमभावगतनवमेशफलम्—

धनधान्ययुतो नित्यं गुणसौन्दर्यसंयुतः ।
बहुभ्रातृसुखैर्युक्तो भाग्येशे नवमे स्थिते ॥ १ ॥

जिसके जन्म काल में नवमेश नवम भाव में बैठा हो वह मनुष्य सदा धन धान्य से युत, गुणी, सुन्दर और बहुत भाई के सम्बन्धी सुख से युत होता है ॥ १ ॥

ततो दशमचतुर्थभावगतनवमेशफलम्—

भाग्येशे दशमे तुर्ये मन्त्री सेनापतिर्भवेत्।
पुण्यवान्पशुमांश्चापि साहसी क्रोधवर्जितः॥ २॥

जिसके जन्म काल में नवमेश दशम भाव में बैठा हो वह मनुष्य मन्त्री या सेनापति होता है। तथा पुण्यवान् पशुओं को रखने वाला, साहसी और क्रोध से रहित होता है॥ २॥

ततः पञ्चमैकादशभावगतनवमेशफलम्—

भाग्येशे पञ्चमे लाभे भाग्यवान् जनवल्लभः।
गुरुभक्तिरतो मानी धीरोदारगुणैर्युतः॥ ३॥

जिस जातक के जन्म काल में नवमेश पञ्चम या एकादश भाव में गत हो तो वह भाग्यवान्, सबों का प्रिय, गुरु के भक्ति में रत, मानी, धीर और उदार गुण से युत होता है॥ ३॥

ततः षष्ठाष्टमद्वादशभावगतनवमेशफलम्—

भाग्येशे मातुले रिष्फे भाग्यहीनस्तथाष्टमे।
मातुलस्य सुखं न स्यात् ज्येष्ठभ्रातुः सुखं तथा॥ ४॥

जिस जातक के जन्म काल में नवमेश षष्ठ, अष्टम या द्वादश भाव में बैठा हो तो वह भाग्य रहित, मामा के सुख से रहित और अपने बड़े भाई से सुख पाने वाला होता है॥ ४॥

ततो लग्नसप्तमभावगतनवमेशफलम्—

भाग्येशे सप्तमे कल्ये गुणवान् पशुमान् भवेत्।
कदाचिन्न भवेत्सिद्धिर्यत्कार्यं कर्तुमिच्छति॥ ५॥

जिस जातक के जन्म काल में नवमेश सप्तम या लग्न में बैठा हो तो वह गुणवान् और पशुओं वाला होता है तथा जिस काम को करने की इच्छा करे वह कदापि सिद्ध नहीं होता है॥ ५॥

ततो द्वितीयतृतीयभावगतनवमेशफलम्—

भाग्येशे सहजे वित्ते सदा भाग्यानुचिन्तकः।
धनवान् गुणवान् कामी पण्डितो जनवल्लभः॥ ६॥

जिस जातक के जन्म काल में नवमेश द्वितीय या तृतीय भाव में बैठा हो वह अपने भाग्य को सराहने वाला, धनी, गुणी, कामी और सबका प्रिय होता है॥

अथ दशमेशफलम्।

तत्रादौ चतुर्थदशमभावगतदशमेशफलम्—

दशमेशे सुखे खे वा ज्ञानवान् स च विक्रमी।

गुप्तदेवार्चनरतो धर्मात्मा सत्यसंयुतः ॥ १ ॥

जिसके जन्म काल में दशमेश चतुर्थ या दशम में भाव बैठा हो तो वह मनुष्य ज्ञानवान्, पराक्रमी, गुप्त रूप से देवताओं का पूजन करने वाला, धर्मात्मा और सत्यवादी होता है ॥ १ ॥

ततोऽष्टमभावगतदशमेशफलम्—

कर्मेशश्चाष्टमे यस्य चिन्तायुक्तो भवेन्नरः ।
धनादिकं सुखं मध्यं शरीरं कष्टसंयुतम् ॥ २ ॥

जिसके जन्म काल में अष्टम भाव में दशमेश बैठा हो तो वह मनुष्य चिन्ता से युक्त, धन आदि के सुख मध्यम रूप से और शरीर कष्ट से युत होता है ॥ २ ॥

ततो दशमैकादशभावगतदशमेशफलम्—

दशमेशे शुभे लाभे धनवान् पुत्रवान् भवेत् ।
सर्वदा हर्षसंयुक्तः सत्यवादी सुखी नरः ॥ ३ ॥

जिसके जन्म काल में दशमेश नवम या एकादश भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य धनवान्, पुत्रवान्, सर्वदा हर्ष से युत, सत्य बोलने वाला और सुखी होता है ॥

ततः पञ्चमषष्ठभावगतदशमेशफलम्—

कर्मेशस्तनये षष्ठे धर्मकर्मसु तत्परः ।
देवद्विजेषु भक्तिश्च तीर्थयोगेषु तत्परः ॥ ४ ॥

जिसके जन्म काल में दशमेश पञ्चम या षष्ठ भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य धर्म कर्म में लगा रहता है। तथा ब्राह्मण देवताओं में भक्ति करने वाला, तीर्थ स्थान में भक्ति रखने वाला और योग क्रिया करने वाला होता है ॥ ४ ॥

ततो द्वादशभावगतकर्मेशफलम्—

कर्मेशश्च व्यये यस्य शत्रुभिः पीडितः सदा ।
चातुर्यगुणसंपन्नः कदाचिन्न सुखी भवेत् ॥ ५ ॥

जिस जातक के जन्म काल में दशमेश द्वादश भाव में बैठा हो वह शत्रुओं से पीड़ित, चतुर, किन्तु सर्वदा सुख रहित होता है ॥ ५ ॥

ततो लग्नगतदशमेशफलम्—

दशमाधिपतौ लग्ने कवितागुणसंयुतः ।
बाल्ये रोगी सुखी पश्चादर्थवृद्धिर्दिने दिने ॥ ६ ॥

जिसके जन्मकाल में दशमेश लग्न में बैठा हो तो वह मनुष्य कविता बनाने वाला, बाल्य काल में रोगी, किन्तु पीछे सुखी होता है और उसके प्रतिदिन धन की वृद्धि होती है ॥ ६ ॥

ततो द्वितीयतृतीयसप्तमभावगतदशमेशफलम्—

धने मदे च सहजे कर्मेशो यदि संस्थितः।
मनस्वी गुणवान् वाग्मी सत्यधर्मसमन्वितः॥ ७॥

जिसके जन्म काल में दशमेश द्वितीय, तृतीय या सप्तम भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य गुणवान्, मनस्वी, वक्ता, सत्य और धर्म से युत होता है॥ ७॥

अथैकादशेशफलम्।

तत्रादावेकादशभावगतैकादशेशफलम्—

लाभेशे संस्थिते लाभे स वाग्मी जायते ध्रुवम्।
पाण्डित्यं कविता चैव वर्धते च दिने दिने॥ १॥

जिसके जन्म काल में एकादशेश एकादश भाव में बैठा हो तो उसका पाण्डित्य और काव्य निर्माण करने की शक्ति प्रतिदिन बढ़ती रहती है॥ १॥

ततो द्वादशस्थानगतैकादशेशफलम्—

प्राप्तिस्थानाधिपे रिष्फे म्लेच्छसंसर्गकारकः।
कामुको बहुकान्तश्च चणिकः कामलम्पटः॥ २॥

जिसके जन्म काल में एकादशेश द्वादश भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य म्लेच्छों का संग करने वाला, कामी, बहुत सुन्दर, चञ्चल और काम से लम्पट होता है॥२॥

ततो लग्नगतैकादशेशफलम्—

लाभेशे संस्थिते लग्ने धनवान् सात्त्विको महान्।
समदृष्टिर्महावक्ता कौतुकी च भवेत्सदा॥ ३॥

जिसके जन्म काल में एकादशेश लग्न में बैठा हो वह धनवान्, बड़े सात्त्विक, सब पर समान दृष्टि रखने वाला, बोलने वाला, और क्रीडा करने वाला होता है॥३॥

ततो द्वितीयपञ्चमभावगतैकादशेशफलम्—

लाभेशे च धने पुत्रे नानासुखसमन्वितः।
पुत्रवान् धार्मिकश्चैव सर्वसिद्धिप्रदायकः॥ ४॥

जिसके जन्म काल में एकादशेश द्वितीय या पञ्चम भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य नाना तरह के सुखों से युत, पुत्रवान्, धार्मिक और सब कामों को साधन करने वाला होता है॥ ४॥

ततस्तृतीयचतुर्थभावगतैकादशेशफलम्—

लाभेशे सहजे तुर्ये तीर्थेषु तत्परो महान्।
कुशलः सर्वकार्येषु केवलं शूलरोगवान्॥ ५॥

जिसके जन्म काल में एकादशेश तृतीय या चतुर्थ भाव में बैठा हो तो तीर्थ में जाने वाला, सब कामों में चतुर और शूल रोग से युत होता है॥ ५॥

ततः षष्ठभावगतैकादशेशफलम्—

लाभेशे षष्ठभवने नानारोगसमन्वितः ।
सर्वं सुखं भवेत्तस्य प्रवासी परसेवकः ॥ ६ ॥

जिस जातक के जन्म काल में एकादशेश षष्ठ भाव में बैठा हो तो वह नाना प्रकार के रोग से युत, सब तरह के सुख पाने वाला, पर देश में रहने वाला और नोकरी करने वाला होता है ॥ ६ ॥

ततः सप्तमाष्टमभावगतैकादशेशफलम्—

लाभेशे सप्तमे रन्ध्रे भार्या तस्य स्वरूपिणी ।
उदारो धनवान् कामी भूसुरो भवति ध्रुवम् ॥ ७ ॥

जिसके जन्म काल में एकादशेश सप्तम या अष्टम भाव में बैठा हो तो उसकी स्त्री सुन्दरी होती है। तथा स्वयं वह उदार, धनी, कामी और निश्चय करके ब्राह्मण होता है ॥ ७ ॥

ततो नवमदशमभावगतैकादशेशफलम्—

लाभेशे गगने धर्मे राजपुत्रो धनाधिपः ।
चतुरः सत्यवादी च निजधर्मसमन्वितः ॥ ८ ॥

जिसके जन्म काल में नवम या दशम भाव में एकादशेश बैठा हो तो वह राजा के पुत्र अथवा धनों का स्वामी, चतुर, सत्य बोलने वाला और अपने धर्म से युत होता है ॥ ८ ॥

अथ द्वादशेशफलम् ।

तत्रादौ द्वादशषष्ठभावगतद्वादशेशफलम्—

व्ययेशेऽरिव्यये पापी मातृमृत्युविचिन्तकः ।
क्रोधी सन्तानदुःखी च परजायासु लम्पटः ॥ १ ॥

जिसके जन्म काल में द्वादशेश षष्ठ या द्वादश भाव में बैठा हो वह पापी अपने माता की मृत्यु को चाहने वाला, क्रोधी, सन्तान के सम्बन्ध लेकर दुखी और परस्त्री के साथ मौज उड़ाने वाला है होता है ॥ १ ॥

ततो लग्नसप्तमभावगतद्वादशेशफलम्—

व्ययेशे मदने लग्ने जायासौख्यं भवेन्नहि ।
दुर्बलः कफरोगी च धनविद्याविशारदः ॥ २ ॥

जिस जातक के जन्म समय में द्वादशेश लग्न या सप्तम भाव में स्थित हो वह स्त्रीसुख से रहित, दुर्बल, कफ रोग से युत, धनी और विद्याओं में निपुण होता है ॥२॥

ततो द्वितीयाष्टमभावगतव्ययेशफलम्—

व्ययेशे च धने रन्ध्रे विष्णुभक्तिसमन्वितः ।

धार्मिकः प्रियवादी च गुणैः सर्वैः समन्वितः ॥ ३ ॥

जिसके जन्म काल में व्ययेश द्वितीय या अष्टम भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य विष्णु भगवान् का भक्त धार्मिक, प्रिय बोलने वाला और सब गुणों से युत होता है॥३॥

ततस्तृतीयनवमभावगतव्ययेशफलम्—

भ्रातृद्वेषी प्रियद्वेषी गुरुद्वेषी भवेन्नरः।
व्ययेशे सहजे धर्मे स्वशरीरस्य पोषकः ॥ ४ ॥

जिसके जन्म काल में तृतीय या नवम भाव में व्ययेश बैठा हो तो वह मनुष्य भाई, गुरु और अपने मित्रों से शत्रुता करने वाला और अपने शरीर का पोषण करने वाला होता है ॥ ४ ॥

ततो दशमैकादशभावगतव्ययेशफलम्—

व्ययेशे दशमे लाभे पुत्रसौख्यं भवेन्नहि।
मणिमाणिक्यमुक्ताभिर्धनं किञ्चित्समाप्नुयात् ॥ ५ ॥

जिसके जन्म काल में व्ययेश दशम या एकादश भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य पुत्र के सुख से रहित, तथा मणि, माणिक्य, मुक्ता आदि के क्रय विक्रय से कुछ धन पैदा करने वाला होता है ॥ ५ ॥

ततश्चतुर्थपञ्चमभावगतव्ययेशफलम्—

व्ययेशे च सुते तुर्ये नीचबुद्धिर्भवेन्नरः।
गृहभूमिसुखैर्हीनो जनन्याः क्लेशकारकः ॥ ६ ॥

जिसके जन्म काल में व्ययेश चतुर्थ या पञ्चम भाव में बैठा हो तो वह मनुष्य नीच बुद्धि वाला, गृह तथा भूमिके सुख से रहित और अपने माता को क्लेश देने वाला होता है ॥ ६ ॥

इति भावेशफलम्।

होरागमे प्रथितजातकभूषणस्य शिष्टैः प्रभूतविषयैः परिशिष्टमेतत्।
पूर्णीकृतं गणकवृन्दमुदे मनोज्ञं होराप्रबन्धनिकुरम्बगृहीतसारैः॥

इति "मिथिला" देशस्थ "दरभङ्गा" मण्डलान्तर्गत "जरिसो" ग्रामनिवासिज्यौतिषा-
चार्य-पोष्टाचार्य-साहित्याचार्यादि-पदवीक-प्राप्त "रीपन्" स्वर्ण पदक
"उत्तरप्रदेशान्तर्गत "खुर्जा" स्थ "श्रीराधाकृष्ण" संस्कृत-महा-
विद्यालय-त्रिस्कन्ध-ज्यौतिषशास्त्र-प्रधानाध्यापक-पण्डित
"श्री अच्युतानन्द झा शर्मणा विरचितं
परिशिष्टप्रकरणं समाप्तम्।

—:o:—

परिचयः—

विदर्भे देशेऽसौ कतिचिदतिहृष्टेन मनसा पुरा रामो यस्मिन् जनकसुतया साकमवसत्।
पुरीदर्भङ्गाया नगपरिमिते पूर्वंहरिति पुरख्याता क्रोशे त्रुधजननुताऽस्तीह "जरिसो" ॥१॥
तस्मिन्मनोज्ञनगरेऽखिललोकदत्तः श्रीकश्यपान्वयभवोऽतिविशुद्धकर्मा ।
झोपाह्व"देवन" इति प्रथितः पृथिव्यां जातः समैर्नरवरैरनिशं सुपूज्यः ॥ २ ॥
जातेष्वनेकविधकौशलगुम्फितेपु पुत्रास्त्रयः समभवन् सुतरां सुयोग्याः ।
तेष्वग्रजस्य कुशलस्य "भवी"ति संज्ञा तस्यानुजस्य विदुषो हि "रुदी"ति संज्ञा ॥ ३ ॥
तत्रानुजो निखिललोकनितान्तशान्तो धीरोऽतिरूपगुणवान् वहुकीर्तिकान्तः।
स्वच्छाशयो द्विजवरो "जयदत्त"संज्ञोऽनेकप्रवन्दितपदोऽखिलदानविज्ञः ॥ ४ ॥
तस्याभवत्सुतकदम्बकसर्वयोग्यो वैज्ञानिकः सहृदयः सरलो वदान्यः ।
विद्यातपोविनयकीर्त्यतुलोऽचलायामस्मत्पितामहपिता किल "भ्रातृनाथः" ॥ ५ ॥
जातो विशुद्धगुणवर्य्यंपितामहो मे स्वच्छाशयो गिरिशपादविलग्नचेताः।
वित्तः कृती फलितशास्त्रविधौ नितान्तं "गोस्वामि"संज्ञ इह शान्तगुणैकमूर्तिः ॥ ६ ॥
तस्याभवन्निखिललोकहितैकदक्षाः पुत्रा विवेकनिपुणा ह्यतिशान्तकान्ताः ।
पञ्चानवद्यगुणसंवलितास्त्वमीषु सर्वानुजो मम पिता "वलदेव"नामा ॥ ७ ॥
तज्जातेषुसुतेपुसत्सुकुलालङ्कारभूतेष्वहज्येष्ठाच्छ्री"रघुवंश"कादवरजो विद्वज्जनानांसताम्।
शच्छन्प्रेमसुधारसार्द्रहृदयानां संततं सत्कृपां श्रीकालीपदपद्मसेवनकृती श्रीअच्युतानन्द झा
"चलनकलन"नाम्नि ग्रन्थरत्ने ह्यकार्षं विवरणमतिसूक्ष्मं सर्वप्रश्नोत्तराणाम् ।
तदनुधवलटीकायुग्मकं "चोड्डदाये" तदनु च रुचिरं तद् "वास्तुरत्नावली"के ॥ ९ ॥
तदनु च सकलानां मानवानां नितान्तमुपकृतिकरणार्थं "पद्धतीनां" प्रकाशम् ।
तदनु विबुधवर्य्याः! "जैमिनेः सूत्रके" च रुचिरयुगलटीका पञ्चमे पुस्तकेऽस्मिन् ॥१०॥
अथ "भावफलाध्यायो" लोमशोक्तोऽतिमञ्जुलः। मया 'विमलया' षष्ठटीकया विमलीकृतः॥
"चापत्रिकोणगणिते" ह्यथ सप्तमेऽस्मिन् नीलाम्वरेण रचिते गणकाग्रगेण ।
युक्तिः कृताऽतिललिता विवृताऽवदाता छात्रोपकारजनिका मयका पुलाका ॥ १२ ॥

कृता "वृहज्जातक"संज्ञकेऽष्टमे ग्रन्थे प्रसिद्धे विमलाऽभिधान्विका ।
टीका मया वासनया समेता सोदाहृतिः सर्वजनप्रिया च ॥ १३ ॥
"बीजगणिते" च नवमे सवासनोद्देशिका टीका ।
अथ "जातकाभरण"के दशमे "विमला" मया विहिता ॥ १४ ॥
" रमलनवरत्न"संज्ञे टीका चैकादशेऽथ "विमलै"व ।
" सरलत्रिकोण" संज्ञं द्वादशकं पुस्तकं ततो रचितम् ॥ १५ ॥
"गोलीयरेखागणिते त्रयोदशेऽकारीह ग्रन्थे विमलाथ वासना ।
ग्रन्थाब्धिचन्द्रप्रमिताः प्रकाशिता मुद्रापयित्वा विदुषां मुदे मया ॥ १६ ॥